अनुभूत योगावली

फलित ज्योतिष

लेखक

महामहोपाध्याय पं. कल्याणदत्त शर्मा

डॉ. प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्ररोचना

डॉ. प्रणव पण्ड्या

अनुभूत योगावली

(फलित ज्योतिष)

लेखक

महामहोपाध्याय पं. कल्याणदत्त शर्मा

ज्योतिषाचार्य, राष्ट्रपति सम्मानित

एवं

डॉ. प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्ररोचना

डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, दे.सं.विश्वविद्यालय

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट

शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

अनुभूत योगावली
(फलित ज्योतिष)

लेखक-
पं. कल्याण दत्त शर्मा
डॉ. प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्रोचना-
डॉ. प्रणव पण्ड्या

प्रकाशक-
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट
शान्तिकुंज, हरिद्वार

प्रथम आवृत्ति- 4000
श्रीरामनवमी संवत् 2065

मूल्य- 50/- (पचास रुपये) JV10

समर्पण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्

ॐ वन्दे भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम्।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

जिन्होंने वशिष्ट-अरुन्धति, अत्रि-अनुसूया जैसे ऋषिकल्प जीवन जीकर इस युग में ऋषि परम्परा को साकार कर दिखाया, देव संस्कृति के गूढ़ तत्वों को युगानुकूल और जन सुलभ बनाया, जिनके सान्निध्य में पहुँचकर ज्योतिर्विज्ञान को दुरूहता और रूढ़िवादिता से उबारकर सहज और प्रगतिशील बनाने का संकल्प उभरा, उन्हीं युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा के युगल चरणों में, उन्हीं के दिव्य संरक्षण में विकसित **अनुभूत योगावली** (फलित ज्योतिष) श्रद्धा सहित समर्पित है।

– कल्याण दत्त शर्मा

विषयानुक्रमणिका

अनुभूत योगावली - फलित ज्योतिष

प्ररोचना-लेखकीय- 11-16

1. **ग्रहफल विवेचन के सिद्धान्त-** 17-36
   - ➢द्वादश भावों के विचारणीय विषय
   - ➢भावों के कारक ग्रह
   - ➢कारक ग्रह विवेचन
2. **आयु एवं रोग विचार-** 37-44
   - ➢दीर्घायु योग
   - ➢जैमिनी मत से आयु निर्णय
   - ➢ग्रह स्थिति अनुसार दीर्घायु योग
   - ➢रोगी योग
   - ➢विभिन्न रोगों के योग
3. **मातृ-पितृ एवं भ्रातृ -भगिनी योग-** 45-50
   - ➢मातृ स्नेह योग-
   - ➢मातृ सुख हानि योग
   - ➢मातृ कष्ट योग
   - ➢मातृ अल्पायु योग
   - ➢मातृ निधन योग
   - ➢पितृपक्ष विचार
   - ➢पितृ विरोध योग
   - ➢पितृ निधन योग
   - ➢भ्रातृ भगिनी योग
4. **विद्या एवं तत् सम्बंधि व्यवसाय योग-** 51-56
   - ➢विद्या प्राप्ति के योग
   - ➢वैद्य-ज्योतिर्विद-संगीतज्ञादि के योग
   - ➢विद्वान के योग
5. **वैवाहिक जीवन विचार-** 57-64
   - ➢वर कन्या चयन के शुभ-अशुभ योग
   - ➢स्त्री के गुण दोषादि का विचार

➢विवाह समय
➢शीघ्र वैधव्य योग
➢सुन्दर पति/पत्नी प्राप्ति योग
➢पति त्याग योग
➢पत्नी मृत्यु योग
➢विवाह अभाव योग
➢व्यभिचार योग
➢परस्त्री गामी योग
➢द्विभार्या योग
➢द्विभार्या योग (प्रथम स्त्री मरण के पश्चात)
➢दुःखी वैवाहिक जीवन

6. सन्तान विचार- **65-72**

➢सन्तान प्राप्ति के योग
➢पुत्र सन्तति योग
➢कन्या सन्तति योग
➢सन्तान प्रतिबन्धक योग
➢सन्तान विलम्ब योग
➢सन्तान अभाव योग
➢गर्भपात के योग
➢यमल जन्म योग

7. आजीविका विचार- **73-84**

➢दशमेश का अन्य भावेशों से युतिफल
➢दशम भावस्थ दो ग्रहों का फल
➢नवमांश कुण्डली से व्यवसाय निर्णय
➢बलवान ग्रहों से बनने वाले योग
➢कारकांश से बनने वाले योग
➢ग्रह एवं राशियों के तत्वानुसार बनने वाले योग
➢नौकरी के योग
➢स्वतंत्र व्यवसाय के योग
➢व्यापार के योग
➢विभिन्न व्यवसाय विचार
➢नवम स्थान से व्यवसाय विचार
➢एकादश स्थान से व्यवसाय विचार

8. वाहन एवं भूमि विचार- **85-87**
- ➢वाहन योग
- ➢वाहन सुख विचार
- ➢भूमि प्राप्ति के योग

9. धन, द्रव्य विचार- **88-98**
- ➢धनभाव विचार
- ➢विभिन्न लग्नों में शुक्र से बनने वाले धन योग
- ➢विविध धन योग
- ➢धनी योग
- ➢आकस्मिक धन लाभ योग
- ➢स्थावर सम्पत्ति योग
- ➢दरिद्र योग

10. राजयोग विचार- **99-108**
- ➢उच्च पदासीन राजयोग
- ➢कारक योग
- ➢धनी-यशस्वी राज्याधिकारी योग
- ➢पंच महापुरुषयोग
- ➢गजकेसरी योग
- ➢नीचभंग राजयोग
- ➢विपरीत राजयोग
- ➢विशिष्ट राजयोग

11. विविध राजयोग- **109-118**
- ➢सुनफायोग
- ➢अनफायोग
- ➢दुर्धरायोग
- ➢केमद्रुम योग
- ➢केमद्रुमभंग योग
- ➢वाशियोग
- ➢वेशियोग
- ➢उभयचरी
- ➢वापी योग

- यूपयोग
- शरयोग
- शक्तियोग
- दण्ड योग
- नौकायोग
- छत्रयोग
- कूट योग
- चाप योग
- समुद्र योग
- गोल योग
- युग योग
- शूल योग
- केदार योग
- पाश योग
- दामिनी योग
- वीणा योग
- रज्जुयोग
- मुसल योग
- गजकेसरी योग
- नल योग
- अमलकीर्ति योग
- सर्प योग
- गदायोग
- षकटयोग
- पक्षीयोग
- शृंगाटक योग
- हठ योग
- बज्र योग
- यवयोग
- काहल योग
- भेरी योग
- कलानिधि योग

➢श्री योग
➢कमलायोग
➢भाष्कर योग
➢वसुमति योग
➢कलश योग
➢कमल योग
➢सिंहासन योग
➢एकावली योग
➢चतुसार योग
➢महासार योग
➢राजहंस योग
➢श्रीनाथ योग
➢शंख योग

12. एकाधिक ग्रहों के भाव एवं राशि गतयोग- **119-142**

➢द्विग्रही योग एवं फल
➢द्विग्रही योग
➢नवम में द्विग्रह योग
➢दशम में द्विग्रह योग
➢त्रिग्रह योग
➢नवम भाव में त्रिग्रह योग
➢चन्द्र से दशम में त्रिग्रह योग
➢चर्तुग्रह योग
➢नवम भाव में चर्तुग्रह योग
➢चन्द्र से दशम भाव में चर्तुग्रह योग
➢पंचग्रह योग
➢षष्ठग्रह योग

13. विशिष्टयोग- **143-150**

➢केन्द्रस्थ ग्रहों का प्रभाव
➢सूर्यकृत-योग
➢चन्द्रकृत योग
➢भौमकृत योग

➢बुधकृत योग
➢गुरुकृत योग
➢शुक्रकृत योग
➢शनिकृत योग
➢राहुकृत योग
➢केतुकृत योग

14. प्रकीर्णयोग- 151-154

➢अग्निभय योग
➢अग्रज घातक योग
➢आत्मघातक योग
➢शराबी योग
➢संगीतज्ञ योग
➢खंग योग
➢घातक योग
➢विदेश यात्रा योग
➢सत्यवक्ता योग
➢कपटी कृपण आदि योग
➢पार्श्वगामिनी दृष्टि योग फल
➢पाप कर्तरी योग
➢दिग्बली ग्रहकृत योग

15. लाल किताब के अनुसार समग्र ग्रह एक दृष्टि में- 155-164

➢सूर्य
➢चन्द्र
➢मंगल
➢बुध
➢बृहस्पति
➢शुक्र
➢शनि
➢राहु
➢केतु

16. रोगोत्पत्ति एवं उपचार - 165-184

प्ररोचना

सूर्यादिग्रहों के बोध करवाने वाले शास्त्र को ही ज्योतिष शास्त्र कहते हैं; यथा- सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्र ज्योतिषम्। इस शास्त्र में ग्रह-नक्षत्र, तारा, धूमकेतु आदि की स्थिति गति एवं परिभ्रमणादि का ठीक-ठीक निर्धारण होता है। ज्योतिष सूर्यादि ग्रह-नक्षत्रों के द्वारा काल का ठीक-ठीक प्रबंधन एवं नियमन करता है। इसीलिए "**ज्योतिषं कालविधानशास्त्रम्**" नामक उक्ति प्रसिद्ध हुई। काल के मूर्त्त अमूर्त्त भेदों का विवेचन करते हुए वेद के उद्देश्य पूर्ति में यज्ञादि के निमित्त काल का निर्धारण भी ज्योतिष का ही मुख्य कार्य है। अनिष्टोपाय के रूप में वेद यज्ञ के लिए प्रेरित करते हैं। शुभ-अशुभ काल के विवेचन के उपरान्त ही यज्ञ का निर्धारण होने से ही यज्ञ-पूर्ति होगी; अन्यथा यज्ञ पूर्ति के अभाव में उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पायेगी; क्योंकि काल पिण्ड एवं स्थान (देश) सापेक्ष होता है। बिना देश-ज्ञान के काल का समीचीन ज्ञान सम्भव नहीं है। इसलिए यज्ञार्थ काल का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र को दिया गया; क्योंकि दिग्-देश एवं काल ज्योतिष का मुख्य विषय है, यथा-

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता, यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्यात्, वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्॥

देवर्षि नारद ने कहा है कि संसार के शुभ-अशुभ फलों का निरूपण करना ज्योतिष का मुख्य कार्य है, क्योंकि ज्योतिष वेदाङ्ग है। यज्ञ अध्ययन, संक्रान्ति, ग्रह एवं षोडशसंस्कारों के काल का विवेचन करना ही इस शास्त्र का मुख्य प्रयोजन है, यथा-

यस्य शास्त्रस्य सम्बन्धो वेदाङ्गमिति कथ्यते। अभिधेयं च जगतः शुभाशुभनिरूपणम्॥
यज्ञाध्ययनसंक्रान्तिग्रहषोडशकर्मणाम्। प्रयोजनं च विज्ञेयं तत्रकालविनिर्णयात्॥

श्रौतसूत्रों के द्वारा विहित दर्श-पौर्णमास चातुर्मास एवं उपवासादि में विहित यज्ञानुष्ठानों को श्रौतकर्म तथ स्मृति विहित गृह्यसूत्रादि के द्वारा सम्पादित होने वाले उपनयनादि संस्कार कर्मों को स्मार्त कर्म कहा जाता है। बिना ज्योतिष ज्ञान के इन कर्मों का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता; क्योंकि ये सभी कर्म कालाश्रित ही हैं। इस सन्दर्भ में देवर्षि नारद स्वयं कहते हैं-

विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तकर्म न सिद्ध्यति। तस्माज्जद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा॥

ज्योतिषशास्त्र तीनों स्कन्धों में विभक्त है- सिद्धान्त, संहिता एवं होरा। इन तीनों स्कन्धों के ज्ञाता विद्वान् को ही त्रिस्कन्धज्ञ कहा जाता है। त्रिस्कन्धज्ञ ही श्रौत-स्मार्त कर्मों का ठीक-ठीक सम्पादन कर सकता है। जैसा कि कहा गया है-

त्रिस्कन्धज्ञो दर्शनीयः श्रौतस्मार्तक्रियापरः।

तीनों स्कन्धों में मानव के शुभाशुभ फल का विवेचन करने वाला शास्त्र-होराशास्त्र है। होराशास्त्र में इतना सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार होता है कि आज के भौतिक शास्त्री इसकी प्रक्रिया को नहीं समझ पा रहे हैं, इसलिए उनका कहना है कि यह विज्ञान

नहीं है। भौतिक शास्त्रियों का ज्ञान पञ्चज्ञानेन्द्रिय गम्य ज्ञान है। पञ्चज्ञानेन्द्रिय गम्य ज्ञान को वे प्रत्यक्ष मानते हैं। साकार वस्तु का प्रत्यक्ष तो ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा सम्भव है। परन्तु निराकार वस्तु का प्रत्यक्ष कैसे होगा और यह नहीं कह सकते हैं कि सभी घटनाओं में प्रत्यक्ष की ही मुख्य भूमिका रहती है। निराकार का प्रत्यक्षीकरण तो इन्द्रिय विषय ही नहीं है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रह के दो स्वरूप बताये गये हैं। एक स्वरूप तो वह है जो गणित के द्वारा निश्चित किया जाता है। गणित द्वारा निश्चित किया जाने वाला स्वरूप निश्चित रूप में भौतिक है, गणितीय प्रक्रिया के द्वारा निश्चित होने पर ग्रह के आदिदैवत्व स्वरूप जो निराकार हैं का अध्ययन किया जाता है। ग्रह का आकार,प्रकार, गति स्थिति आदि भौतिक स्वरूप के घटक हैं; जबकि ग्रह उष्ण, क्रूर, शुभ अशुभ, पापी, पित्त, कफ, वायु आदि प्रकृति का होकर शुभ–अशुभ फलकारी होता है। ग्रह का जो स्वरूप फल के लिए वर्णनीय है उसका अलग से कोई आकार–प्रकार नहीं होता है; अपितु वह स्वरूप भी इसी भौतिक शरीर में स्थित होता है। बिना भौतिक शरीर के आदिदैविक एवं आध्यात्मिक क्रिया विधि का ज्ञान सम्भव नहीं लगता। देखा जाय तो किसी भी कार्य को आदिदैविक स्वरूप ही सम्पन्न करता है न कि भौतिक स्वरूप; परन्तु हम यह समझते हैं कि कार्य भौतिक शरीर ने ही किया। इस आधार पर ही ग्रह को दैवत्व का स्थान मिला है, प्रायः सभी प्राणियों में भी इस प्रकार की स्थिति रहती है। अतः कह सकते हैं कि आदिदैविक स्वरूप से ही भौतिक शरीर की गति–स्थिति आदि हलचल का ज्ञान होता है। बिना आदिदैविक एवं आध्यात्मिक स्वरूप के कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। आदिदैविक स्वरूप का कार्य इतनी सूक्ष्म प्रक्रियाओं के माध्यम से सम्पन्न होता है कि कोई भी प्रयोगशाला उसको अपने यन्त्रों के माध्यम से दिखाने में अभी तक समर्थ नहीं है; परन्तु विज्ञान इस ओर प्रयत्न कर रहा है वह सफल होगा या नहीं यह भविष्य के गर्भ में है।

वैदिक दर्शनों के "**यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे**" के कथन से ज्ञात होता है कि प्रत्येक पिण्ड में ब्रह्माण्ड के सभी तत्त्व बीज रूप में स्थित रहते हैं। यदि हमें पिण्ड का ठीक–ठीक ज्ञान हो जाय तो ब्रह्माण्ड के रहस्य को जाना जा सकता है। हमारे ऋषियों ने पिण्ड से ही ब्रह्माण्ड को जानने की बात कही है और वे इस प्रक्रिया में सफल भी हुए। इस प्रक्रिया का सम्पादन उन्होंने योग नामक विद्या के द्वारा किया। यौगिक प्रक्रियाओं के माध्यम से इस ब्रह्माण्ड की कोई भी वस्तु दुर्लभ एवं अज्ञेय नहीं हो सकती है। इसीलिए भारतीय वैदिक ऋषियों को सभी कुछ ज्ञात हो जाता था अथवा वे तत् सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त कर लेते थे। योग शब्द के कई अर्थ आचार्यों ने किये हैं। उनमें से एक अर्थ यह भी है कि "अन्तराभावत्वं योगत्वम्" अर्थात् अन्तराभाव ही योग है। यह गणितीय परिभाषा है। जब पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड का आत्मा एवं परमात्मा का भक्त एवं भगवान् का, ध्येय एवं ध्येता का अन्तर समाप्त होता है तो तद् विषय प्राप्ति एवं संयोग ही योग कहलाता है। दो निराकार एवं साकार स्वरूपों के अन्तर का अभाव ही गणितीय दृष्टि से योग कहलाता है।

जिस प्रकार उपर्युक्त वर्णित योग के द्वारा इस ब्रह्माण्ड को हम ठीक प्रकार से समझ सकते हैं ठीक उसीप्रकार व्यक्ति की कुण्डली में बनने वाले ग्रह योगों के द्वारा भी जातक के समग्र जीवन को समझा जा सकता है। कुण्डली में ग्रह, राशि एवं भाव के माध्यम से असंख्य योग बनते हैं। इन असंख्य योगों के द्वारा ही व्यक्ति के शुभ-अशुभ का विचार ज्योतिष शास्त्र करता है। भारतीय दर्शन की दृष्टि में आत्मा अमर है, उसका कभी नाश नहीं होता है। यह केवल अनादि प्रभाव के कारण अनेक योनियों को बदलता रहता है।

प्राणिमात्र एवं प्रत्येक पिण्ड के शरीर में रहने वाला यह तत्त्व नित्य एवं चैतन्य है; परन्तु कर्मानुबंध के कारण यह परतन्त्र एवं विनाशी दिखाई देता हैं। आत्मा स्वयं में कुछ भी नहीं करता है परन्तु इससे चेतना पाकर जड़ मन एवं इन्द्रियाँ सभी कर्मों को करती हुई दिखाई देती है। बिना आत्मा के संसर्ग के यह शरीर शव अवस्था में परिणत हो जाता है। तब कर्म करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। अत: कह सकते हैं कि मन एवं इन्द्रियों का कर्म में प्रवृत्त होना ही आत्मा का संसर्ग है। जो मन एवं इन्द्रियों को चेतना प्रदान कर उन्हें सदैव सक्रिय रखता है, वही आत्मा मनेन्द्रिय कर्मों का उपचार करता है।

भारतीय दार्शनिक पृष्ठभूमि में कर्म के तीन भेद मिलते हैं। 1. संचित 2. प्रारब्ध एवं 3. क्रियमाण। किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा जन्म-जन्मान्तरों से वर्तमान तक किये गये कर्मों को ही संचित कर्म कहा जाता है। संचित के जिस भाग का फल मिलना प्रारंभ हो जाता है उसे प्रारब्ध कहते हैं। जिन कर्मों को हम वर्तमान में कर रहे हैं या निकट भविष्य में करेंगे उन सभी को क्रियमाण कहते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि कर्म सिद्धान्त भाग्यवाद पर आधारित हैं इसमें व्यक्तिगत विकास की सम्भावना का कोई अवसर नहीं है। यह मिथ्या धारणा कर्मवाद की अनभिज्ञता का बोध कराती है। यह ब्रह्माण्ड एक नियमबद्ध सृष्टि है यह तो हो नहीं सकता कि संचालन कुछ रूप में नियमबद्ध हो और कुछ रूप में नियमों से रहित।

मनुष्य को उसके वर्तमान जीवन में जो कुछ मिल रहा है, वह कर्म के नियमों द्वारा सुनियोजित एवं सुनिश्चित है। हमारे ऋषियों का मानना है कि एक बार कर्म करने के बाद मनुष्य उसका फल अवश्य भोगता है;क्योंकि कर्म फल भोगे बिना नष्ट नहीं हो सकता। जैसा कि कहा भी है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि॥

अपनी लगन एवं निष्ठा से मनुष्य विविध विहित उपायों के द्वारा फल के क्रम को न्यूनाधिक कर सकता है। मनुष्य की सबसे बड़ी सामर्थ्य यह है कि वह प्रतिकूल परिस्थितयों एवं संकट के क्षणों में भी सतत प्रयास के द्वारा अपना भविष्य बना सकता है।

यदि यह शास्त्र भाग्यवादी होता तो प्रतिकूल ग्रह स्थिति में शुभत्व के लिए किसी

भी प्रकार के उपाय की यहाँ चर्चा नहीं होती। ज्योतिष शास्त्र के सभी ग्रन्थों में अनिष्टकारी ग्रह योग, दशा एवं गोचर की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपायों का वर्णन एवं विवेचन इस बात का साक्षी है कि यह शास्त्र किसी भी प्रकार के भाग्यवाद में आस्था नहीं रखता है।

होरा शास्त्र के आचार्यों का मत है कि कर्म एवं भाग्य एक दूसरे के पूरक हैं इन दोनों का सम्बन्ध कार्य-कारण जैसा अन्योन्याश्रित है; क्योंकि कर्म द्वारा ही भाग्य का सृजन होता है। क्रियमाण कर्म करने से संचित और संचित से प्रारब्ध बनता है। अत: कह सकते हैं कि क्रियमाण कर्म ही सबका नियामक है।

आचाार्य भट्टोत्पल के अनुसार कर्म एवं भाग्य में जन्य जनक भाव सम्बन्ध है। इसके अनुसार कर्म ही भाग्य को पैदा करता है और पुन: नूतन कर्मों के माध्यम से नये भाग्य का सृजन करता है। अत: कहा जा सकता है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। संचित कर्मों के फल का विचार आधान कुण्डली एवं जन्म कुण्डली के योगों द्वारा प्रारब्धकर्म के फल का विचार दशा-अन्तरदशा द्वारा तथा क्रियमाण कर्मों का विचार गोचरग्रह स्थिति द्वारा किया जाता है। जन्म-जन्मान्तरों में किये गये कर्मों का फल इस जन्म में कब क्या और कैसा मिलेगा? इस सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने पर्याप्त चर्चा की है। आचार्य वराह मिहिर ने कहा है कि जैसे दीपक अन्धकार में रखी हुई वस्तुओं को अभिव्यक्त कर देता है ठीक, उसी प्रकार यह ज्योतिश्शास्त्र भी व्यक्ति के जीवन में कब? क्या? कैसा होगा? प्रकटित कर देता है यथा-

यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मण: पक्तिम्।
व्यञ्जयति शास्त्रमेतत्तमसि द्रव्याणि दीप इव॥

मुनष्य के पूर्वार्जित कर्मों के फल का नाम ही योग है। वस्तुत: योग पूर्वार्जित कर्म को उसके फल से जोड़ने वाला सेतु है। ये योग ग्रहों की राशि एवं भाव में स्थिति या परस्पर युति से बनते हैं। ग्रह, राशि एवं भाव के द्वारा बनने वाले योगों को आधार भेद से चार श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। जैसे-ग्रह राशि, ग्रह भाव, राशि भाव एवं ग्रह राशि भाव। इस लघु सारभूत अनुभूत योगावली (फलित ज्योतिष) नामक ग्रन्थ में **महामहोपाध्याय ज्योतिषाचार्य एवं राष्ट्रपति सम्मानित स्वनाम धन्य पं. श्री कल्याणदत्त शर्मा जी एवं डॉ. प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी आचार्य, ज्योतिष विभाग, श्री ला.बा.शा.रा.सं. विद्यापीठ नई दिल्ली** द्वारा उपर्युक्त चार श्रेणियों से बनने वाले असंख्य योगों का संकलन "**बालाय सुखबोधाय**" के उदेश्य से किया है। यह इनका एक अत्यन्त सराहनीय कार्य है। इनसे अथक परिश्रम एवं सतत शास्त्र के अभ्यास में लगे रहने की प्रेरणा मिलती है। मुझे विश्वास है कि इस लघुग्रन्थ से सुधीजन अवश्य लाभान्वित होंगे।

-डॉ. प्रणव पण्ड्या
कुलाधिपति

श्रीरामनवमी, 2065

लेखकीय

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥

ज्योतिष शास्त्र एक प्रत्यक्ष शास्त्र है जिसके साक्षी स्वयं सूर्य चन्द्र हैं। ज्योतिष शास्त्र मूल रूप में वेदाङ्ग है। वेद के उद्देश्य की पूर्ति में ज्योतिष सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वेद शब्द के कई अर्थ हैं। वेद का उद्देश्य वेद भाष्यकार यास्क के अनुसार इष्टप्राप्ति परिहार के लिए लौकिक एवं अलौकिक उपायों को बताना है। यथा- **इष्टप्राप्तयेऽनिष्टपरिहाराय लौकिकमलौकिकमुपायान् वेत्ति असौ ग्रन्थो वेदः**। वेद शब्द का अर्थ विद्ज्ञाने धातु से समग्र ज्ञान भी होता है। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि किसी भी ज्ञान का उद्देश्य इष्टप्राप्ति एवं अनिष्ट परिहार ही होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति में ज्योतिष शास्त्र को तीन भागों में विभक्त करते हुए वेद के निर्मल चक्षु के रूप में इस शास्त्र की स्थिति को स्वीकारा है। यथा-

सिद्धान्तः संहिता होरा रूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमनुत्तमम्॥

ज्योतिशास्त्र को वेद का चक्षु कहा है; क्योंकि चक्षु इन्द्रिय ही सभी ज्ञानेन्द्रियों में सबसे शीघ्र ज्ञान का सम्प्रेषण कर्त्ता तक करती हैं। अन्य इन्द्रियों की परिधि की अपेक्षा चक्षु इन्द्रिय की परिधि अधिक विस्तृत है। यही कारण है कि वेद का चक्षु ज्योतिशास्त्र है।

इस भौतिक जगत् में मनुष्य को तीन प्रकार के दु:खों से जूझना पड़ता है। ये दु:ख हैं आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक। आज सभी लोग प्राय: आधिभौतिक दु:खों का ही सर्वाधिक विचार करते हैं तथा सभी प्रकार के विचार में भौतिक ही प्रधान रहता है जबकि भौतिक दु:ख तो गौण हैं। भौतिक दु:खों की निवृत्ति भौतिक पदार्थों के माध्यम से सम्भव है; परन्तु अन्य प्रकार के दु:खों की निवृत्ति भौतिक से सम्भव नहीं है। भौतिकेतर दु:खों की निवृत्ति में ज्योतिष शास्त्र सर्वाधिक सहायक होता है। जिसने मानव के विविध दु:खों के विचार के साथ ही उसने निवृत्ति का विचार भी किया है। जब तक विकार भौतिक शरीर में होता है तो उसका उपचार भौतिक तत्त्वों के रूप में औषधि आदि से संभव है; परन्तु जब विकार भौतिक से आगे बढ़कर आदि- दैविक एवं आध्यात्मिक स्वरूप में चला जाता है तब उपचार सर्वाधिक कठिन हो जाता है। इस स्थिति में भौतिक उपचार कार्य नहीं करता है। ज्योतिष के अनुसार जब भी दु:ख की प्रवृत्ति होगी; तो उसका कारण प्रारब्ध, स्वभाव, परिस्थिति एवं काल ही मुख्य रूप से होंगे। सर्वाधिक बलवान कारण काल ही है और काल मात्र ज्योतिष शास्त्र का ही

विचारणीय विषय है। इसीलिए कहा भी जाता है कि **ज्योतिषं काल विधान शास्त्रम्।**

समग्र घटनायें काल के कारण ही होती हैं। प्रारब्ध एवं काल रूप दु:खों की निवृत्ति के लिए ग्रहशान्ति तथा स्वभाव एवं परिस्थिति मूलक दु:खों के लिए देवोपासना ही सर्वाधिक उत्तम उपचार है। कौन सी ग्रह शान्ति और कौन से देव की उपासना करनी चाहिए, यह निर्देश ज्योतिष शास्त्र ही देगा।

ज्योतिष शास्त्र एक कर्मवादी शास्त्र है। मूल रूप में ज्योतिष कर्मवाद की ही व्याख्या करता है। जब व्यक्ति का जन्म होता है उस समय की ग्रह स्थिति के द्वारा उसके जीवन के समग्र घटना चक्र की व्याख्या की जा सकती है। ग्रह राशि भाव के आधार पर कुण्डली में बनने वाले योग व्यक्ति के संचित कर्म के द्योतक हैं तथा ग्रह दशा व्यक्ति के प्रारब्ध की सूचक है। क्रियमाण कर्म का बोध गोचर ग्रहों के द्वारा होता है। सभी कर्मों के मूल में क्रियमाण कर्म ही मूल रूप में उपस्थित रहता है। अत: कह सकते हैं कि सभी कर्मों का कारण ही क्रियमाण कर्म है। आज का क्रियमाण ही कल का संचित और उसके बाद का बनने वाला प्रारब्ध है। यदि क्रियमाण को व्यवस्थित एवं विचारणीय बनाया जाय तो सभी प्रकार के कर्म व्यवस्थित हो सकते हैं।

ज्योतिष का उपचार पक्ष स्वीकार करता है कि जो होने वाला है वह परिवर्तनीय है, परन्तु उसका परिवर्तन प्रारब्ध की प्रबलता पर निश्चित करता है। प्रधान क्रियमाण कर्म ही सदा वर्तमान में अवस्थित रहता है। अत: वर्तमान ही भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से व्यक्ति के समग्र जीवन से सम्बन्धित विषयों का विचार किया जा सकता है। यह विचार कुण्डली में स्थित ग्रहयोगों के द्वारा किया जाता है। ग्रह योगों के मुख्य घटक हैं ग्रह,राशि एवं भाव हैं। इन ग्रह योगों का यदि ठीक-ठीक विचार किया जाय तो व्यक्ति अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं से बचने का प्रयास कर सकता है। उपर्युक्त तीनों घटकों से ज्योतिष शास्त्र में अनेकों योग बनते हैं। इन सभी योगों को स्मरण रखना भी एक कठिन कार्य है। इस ग्रन्थ में इस प्रकार के योगों को एकत्रित करके सुधी जनों के सम्यक् उपयोग के लिए लिखा गया है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों के ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगी। पाठकों से निवेदन है कि त्रुटियों का मार्जन करते हुए उचित सुझाव देने पर अपार हर्ष की अनुभूति होगी।

- लेखक

1. ग्रह फल विवेचन के सिद्धान्त

लघु पाराशरी में विंशोत्तरी दशा के आधार पर फल का विवेचन किया गया है। **दशाविंशोत्तरीचात्र ग्राह्यानाष्टोत्तरीमता। सर्वेत्रिकोणनेतारः ग्रहाः शुभफलप्रदाः। पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः।** लघु पाराशरी में विंशोत्तरी दशा के आधार पर ग्रह फल का विवेचन किया गया है। ग्रह यदि त्रिकोण के स्वामी हों तो शुभ फल करते हैं तथा 3,6,11 भाव के स्वामी अशुभफल कारक होते हैं। यदि जातक मेष लग्न में उत्पन्न हुआ है, तो त्रिकोण में 1,5,9 राशियाँ होती है। वृष लग्न के जातक के त्रिकोण में 2,6,10 राशियाँ होती हैं। इन त्रिकोण की राशियों के जो-जो ग्रह स्वामी हैं वे सब विंशोत्तरी दशा क्रम अनुसार दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा काल में शुभ फल ही करेंगे। मेष लग्न में उत्पन्न जातक को 1,5,9 राशियों के स्वामी क्रमशः मंगल, सूर्य और गुरु हैं। ये तीनों ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा जब कभी आयेगी तब उस काल में अवश्य शुभ फल होगा। वृषलग्न में 2,6,10 राशियों के स्वामी शुक्र, बुध व शनि है। विंशोत्तरी दशा अनुसार जिस समय इन तीनों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आयेगी वह समय सर्वदा शुभफल कारक ही रहेगा। यही क्रम मिथुन से आगे मीन लग्न तक समझना चाहिए।

लग्नानुसारशुभाशुभ तालिका में लघु पाराशरी ग्रन्थ की प्रक्रिया पर निर्मित की गई है। इन त्रिकोणेशों की दशा तालिका में पक्ष विपक्ष तथा निर्दलीय के रूप में प्रदर्शित की है। मेष लग्न के जातक के 3,6,11राशियाँ ही त्रिषडाय हैं। इनके स्वामी बुध,बुध व शनि है। जब बुध व शनि की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आयेगी तब अशुभ फल की प्राप्ति होगी। इस प्रकार द्वितीय कोष्टक विपक्ष राशियों के स्वामी की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा अशुभफल कारक होगी। तृतीय कोष्टक निर्दलीय राशियों का है। इनके स्वामी जो ग्रह हैं उनका संबंध प्रथम कोष्टक के राशियों के स्वामियो से हों तो शुभफल कारक होते हैं। यदि द्वितीय कोष्टक के राशियों के स्वामियों से संबंध हो तो अत्यन्त अशुभफल कारक बनते हैं। अष्टमेश की दशा अन्तर्दशा सर्वदा अशुभ होती है। अतः अष्टम राशि भी द्वितीय कोष्टक में दिया गया हैं। गोचर में इन ग्रहों का बलवान होना भी ग्रहों के फल शुभाशुभ के सूचक बनते हैं।

लग्नानुसार शुभाशुभ बोधक तालिका-

अं.	राशि लग्न	शुभ प्रदायक/पक्ष			अशुभ प्रदायक/विपक्ष				निर्दलीय/सामान्य फल				
		मं.	सू.	गुरू.	बु.	बु.	मं.	श.	शु.	चं.	शु.	श.	गु.
1	मेष	1	5	9	3	6	8	11	2	4	7	10	12
2	वृष	2	6	10	4	7	9	12	3	5	8	11	1
3	मिथुन	3	7	11	5	8	10	1	4	6	9	12	2
4	कर्क	4	8	12	6	9	11	2	5	7	10	1	3
5	सिंह	5	9	1	7	10	12	3	6	8	11	2	4
6	कन्या	6	10	2	8	11	1	4	7	9	12	3	5
7	तुला	7	11	3	9	12	2	5	8	10	1	4	6
8	वृश्चिक	8	12	4	10	1	3	6	9	11	2	5	7
9	धन	9	1	5	11	2	4	7	10	12	3	6	8
10	मकर	10	2	6	12	3	5	8	11	1	4	7	9
11	कुम्भ	11	3	7	1	4	6	9	12	2	5	8	10
12	मीन	12	4	8	2	5	7	10	1	3	6	9	11

राशीश- मं. 1,8 शु. 2,7 बु. 3,6 गुरू. 9,12 श. 10,11 च. 4 सू. 5

तालिका के लिखे गये अंकों के स्वामियों की दशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों में तीनों में दो के एकमत हो जाने पर तदनुसार फल होता है। गोचर में दशाधीश, अन्तर्दशाधीश और प्रत्यन्तर्दशाधीश बली, निर्बली व षडाष्टक स्थिति का अवश्य ध्यान रहे। गोचर का विशेष महत्व होता है। प्रत्येक अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि 3,7,10 गुरु 5,7,9, मंगल 4,7,8 तथा राहु 5,7,9 को विशेष दृष्टि से देखते हैं।

ग्रहों की राशि-स्वामित्व उच्च-नीच आदि चक्र

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	केतु
कौन सा ग्रह किस राशि का स्वामी है	सिंह	कर्क	मेष	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुंभ	कन्या	मिथुन
कितने अंश तक उच्चस्थ होता है	मेष 10 अंश तक	वृष 3 अंश तक	मकर 28	कन्या 15 अंश तक	कर्क 5 अंश तक	मीन २६ अंश तक	तुला २०अंश तक	मिथुन	धनु
किस राशि के कितने अंश तक नीचस्थ होता है	तुला 10 अंश तक	वृश्चिक 3 अंश तक	कर्क 28 अंश तक	मीन 15 अंश तक	मकर 5 अंश तक	कन्या 27 अंश तक	मेष 20 अंश तक	धनु	मिथुन
किस राशि के कितने अंश तक मूल त्रिकोण होता है	सिंह 1 से 20 अंश तक	वृष 4 से 30 अंश तक	मेष 10 से 18 अंश तक	कन्या 16 से 20 अंश तक	धनु 1 से 13 अंश तक	तुला 1 से 10 अंश तक	कुंभ 1 से 20 अंश तक	कर्क	सिंह
किस राशि के कितने अंशों में स्वक्षेत्री होता है	सिंह 21 से 31 अंश तक	कर्क 1 से 10 अंश तक	मेष 17 से 30 अंश तक तथा वृश्चिक 1 से 30 अंश तक	कन्या 21 से 30 अंश तक तथा मिथुन 1 से 30 अंश तक	धनु 14 से 30 अंश तक तथा मीन 1 से 30 अंश तक	तुला 11 से 30 अंश तक तथा वृष 1 से 20 अंश तक	कुंभ 21 से 30 अंश तक तथा मकर 1 से 30 अंश तक	1 से 10 अंश तक कन्या	मीन ९ से ३० अंश तक
ग्रह मैत्री चक्र मित्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहू	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि राहू केतु	बुध शुक्र राहू केतु	बुध शुक्र शनि	बुध शुक्र शनि
सम	बुध	मंगल शुक्र शनि गुरु	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि केतु	शनि राहू केतु	गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि राहू केतु	राहू केतु	बुध राहू केतु	चंद्र चंद्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सर्यू चन्द्र मंगल	सूर्य चेन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल

राशि गुण धर्म

गुणधर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
चर आदि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०
विषम-सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
क्रूर-सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
तत्त्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	गुलाबी	चित्र-वि.	काला	कबरैला	पीला	कबरैला	कबरैला	मछली का रंग
अन्य मत	”	”	शुकवत	पाटल	थोड़ासफेदधूम्र	अनेक रंग	कृष्ण	सुवर्ण	”	चितकबरा	नेवले का रंग	
सर्वा चि.	”	”	श्यामहरित	रक्त	धूम्र	”	कृष्ण	”	सुनहरा	फीका पीला	बिल्ली सा सफेद	
उदय	पृष्ठोदय	पृ.	शीर्षो	पृ.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	पृ.	पृ.	शीर्षो.	उभयोदय
अन्य मत	”	”	उभयोदय	”	”	”	”	”	”	”	”	”
(फलदी)	”	”	पृष्ठी.	”	”	”	”	”	”	”	”	”
सर्वा चि.	सम	सम	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ		हृस्व	हृस्व	हृस्व
हृस्व/दीर्घ	हृस्व	हृस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	हृस्व	हृस्व
(जा.भरण)	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	जल
शुष्कादि	निर्जल	सजल	निर्जल	जल	निर्जल	जल	जल	निर्जल	निर्जल	जल	जल	जल
मध्य परा.	स्निग्ध	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्ध
रुक्ष	पावजल	अर्धजल	निर्जल	पूर्णजल	निर्जल	निर्जल	पावजल	पावजल	अर्धजल	पूर्णजल	अर्धजल	पूर्णजल
पूर्ण आदि	रज	रज		सत	सत		रज	तम	सत	तम	तम	सत
१५ गुण	रात्रि	रात्रि.	रात्रि.	रात्रि.	दिन.	दिन	दिन.	दिन	रात्री.	रात्री.	दिन.	दिन रात्रि की संधि में बली

द्वादश भावों से विचारणीय विषय-

सर्वार्थ चिन्तामणि ग्रन्थकर्त्ता मुनि ने एक मौलिक नियम का उल्लेख किया है कि किसी भी ज्योतिष विषय का विचार करते समय तीन बातों का विचार करना परमावश्यक है। भाव, भावाधिपति, भावकारक।

प्रथम भाव- शरीर सम्बन्धी समस्त विचार, मस्तिष्क भाव, आयु प्रमाण, सुखदुःख, आत्मा, आरोग्यता, स्थान प्रवास, सम्पत्ति आदि।

द्वितीय भाव- धनधान्य, क्रयविक्रय, स्वर्णादि का विचार, रत्न (माणक, मोती आदि) का विचार, वाणी, विद्या, कुटुम्ब, मुख, जीभ, दाहिनी आँख, शिक्षा, मामा, मौसी, नौकर-चाकर, पितृ सम्बन्धी धन का विचार, स्वोपार्जित धन विचार, भोजन, पात्र, गला, कण्ठ, गर्दन, आदि के विचार के साथ ही प्रशासन का विचार भी किया जाता है।

तृतीय भाव- भुजा हस्त, कण्ठ दक्षिणकर्ण स्वर, आजीविका, यात्रा, नौकर, चाचा, ताऊ, लघुभ्राता, पराक्रम, साहस, व्यापार, उद्यम आदि।

चतुर्थ भाव- मित्र जाति, जनता, कृषि, भूमि, माता श्वसुर स्थायी सम्पत्ति, भूमिगत द्रव्य, वाहन चतुष्पद कूप तडागादि, औषधि, बाग-बगीचा, रसायन- शास्त्र हृदय, कपट, विद्या, स्वयं का सुख-दुःख, हस्त कौशल, भागीदारी, वस्त्र, सुगन्ध, कंधा, छाती आदि।

पंचम भाव-सन्तान, उदर, विद्या, बुद्धि, यान्त्रिक ज्ञान बुद्धि स्मरणशक्ति, लाटरी, सट्टा, मन्त्र, यन्त्रादि की सिद्धि, गोपनीयता, अध्ययन, देवभक्ति, आदि

षष्ठभाव- शत्रु, रोग, अरिष्ट, निराशा, विघ्न द्वेष, व्यसन, नौकर, मानसिक चिन्ता, व्रण, चोट , चोरभय, चतुष्पद, षटरस भोजन, ऋण सौतेली मां, नाभी, अतडियाँ, अशुभकर्म आदि।

सप्तम भाव- पति-पत्नी, स्त्री विवाह, स्त्री के गुण-दोष कामक्रीड़ा, व्यभिचार, शृंगार, स्त्री सौभाग्य, वाद-विवाद पितामह, भतीजा, अदालत, झगड़ा, यात्रा व्यापार, चोरी की वस्तु, नष्टधन की प्राप्ति, संगीत, दूध, दही, गौ, नदी, गुदा, गुहयेन्द्रिय, क्षार, मूत्र आदि।

अष्टम भाव- आयु, व्याधि, मृत्युरोग,पूर्वजन्म तथा अग्रिम जन्म, मृत्युस्थान, पितृऋण, दहेज, आकस्मिक लाभ, शत्रुभय, दुर्ग, गुप्तमार्ग, नौका, नदी पार करना, बन्धन, दण्ड, अपमान, जय-पराजय, पदहानि, अपमान, अपघात, गुदारोग, जननेन्द्रियरोग, बड़ी-बहिन का पुत्र, आदि।

नवम भाव- प्रारब्ध, भाग्य, एश्वर्य, धार्मिक रूचि, मठ, मंदिर, वापी, कूपादि, तीर्थ यात्रा, योग साधना, पुण्य कर्म, दशभक्ति, दान, दया, तप, तत्वज्ञान, चित्तशुद्धि, लम्बीयात्रा, स्वप्न, कानून, व्यापार, जंघा आदि।

दशम भाव- उद्यम, आजीविका, कर्म, धन्धा, नौकरी, व्यापार, राज्य सम्बन्धी कार्य पदाधिकारी प्रशासन, यश, मान-प्रतिष्ठा, यज्ञ, प्रव्रज्या, वैद्य, शिल्पचातुर्य, पितृऋण,, पितृपक्ष, विदेश गमन, वृष्टिज्ञान, आकाशीय वृतान्त, पीठ, जानु आदि।

एकादश भाव- लाभ, द्रव्यप्राप्ति का प्रकार, वाहन वस्त्र, आभूषण, बांया-कान, आशा, कन्या सन्तान, पुत्रनाश, इच्छापूर्ति, बड़े भाई बहिन, दोनों जांघ, दाहिने पैर, पिण्डली, टकुना आदि।

द्वादश भाव- खर्चा, हानि, अंगभंग, दरिद्रता, पाखण्ड, अधिकारक्षय वाहनभंग, निद्राभंग, दण्ड, राजदण्ड, बन्धन कारागार, मोक्ष, त्याग, भोग, गुप्ता विद्या, विदेश गमन, विदेश व्यापार, पैतृक सम्पत्ति का झगड़ा, वामनेत्र, वामकर्ण, दोनो पैरों का विचार आदि।

जिस भाव का विचार किया जाता है, उस भाव से उतनी संख्या के भाव से भी विचार करना चाहिए। जैसे चतुर्थ से चतुर्थ अर्थात् सप्तम भाव से भी करना चाहिए। छठे भाव का विचार जिन विषयों से होता है उसका छठे से छठा भाव लाभ भाव होता है, उससे भी विचार करना चाहिए। परन्तु इस सिद्धांन्त का अभाव भी देखने को मिलता है। जैसे धन से दूसरा भाव तृतीय, व्यय भाव से व्यय में लाभ भाव, तृतीय भाव से तृतीय पंचम भाव पर **भावात् भाव** का सिद्धान्त उलटा पड़ने के कारण इन तीनों भावों के अतिरिक्त अन्य भावों पर **भावात् भाव** का नियम लागू होता है।

किसी भी भाव का विचार करते समय भावस्थ ग्रह, भावेश, भावात् भाव और भाव कारक ग्रह, चारों से विचार करना चाहिए। वृष लग्न की कुण्डली में लग्न में गुरु सप्तम में सूर्य, शुक्र, बुध, मंगल व अष्टम में शनि तथा षष्ठ में केतु नवम में चन्द्र और द्वादश भाव में राहु स्थित है। इस कुण्डली में सप्तम भाव का विचार करने पर सप्तमस्थ 4 ग्रहों में मंगल स्वराशिस्थ होने पर विवाह योग अवश्य बनेगा गुरु से दृष्ट होने पर ऐसा कह सकते हैं परन्तु सप्तम भाव के द्विर्द्वादश में केतु शनि होने मंगल पापाक्रान्त तथा सप्तम भाव सूर्य से सप्तम का कारक शुक्र भी सूर्य से जो अलगाववादी ग्रह है, सम्बन्धित है, तथा कारक ग्रह गुरु भी पाप दृष्ट है तथा गुरु स्वयं भी अष्टमेश होकर सप्तम को देख रहा है। इस कारण इस कुण्डली वाले जातक का विवाह ही नहीं हुआ।

यदि किसी भाव का कारक ग्रह उस भाव में स्थित होने पर उस भाव का विनाश करता है (कारको भावनाशाय) यह सिद्धान्त लागू होता है। यदि कारक ग्रह

का भावस्थ होकर पापग्रह से सम्बन्ध हो जाता है तो अवश्य ही उस भाव की हानि (विनाश) होती है। परन्तु ऐसी स्थिति में कारक ग्रह पर शुभग्रह की दृष्टि होने पर उस भाव की वृद्धि होती है। लग्नेश, तृतीयेश लाभेश दशमेश निज का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लग्नेश तृतीयेश पापग्रह होकर जिस भाव से युति या दृष्टि सम्बन्ध बनाते हों तो उस भाव के प्राणी का विनाश करते हैं। कुम्भ लग्न में लग्नेश शनि और तृतीयेश मंगल का गुरु ग्रह से सम्बन्ध होने पर बड़े भाई का कारक है। इसी प्रकार कुम्भ लग्न में शनि और मंगल पंचम भाव व बुध जो पंचमेश है, दोनों पर युति या दृष्टि सम्बन्ध बनाते हों तो सन्तानहीन योग बना देते हैं।इसी प्रकार अन्य भावों पर भी लग्नेश तृतीयेश लाभेश दशमेश का सम्बन्ध इस भाव के प्राणी का विनाश करते हैं।

गुरु शुभ ग्रह है इसकी दृष्टि 5,7 एवं भाव पर तथा इन राशियों के स्वामी पर पड़ती हो तो शुभ फलप्रद माना गया किन्तु गुरु की राशि धनु या मीन में तथा ग्रह के साथ जो ग्रह स्थित हो उसके प्रभाव को लेकर गुरु-5,7,9 भाव या भावेशों को देखता है। मान लीजिए गुरु, धनु राशि में मंगल के साथ है तो मेष मिथुन सिंह राशि पर तथा इन राशियों के स्वामी पर शुभफलप्रद मानी जाती है किन्तु मंगल के साथ होने से मंगल शनि राहु क्षीण चन्द्र आदि पापग्रहों से सम्पर्क स्थापित कर जिन भावों को देखेगा उनका शुभ फल नहीं होकर अशुभफल ही होगा।

लाभेश, धनेश, भाग्येश में से कोई भी ग्रह लग्न से या चन्द्र लग्न से केन्द्रस्थ हो तथा 2,5,11 भाव का स्वामी होकर गुरु भी केन्द्र में हो तो अखण्ड साम्राज्य नामक योग बनता है जो अतुल धन, यश आदि प्रदान करता है।

यदि लग्नेश व तृतीयेश पापग्रह हो तो दोनों जब किसी ग्रह भाव पर प्रभाव डालें तो उस भाव से सम्बंधित व ग्रह से संबंधित प्राणी को कष्टप्रद होते हैं। कुम्भ लग्न में लग्नेश शनि तथा तृतीयेश मंगल दोनों पापीग्रह लाभ भाव को तथा लाभ भाव के कारक पर अपना प्रभाव युति दृष्टि द्वारा डाल रहे हों तो वह भाव जन्य प्राणि का सर्वदा विरोध या हानि करते रहते हैं। कभी -कभी उस प्राणी पर प्राणघातक प्रयोग भी कर देते हैं। ग्रह अपने भाव की राशि को देखने से उस भाव सम्बन्धी प्राणी का विनाश तथा उस भाव से अन्य विचारणीय विषय की वृद्धि करता है।

द्वितीय भाव पर शुक्र और गुरु प्रभाव कानून (लॉ) की शिक्षा, द्वितीय भाव राहु और शनि से प्रभावित डाक्टरी, यदि बुध, शुक्र से प्रभावित हो तो कला (आर्ट) का ज्ञान होता है। धनेश का सूर्य से सम्बन्ध होने पर विद्या व धन दोनों की प्राप्ति कर उपकार (दूसरों की भलाई) करता है। यदि धनेश का शनि से संबंध हो तो विद्या पक्ष को कमजोर करता है।

सूर्य शनि राहु और मंगल पृथक्ताजन्य ग्रह है। इनका जिस भाव या भावेश से युति या दृष्टि सम्बन्ध हो, उस भाव को हानिप्रद होते हैं। धनभाव पर इन चारों ग्रहों में से दो या तीन ग्रहों का युति या दृष्टि सम्बन्ध होने पर कुटुम्ब से अलगाव कर देता है, तथा धन की हानि करता है।

इस प्रकार ये चारों ग्रह जिस भाव से सम्बन्ध बनाते हैं, उससे अलगाव या उस भाव की हानि करते हैं।

भाव के कारक ग्रह-

- ☐ प्रथम भाव- के कारक सूर्य, चन्द्र
- ☐ द्वितीय भाव- का कारक गुरु
- ☐ तृतीय भाव- लघुभ्राता का कारक मंगल
- ☐ चतुर्थ भाव- माता का चन्द्र, क्षेत्र का शनि, मन का चन्द्र
- ☐ पंचम भाव- विद्या का बुध, पुत्र का गुरु
- ☐ षष्ठम भाव- रोग का शनि, हिंसा का मंगल
- ☐ सप्तम भाव- स्त्री का शुक्र, पति का गुरु
- ☐ अष्टम भाव- आयु का शनि
- ☐ नवम भाव- धर्म का गुरु, सूर्य
- ☐ दशम भाव- पिता का सूर्य, राज्य का सूर्य
- ☐ एकादश भाव- बड़ा भाई का गुरु
- ☐ द्वादश भाव- भोगों का शुक्र

कारक ग्रह विवेचन-

ये 12 भाव एवं भावों के कारक ग्रह हैं। राहु शनि, सूर्य और मंगल ये 4 ग्रह अलगाव (पृथक्ता) करने वाले हैं इनका जिस भाव में योग हो अथवा दृष्टि हो उस भाव से जातक को पृथक्ता देते हैं। अर्थात् तज्जन्य फल की हानि कर देते हैं। इन चार पृथकतावादी ग्रहों में से एक, दो, तीन, चार की दृष्टि युति से फल में न्यूनाधिकत्व होता है। चारों की युति दृष्टि से उस भाव के सम्पूर्ण फल का विनाश, तीन की युति दृष्टि से कुछ न्यून फल का ह्रास होता है एक से भी कुछ न्यून अर्थात् फल विवेचन करते समय इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

कल्पना करेंगे दशम भाव पर इनकी युति दृष्टि होने पर दशमेश पर युति दृष्टि से दशम के कारक सूर्य पर और दशम से दशम (सप्तम) भाव और उसके भावेश पर इनकी दृष्टि युति से दशम भाव से जिस बात का विचार होता है उसकी हानि कर देते हैं केवल दशम का ही विचार नहीं करेंगे। भावेश भावात् भाव व भाव कारक का भी विचार अवश्य करें।

यदि कोई ग्रह स्वक्षेत्रीय होकर स्थित हो और वह ग्रह उस भाव का कारक भी हो तो उस भाव का नितान्त अनिष्ट फल भी होता है अथवा अतीव शुभ फल भी मिलता है। जैसे पंचम भाव में गुरु स्वराशिगत (धनु या मीन राशि का) हो तो या उच्च राशि कर्क का हो और उस पर सूर्य, शनि, राहु, केतु मंगल इन अलगाववादी ग्रहों की युति दृष्टि हो तो, पुत्र सन्तति का अभाव कर देते हैं तथा वह गुरु शुभ युत दृष्ट होने पर सन्तान बाधक योग निर्बल हो जाता है। इस प्रकार सभी भावों में उस भाव के कारक के स्वगृही व उच्चस्थ होने पर विचार करना चाहिए।

किसी भाव पर अलगाववादी (सू.श.रा.के.मं.) की युति व दृष्टि का प्रभाव भाव, भावेश व भावात् भाव व कारक ग्रह इन सभी पर पड़ता है। गुरु पुत्र भाव का कारक होने से उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव या युति का प्रभाव होने से सन्तान बाधक योग बनता है। स्वगृही व उच्चस्थ गुरु पर अशुभ ग्रहों की युति दृष्टि न होकर शुभ ग्रहों की दृष्टि युति से सन्तान प्राप्ति का योग प्रबल बन जाता है। मं. रा. के.श.सू. क्षीण चन्द्र (अमावस से 6 दिन पीछे से अमावस के 6 दिन आगे तक) माना जाता है बुध पापग्रह के साथ पापी बन जाता है गुरु शुक्र सदा शुभ ग्रह मान्य है। यदि कोई ग्रह अपने स्वगृह को किसी भी भाव में स्थित होकर देखता है तो उस भाव से विचारणीय पदार्थों की वृद्धि करता है किन्तु तद्भाव सम्बन्धी जीव की हानि करता है।

जैसे कुम्भ राशि पंचम भाव में है उसमें सूर्य बैठा (स्थित) है जो लाभ भावस्थ सिंह राशि जो उस राशि का स्वामी है उसे देखता है तो लाभ, लालसा आदि पदार्थों की तो वृद्धि करेगा किन्तु जीव का अर्थात् बड़े भाई का एकादश से विचार होता है, उसका नाश करता है। यहॉ ज्योतिष शास्त्र का नियम है कि ग्रह निज भाव को देखने पर उसकी वृद्धि करता है। इस प्रकार अन्य भावों का भी विचार करना चाहिए।

सूर्य चन्द्र सदा मार्गी राहु केतु सदा वक्री अन्य मं. बु. गु.शु.श. ये वक्री मार्गी दोनों अवस्था में चलते हैं। वस्तुतः भौमादि 5 ग्रह चलते तो मार्गी ही हैं किन्तु भूतल पर निवास करने वालों को वक्री दिखाई देते हैं। जैसे दो रेलगाड़ियाँ यदि एक ही दिशा में चल रही हों तब मन्दगतिक गाड़ी विपरीत दिशा में चलती हुई दृष्टिगोचर होती है।

ज्योतिष शास्त्र में दृष्टि गोचर होने वाली स्थिति का मूल्य वास्तविकता से अधिक है। अतः दृष्टि में यदि वक्री दिखाई देते हैं तो उसको ही प्रधानता दी गई है। जैसे - आधुनिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में सूर्य गतिशील नहीं है पृथ्वी तथा अन्य ग्रह गतिशील है। पृथ्वी के गतिशील की मान्यतानुसार सूर्य को प्रतिदिन चलता हुआ, पूर्व में उदय लेकर पश्चिम अस्त होता हुआ देखते हैं।

यदि कोई ग्रह नीच राशिगत वक्री हो तो उच्च राशि का फल करता है और उच्च राशिगत वक्री होने पर नीच का फल करता है। यदि कोई ग्रह जन्म लग्न में नीचस्थ हो और नवमांश लग्न में उच्च राशि का हो तो उच्च का फल करता है। यदि जन्म लग्न में उच्च का हो और नवमांश में नीच का जो तो नीच के समान फल करता है।

सूर्य चन्द्र के अतिरिक्त पाँच ग्रह दो राशि के स्वामी होते हैं यदि ग्रह स्वराशि को देख रहा हो और शुभ ग्रह द्वारा भी दृष्ट हो तो उस भाव की पुष्टि होकर दूसरी स्वराशि भी उस ग्रह की पुष्ट होकर शुभ फलप्रद होती है।

कर्क लग्न का जन्म हो मंगल कन्या राशि में स्थित होकर 10 वे भाव को अपनी स्वराशि को देखता है और चतुर्थ भावगत बुध गुरु व शुक्र की भी मेष राशि पर दृष्टि हो तो दशम भाव की पुष्टि हो तो दशमभाव की पुष्टि होकर वृश्चिक राशि जो पंचम है उसकी भी अर्थात् सन्तान भाव की पुष्टि भी होती है।

यदि कोई ग्रह अपनी राशि या उच्च राशि में स्थित होकर केन्द्र अथवा शुभ स्थान में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो परन्तु निज स्थान से अष्टम भाव में हो तो अपने निज भाव की पुष्टि करने के पश्चात् उसकी हानि कर देता है।

तुला लग्न में दशमस्थ गुरु उच्चराशिगत होकर केन्द्र में स्थित होने धनु राशि तृतीय में छोटे भाई के स्थान में है जो गुरु की राशि है अत- छोटे भाई को जन्म देकर अल्पायु बना देता है क्योंकि तुला लग्न में मेष राशि का मंगल सप्तमस्थ होकर गुरु केन्द्र में उच्चस्थ होकर पाप दृष्ट होने से और तृतीय का स्वामी होने से छोटे भाई की उत्पत्ति करता है, परन्तु बाद में उसको अल्पायु कर देता है।

निष्कर्ष यह है कि कोई भी ग्रह बलवान् होकर केन्द्र में स्थित हो, परन्तु पाप दृष्ट होकर अपने भाव से अष्टमस्थ होने से उस भाव को पुष्ट कर पश्चात् उसकी हानि कर देता है।

कुम्भ लग्न में दशमस्थ वृश्चिक राशि में जो मंगल की राशि में अतः स्वगृही है, और केन्द्र में है और अष्टमस्थ शनि जो पाप ग्रह है, उससे मंगल दृष्ट है और तृतीय भाव में मेषराशि, भाव में मेष राशि भ्रातृभाव की है, उससे अष्टम भाव में बैठने से लघुभ्राता उत्पन्न होकर अल्पायु में ही उसका निधन (मृत्यु) हो जाता है।

किसी ग्रह के द्विर्द्वादश में (दूसरे और बारहवें) पापग्रह होने से पापाक्रान्त तथा शुभग्रह होने से शुभ हो जाता है।

चन्द्र से 6,7,8 भावों में शुभ ग्रहों की स्थिति से चन्द्राधियोग बनता है। जो धनदायक योग बनता है। इस योग में चन्द्रमा पर सप्तमस्थ शुभग्रह की दृष्टि पडती

है। छठे व आठवे शुभ ग्रह की चन्द्र के पार्श्ववर्ती द्वितीय व द्वादश भाव पर पड़ने से चन्द्र का शुभ मध्यत्व सिद्ध होता है।

भाव तथा ग्रहों के शुभत्व व पापत्व का विचार करते समय कुछ भाव व ग्रह के द्विर्द्वादश (दूसरे और बारहवें) भावों पर भी शुभ या अशुभग्रहों की दृष्टि का ध्यान रखना चाहिए।

कुम्भ लग्न में लाभ भाव में स्थित गुरु हो अष्टम में शनि हो और षष्ठ में मंगल होने से लाभ भाव में धनु राशि में स्थित गुरु पर तो पाप ग्रह की दृष्टि नहीं है किन्तु गुरु के पार्श्ववर्ती दूसरे व 12 वें भावों पर पाप दृष्टि हो जाने से 11 वें भाव के स्वामी गुरु के स्वगृही होने पर बड़े भाई का सुख होना चाहिए, किन्तु पार्श्ववर्ती भावों पर पाप दृष्टि से बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता है।

स्वराशि में स्थित ग्रह पर पार्श्ववर्ती दूसरे और 12 वें भावों पर पाप दृष्टि होने पर वह ग्रह अत्यन्त निर्बल हो जाता है अर्थात् ग्रह जिस भाव में स्थित है उसका विनाश होना निस्संदेह है।

मिथुन लग्न में तृतीय में सिंह राशिस्थ स्वगृही से लघुभ्राता व पिता का सुख पूर्ण होना चाहिए किन्तु पार्श्ववर्ती द्वितीय और चतुर्थ भाव पर सूर्य के शत्रु शनि शुक्र की दृष्टि पड़ने पर लघु भ्राता व पिता का सुख प्राप्त नहीं होता।

क्षीण चन्द्र स्वगृही उच्च व शुभ भाव स्थित भी शुभ फल नहीं करता (क्षीण चन्द्र कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक शास्त्रकारों ने माना है) अमावस्या और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को तो चन्द्र के दर्शन नहीं होते हैं अतः इसे मृतावस्था भी मानते हैं। इससे सिद्ध होता है कि चन्द्र सूर्य के जितने अधिक समीप होता है उतना ही अधिक निर्बल होता है। जो कृष्णपक्ष दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक आकाश में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। इस कारण ही जातक के बालारिष्ट योगों में चन्द्र के बलाबल का विशेष विचार किया गया है। चन्द्र का चित्त (मन) से सम्बन्ध होने के कारण व्यक्ति के चित्त पर भी बलाबल का प्रभाव पड़ता है। चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक होने के कारण चतुर्थ भाव सम्बंधित सभी विषयों पर चन्द्र के बलाबल का विचार शास्त्रों ने किया है।

कर्क लग्न में दशमस्थ सूर्य उच्च राशिगत होता है और चन्द्र एकादशस्थान में वृष राशि का उच्चस्थान में स्थित होने से शुभफलप्रद माना जाता है, यह शास्त्र का नियम है। किन्तु उपर्युक्त स्थिति में चन्द्र सूर्य के अति समीप होने से क्षीणत्त्व के कारण अशुभ फल कर्त्ता ही माना गया है जो चतुर्थ भाव का कारक होने से चतुर्थ भाव सम्बन्धी सभी विषयों में शुभ फल दायक नहीं होता। माता, मन, मित्र, भूमि, वाहनादि, का जो चतुर्थ भाव से विचार किया जाता है उसमें उपर्युक्त स्थिति में

अशुभ फलप्रद ही रहेगा। अतः उपर्युक्त उच्चस्थ चन्द्र मातृ कष्ट तथा एकादश भाव से संबंधित बड़े भाई को कष्टप्रद ही रहेगा।

बृहज्जातक ग्रन्थ में बालारिष्ट योग में 5,7,8,9,12 भावों में अशुभ ग्रह युक्त चन्द्र को बाल्यावस्था में ही जातक की मृत्यु का द्योतक माना गया है।

बुध की शास्त्रकारों ने कुमार अवस्था मानी है और शनि की वृद्धावस्था की मान्यता है अतः बुध अपना शुभाशुभ का प्रभाव कुमार अवस्था जातक जब तक है उस समय तक अपना शुभाशुभत्व अधिक प्रकट करता है तथा शनि प्रौढ़ावस्था में अपना शुभाशुभत्व प्रकट करता है।

स्वराशिस्थ बुध सप्तम भाव में शुभग्रह शुक्र के साथ हो परन्तु सूर्य और शनि से अथवा सूर्य राहु से अथवा शनि राहु से युत दृष्ट होने पर विवाह के एक वर्ष के भीतर ही पत्नी का वियोग करा देता है।

इस योग में सप्तम भाव सप्तमेश सप्तम भाव के कारक तीनों पर पापदृष्टि ही कारण है और वृद्ध कुमार होने से विवाह के पश्चात कुमार अवस्था में शीघ्र गति वृद्ध पत्नी से पृथकता (तलाक, अलगाव, मृत्यु) कर देता है।

बुध कारक रूप में दान, परोपकार, सेवा, शुभ कर्मों का कारक माना गया है। नवम भावस्थ बुध विशेष शुभफलप्रद होता है। इसका कारण भाव नवम और बुध दोनों ही दान,धर्म, पुण्य, परोपकार, यज्ञादि शुभकार्यों के कारक माने गये हैं।

शुक्र का स्वरूप भोगात्मक है द्वादश भाव भी भोग का स्थान है अतः किसी जन्म लग्न में द्वादश स्थान में शुक्र होने से जातक को भोगों की प्राप्ति होती है। यदि व्यय भाव में व्ययेश के साथ शुक्र की स्थिति हो तो प्रबल भोगों की प्राप्ति होती है। अतः यह योग धनी भी बनाता है। वैसे धनेश व लाभेश एक साथ स्थित हों अथवा परस्पर दृष्टि हो तो धनी योग कारक हो जाते हैं यदि धनेश लाभेश अन्यान्य राशिगत हों अथवा दोनों धन भाव व लाभ भाव में हो तो महाधनीयोग बना देते हैं।

मेष लग्न में धनेश शुक्र का व्यय भाव में शुभफल होता है। अन्य ग्रह यदि धनेश होकर व्यय भाव में शुभफलप्रद नहीं होते हैं। किसी भी जन्मलग्न में जातक को शुक्र द्वादश में स्थित होकर शुभफलप्रद ही होता है। कर्क लग्न में शुक्र धन भाव में अथवा व्यय भाव में स्थित हो तो लाभदायक होता है। यदि शुक्र षष्ठ स्थान में भी स्थित हो तो व्यय भाव पर दृष्टि पड़ने से भोगों की प्राप्ति करवाता है तथा धन प्रद भी होता है। शनि लग्न में भी स्वगृही व उच्चस्थ हो तो शुभफल कारक होता है। शुक्र जिस भाव से द्वादश स्थान में स्थित हो अथवा भावेश से व्यय में हो अथवा जिस कारक ग्रह से द्वादश हो उन सबकी वृद्धि करता है।

कुम्भ लग्न में अथवा वृश्चिक लग्न में स्थित होकर तथा गुरु द्वितीय (धन भाव में स्थित होने पर महाधनी) लक्षाधिप योग बनता है। गुरु धन का कारक होकर धनु भाव में स्थित होने शुक्र उसके व्यय भाव में स्थित होने से भाव भावेश और कारक तीनों से व्यय भाव में हो जाता है।

सिंह अथवा वृश्चिक लग्न में जन्म हो, गुरु पंचम भाव में और शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो बहुपुत्रवान योग बन जाता है। सिंह लग्न में पंचम में धनु राशि का गुरु स्थित हो तो उससे व्यय भाव में शुक्र की स्थिति पंचम भाव अर्थात् पुत्रों की वृद्धि करता है। क्योंकि शुक्र पंचम भाव, पंचम भावेश और पंचम भाव के कारक तीनों से व्यय स्थान में पड़ जाता है।

इस प्रकार अन्य भावों के भी द्वादश में शुक्र का विचार करना चाहिए। राज्य संबंधी विचार में दशम स्थान, दशम से दशम सप्तम स्थान, लग्नेश, सूर्य और द्वितीय जिससे प्रशासन का विचार किया जाता है।

यदि द्वितीय भाव का स्वामी सिंहासन, पारावतांश आदि में बली होकर गुरु द्वारा दृष्ट हो तो सैंकड़ों मनुष्यों का अधिकारी होता है। इससे द्वितीय भाव प्रशासन का सिद्ध होता है। धनभाव में बुध मंगल, लाभ में शुक्र, व्यय में सूर्य, नवम में गुरु, षष्ठ में चन्द्र, सप्तम में शनि, दशम में राहु, चतुर्थ में केतु है इस ग्रह स्थिति में लग्न द्वितीय भाव सप्तम भाव दशम भाव तथा सूर्य राज्य भाव को अत्यधिक प्रबलता उपरोक्त ग्रह स्थिति से मिलती है।

सिंह अथवा कन्या लग्न हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो दीर्घरोगी योग बनता है। यदि वृष लग्न का जन्म हो तृतीय में राहु, चन्द्र, नवम में केतु, दशम में शनि द्वादश में सूर्य हो तो जातक की माता को दीर्घ रोगी बनाते हैं। चतुर्थेश सूर्य पर शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि है। शनि माता के षष्ठ स्थान रोग का स्वामी है। माता के षष्ठ स्थान मकर राशि में केतु स्थित है। चतुर्थ भाव का कारक चन्द्र, राहु, केतु से आक्रान्त है अतः माता को दीर्घरोगी होने का प्रबल योग बन रहा है।

सिंह लग्न का स्वामी चतुर्थ भाव (माता) के घर में सूर्य तथा चन्द्र जो माता भाव का स्थिर कारक होकर उच्चस्थ चतुर्थ को देख रहा है। इस प्रकार लग्न सूर्य और चन्द्र का सम्बन्ध होने से जातक का जन्म मातृ कुल में होने का योग बनता है। जन्म लग्न में शुभ ग्रह हो अथवा लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि तथा लग्नेश बलवान हो तो जातक बचपन से ही सुखी होता है।

परस्पर शुभ ग्रहों का केन्द्र में होना अथवा 1,4,7,10 भावों में शुभग्रहों का होना दीर्घायु योग बनाते हैं। शुभग्रहों का केन्द्रस्थ होना लग्न को बल देता है। यदि

ग्रह स्वक्षेत्र अथवा उच्च राशि में होकर परस्पर केन्द्र योग बनाते हों तो कारकाख्य योग बनता है, यह योग भी शुभ फलकारक होता है, इस योग में केन्द्र स्थान में ग्रह का दोनो आवश्यक नही है। कारकाख्य योग दीर्घायु कारक होता है। ग्रह उच्चराशि, मित्रराशि, स्वगृही होकर परस्पर केन्द्रगत हों, (यह आवश्यक नहीं कि वे लग्न से भी केन्द्रगत हो) तब भी प्रबल कारकाख्य योग बन जाता है, इससे चतुर्थ और दशम भावगत केन्द्र योग अधिक प्रबल होता है। यदि चन्द्र से दशमभाव में सूर्य हो और चन्द्र पापग्रहों से युक्त हो तो माता को अल्पजीवी योग बन जाता है।

शुभ ग्रहों का केन्द्रस्थ होना, परस्पर केन्द्र में होना, बलवान ग्रहों का परस्पर केन्द्रगत होना कारकाख्य योग बनाकर जातक को दीर्घायु प्रदान करता है। इसके विपरीत पाप ग्रहों का केन्द्र में होना परस्पर केन्द्र में बली पापग्रहों का केन्द्रस्थ होना अल्पायु योग बनाते हैं। सर्वार्थ चिन्तामणि में पापग्रहों की स्थितिवशात् अनेक अल्पायु योग लिखे हैं।

जन्मलग्न, और लग्नेश सूर्य लग्न और लग्नेश चन्द्र, लग्न और लग्नेश अर्थात जन्मलग्न, चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न से और इनके लग्नेशों से जातक के लग्न सम्बन्धी विचार करने चाहिए, यमलादि योगों का भी इसी प्रकार विचार करना चाहिए।

बृहज्जातक ग्रन्थ में पर (पर पुरुष से उत्पन्न) जात योग में (न लग्न मिन्दुंच गुरुर्निरीक्षते) इस श्लोक द्वारा लग्न चन्द्र व सूर्य लग्न तीनों से परजात योग दर्शाया गया है। वृहत्तपाराशर होरा ग्रन्थ में सुदर्शन चक्र द्वारा भी इसकी पुष्टि की है। अतः फल के विचार में तीनों लग्नों से विचार करना अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

लग्न,लग्नेश चन्द्रलग्न चन्द्रलग्नेश सूर्यलग्न सूर्यलग्नेश अर्थात जन्म लग्न किसी राशि का हो, चन्द्र जिस राशि में स्थित सूर्य जिस राशि में स्थित हो, उस लग्न राशि और उस लग्न के स्वामी द्वारा विचार करना चाहिए। फलित ग्रन्थों में यमल योग में इस प्रकार का विचार किया है।

लग्नेश निर्बल हो, नीच, अस्त, पाप,युतदृष्ट, 6,8,12, स्थानों के स्वामी से युत दृष्ट हो इन योगों से लग्नेश निर्बली हो जाता है, यदि ऐसी स्थिति में लग्नेश सूर्य हो हडडी में, चन्द्र से रक्त में रोग होता है। इस प्रकार अन्यों के निर्बल होने पर उन ग्रहों का शरीर में धातुओं पर प्रभाव हो तज्जन्य व्याधि उत्पन्न करते हैं। मंगल मांस पेशियों में, बुध त्वचा में, गुरु मज्जा में (चरबी) में, शुक्र वीर्य में, शनि राहु स्नायु (नसों) में रोगोत्पत्ति करते हैं। भाव यह है जब कोई ग्रह 6,8,12 स्थान में या इनके भावेश की युति दृष्टि, नीच, अस्तंगत, पाप दृष्टयुत हो शुभ युति दृष्ट न हो तो अपने धातु के प्रकोप से व्याधि उत्पन्न करता है।

यदि लग्नेश लग्न में हो और पापाक्रान्त हो तो लग्नस्थ राशि द्वारा अंग का विचार कर रोग का ज्ञान करना चाहिए। लग्नराशि मेष होने पर शिर में, वृष से मुख में, मिथुन से श्वास की नली में, कर्क से छाती फेफड़े में, सिंह से पेट में, कन्या से आंतों में, तुला से जननेद्रिय में, वृश्चिक से अण्डकोष में, धनु से कमर में, मकर से जानु में, कुम्भ से जंघा में, मीन से पैर में बीमारी होती है। लग्न में चन्द्र स्वक्षेत्री हो वह मंगल और सूर्य से दृष्ट हो तो मनुष्य कुबड़ा होता है। मीन लग्न में शनि सूर्य और मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य लंगड़ा होता है, इस योग के लिए सूर्य और मंगल की दृष्टि लग्न और लग्नेश दोनों पर होनी चाहिए।

षष्ठेश, द्वितीय भाव को, तथा द्वितीयेश को देखे तथा द्वितीय भाव का स्वामी षष्ठ भाव में हो दत्तक योग बनता है।

कुम्भ लग्न में गुरु द्वादश में नीच होकर राहु के साथ हो मनुष्य धन और चरित्र दोनों से रहित होता है।

चतुर्थ भाव से भवन भूमि जायदाद का भी विचार होता है, यदि शनि चतुर्थ भाव को देखता हो तब जमीन जायजाद की वृद्धि करता है, क्योंकि शनि क्षेत्र का कारक है। जैसे बुध विद्या बुद्धि का कारक है, बुध का पंचम बैठना विद्या प्रदान करता है लेकिन पाप दृष्ट नहीं होना चाहिए। इसी नियमानुसार शनि जो आयुष का कारक है, जब अष्टम स्थान को देखता है या अष्टम में बैठता है तो आयु की वृद्धि करता है। वृष और तुला में शनि कारक अर्थात् केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी होने से शुभफलप्रद होता है यदि ऐसी स्थति में शनि सूर्य को देखता है तो राज्य में बाधा की बजाय उन्नतिप्रद होता है ऐसी स्थिति में शनि सूर्य का शत्रु होकर भी मित्रवत् कार्य करता है।

जैसे मेषादि राशियां काल पुरुष के अंगों को दर्शाती है वैसे ही लग्नादिभाव भी अंग का प्रदर्शन करते हैं। यदि एक ही संख्या वाले भाव तथा राशि पर तथा उनके स्वामियों पर पापग्रहों की दृष्टि हों या उनके साथ स्थित हों तो काल पुरुष के द्वारा जो अंग प्राप्त होता है उसमें रोग होता है।

जैसे किसी भी लग्न का जन्म हो यदि चतुर्थ भाव या चतुर्थेश या चन्द्र या कर्क राशि में चारों पापयुत दृष्ट हों तो छाती सम्बन्धी नियोनिया, क्षय इत्यादि रोग होते हैं। भावों में लग्न से शिर, द्वितीय से मुख, तृतीय से श्वास की नली कण्ठ तथा कन्धे, चतुर्थ से छाती, पंचम से पेट, षष्ठ से अंतड़ियाँ सप्तम से गुप्तेन्द्रिय, अष्टम से अण्डकोश, नवम से कमर, दशम से जानु, एकादश से जंघा और द्वादश से पैरों का विचार करना चाहिए। जैसे पंचम राशि सिंह, सूर्य पंचम भाव पंचमेश इन सब पर पाप दृष्टि या इनके साथ पापग्रहों के योग से उदर व्याधि होती है।

तुला लग्न में, चन्द्र दशम में, शनि अष्टम में तथा मंगल तृतीय भाव में हो तो छाती से संबंधित रोग होता है क्योंकि दशम में कर्क राशि में चन्द्र दो पाप ग्रहों से देखा गया है। यह योग स्त्रीवर्ग में घटता है क्योंकि सप्तम से चतुर्थ भाव दशम में कर्क राशिस्थ चन्द्र है किसी व्यक्ति का मीन लग्न हो पंचम भाव पर पापीग्रहों की दृष्टि 5 वे भाव का स्वामी चन्द्र सूर्य बुध से युक्त हो पंचमेश चन्द्र पर मंगल और शनि की दृष्टि हो एकादश में सूर्य चंद्र और बुध का योग हो तो उदर सम्बन्धी रोग अवश्य होता है। तात्पर्य यह है कि भाव, भाव स्थित राशि, भावेश और भाव से भाव एवं भाव कारक ग्रह पर पाप युत दृष्टि से उस भाव संबंधि व्याधि उत्पन्न होती है।

जिस भाव का कारक ग्रह शनि तथा राहु के साथ षष्ठ भाव में चला जाय उस भाव से सम्बन्धित व्यक्ति को रोग चिरकाल तक रहता है। गुरु शनि तथा राहु के साथ हो तो पुत्र को असाध्य रोग होता है। गुरु पंचमेश भी सिंह व वृश्चिक लग्न में होता है अतः ऐसी स्थिति में तो निश्चित ही पुत्र असाध्य रोग से ग्रसित रहेगा। रोग का निर्णय पंचम भाव को लग्न मानकर करना चाहिए। शनि और राहु दोनो ही मन्द गति ग्रह है अतः दीर्घ काल तक रोगी बनाये रखते हैं।

मकर लग्न में मेष में (चतुर्थ में) बुध माता को रोगी बनाता है, बुध षष्ठेश होकर मातृ भाव में पड़ता है तथा माता भाव से भी षष्ठाधिपति कन्या का स्वामी बन जाता है।

मृत्यु के विचार करने में लग्न और अष्टम दोनों भावों से विचार करना चाहिए। शास्त्रकारों ने लिखा है जब अष्टम व लग्न के स्वामी निर्बल हों जब षष्ठेश तथा मंगल से युक्त हों तब युद्ध में मृत्यु होती है। नवम भाव में सूर्य चन्द्र स्थित होने पर पिता की मृत्यु जल में होती है। लग्नाधिपति निर्बल होकर नीच का होकर सूर्य से युक्त हो अथवा पाप युक्त दृष्ट चतुर्थ में हो तथा निर्बल जलीय ग्रहों से चतुर्थ भाव का स्वामी का योग हो तो जल द्वारा पिता की मृत्यु होती है।

तुला लग्न में शुक्र लग्न में हो तथा मंगल के साथ हो तो अग्नि अस्त्र-शस्त्रादि से मृत्यु प्रदान करता है।

लग्नेश द्वितीय भाव में हो अष्टमेश अष्टम में हो तृतीय तथा एकादश के स्वामी भी द्वितीय भाव में हो तो आत्मघात से मृत्यु होती है।

मिथुन लग्न में जन्म हो और दशम भाव में गुरु स्थित हो तो राज्य की ओर से धन, मान, पदवी की प्राप्ति करवाता है।

आजीविका के विचार में 1,2,10,11 भावों से तथा इनके स्वामियों से विचार करना चाहिए।

1,2,10,11 भावों के स्वामियों पर राहु सूर्य तथा शनि का प्रभाव हो अर्थात् इन भावों के स्वामी के साथ में ये ग्रहों हों, अथवा इन्हें देखते हों, मनुष्य डॉक्टर बनता है। कर्क लग्न में चन्द्र, धन में सूर्य, व्यय में मंगल, गुरु, षष्ठ में शनि, दशम में राहु, चतुर्थ में केतु स्थित हों। यहाँ द्वितीय भाव पर सूर्य का दशम पर राहु का, दशमाधिपति पर शनि का, लाभ स्थान पर सूर्य का, केन्द्रिय प्रभाव लाभादिपति का सूर्य तथा राहु का प्रभाव तथा शनि द्वारा दृष्ट होना एवं लग्न लग्नाधिपति राहु से केन्द्र में होना सूर्य शनि राहु डॉक्टरी सूचक ग्रहों का प्रभाव होने से डॉक्टर बनने का योग बना। कुम्भ लग्न में सू. चं. बु. द्वादश में शुक्र चतुर्थ में मंगल दशम में गुरु, तृतीय में शनि राहु और नवम में केतु स्थित होने पर 1,4,7,10 भाव और भावाधिपति सूर्य शनि राहु के प्रभाव में होने से डॉक्टर बनने का योग बनता है। सिंह लग्न में सूर्य, द्वादश में बुध शुक्र, एकादश में राहु, पंचम में केतु षष्ठ में गुरु, तृतीय में शनि और नवम मंगल स्थित है इसमें भी 1,2,10,11 भाव तथा भावेश सूर्य, शनि राहु के प्रभाव में होने से डॉक्टर बनने का योग बनता है।

तुला लग्न में चतुर्थ में सूर्य,चन्द्र पंचम में, शनि शुक्र, बुध षष्ठ में मंगल दशम में, गुरु और नवम में राहु, तृतीय में केतु इस ग्रह स्थिति 1,2,10,11 भाव व भावेश सूर्य शनि राहु के प्रभाव में है। तुला लग्न में शनि, धन में सूर्य, बुध शुक्र सप्तम में चन्द्र मंगल,नवम में गुरु, षष्ठ में राहु और व्यय में केतु स्थित है। मीन लग्न में राहु, तृतीय में शनि, षष्ठ में बुध सप्तम में, अष्टम में सूर्य चन्द्र नवम में शुक्र केतु दशम में मंगल लाभ में गुरु स्थित है।

चन्द्र से षष्ठ सप्तम अष्टम स्थानों में शुभग्रह स्थित होने पर अधियोग बनता है जो विशेष धन और मानप्रद योग है यहाँ चन्द्र पर अधियोग बनता है जो विशेष धन और मानप्रद योग है यहॉ चन्द्र पर तथा परवर्ती चन्द्र से द्वितीय और द्वादश पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ती है।

जिस भाव से अष्टम में राहु उसी भाव से एकादश स्थान में शनि स्थित हो तो स्नायुरोग (अधरंग) उत्पन्न होता है।

गुरु और बुध वाणी के कारक तथा 2,5 भाव वाणी के मानते है अतः 2,5 भाव व बुध गुरु निर्बल हों पापयुक्त दृष्ट हों तब मूक योग बनता है।

वृष लग्न में जन्म हो बुध गुरु द्वितीय भावस्थ होकर मंगल और शनि से दृष्ट हो तो मूक योग बनता है।

षष्ठ भाव में राहु स्थिति होना म्लेच्छ व्यक्तियों से सम्पर्क बनता है।

वृष लग्न मे चन्द्र राहु के साथ षष्ठ भाव में स्थित होने से म्लेच्छ व्यक्तियों से सम्पर्क बनाता है।

जन्म लग्न, चतुर्थ भाव, पंचम भाव चन्द्र और बुध सभी पापयुत दृष्ट होने पर उन्माद योग की उत्पत्ति होती है।

मिथुन जन्म लग्न हो षष्ठ भाव में च.बु. शु. पर शनि की दृष्टि से उन्माद (पागलपन) योग बनता है। सिंह जन्म लग्न में मंगल, धन भाव में गुरु, अष्टम में सूर्य बुध, लाभ में शनि चन्द्र स्थित होने पर पागलपन योग बनता है।

वृश्चिक लग्न मे चन्द्र पंचम में षष्ठ में शनि सूर्य बुध अष्टम में गुरु नवम में मंगल सप्तम में शुक्र होने पर उन्माद योग के लक्षण घटित होते हैं। मेष लग्न में मंगल द्वादश में के. सू. बु. शु. शनि., चतुर्थ में गुरु, सप्तम में चन्द्र, षष्ठ में राहु है इस कुण्डली में भी उन्माद योग बन रहा है। मिथुन लग्न में तृतीय में शुक्र में चतुर्थ सूर्य मंगल, पंचम में बुध, षष्ठ में शनि केतु, नवम में चन्द्र, दशम में गुरु स्थित है। इसलिए उन्माद योग बनता है।

बुध त्वचा का और चन्द्र रक्त का स्वामी होता है। लग्नेश, बुध चन्द्र युक्त राहु शनि से युत दृष्ट हो तब कुष्ठ रोग उत्पन्न होता है। सर्वार्थ चिन्तामणि में इसका वर्णन है।

राहु की युति दृष्टि द्वादश स्थान और द्वादशेश पर पड़ती हो और द्वादशेश निर्बल हो तो जेल जाने का योग बनता है, इस योग में लग्न तथा लग्नेश भी राहु के प्रभाव में होने चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और श्री जवाहर लाल नेहरू की कुण्डली में घटित होता है, यह वीर सावरकर की कुण्डली में भी घटता है।

चन्द्र चतुर्थेश होकर 6,8,12 भाव में राहु से युत दृष्ट हो शुभ ग्रह की दृष्टि हो तब अपस्मार (मृगी) रोग की उत्पत्ति होती है। शनि मंगल की दृष्टि भी उपरोक्त स्थति मृगी रोग की उत्पत्ति दर्शाती है।

6,8,12 स्थान के स्वामी अशुभ फल कारक होते हैं। यह नियम सर्वविदित है। परन्तु इन तीनों भावों के अधिपतियों का परस्पर सम्बन्ध हो जाय तो अशुभ फल नहीं होता उल्टा शुभ फलप्रद हो जाता है।

यदि अष्टमेश षष्ठभाव या द्वादश भाव में चला जाय और षष्ठ भावेश या द्वादशेश अष्टम में चला जाय अथवा इन तीनों का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो जाय या तीनों एक दूसरे भाव में चला जाय अथवा तीनों का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो जाय या तीनों एक दूसरे भाव में चले जाय तो शुभ फलप्रद होकर राजयोग कारक बन जाते हैं। इस योग का नाम विपरीत राजयोग है। सिंह लग्न में राहु सप्तम में के.सू.च.मं.बु. अष्टम में उच्चस्थ शुक्र लाभ में शनि तथा तृतीय में गुरु स्थित हो तो कोट्याधिपति योग बन जाता है।

महर्षि पाराशर ने 3,6,8,11 स्थान के स्वामी को अशुभ फल कारक बतलाया और 6,8,12 स्थान को जातक ग्रन्थों में अशुभफल प्रद बतलाया है। सिंह

लग्न में शनि गुरु चन्द्र क्रमशः 6,8,12 भाव के स्वामी हैं यहाँ गुरु अष्टमेश होकर तृतीय भाव में है। द्वादश भाव का स्वामी चन्द्र 11 वें भाव के स्वामी के साथ होकर सूर्य के साथ होने से निर्बल हो गया षष्ठेश शनि 11वें भाव में अष्टमेश गुरु से दृष्ट है। तथा सप्तम भावस्थ सभी ग्रहों पर अष्टमेश की दृष्टि है अतः 6,8,12, भावों के परस्पर सम्बन्ध होने से कोट्याधिप योग बन रहा है। यह ग्रह स्थिति कोट्याधिप व्यक्ति की कुण्डली में है।

कन्या लग्न में जन्म हो सप्तम स्थान में शनि हो और षष्ठ स्थान में गुरु हो तो उस पुरुष की स्त्री दीर्घरोगी होगी यदि यह योग स्त्री की कुण्डली में हो तो उसका पति दीर्घ रोगी होगा, यहाँ सप्तमेश गुरु रोग भाव में और षष्ठेश शनि सप्तम भाव में स्थित होकर लग्न को देख रहा है। गुरु अपने भाव से भी द्वादश भाव में चला गया है।

मिथुन लग्न में मंगल षष्ठेश और लाभेश होता है। मंगल हिंसात्मक वृत्ति एवं षष्ठ से षष्ठ भाव भी हिंसात्मक बन जाता है, अतः मिथुन लग्न वाले व्यक्ति हिंसात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। यदि मंगल लगनस्थ हो जाय तो प्रबल हिंसात्मक वृत्ति बन जाते हैं। मिथुन लग्न में मंगल स्थित हो और चन्द्र चतुर्थ भाव में सप्तमेश के साथ हो तो हिंसात्मक वृत्ति उग्ररूप धारण कर लेती है, डाकुओं के यह योग पाया जाता है। ऐसी कुण्डली डाकू शिकारी बहेलियों की होती है। गोडसे की कुण्डली जो महात्मा गांधी का घातक था, उसमें यह योग पड़ा हुआ है।

मानसिंह की कुण्डली में वृश्चिक लग्न में गुरु, चतुर्थ में शनि, षष्ठ में राहु, अष्टम में मंगल, द्वादश में सूर्य, केतु नवम में, चन्द्र एकादश में, बुध शुक्र स्थित है। मंगल षष्ठ भाव का और लग्न का स्वामी होकर अष्टम भाव में पड़ा है।

राहु मंगल की राशि में षष्ठ में मंगलवत फल कर रहा है लाभस्थ बुध को मंगल देख रहा बुध चतुर्थ भाव से अष्टम में है और अष्टमेश भी है। चतुर्थ भाव से जनता का विचार होता है और एकादश भाव जनता का अष्टम स्थान है जो आय का स्थान जानता हुआ इस कारण जनता की हानि करने का योग बना रहा यहाँ जनता भाव के अष्टम बुध उच्चस्थ भी हो गया है पुनः बुध बुद्धि प्रदायक ग्रह स्वयं अष्टमेश होकर मंगल द्वारा जो इसके शत्रु भाव रखता है उससे भी दृष्ट है।

वृष लग्न में जन्म हो, मंगल पंचम भाव में हो तो मनुष्य को भोगवृत्ति बनाता है। द्वादश भोग स्थान और सप्तम मदन अर्थात भोग का पंचम भाव प्रेमक्रीडा का होता है। वृष लग्न में मंगल भोग स्थान का स्वामी सप्तमेश द्वादशेश व्ययेश होकर बुद्धि स्थान में पड़कर भोगात्मक वृत्ति बना रहा है।

विंशोत्तरी दशा में शुभ फल कारक की दशा हो और शुक्र शुभ फल कारक ग्रह से द्वादश हो तो उसकी दशा में शुक्र का अन्तर अत्यधिक शुभफलप्रद होता है।

बुध मंगल शुक्र चन्द्र गुरु सूर्य तथा शनि उत्तरोत्तर अधिक समय के द्योतक होते है इसमें बुध सबसे कम और शनि सबसे अधिक समय का प्रतीक है।

बुध 16 मंगल 18 शुक्र 20 चन्द्र 22 गुरु 24सूर्य 26शनि 28 वर्ष में में विवाह का योग बनाते हैं,परन्तु यह नियम गौण (साधारण) है।

धनु लग्न में बुध सप्तमाधिपति होने से विवाह कुमारावस्था में बहुधा 16 वर्ष की आयु में ही विवाह हो जाता है परन्तु सप्तम भाव सप्तमेश और सप्तम भाव का कारक ये पापयुत दृष्ट नहीं होने चाहिए। शुभग्रह मात्र की बुध पर दृष्ट होने पर कुमारावस्था में ही विवाह होता है।

इस प्रकार सप्तम भाव सप्तमेश सप्तम के कारक तथा सप्तम भाव को देखने वाले एवं सप्तमस्थ ग्रह से विचार किया जाता है। विंशोत्तरी दशा और गोचर में गुरु के आधार पर विवाह काल का निर्णय अधिक उपयुक्त है।

विंशोत्तरी दशा पद्धति अनुसार 3,6,8,11 भावों की स्वामी की दशा में तथा इन भावेश या भावस्थ से जो ग्रह सम्बन्ध बना रहे हैं, उनकी दशा में उनके ही अन्तर्दशाकाल में अनिष्ट फल की प्राप्ति उनके भाव में स्थित या दृष्ट भाव सम्बन्धी विषयों में ही अनिष्ट फल करते है।

जब बुध लग्न में सूर्य और शनि के साथ स्थित हो तब बुध की अन्तर्दशा में बुध स्वयं का फल नहीं देगा। इनके सहयोगी सू. शनि का फल देता है। सू.श. की सप्तम भाव पर दृष्टि होने से स्त्री से अलगाव या रोगादि उत्पन्न करते हैं। स्त्री की कुण्डली में पति पक्ष में नेष्ट फल प्रदान करती है।

जब कोई नैसर्गिक पाप ग्रह दो नैसर्गिक शुभ ग्रहों से युक्त हो तो उस पापग्रह की दशा में उसकी अन्तर्दशा शुभ फलप्रद होगी।

विंशोत्तरी दशानुसार 3,6,8,11 भाव संबंधि ग्रहों की दशा में उसके अन्तर्दशा काल में यदि वह ग्रह त्रिकोणेश या शुभफल कारक ग्रहों से युक्त हो तो शुभफल प्रदान करता है।

2. आयु एवं रोग विचार

दीर्घायु योग -

लग्न-लग्नेश, अष्टम, अष्टमेश, तृतीयेश , और शनि इनमें निर्बलता आने पर अल्पायु योग बन जाता है। इनमें से जितने लग्न लग्नेशादि बलवान हों उसके अनुपात से अल्पायु मध्यायु दीर्घायु का विचार करें। 32 तक अल्पायु आदि के अन्ययोगों का भी विचार कर तथा उस समय साढ़े साती या ढैया शनि का भी विचार अवश्य करना चाहिए।

01. अष्टमेश स्वक्षेत्री हो या शनि अष्टम में हो।
02. अष्टमेश, लग्नेश, दशमेश केन्द्र त्रिकोण में हो।
03. षष्ठेश व्ययेश दोनों लग्न में दशमेश या लग्नेश केन्द्र में हो।
04. बलवान् लग्नेश केन्द्र में हो।
05. 3,4,8 भावों में सभी ग्रह हो।
06. लग्न से पंचम में चन्द्र मंगल दशम में गुरु त्रिकोण में हो।
07. पापग्रह 3,6,11 भाव में शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो।
08. लग्न में बुध, गुरु व शुक्र में से कोई ग्रह हो।
09. लग्नेश,अष्टमेश लग्न में।
10. षष्ठेश अष्टमेश लग्न में।
11. केन्द्र में शुक्र हो।
12. चतुर्थ में शुक्र हो।
13. षष्ठ में राहु हो।
14. अष्टम में गुरु हो या शुक्र हो या केतु।
15. नवम में सूर्य हो अथवा लाभ में सूर्य हो या बुध हो या लाभ में शनि हो।
16. 2,1,5 भाव में लग्नेश हो।
17. अष्टम में लग्नेश हो।

18. लग्न में शुभ ग्रह हो।

19. अष्टमेश अष्टम में या एकादश भाव में।

20. नवमेश लाभ में हो या दशमेश लाभ मे हो।

21. लाभेश 4,8,10,11 भाव में हो।

22. व्ययेश लाभ में हो।

23. द्वितीय भाव में सूर्य बुध हो।

24. लग्न में सूर्य शुक्र अथवा बुध मंगल हो।

25. लग्न में गुरु हो।

जैमिनी मत से आयु निर्णय -

जन्म लग्नेश और अष्टमेश से लग्न में तथा सप्तम में चन्द्र स्थित होने से लग्न और चन्द्र से अन्यथा शनि चन्द्र से तथा लग्न और होरा लग्न से इस प्रकार 3 प्रकार से चक्र मे विचार करें। तीनों प्रकार से जो दीर्घायु मध्यायु या अल्पायु प्राप्त हो उसकी प्रधानता होती है। यदि शनि उच्च व स्वक्षेत्री पाप दृष्ट न हो तो आयु का ह्रास नहीं होता।

ग्रह स्थिति अनुसार दीर्घायु योग -

01. अष्टमेश स्वगृही हो उससे केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रह हो।

02. अष्टमेश जिस भाव में हो उस स्थान का स्वामी और लग्नेश केन्द्र में हो।

03. अष्टमेश अष्टम वा द्वादश में हो उस का स्वामी लग्नानुसार अष्टम हो।

04. केन्द्रस्थ लग्नेश गुरु या शुक्र से दृष्ट हो।

05. लग्नेश अष्टमेश और दशमेश लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो और लग्न से ६वें ८वें अथवा 11वें शनि हो।

06. बलवान् लग्नेश, अष्टमेश दशमेश केन्द्र त्रिकोण में हो और इन तीनों का शनि से कोई सम्बंध नहीं हो।

07. चन्द्र उच्च, मित्रगृही या मूल त्रिकोण में गुरु या शुक्र से दृष्ट हो।

08. बुध गुरु और शुक्र केन्द्र त्रिकोण में हो और पाप दृष्ट न हो।

09. यदि ३ ग्रह उच्चस्थ हो उनमें किसी के साथ लग्नेश अष्टमेश पाप दृष्टयुक्त न हो।

10. शनि अथवा अष्टमेश उच्च ग्रहयुक्त दृष्ट हो।

11. शनि 5,6,8,11 स्थान में हो और गुरु या शुक्र केन्द्र में हो।

12. शनि मंगल शुक्र राहु 3,6,11 भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो।

13. लग्नेश केन्द्र में पाप ग्रह 6,12 भाव में और अष्टमस्थान में पाप ग्रह अथवा दशमेश उच्च का हो।

14. द्विस्वभाव लग्न में लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में अथवा मूल त्रिकोण में हो।

15. गुरु स्वगृही लग्न में शुक्र केन्द्र में और मिथुन राशि में कोई ग्रह न हो।

16. वृष लग्न में शुक्र गुरु केन्द्र में अन्य 3,6,11 भाव में हो।

17. कर्क लग्न हो तुला में शनि हो मकर में गुरु, वृष में चन्द्र हो।

18. गुरु केन्द्र में मंगल ७वें शुक्र सिंह में।

19. सूर्य मंगल शनि तीनो साथ होकर 3,6,11 स्थान में हो और पापयुत दृष्ट न हो।

20. मेष लग्न में मकर में शनि तुला में मंगल कुम्भ में चन्द्र हो।

21. यदि लग्न से चतुर्थ भावगत किसी भाव में 4 ग्रह हों तो दीर्घायु, पंचम से अष्ठम तक भावों में एकत्र 4 ग्रह से मध्यम आयु, शेष में एकत्र चार ग्रहों से अल्पआयु।

22. कर्क लग्न में चन्द्र हो शेष ग्रह शुभग्रह की राशि में हो।

रोग विचार -

यदि सूर्य नीच राशिगत अष्टम भाव में पापयुतदृष्ट हो शुभ ग्रह से युत दृष्ट न हो तो हडडी गलने या बढ़ने की बीमारी होती है। 6,8,12 भाव में क्षीण चन्द्र-अशुभग्रह युत दृष्ट हो किसी शुभग्रह से युत दृष्ट न हो तो रक्तजन्य व्याधि उत्पन्न करता है।

इसी प्रकार मंगल 6,8,12 भाव में स्थित मंगल दृष्ट हो तो बुध से दमा,श्वासरोग, गुरु से दृष्ट हो तो मेदा, जिगर रोग, शुक्र से दृष्ट हो तो वीर्य सम्बन्धी रोग, शनि से दृष्ट हो तो सन्निपात आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

6,8,12 स्थान में जो ग्रह हो, उस पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं हो तो वह ग्रह अपने से संबंधित रोग प्रदान करता है।

रोगी योगः-

01. लग्नेश 6,8,12 भाव के स्वामी के साथ हो।

02. लग्नेश जिस भाव में हो उसका स्वामी 6,8,12 वे भाव में हो।

03. लग्नेश अस्त नीच व शत्रु गृही अथवा पापाक्रान्त हो।

04. लग्नेश जल ग्रह हो, बली शुभग्रह से दृष्ट हो तो स्थूल शरीर।

05. तृतीयेश षष्ठ में नेत्ररोगी।

06. चतुर्थेश अष्टम में रोगी।

07. पंचमेश अष्टम में सर्दी, जुकाम, खांसी का रोग हो।

08. चतुर्थेश लाभ भाव में गुप्त रोगी।

09. षष्ठेश अष्टम में संग्रहणी रोग।

10. 1,8,3,6 राशि में लग्नेश बुध से दृष्ट, मुख में व्रण।

11. षष्ठेश सूर्य के नवमांश में हो तो हृदय रोगी।

12. अष्टमेश सप्तम में उदर रोगी।

13. लाभेश तृतीय में शूलरोगी

14. लाभेश षष्ठ में रोगी।

15. लाभेश अष्टम में दीर्घरोगी।

16. लग्न में चन्द्र उदर रोगी।

17. लग्न में शनि, वातरोगी।

18. धनेश एकादश में रोगी।

19. तृतीयेश केतु के साथ हृदय रोग।

20. तृतीय भाव में मं. शनि खुजली का रोग।

21. सूर्य धन भाव में युवावस्था में रोगी।

22. धनेश एकादश में रोगी।

23. गुरु तृतीय में रोगी।

24. सूर्य चतुर्थ में हृदय रोगी।

25. केतु पंचम में उदर रोगी या केतु लाभ में हो तो गुदारोगी

26. मंगल पंचम में वात व कफ का रोगी।

27. चन्द्र षष्ठ में सर्दी जुकाम अधिक करता है।

28. बुध षष्ठ में रोगी 36 वे वर्ष में शरीर कष्ट

29. षष्ठ में शुक्र या राहु।

30. व्यय में सूर्य से नेत्र पीड़ा।

31. चतुर्थ में मंगल अधिक रोगी।

32. सप्तम में शनि पैरो में रोग, अनेक रोग।

33. षष्ठ में राहु गुदा में रोग।

34. सप्तम में केतु आंतों में रोग।

35. अष्टम में बुध शूल रोगी।

36. अष्टम में गुरु मुख रोगी।

37. अष्टम में शनि बवासीर रोगी।

38. अष्टम में राहु सदारोगी।

39. अष्टम में केतु बवासीर व भगन्दर रौगी।

40. दशम में चन्द्र खांसी कफ का रोगी।

41. व्यय में शुक्र प्रदर रोगी।

42. व्यय मे केतु से गुप्तांगरोगी तथा राहु से पैरों में रोग।

43. 6,8,12 भाव के स्वामी जिस भाव में पड़ता है उस निर्दिष्ट अंग में पीड़ा होती है।

44. यदि किसी भाव का स्वामी 6,8,12 भाव में हो तब भी उस भाव संबंधी रोग होता है।

45. 6,8,12 भाव का स्वामी जिस भाव में हो उस भाव संबंधी पीड़ा अवश्य होगी तज्जन्य पीड़ा चिरकाल तक रहेगी।

46. किसी भाव का स्वामी 6,8,12 स्थान में स्वगृही हो तो पीड़ा नहीं होती।

47. 6,8,12 स्थान का स्वामी 6,8,12 में न हो परन्तु स्वगृही हो तब भी पीड़ा नहीं होती जैसे बुध अष्टमेश होकर 6,8,12 में न हो अन्यत्र, मिथुन राशि में हो तब भी बुध कष्टदायी नहीं होगा अर्थात् दु:स्थान के स्वामी स्वक्षेत्रगत होने पर कष्टप्रद नहीं होते।

48. जिस व्यक्ति के लग्नेश और षष्ठेश एकत्र हो वह रोगी होता है। जब गोचर में लग्नेश और षष्ठेश का योग होता है तब षष्ठेश जन्य रोग मस्तक में होता है। इसी प्रकार अन्य भावों के स्वामी गोचर में षष्ठेश के साथ होने पर तद्नुसार उस भाव से संबन्धित षष्ठेश रोग उत्पन्न करता है।

49. लग्नेश षष्ठेश साथ में हो उनके साथ सूर्य होने से ज्वर, चन्द्र होने सर्दी जुकाम, जलोदर, हैजा आदि मंगल से चेचक घाव फोड़ा, बुध से पित्त जनित रोग अरुचि वमन डकार वातजन्य व्याधि, गुरु से रोग रहित, शुक्र से स्त्री को रोग या वीर्य जनित रोग शनि से वातजन्यव्याधि होती है। वायु प्रकोप पेट में गड़गड़ाहट, अपच, दस्त साफ नहीं हो। राहु केतु मस्तक पीड़ा वातजव्याधि चोट, अग्नि से भय तथा केन्द्रगत होने से कारागार भोगना पड़ता है।

50.यदि षष्ठेश बुध के साथ लग्न में हो तो, जननेन्द्रिय रोग यदि षष्ठेश शनि के साथ लग्न में हो जननेद्रिय में चीरफाड़, यदि षष्ठेश मंगल के साथ लग्न में हो फोड़ा फुँसी, चेचक, चीरफाड़, गुरु के साथ होने पर रोग रहित शीघ्र हो जाता है। शुक्र से आहार-विहार की अविवेकता से रोग होता है।

51.शनि, मंगल परस्पर त्रिकोण (9,5) में वातजन्य व्याधि ।

52.चतुर्थ में स्थित शनि पाप दृष्ट होने पर अग्निभय आघात।

53.शुक्र और सप्तमेश षष्ठस्थ हो तो जातक की स्त्री नपुंसक होती है।

54.यदि लग्नेश सूर्य के साथ 6,8,12 भाव में होने से तापगण्ड रोग होता है।

55.लग्नेश चन्द्र के साथ दु:स्थानगत होने से जलविकार से गण्ड रोग होता है।

56.लग्नेश मंगल के साथ दु:स्थानगत हो तो शस्त्राघात (शल्य चिकित्सा) ब्रण, गढिया रोग बुध से पित्त, गुरु से आंव, शुक्र से क्षय, शनि राहु केतु से चोर चण्डाल आदि से दु:ख होता है।

विभिन्न रोगों के योग -

अष्टमेश चन्द्र राहू व केतु युक्त से चौथिया ज्वर, द्वितीय भावस्थ चन्द्र से शीत सम्बंधी रोग, शनि से दृष्ट मंगल दशम में हो तो रोग, पापग्रहों के मध्य चन्द्र हो और सप्तम में शनि हो तो क्षय, श्वास, गुल्म आदि रोग होता है षष्ठ में राहू केन्द्र में शनि और अष्टम में लग्नेश हो तो 26 वर्ष में क्षय रोग होता है। पापग्रह युत दृष्टि चन्द्र वृष व कर्क राशि में होने से हृदय रोग, पंचम भाव और पापयुक्त दृष्ट रोग, छठे शनि से गुल्मरोग, छठे आठवें भाव में शनि चन्द्र के योग से पीलिया रोग, शनि मंगल के मध्य चन्द्र और मकर में शनि हो तो केंसर, प्लीहा, गुल्म आदि रोग, चन्द्र मंगल का योग छठे भाव में हो तो वायु विकार से पाण्डु रोग, षष्ठेश तृतीय भाव में हो तो नाभि में दृढ़ रोग, पंचमस्थ मंगल से अग्नि व शस्त्र से पीड़ा तथा सन्तान का विनाश, सूर्य मंगल की युति रिपु भाव में होने से शल्य चिकित्सा, शस्त्राघात, प्रमेह, अग्नि और विष जन्य मे से कोई रोग होता है।

मिथुन कन्या राशि में लग्नेश बुध से दृष्ट हो तो गुप्त स्थान में फोड़ा होता है। तृतीय में शनि पापदृष्ट हो तो बाहु में चोट लगे तथा छोटे भाई को गण्डमाला रोग हो। रोगेश शनि के साथ होने से पत्थर या चौपायों से,कार,मोटर आदि से चोट लगे। रोगेश 4,8,12 राशि में बुध से दृष्ट होने पर मूत्र रोग। ७वें शुक्र होने पर उपदंश रोग। 7,8 भाव

में शुक्र होने पर गुप्तांग में रोग। राहू गुरु का योग ७ वें भाव में होने पर नपुंसकता का रोग। कर्क या वृश्चिक नवमांश में चन्द्र होने पर गुप्तांग में रोग। गुरु व्यय में होने पर रोग पकड़ में नहीं आता। चन्द्र व्यय में और अष्टम में पापग्रह से गुप्तांग में पीड़ा। अष्टमेश 7 वें और रोगेश 8 वें हो तो गुदा से रक्त बहने का रोग होता है। कर्क राशि में सूर्य शनि से दृष्टि होने पर बवासीर रोग, चन्द्र की दशा में छठे भाव में शुक्र या धन भाव में राहू सूर्य का योग हो तो संग्रहणी रोग होता है। चन्द्र व्यय भाव में शनि के साथ होने पर पागलपन का योग बनता है। रोगेश रोग भाव में या दशवें भाव में और लग्न पर मंगल की दृष्टि होने से जादू टोना से रोग होता है।

सिंह लग्न में चन्द्र पाप दृष्ट होने पर दन्तरोग या मस्तक में रोग होता है। सिंह लग्न में सूर्य लग्न होने पर रतौंध रोग होता है। चन्द्र और शुक्र छठे भाव में होने पर रात्रि में अंधापन का रोग। सूर्य का चन्द्र, शनि का योग 6 या 8 वें भाव में होने पर हाथ में पीड़ा का योग। स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव बुध या शनि से दृष्टि हो अथवा शुक्र 6,8,12 वें भाव में हो अथवा सप्तमेश मंगल के नवमांश में या रोगेश बुध से युक्त हो और लग्नेश रोग भाव में हो। रोगेश के साथ शुक्र नीच का हो तो गुप्तांग में रोग अवश्य होता है। मिथुन या कन्या राशि में बुध केन्द्र में तो शरीर में दुर्गन्ध अथवा शुक्र शनि की राशि में होने पर यह रोग होता है। लग्न में शनि, राहू या धन में शनि राहू या क्षीण चन्द्र मंगल राहू या शनि से दृष्ट 6,8,12 भाव में हों तो पिशाच पीड़ा से रोग होता है।

लग्नेश बुध से दृष्ट हो तो गुप्त स्थान में व्रणा (फोड़ा) होता है। तृतीय में शनि पाप दृष्ट हो तो बाहुमें चोर लगे तथा छोटे भाई को गंडमाला रोग हो। रोगेश शनि के साथ होने से पत्थर या चौपायों से कार मोटर आदि से चोट लगे। रोगेश 4,8,12 राशि में बुध से दृष्ट होने पर मूत्ररोग। सातवे शुक्र होने पर उपदंश रोग। 7, 8 भाव में शुक्र होने पर गुप्तांग में रोग। राहु गुरु का योग सातवे होने पर नपुंसकता का रोग। कर्क या वृश्चिक्र नवमांश में चन्द्र होने पर गुप्तांग में रोग। गुरु व्यय में होने पर रोग पकड़ में नहीं आता। चन्द्र व्यय में और अष्टम में पाप ग्रह से गुप्तांग में पीड़ा अष्टमेश 7 वे और रोगेश 8 वे होतो गुदा से रक्त बहने का रोग हो। कर्क राशि में सूर्य शनि से हष्ट होने पर बवासीर रोग चन्द्र की दशा में भाव में या छठे भाव में शुक्र या धन भाव में राहुसूर्य का योग हो तो संग्रहणी रोग होना है। चन्द्र व्यय भाव में शनि के साथ होने पर पागल पन का योग बनता है। रोगेश रोग भाव में या 10 वे भाव में और लग्न पर मंगल की दृष्टि से जादू

होने से रोग टागे रोग हो। सिहंलग्न में चन्द्र पाप दृष्ट होने पर दन्तरोग या मस्तक में रोग होता है। सिंहलग्न में सूर्य होने पर रतोन्ध रोग। चन्द्र और शुक्र 6 पर भाव में होने पर रात्रि में अंधापन रोग। सूर्य का चन्द्र शनि का योग 6 या 8 भाव में होने पर हाथ में पीड़ा का योग।

भावों के पर्यायवाची नाम

प्रथम भाव :- लग्न, मूर्ति अंग, तनु, उदय, वपु, होरा, सिर, कल्प और आद्य।

द्वितीय भाव :- वाक्, चित्त, कुटुम्ब, द्रव्य, स्व, कोष धन तथा अर्थ।

तृतीय भाव :- सहोत्थ, सोदर, सहज, दुश्चिक्य, ग्रीव, भुजा, पराक्रम और विक्रम।

चतुर्थ भाव :- सुख, अम्बु, पाताल, रसातल, बन्धु, वेश्म, हृद, वाहन, मातृ, अम्बा, तूर्य, हिबुक, सुहृत, गेह तथा पानी के सभी पर्यायवाची नाम यथा, जल, तोय, नीर, वारि, आदि।

पंचम भाव :- बुद्धि प्रभाव, मन्त्र, विवेक, उदर, सुत, विद्या, तनय और आत्मज।

षष्टम भाव :- रोग, क्षत, अरि, व्यसन, रिपु, चोर, विघ्न, द्वेषी, शत्रु और कलह।

सप्तम भाव :- चित्तौथ, काम, मदन, भार्या दारा, द्यून, जामीत्र, भर्ता, अस्त, स्मर, मद जाया, कलत्र और रमणी।

अष्टम भाव :- क्षीर गुड्म, मूत्रकृछ, रन्ध्र, छिद्र, नाश, याम्य, निधन, गूह्य, मरण, अन्त, आयु, मृत्यु, मृति तथा लयपद।

नवम भाव :- धर्म, दया, पितृ, पैत्रिक, भाग्य, गुरु, शुभार्जित शुभ तथा मार्ग।

दशम भाव :- आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, खं, तात, गगन, व्योम, नभ, अम्बर, आकाश, मेषूरण, मध्य, व्यापार, व्यवसाय तथा राज्य।

एकादश भाव :-आय, लाभ, भव, आगम, आप्ति तथा प्राप्ति।

द्वादश भाव :- व्यय, अंत्य, रिस्फ, विनाश और प्रांत्य।

---

3. मातृ-पितृ एवं भ्रातृ भगिनी योग

मातृ स्नेह योग-

01. लग्नेश और चतुर्थेश में मित्रता हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो।

02. केन्द्रस्थ चतुर्थेश, लग्नेश से दृष्ट हो और शुभग्रहों से भी दृश्य एवं युत हो।

मातृ सुख हानि योग -

01. चन्द्र 6,8,12 वें भाव में तृतीयेश के साथ।

02. मंगल 6ठे भाव में, श. मं चतुर्थ में, चं.मं. द्वादश में, सूर्य चतुर्थ में। चन्द्र से चौथे गुरु। चन्द्र से द्वितीय में शनि। चन्द्र से 4 और 7 वें राहु। तृतीयेश चतुर्थ में। चतुर्थेश षष्ठ में मातापिता का धन नाशक। चतुर्थेश अष्टम में मातृ-पितृ सुख रहित। चतुर्थेश पापयुक्त। चन्द्र और चतुर्थेश 6,8,12, स्थान में पाप दृष्ट से माता की मृत्यु। दशम में पापी षष्ठेश । अष्टमेश दशम में 1,2,3,8,12 भाव में दशमेश। 1,6 भाव में दशमेश माता पर पुरुषगामिनी। 4,10वें व्ययेश। चन्द्र मंगल नवम भाव में। नवमेश और चतुर्थेश 6,8,12 से माता-पिता को अनिष्ट।। एवं 4थे सूर्य चन्द्र। लग्न या चन्द्र से 9 वें 4 थे, सूर्य चन्द्र।

लग्न या चन्द्र से 9 वे भाव में शनि पापयुत दृष्ट माता पिता को अरिष्ठ सप्तम में सूर्य मं. श। लग्न से 4 थे मंगल। क्षीण चन्द्र 7वे राहु केतु युत क्षीणचन्द्र नवमांश में। चन्द्र पापयुत या चन्द्र से अष्टम में पापग्रह 4थे पापग्रह।। शनि पापग्रह की राशि में पापयुत दृष्ट माता की मृत्यु चन्द्र पाप ग्रह दृष्ट शुभ दृष्टि रहित माता की मृत्यु। चन्द्र पापग्रह दृष्ट शुभ दृष्टि रहित। माता की मृत्यु। सिंह में मंगल कन्या मुं शुक्र तुला में शनि माता की मृत्यु। चन्द्र पापग्रह दृष्ट शुभ दृष्टि रहित माता की मृत्यु। लग्न में गुरु 2 रे मंगल 3 रे शुक्र माता की मृत्यु । सिंह में मंगल कन्या में शुक्र तुला में शनि माता की मृत्यु। चन्द्र पापयुत शनि से दृष्ट से बाल्यावस्था में माता की मृत्यु, कर्कराशि में सूर्य, मंगल राहू से बाल्यावस्था में माता की मृत्यु, सिंह राशि में शनि 8 वे गुरु 10 वें मंगल माता की मृत्यु। 7 वें उच्च या नीच का सूर्य माता को अरिष्ट। चतुर्थेश षष्ठ में या चतुर्थेश लग्नेश से षष्ठ में माता से विरोध। 4 सूर्य 5 वे चन्द्र मातृकष्ट। चन्द्र पापाक्रान्त से मातृकष्ट। क्षीणचन्द्र 5 वे में मातृकष्ट। चन्द्र पापाक्रान्त से मातृकष्ट। क्षीणचन्द्र 5 वे अष्टम में पापग्रह मातृकष्ट। लग्न में मंगल लग्न से 3 रे या 7वें सूर्यमातृ कष्ट। चन्द्र से 7 वे शनि 8 वें गुरु मातृ कष्ट।

मातृकष्ट योग -

धनेश चतुर्थ में। चन्द्र से चतुर्थ बुध। चन्द्र से 10 वे शुक्र। धनेश दशम में। तृतीयेश दशम में। चतुर्थेश पंचम में। पंचमेश दशम में। दशमेश दशम में। लाभेश 4थे । लाभेश 10 वे। चतुर्थ में चन्द्र या शुक्र बली 7 वें या 10 वें बुध। चन्द्र बलवान हो। चन्द्र शुभग्रह युत। चतुर्थ से केन्द्र में शुभग्रह। पंचमेश दशम में । नवमेश दशम में। चतुर्थ में दशमेश।

मातृ अल्पायु योग -

चतुर्थ भाव चतुर्थेश और चन्द्र पर बहुत पापग्रहों का प्रभाव हो तो बाल्यकाल में ही माता की मृत्यु हो जाती है।

मातृ निधन योग -

01. चन्द्र से चतुर्थ में पापग्रह हो और शुभ ग्रह रहित हो या द्रष्ट न हो तो माता का निधन 9 मास की अवधि में।
02. सूर्य चन्द्र ४थें शनि ७वें और दोनों के साथ पाप ग्रह हो या पाप ग्रहों से द्रष्ट हो तथा चतुर्थेश पापयुतद्रष्ट हो।
03. यदि सूर्य पाप ग्रहों के साथ चन्द्रमा से दशम स्थान में हो।
04. यदि सूर्य या मंगल अष्टम भाव में और चन्द्रमा क्षीण अवस्था में उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो शुभ ग्रहों से दृश्य नहीं हो।
05. चन्द्र ६वें स्थान में सूर्य, मंगल, शनि के साथ स्थित हो।
06. यदि सूर्य मंगल या शनि सप्तम में हो।
07. क्षीण चन्द्र राहु केतु के साथ हो।
08. चन्द्र, सूर्य, शनि चतुर्थ में मंगल सप्तम में हो।
09. सप्तम भाव में चन्द्र के साथ शनि, मंगल हों।
10. गुरु लग्न में चन्द्र 6ठें शनि से दृश्य हो अर्थात गुरु या चन्द्र, शनि से दृश्य।
11. चन्द्र या शुक्र पापग्रहों से घिरा हुआ हो।
12. रात्रि में जन्म हो चन्द्र से त्रिकोण में शनि हो।
13. दिन में जन्म हो शुक्र और मंगल पापयुक्त हो।
14. 4थे और 7 वें भाव में पाप ग्रहों से साथ चन्द्र हो।
15. 1,7,8 भाव पापयुत हो।
16. 1,7,8,12 वे भावों में पाप ग्रह और द्वितीय भाव में शुक्र हो।
17. लग्न में गुरु दूसरे शनि तृतीय में राहु हो।
18. शनि और मंगल एक ही नवमांश में हो और चन्द्र केन्द्र में हो।
19. माता के जन्म नक्षत्र में उत्पन्न कन्या हो।

पितृ पक्ष विचार -

पिता का विचार नवम भाव नवमेश और सूर्य होता है। कुछ विद्वान् दशम भाव से भी पिता का विचार करते हैं, इसका प्रचलन अधिक है

01. दशम में मंगल भाग्येश नीच राशिगत से पितानिधन होता है।
02. पिता की दशम भावगत राशि में पुत्र का जन्म हो तो पुत्र पिता के तुल्य होता है।
03. यदि पिता पुत्र का एक ही लग्न में जन्म हो अथवा दोनों की एक ही राशि हो अथवा पिता के तृतीया भावगत राशि में पुत्र का जन्म हो तो पुत्र को पैतृक धन प्राप्त होता है।
04. पितृ कारक ग्रह सूर्य दशम में होने पर भी पैतृक धन प्राप्त होता है।
05. पिता के ६ठे या आठवें भाव की राशि में पुत्र का जन्म पिता से द्वेष कारक होता है।
06. यदि पुत्र का जन्म पिता के जन्म नक्षत्र में अथवा जन्म नक्षत्र से एक नक्षत्र आगे या पीछे के नक्षत्र में जन्म हो तो पुत्र विदेश में रहने से पुत्र वियोग से पिता दु:खी रहता है।
07. यदि पुत्र का जन्म पिता के जन्म नक्षत्र से 8वें, 9वें, 10वें नक्षत्र में हो तो पिता दीर्घ जीवी और पुत्र पिता की सेवा करता है।
08. यदि पुत्र का जन्म पिता की नवम एकादश, द्वितीय या तृतीय भावगत राशि में जन्म हो तो पुत्र आज्ञाकारी होता है।
09. यदि चतुर्थेश और षष्ठेश नवम भाव में हो तो पिता भोगविलासी होता है।
10. चतुर्थेश और नवमेश चतुर्थ भाव में होने पर भी पिता भोगी और विलासी होता है।

पितृ विरोध योग -

01. तृतीयेश चतुर्थ में पितृधन नाशक।
02. धनभाव में चतुर्थेश पिता से विरोध।
03. चतुर्थेश षष्ठ भाव में पितृधन नाशक।
04. चतुर्थेश 7 वें पिता के धन का त्याग।
05. चतुर्थ में षष्ठेश या सप्तमेश पिता से विरोध, या अष्टमेश चतुर्थ में।
06. लाभेश दशम में पिता से विरोध।
07. व्ययेश पंचम में पिता से विरोध।
08. चतुर्थेश 6,8,12वें भाव में पितृसुख से हानि।
09. दशमेश सूर्य के साथ होने से पिता की शीघ्र मृत्यु।
10. लग्न में शनि, षष्ठ चन्द्र में, सप्तम में मंगल से पिता से विरोध।

11. शनि अष्टमेश नवमेश हो, शुभग्रह से युत दृष्ट नहीं हो और अष्टमभाव में सूर्य हो प्रथम वर्ष में ही पिता की मृत्यु।

12. अष्टमेश नवम में व्ययेश लग्न में सूर्य 6,8,12 वे भाव में हो तो जन्म से पूर्व ही पिता की मृत्यु।

13. पंचमेश 6,8,12 वे भाव में हो तो पिता से शत्रुता।

14. नवम भाव में सूर्य मंगल शनि केतु में से कोई भी हो तो पितृ सुख में हानि।

पितृ निधन योग -

01. 9 वें या पंचम में क्रूर राशि में सूर्य स्थित हो तो पिता की, यदि चन्द्र हो तो माता की, मंगल से भाई की, बुध से मामा की, गुरु से नानी की, शुक्र से नाना की, शनि से स्वयं की, मृत्यु वाल्यावस्था में होती है।

02. मंगल सूर्य एक साथ हों तथा शनि द्रष्ट हो तो पितृ निधन

03. नवमस्थ राहु पर सूर्य, मंगल अथवा शनि की दृष्टि हो।

04. लग्न से नवमस्थान में राहु या केतु हो और जन्म समय में राहु या केतु की दृष्टि हो।

05. शनि और मंगल सूर्य से अष्टमस्थ शुभ दृष्टि रहित हो।

06. नवम भावस्थ सूर्य पापयुत हो और सूर्य की दशा का जन्म हो।

07. नवमेश और राहु परस्पर षडाष्टक में हो तो जन्म समय में नवमेश या राहु की दशा हो।

08. राहु नवम भावस्थ हो उसके साथ कोई उच्च राशि का ग्रह बैठा हो।

09. सूर्य से दशमस्थ पाप ग्रह और दशमेश पापयुत हो।

10. सूर्य से 4, 6, 8 भाव में पाप ग्रहों और साथ में शुभ ग्रह नहीं हो।

11. केतु 4,5,9वें भाव में पाप द्रष्ट हो।

12. सूर्य मंगल के नवमांश में हो तथा शनि से दृश्य हो तो बालक के जन्म के पूर्व ही पिता की मृत्यु।

13. सूर्य शनि, मंगल एकत्र स्थित हो।

14. दिन का जन्म हो सूर्य, मंगल से दृश्य हो। यदि रात्रि का जन्म हो तो शुक्र मंगल से दृश्य हो तो पिता की मृत्यु।

15. चर राशिगत सूर्य और शुक्र मंगल से दृश्य हो या मंगल के साथ हो तो पिता की मृत्यु विदेश में जन्म से पूर्व ही हो जाती है।

16. जन्म समय रात्रि में हो और चर राशिगत शनि और मंगल होने से पिता की मृत्यु विदेश में होती है।

भ्रातृ-भगिनी योग -

तृतीय स्थान से छोटे भाई-बहिन का और एकादश स्थान से बड़ी बहिन व बड़े भाई का विचार होता है। मंगल भ्रातृ कारक है, तृतीयेश और तृतीय स्थान गत ग्रह तथा तृतीय स्थान शुभाशुभ ग्रह से दृष्ट होने से भाई बहिन का विचार करना चाहिये।

01. तृतीय स्थान में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि से अथवा तृतीयेश के उच्चस्थ होने तथा शुभ ग्रह की उस पर दृष्टि होने से छोटे भाई बहिन का सुख प्राप्त होता है।
02. तृतीयेश और मंगल सम राशि में होने से जातक के बहिन अधिक होती है।
03. तृतीय भाव व भावेश पापयुत दृष्ट हो और मंगल 12वें हो तथा तृतीयेश व तृतीय भाव के दूसरे और 12वें भाव में पाप ग्रह हो अथवा पाप ग्रह की दृष्टि हो तो भाई बहिन की मृत्यु होती है।
04. तृतीयेश नीच राशिगत हो अथवा तृतीया भाव में शनि हो तृतीया स्थान व तृतीयेश पापाक्रान्त पापयुत दृश्य हो और शुभग्रह से युक्त व दृष्टि संबंध नहीं हो तो भाई बहिन की मृत्यु व सुख में बाधा होती है।
05. तृतीयेश व मंगल 3रे 6वें 12वें शुभग्रह से दृश्य नहीं हो तो भ्रातृ सुख की हानि।
06. राहु व केतु के साथ तृतीयेश 6,8,12 भाव में हो भ्रातृ सुख का अभाव।
07. यदि एकादश भाव में शुभ ग्रह हो एकादशेश 6,8,12 भाव में नहीं हो बड़े भाई का सुख मिलता है स्त्रीसंज्ञक राशि व ग्रह से बहिन का विचार करें।
08. सूर्य तृतीय भाव में पापग्रह से दृश्य हो तो बड़े भाई का, शनि तृतीय में पाप दृश्य हो तो अनुज का, मंगल तृतीय में पापदृश्य हो तो अग्रज व अनुज का नाश करता है।
09. तृतीयेश और मंगल पर शनि की दृष्टि से माता का नाश, इसी प्रकार चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं पड़े पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो माता का विनाश।
10. तृतीयस्थान में केतु के साथ चन्द्र का योग लक्ष्मी प्रद और अकेला राहु तृतीय में भाई के लिये अशुभ होता है।
11. मंगल तृतीयेश तृतीय राशिगत के नवमांश सम राशि के होने पर अधिक बहिन होने का योग बनता है।
13. तृतीयेश और चतुर्थेश मंगल के साथ होने से छोटे भाई का योग होता है।
14. नवम भावस्थ सिंह राशि का सूर्य भ्रातृ नाश करता है यदि दैवात् भाई बच जाय तो वह विख्यात पुरुष होता है।

15. मंगल षष्ठेश के और पाप ग्रह के साथ हो और द्वितीयेश बली होकर अष्टम भाव गत हो तो सौतेले भाई का होने का योग बनता है।
16. 2,3,7,9 भावों के स्वामी की दशा व अन्तर्दशा में भ्राता उत्पन्न होते हैं।
17. तृतीयेश, तृतीयस्थ ग्रह जिस राशि में हो उसके स्वामी की दशा में भी भ्राता की उत्पत्ति होती है।
18. लग्नेश व तृतीयेश मित्रता पंचम मैत्री में हो तो भ्रातृ प्रेम और शत्रुता से भ्रातृ द्वेष अर्थात् भाइयों से अनबन रहती है।
19. लग्नेश, तृतीयेश और मंगल इन तीनों में कोई स्वराशिस्थ उच्चस्थ मूल त्रिकोण व मित्र गृही होने से भाई सुखी रहते हैं।
20. तृतीयेश का राहु केतु साथ 6,8,12 स्थान में होना भ्रातृ विनाशक होता है।

राशियों के पर्यायवाची नाम

मेष :- अज, विश्व क्रिय, तुंबर, आद्य, अबि और छाग।
वृषभ :- वृष, उक्ष, तारूख, गोकुल, तापुरि और गो।
मिथुन :-द्वन्द, नृयुग्म, यम, युग, तृतीय, वैणिक, जितुम, जित्म और युग्म।
कर्क :- कर्कट तथा कुलीर।
सिंह :- कंठीख, मृगेन्द्र, लेय, केसरी और हरि।
कन्या :- पाभोन, रमणी, बाला, अबला, स्त्री, प्रमदा और कामिनी।
तुला :- तौलि, वणिक, जूक और तुलाधर।
वृश्चिक :-अलि, कीट, अष्टम, कौर्पि, कार्ण और सरीसृप।
धन :- धन्वी, चाप शरासन, धनुर्धर, कोदण्ड, चाप, हय, तौक्षिक और कार्मुक।
मकर :- मृग, मृगास्य, ओकोकेर, नक्र और मृगवक्त्र।
कुम्भ :- घट, कुम्भधर, कलश तथा तोयधर।
मीन :- अंत्य, मत्सय, पृथुरोम, शफरी, झष और तिमि।

4. विद्या एवं तत् सम्बंधि व्यवसाय योग

विद्या प्राप्ति के योग-

01. बली अष्टमेश व तृतीयेश किसी भाव में बैठे हों तो वैज्ञानिक, अनुसन्धानकर्त्ता, आविष्कारकर्त्ता होता है।
02. धनेश व धन भाव का सम्बन्ध पंचमभाव व शुक्र से हो तो संगीतज्ञ होता है।
03. सूर्य बुध का योग हो पंचमेश अथवा धनेश से सम्बन्ध हो, तथा मंगल से युत दृष्ट हो तो इंजीनियर या टैक्निकल ज्ञान होता है।
04. शनि तथा बुध परस्पर सप्तम भाव में हो तो इन्जीनियर बनता है।
05. शनि, शुक्र की युति से सिविल इन्जीनियर होता है।
06. चन्द्र मंगल शनि तीनों दशम में या चतुर्थ में हो तो सिविल इन्जीनियर बनता है।
07. चन्द्र लग्न व जन्म लग्न से पंचम स्थान का स्वामी बुध, गुरु, शुक्र के साथ केन्द्र त्रिकोण व एकादश में होने से विशिष्ट विद्वान होता है।
08. चतुर्थेश और पंचमेश दोनों दशम स्थान में हो तो विद्वान होता है।
09. बुध स्वगृही नवमांश का द्वितीय स्थान में हो, चतुर्थेश स्वगृही नवमांश का और पंचमेश एकादश भाव में दोनों बहुत बड़ा यशस्वी वक्ता होता है।
10. बुध और गुरु का योग अथवा अन्योन्य दृष्टि होने पर जनता व राजद्वार में बहुत सम्मान दिलाता है।
11. चतुर्थेश और बुध, शुक्र के लग्नस्थ होने पर विद्या प्राप्त कर विख्यात होकर यदि तीनों की नवमांश कुण्डली में स्थिति उत्तम हो तो चार चांद लग जाते हैं।
12. चतुर्थेश चतुर्थ में और लग्नेश लग्न में होने पर विद्या द्वारा यश की प्राप्ति होती है।
13. चतुर्थेश लग्न में लग्नेश चतुर्थ से होने पर भी विद्या द्वारा यश की प्राप्ति होती है।
14. चतुर्थ भावस्थ चतुर्थेश पर शुभ ग्रहों से दृश्य होने पर विद्वान।
15. चतुर्थेश 6,8,12वें हो अथवा पापग्रहों के साथ हो या उनसे दृश्य हो तो विद्याध्ययन विघ्नबाधा पूर्वक होता है।

16. बुध स्वगृही अथवा उच्चस्थ चतुर्थ भाव में होने से विद्या-वाहन-सम्पत्ति तीनों ही प्राप्त होती है।
17. यदि पंचम स्थान का स्वामी बुध शुभयुक्त दृश्य हो, बुध उच्चस्थ हो। बुध पंचमस्थ हो। पंचमेश का नवमांशधिपति केन्द्र में हो और शुभ ग्रह से दृश्य हो। इन योगों में उत्पन्न व्यक्ति बुद्धिमान होता है।
18. पंचमेश जिस भाव में हो उसका स्वामी शुभ दृश्य अथवा उसके दूसरे और 12 वें शुभग्रह हो तो बुद्धिमान होता है।
19. गुरु पंचमस्थ हो उसके द्विर्द्वादृश में शुभग्रह हो ओर बुध दोष रहित होने पर बुद्धिमान होता है।
20. लग्नेश नीच राशि का हो अथवा पापयुत दृश्य हो तो श्रेष्ठ बुद्धि नहीं होती। पंचम भाव भावेश पापयुत दृश्य हो शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो स्मरण शक्ति कमजोर होती है। बलवान् गुरु व द्वितीयेश पर सूर्य, शुक्र की दृष्टि से व्याकरण शास्त्रज्ञ होता है। बली गुरु द्वितीयेश हो और सूर्य के साथ होकर अस्त नहीं हो तो व्याकरण शास्त्रज्ञ। बुध द्वितीय भावेश गुरु के साथ केन्द्र में हो में हो अथवा शुक्र स्वगृही या उच्चस्थ हो गणितज्ञ होता है।
21. मंगल दूसरे भाव में शुभ ग्रह के साथ हो और बुध से दृश्य हो अथवा बुध केन्द्र में हो तो गणितज्ञ होता है।
22. चन्द्र, बुध केन्द्र में हो अथवा तृतीयेश बुध के साथ केन्द्र में हो तो गणितज्ञ। गुरु द्वितीय भाव में हो ओर शनि से बुध षष्ठस्थान में हो तो फलितज्ञ होता है। द्वितीयेश सूर्य या मंगल हो उस पर गुरु की दृष्टि हो अथवा शुक्र की दृष्टि हो तो शास्त्रज्ञ होता है।
23. चन्द्र, गुरु और लग्न शनि से दृष्टि हो, नवम में गुरु हो और कोई राजयोग भी हो तो विशिष्ट विद्वान बनता है।
24. गुरु केन्द्र त्रिकोण गत होने से वेदान्ती बनता है।
25. शुक्र से पंचम स्थान का स्वामी केन्द्र त्रिकोण में हो तो ग्रन्थों का अनुवाद करने वाला होता है।
26. द्वितीयेश बुध, गुरु के साथ होने से प्रभावशाली व्याख्याता।
27. बुध और गुरु अपने अपने नवमांश में होकर द्वितीय भाव स्थित होने से मधुरभाषी योग बनता है।

28. गुरु नवम में चन्द्र और शनि से दृश्य होने पर विदेश में वकालत करता है अथवा नवम में मंगल शुक्र की युति हो तो चन्द्र, बुध की युति नवम में श्रेष्ठ वक्ता बनाती है। बुध केन्द्र में द्वितीयेश बली हो। शुक्र द्वितीय में, तृतीय में शुभ ग्रह।
29. उच्चस्थ और द्वितीयेश बली हो। इन तीनों योगों में ज्योतिष शास्त्रज्ञ।
30. बुध केन्द्र में शुक्र ५वें द्वितीयेश बली होने पर ज्योतिषशास्त्रज्ञ योग बनाता है। रवि या मंगल धनेश होकर गुरु अथवा शुक्र से युत दृश्य होने पर तर्ककर्त्ता बनता है।
31. बुध जिस भाव में हो उससे पंचमाधिपति यदि केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह युक्त हो तो तर्कशास्त्री बनता है।
32. तृतीय स्थान बली हो वह बुध या गुरु से दृश्य हो या युत हो अथवा बुध गुरु तृतीयस्थान से केन्द्र में हो इन दोनों योगों में कंठ स्वर अत्यंत मधुर होता है।
33. दशमेश चतुर्थ में और शुक्र उच्च नवमांश में हो अत्यन्त संगीत प्रिय होता है।
34. नवमेश और दशमेश चतुर्थस्थ हो और कोई केन्द्रेश त्रिकोणगत हो तो संगीत सामग्री संग्रहकर्त्ता होता है।
35. लग्नेश पंचम में दशमेश चन्द्र पापग्रह के साथ केन्द्र में होने से संगीत प्रिय होता है। सूर्य आत्मकारक के नवमांश में हो अथवा आत्मकारक से पंचम रवि हो तो संगीतज्ञ होता है।
36. चन्द्र बुध के नवमांश में शुक्र से दृश्य हो तो संगीतज्ञ बनता है। श+ च अथवा बुध, शुक्र के योग से संगीतज्ञ। ११वे शुक्र संगीत से धन प्राप्ति।
37. द्वितीयेश उच्चस्थ दशम में दशमेश द्वितीयस्थ मित्र की राशि में होने से द्वितीय और चतुर्थ में अन्योन्य संबंध हो दशमस्थ बुध और शुक्र होने पर परीक्षा में पूर्ण सफलता मिलती है।
38. शुभ ग्रह की दृष्टि रहित शनि द्वितीय में अथवा दशम में होने से विघ्नबाधा पूर्वक शिक्षा प्राप्त होती है। द्वितीयेश षष्ठभाव में दशमेश द्वादश में दोनों पाप दृश्य होने पर विद्या में सफलता नहीं मिलती।
39. द्वितीयेश और दशमेश के 6,8,12वें होने पर पाप युक्त दृश्य होने, पाप ग्रहों के मध्य होने से अर्थात इन के द्विर्द्वादश में पाप ग्रह स्थित होने से विघ्न बाधा पूर्वक शिक्षा प्राप्त होती है।
40. द्वितीयेश केन्द्रगत गुरु से दृश्य दो गुरु बली होकर दशम स्थान जो उसका स्वगृही है उसे देखता हो तो उच्च दीक्षा प्राप्त होती है तथा छात्रवृत्ति मिलती है।

वैद्य ज्योतिविद, संगीतज्ञादि के योग-

01. लग्नेश बुध हो तो वैद्य, ज्योतिर्विद् या दोनों।
02. लग्नेश गुरु हो तो व्याकरण अथवा ज्योतिष का ज्ञाता।
03. लग्नेश के साथ राहु डॉक्टर या वैद्य।
04. धन में राहु ज्योतिर्विद्।
05. गुरु केन्द्र त्रिकोण में प्रोफेसर।
06. द्वितीयेश बुध शुभ गुरु से दृष्ट गणितज्ञ।
07. तृतीय में गुरु दार्शनिक।
08. शुक्र तृतीय में संतीतज्ञ या चित्रकला पर्यवेक्षण।
09. मं.+ गु. तृतीय में शिक्षक।
10. लाभ में सूर्य संगीतज्ञ एवं गायक।
11. धनेश लाभ में ज्योतिषर्विद्।
12. धनेश का चन्द्र से योग हो तो ज्योतिषर्विद्।
13. नवम में चतुर्थेश अनेक विद्याओं का ज्ञाता।
14. पञ्चमेश नवम में गाने वाला।
15. पञ्चमेश लाभ में गाने-वाला बजाने वाला।
16. तुला वृष लग्न में गुरु और शुक्र केन्द्र में हो तो संगीतज्ञ।
17. बलवान् अष्टमेश व तृतीयेश किसी भी भाव में स्थित होने पर वैज्ञानिक व अनुसंधानकर्त्ता अथवा आविष्कारक योग बनता है।
18. धन भाव या धनेश का पञ्चम भाव से या शुक्र से सम्बन्ध होने पर संगीतज्ञ योग बनता है।
19. सूर्य और बुध का योग पञ्चम में हो, उस पर मंगल की दृष्टि होने पर इंजीनियर या टेक्निकल ज्ञान होता है।
20. शनि बुध का योग सप्तम भाव में होने पर इंजीनियर बनने का योग होता है।
21. शनि शुक्र की युति से सिविल, इंजीनियर का योग बनता है।
22. चतुर्थ या दशम भाव में चन्द्र मंगल और शनि का योग होने पर सिविल इंजीनियर बनने का योग होता है
23. यदि सूर्य और मंगल दोनों ही कारक होकर केन्द्र में हो तो इलेक्ट्रिकल इंजिनियर होता है।

24. मंगल राहु का योग हो तो मेकेनिकल इंजीनियर होता है।
25. चन्द्र एवं शनि दोनों कारक होकर केन्द्र त्रिकोण में होतो फॉरिस्ट इंजीनीयर होता है।
26. बुध 1,4,5,7,9,10 केन्द्र (त्रिकोण) हो तो ज्योतिषर्विद्
27. गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो ज्योतिषर्विद्य फलित होता है।
28. कर्क राशिस्थ गुरु धन भाव में फलित ज्योतिषी बनाता है।
29. सूर्य या मंगल धनेश हो गुरु या शुक्र से दृष्ट हो तो फलितज्ञ होता है।
30. गुरु स्वराशि के नवमांश में हो तथा कारकांश कुण्डली में पञ्चम में गुरु अथवा बुध हो तो फलितज्ञ होता है।
31. नवम व पञ्चम में चन्द्र गुरु का योग हो तो हस्त रेखा का जानकार या कवि होता है।
32. बुध शुक्र का योग पञ्चम अथवा सप्तम में हो तो ज्योतिषर्विद् होता है।
33. बुध स्वराशि व मित्र राशिस्थ होने पर गणितज्ञ, संगीतज्ञ या ज्योतिषर्विद् होता है।
34. मकर राशिस्थ गुरु पर बुध शुक्र की दृष्टि से विद्वान होता है।
35.चतुर्थेश चतुर्थ में हो अथवा चतुर्थ भाव शुक्र युत दृष्ट हो तो वादन भूमिका योग होता है।
36. द्वितीय भावस्थ चन्द्र मंगल पर बुध की दृष्टि हो तो गणितज्ञ।
37. पञ्चमस्थ मंगल पर चन्द्र और बुध की दृष्टि से गणितज्ञ।
38. गुरु दशमेश हो तो गणितज्ञ
39. पञ्चमेश और बुध उच्चरशिस्थ हो गुरु लग्न में शनि अष्टम में हो तो गणतिज्ञ होता है।
40. पञ्चमेश बली हो सूर्य और शुक्र से दृष्ट हो तो व्याकरण शास्त्रज्ञ होता है।
41. शुक्र लग्न में या मिथुन राशि का हो तो व्याकरण शास्त्रज्ञ होता है।
42. गुरु केन्द्र त्रिकोण में हो तो वेदान्त शास्त्र का ज्ञाता होता है।
43. पञ्चमेश सूर्य का धनभावस्थ वेदान्तज्ञ होता है।
44. 2,5,9,11 वे भाव में बुध अथवा (ज्ञा) शुक्र वेदान्त होता है।
45. बुध शुक्र का योग केन्द्र या त्रिकोण में काव्य करने वाला होता है।
46. दशमेश लग्नेश का योग होने पर कविता करने वाला होता है।
47. 11वें स्थान का स्वामी स्वराशिस्थ 11वें भाव में हो तो कविता करने वाला होता है।
48. गुरु केन्द्रस्थ हो अथवा पापग्रह के साथ त्रिकोण में हो तो तंत्रशास्त्रज्ञ होता है।
49. पञ्चमेश 10 अथवा 11 वें भाव में हो तो संस्कृत भाषा का ज्ञानी होता है।
50. केन्द्र त्रिकोण में बलवान् पञ्चमेश हो तो संस्कृतज्ञ होता है।
51. पञ्चम भाव में सूर्य या मंगल हो तो चिकित्सक होता है।

52. केन्द्रस्थ मंगल गुरु से दृष्ट हो तो डॉक्टर होता है।

53. द्वितीयस्थ शुक्र से रत्न परीक्षक बनता है।

विद्वान के योग -

गुरु पंचम एवं द्वादश में, षष्ठ में शुक्र एवं केतु, दशम में शनि एवं राहु, पंचमेश लाभ में, नवमेश लग्न एवं व्यय में, दशमेश लग्न में, 2,3, या 11 वें भावों में मिथुन, 3,8 भाव में मकरराशि हो तो व्यक्ति विद्वान होता है।

ग्रहों के पर्यायवाची नाम

सूर्य :- मार्तण्ड, पूषा अरुण, आद्रि, दिनमनि, नभेश्वर, रवि, भानु, विभावसु,, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, भास्कर, अहस्कर, हेलि, तरणि नलिनीविलासी, भानुमान, दिनमान, दिवानाथ दिननायक, ध्वांतध्वंशी, दीप्तरश्मि, अंशुमाली, चण्डांशु, अर्क, पद्मिनी प्राणनाथ, पंकज-बोधन पद्म प्रबोधन आदि।

चन्द्र :- अब्ज, जैव, अत्रिज, मृगांक, इन्दु, विधु, हिमकर, शशि, सोम, चन्द्रमा, गालु, शीतरश्मि, यामिनीनाथ, शीतकर, यदुनायक, निशाकर, सुधाकर, अब्धिज, कलेश, शीतांशु, रजनीपति, तारापति, अभिरूप, तारानायक, निशिमान, निशानाथ, रामाबन्धु, समुद्रांगज, कुमुदबन्धु, कुमुदेश्वर, पंकजारि, सिन्धुसुत, शशांक, जालाधिपुत्र। नक्षत्रेश, राकापति आदि।

मंगल :- भौम, कुज, भूमिसुत, धरापुत्र, अवनीतनय, धरणीनन्दन, वसुधासुत, आर, वक्र, क्रूर, लोहितांग, अविनेभय, रुधिर रधिरतिलक, रक्तवस्त्र, रक्तनेत्र, रक्ताम्बर, अंगारक, रक्तलोचन, तीव्रविलोचन, धरणीसुत आदि।

बुध :- शशधर तनय, विधपुत्र, तारातनय, हिमकर सुत, चन्द्रपुत्र, सोमसुत, शशि तनय, रौहिणेय, सौम्य, बोधन, शोभन, वित्त, ज्ञ, चान्द्रि, शांत, श्यामगात्र, अतिदीर्घ कुमार आदि।

(आगे पृष्ट 72 पर)

---

5. वैवाहिक जीवन विचार

वर कन्या चयन के शुभ-अशुभ योग -

01. वर के सप्तमेश की राशि में कन्या की राशि हो तो शुभफल प्रद।
02. कन्या की राशि वर के सप्तमेश का उच्च स्थान हो।
03. वर के सप्तमेश के नीच राशि में कन्या की राशि हो।
04. वर का शुक्र जिस राशि में हो। वही राशि कन्या की हो।
05. वर का लग्नेश जिस राशि में हो वही राशि कन्या की हो।
06. वर की जन्म राशि से सप्तम स्थान में जो राशि पड़े वही राशि कन्या की हो।
07. इन योगों में दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होता है। सप्तमेश 6,8,12 भाव में हो और शुभ ग्रह से दृष्टि नहीं हो। सप्तमेश नीच का हो। सप्तमेश अस्तंगत हो इन 3 योगों में स्त्री सुख में बाधा होती है।
0८. यदि सप्तमेश द्वादश भाव में हो और लग्नेश व जन्म राशीश सप्तम भाव में हो तब या तो अविवाहित जीवन बने अथवा दाम्पत्य जीवन दुखमय हो।
09. चन्द्र और शुक्र पर शनि मंगल की दृष्टि भी विवाह सम्बन्ध में बाधक होती है।
10. 1,7,12 भाव में पाप ग्रह हो चन्द्रमा 5वें निर्वली हो तो अविवाहित जीवन।
11. श+चं सप्तम में होने से स्त्री बन्ध्या होती है।
12. बु+शु सप्तम में स्त्री सुख में बाधा।
13. शु+मं ७वें या त्रिकोण में शु+ मं नवम में शु + मं पञ्चम में होने से दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता।
14. पापयुक्त शुक्र 5,7,9 वे भाव होने पर भी स्त्री का वियोग रहता है।
15. लग्न सप्तम और चन्द्र तीनों लग्न द्विस्वभाव राशि में अथवा लग्नेश सप्तमेश, जन्मराशीश तीनों द्विस्वभाव राशि में हो अथवा शुक्र द्विस्वभाव राशि में (3,6,9,12) हो तो 2 विवाह होते हैं।
16. सप्तमेश शुभ ग्रह सहित 6,8,12 वें भाव में और सप्तम में पापग्रह के होने से 2 विवाह होते हैं।
17. यदि शुक्र पापग्रह के साथ हो। शुक्र नीच राशि का हो। शुक्र नीच नवांश का हो।
18. शुक्र अस्त हो पापाक्रान्त हो तो 2 विवाह होते हैं।
19. सप्तमेश की दृष्टि रहित मंगल 7,8,12वें भाव में होने से 2 विवाह होते हैं। यदि

1,2,7 भाव में कोई एक पापग्रह स्थिति हो और सप्तमेश नीच राशिगत हो तो अथवा अस्त हो तो 3 विवाह होते हैं।

20. सप्तमेश एकादशेश का दृष्टि सम्बंध हो और बली त्रिशांश में हो तो अधिक स्त्रियाँ होती हैं।
21. चं+श सप्तम में बहुपत्नी योग बनाते हैं।
22. गुरु अपने उच्च नवमांश का हो तो बहुपत्नी योग बनाता है।
23. 1,7 भाव के स्वामी और जन्म राशि के स्वामी तथा शुक्र उच्च राशि के होने पर बहुदारा योग बनाता है।
24. बलवान् बुध लग्नेश से दशमस्थ हो और चन्द्रमा लग्न से तीसरे या सातवें हो तो जातक स्त्री समूह से घिरा हुआ रहता है।
25. सप्तमेश दशम में दशमेश सप्तम में द्वितीयेश 7वें या 10वें हो तो अनेक स्त्रियों का योग बनता है।
26. लग्नेश दशम में बली बुध के साथ सप्तमेश चन्द्र के साथ तृतीय भाव में होने से स्त्रियों का शिकार बनकर जीवनयापन करता है।
27. सप्तम स्थान का शुक्र द्विस्वभाव राशि में स्थित होकर पापग्रह से द्रष्ट हो तो एक से अधिक विवाह होते हैं, शुक्र सप्तम में स्वराशि का भी हो तो यह कल घटित होगा।
28. सप्तम स्थान में कोई क्लीव (नपुंसक) ग्रह हो और एकादश में 2 ग्रह स्थित हो तो स्त्री के जीवित रहने पर ही दूसरी स्त्री होती है।

स्त्री के गुणदोषादि का विचार -

01. शुक्र चर राशि में हो, गुरु सप्तमस्थ हो लग्नेश बली हो तो स्त्री पतिव्रता होती है।
02. सप्तमेश या शुक्र गुरु से युत या द्रष्ट होने पर शुभ लक्षण स्त्री।
03. गुरु सप्तमस्थ हो या सप्तमेश हो उस पर बुध शुक्र की दृष्टि से स्त्री सुलक्षणा।
04. सप्तमेश केन्द्रस्थ शुभग्रह के साथ हो अथवा उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री सुलक्षणा तथा स्वयं धनी व अधिकारी होती है ।
05. गुरु से द्रष्ट सप्तम भाव होने पर भी स्त्री दयालु सुन्दरी व चरित्रवान् होती है।
06. सप्तमेश शनि सप्तमस्थ हो तो स्त्री झगड़ालू होते हुए भी सुलक्षणा होती है।
07. लग्नाधिपति सप्तम में सप्तमेश पंचम में होने से पति स्त्री का आज्ञाकारी होता है।
08. लग्न में राहु व केतु रहने से स्त्री पति के वशीभूत होती है।
09. यदि शुक्र उच्च हो या शुभ नवमांश में हो अथवा सप्तमेश ग्रह से युक्त द्रष्ट हो अथवा सप्तमेश शुभग्रह के साथ हो तो स्त्री अच्छी मिलती है।
10. सप्तमेश सूर्य शुभ ग्रहयुक्त दृष्ट हो अथवा शुभराशि गत हो या शुभ नवमांश में हो तो स्त्री आज्ञाकारी होती है।

11. सप्तमस्थ चन्द्र पापयुत दृष्ट या पाप राशिगत या पाप नवमांश में हो तो कुटिल स्वभाव की स्त्री होती है। यदि चन्द्रशुभ ग्रहयुत दृष्ट या शुभ नवमांश में हो तो श्रेष्ठ स्वभाव वाली चंचल स्त्री होती है।
12. सप्तमस्थ मंगल उच्चस्थ व शुभयुत दृष्ट हो तो स्त्री निर्दयी परन्तु आज्ञाकारी।
13. सप्तमेश बुध नीचस्थ, पापयुत द्रष्ट, अष्टम द्वादश भावगत, अस्तगंत, पापक्रान्त आदि हो तो स्त्री पति की जानलेवा होती है।
14. शुक्र सप्तमेश पापयुक्तदृश्य नीचस्थ , अस्तंगत, शत्रु राशिगत आदि हो तो स्त्री कुल्टा (व्यभिचारिणी) होती है।
15. सप्तमेश शनि भी शुक्र जैसी स्थिति में हो तो स्त्री कुल्टा होती है।
16. राहु केतु सप्तमस्थ होने से उस पर पाप ग्रह की दृष्टि भी हो तो स्त्री पति को विषपान कराने वाली होती है।
17. सप्तमेश 6,8,12 भाव में शुक्र निर्बली से उसकी स्त्री अच्छी नहीं होती ।

विवाह समय -

01. सप्तमेश जिस राशि व नवमांश में हो, दोनों में जो बलवान् हो उसके दशाकाल में जब गोचर में गुरु सप्तमेश स्थित राशि से त्रिकोण में आने पर विवाह होता है।
02. चन्द्र और शुक्र में जो बली हो उसकी महादशा या अन्तर्दशा काल में बली ग्रह से त्रिकोण में गुरु आने पर विवाह होता है।
03. यदि सप्तेश शुक्र के साथ बैठा हो तो सप्तमेश की दशा व अन्तर्दशा में विवाह होता है। इसी प्रकार द्वितीयेश जिस राशि में बैठा हो उस राशि के स्वामी की दशा अन्तदर्शा में अथवा नवमेश दशमेश की दशादि में अथवा सप्तमस्थ ग्रह के दशादि अथवा सप्तमेश के साथ जो ग्रह बैठा हो उसकी दशा अन्तर्दशा में विवाह होता है।
04. जब लग्नेश गोचर में सप्तमस्थ राशि में अथवा सप्तमेश व शुक्र लग्नेश की राशि या नवमांश में आनेपर अथवा सप्तमस्थ ग्रह की दशादि में अथवा सप्तम को देखने से ग्रह की दशा अन्तर्दशा में विवाह होता है।
05. शुक्र चन्द्रमा और लग्न से सप्तमाधि पति की दशादि में विवाह होता है।
06. विवाह कारक ग्रह शुभ ग्रह शुभ राशिगत से दशा व अन्तर्दशा में आदि में यदि वह ग्रह शुभ तो हो किन्तु पापराशि में स्थित हो, दशादि के मध्यम में यदि वह ग्रह पापी हो और पापग्रह की राशि में होतो दशादि के अन्तिम समय मे विवाह काल समझना चाहिये।
07. यदि लग्नेश व सप्तमेश समीपवर्ती हों तो विवाह कम अवस्था में, यदि दूरी अधिक हो तो विलम्ब से विवाह होता है।
08. 1,2,7 वे भाव में शुभग्रह स्थित हो या शुभग्रह की दृष्टि हो तो कम अवस्था में विवाह योग बन जाता है।

09. सप्तमेश बलवान् होकर केन्द्रस्थ हो या त्रिकोण में हो तो बाल्य काल में विवाह होता है।

10. 1,2,7 वे भाव शुक्र के पापयुत द्रष्ट होने से विवाह विलम्ब से होता है।

11. शुक्र से सप्तमेश की दिशा में अथवा सप्तमस्थ ग्रह की दिशा में अथवा सप्तम को देखने वाली की दिशा में विवाह होता है।

शीघ्र वैधव्य योग-

द्वितीय भाव और द्वितीयेश, बुध तथा गुरु पर मं,श, के, श. का प्रभाव होने पर शीघ्र ही वैधव्य योग प्राप्त हो जाता है। स्त्री की कुण्डली वृषलग्न की है दूसरे भाव में शुक्र 12 वें में राहु तीसरे में सूर्य 4थे में बुध, गुरु, षष्ठ में केतु मंगल, सप्तम में चन्द्र और नवम में शनि स्थित है। यहॉ द्वितीय भावेश बुध और सप्तम भाव के कारक गुरु पर राहु की पंचम दृष्टि पड़ रही है तथा द्वितीय भाव पर केतु की नवम दृष्टि पड़ रही है अत- द्वितीय भाव तथा भावेश बुध एवं सप्तम का कारक गुरु तीनों पर पापदृष्टि होने से वैधव्य योग बन रहा है, किन्तु शीघ्र वैधव्य योग को बुध प्रदर्शित कर रहा है। क्योंकि बुध की कुमार अवस्था होती है तो जो जीवन के बाल्यकाल में ही प्रभावित होता है। अतः विवाह के अतिशीघ्र वैधव्य की प्राप्ति करवाता है

सुन्दर पति, पत्नि प्राप्ति योग-

यदि सप्तम भाव में समराशि हो तथा सप्तमेश और शुक्र भी समराशि में होने पर और अष्टम अष्टमेश शनि की दृष्टि मे नहीं होने पर सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव और भावेश पुरुष राशि में होकर गुरु आदि शुभ पुरुष राशि ग्रह से दृष्ट होने पर सुन्दर पति की प्राप्ति होती है।

पति त्याग योग -

सप्तम भाव और भावेश एवं स्त्री भाव कारक ग्रह पर जब सूर्य मंगल राहु क्षीणचन्द्र, इन पापी ग्रहों की युति दृष्टि हो या ये पापीग्रह जिन राशियों में स्थित हों उनके स्वामियों की दृष्टि युति हो, तो पुरुष का उसकी स्त्री से वियोग होता है।

कन्या लग्न की कुण्डली में, सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र पंचम में, शनि की राशि में है। चन्द्र चतुर्थ भाव में, राहु षष्ठ में, शनि नवम में, मंगल दशम में तथा केतु व्यय में है। यहाँ सप्तमेश शुक्र सप्तम का कारक गुरु सूर्य, जो पृथकता जनक है उसके साथ स्थित है। व्ययेश सूर्य शत्रु क्षेत्र जो भी पृथकता जनक है पंचम भात पापाक्रान्त राहु और क्षीण चन्द्र से है तथा दशमस्थ मंगल पापग्रह से पंचम भाव दृष्ट है।

जिस स्त्री की कुण्डली में सूर्य सप्तमस्थ हो उसका पति त्याग कर देता है अथवा द्वितीय भाव में सूर्य हो तब भी त्याग कर देता है।

मिथुन लग्न में मंगल शुक्र कर्क में बुध सिंह में सूर्य चन्द्र केतु गुरु मकर में शनि कुम्भ में राहु स्थित है। यहाँ गुरु सप्तमेश भी है और सप्तम का कारक भी है, जो 3 पाप ग्रहों (सूर्य, क्षीण चन्द्र, केतु) से घिरा हुआ है तथा राहु से दृष्ट है, इस कारण पति द्वारा पत्नी का त्याग हुआ।

कुम्भ लग्न में शनि चन्द्र मिथुन में, केतु धन में राहु मकर में मंगल नवम में शुक्र तथा दशम में सूर्य, बुध गुरु स्थित है यहाँ सप्तम भाव पर शत्रु और शनि की दृष्टि सप्तम में, सूर्य और सप्तम के कारक गुरु पर भी शनि की दृष्टि है। अतः इस स्त्री के पति ने त्याग दिया।

पत्नी मृत्यु योग -

द्वितीयेश या द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने पर एक के बाद एक पत्नी की मृत्यु होती रहती है। शुक्र सप्तम में चन्द्र द्वादश में होने पर पत्नी दीर्घजीवी नही होती। चन्द्र जिस भाव से षष्ठ में होता है उसके जीवन की हानि करता है। स्त्री के वैधव्य का विचार अष्टमभाव से करना चाहिए।

विवाह अभाव योग -

जब सप्तम भाव और भावेश तथा भाव कारक ग्रह शुक्र तीनों पापयुत दृष्ट होकर पीड़ित हो, कोई शुभ युति दृष्टि न हो तो पत्नी की प्राप्ति नहीं होती। वृश्चिक लग्न की कुण्डली में राहु लग्न में केतु सप्तम में, शनि, शुक्र,मंगल दशम में सूर्य लाभ में बुध व्यय में और चन्द्र षष्ठ भाव में हो तो विवाह नही होता।

सप्तम भाव राहु केतु से पीड़ित सप्तम भाव का कारक शुक्र मंगल और शनि के साथ दशम में यहाँ लग्नेश मंगल दशम भाव में प्रबल है। शुक्र सप्तमेश व सप्तम का कारक होकर मंगल शनि से दृष्ट है। विशेषता और यह है कि चन्द्र लग्न से भी सप्तमेश शुक्र हो गया है।

व्यभिचारी योग -

पुरुष की कुण्डली में राहु से आक्रान्त स्त्रीग्रह चतुर्थेश, स्त्री की कुण्डली में चतुर्थेश पुरुषग्रह सप्तम भाव या सप्तमेश के युति दृष्टि द्वारा सम्बन्ध स्थापित करें तो व्यभिचारी योग बन जाता है।

पर स्त्रीगामी योग -

01. धनेश तृतीय में कामी।

02. धनेश सप्तम में कामी, ससुराल से धन प्राप्ति।

03. तृतीयेश धन भाव में परस्त्रीगामी।
04. सप्तमेश धनभाव में बहुपत्नी वाला, ससुराल धनी।
05. तृतीयेश में पापग्रह व सप्तमेश हो तो, देवर से संबंध।
06. सप्तमेश अष्टम में वेश्यागामी, स्त्री रोगिणी।
07. सप्तमेश नवम में अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध।
08. सप्तमेश दशम में अतिकामी।
09. सप्तमेश नवम में अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध।
10. लाभेश व्यय भाव में बहुत स्त्रीवाला।
11. व्ययेश षष्ठ में पर स्त्रीगामी।
12. षष्ठ में कन्या राशि होने से स्त्रियों के सम्पर्क से धन नाश।
13. अष्टम में कुम्भराशि से अग्निद्वारा गृह विनाश।
14. सूर्य शुक्र तृतीय में अनेक स्त्रियों से सम्पर्क।
15. व्यय में मिथुन राशि से स्त्री निमित्त से अथवा भूतप्रेतादि बाधा हटाने में द्रव्य खर्च।
16. षष्ठ में शुक्र या राहु से व्यभिचारी।
17. सप्तम में सूर्य कामी।
18. सप्तम में बुध वेश्यागामी या बनिये की स्त्री से सम्पर्क।
19. सप्तम में शुक्र वेश्यागामी (स्त्री की कुण्डली में व्यभिचारी)।
20. नवम में मंगल परस्त्रीगामी या 9 वे शनि परस्त्री गामी।
21. दशम में केतु परस्त्रीगामी ।
22. मंगल व्यय में परस्त्रीगामी।
23. चन्द्र शुक्र से 6,8,12 भाव में हो।
24. नीच राशि के या क्षीणचन्द्र के साथ शुक्र का सम्बन्ध ।
25. चन्द्र से सप्तम शनि और दशम में शुक्र।
26. सप्तम भाव में शनि चन्द्र, शनि मंगल में कोई हो।
27. सप्तमेश से तीसरे स्थान में चन्द्र गुरु से दृष्ट हो तो बहुस्त्रीगामी। सप्तमेश से तृतीय या 7वें भाव में चन्द्र हो तो बहुस्त्रीगामी।
28. लग्नेश व सप्तमेश 6,8,12 व दूसरे भाव में हो तो मनमुटाव व संबंध विच्छेद, मंगल और शुक्र की परस्पर दृष्टि प्रेम विवाह सूचक होती है।
29. पंचमस्थ चन्द्र भौम से दृष्ट हो तो सम्बन्ध विच्छेद। पंचमेश एवं सप्तमेश की युति हो अथवा अन्योन्य राशिगत होने से प्रेमविवाह।

30. मंगल और शुक्र की युति से अत्यन्त कामी होता है। कन्या का सूर्य लग्नस्थ अथवा मीन का सूर्य सप्तमस्थ पत्नी के लिए अनिष्टकारक होता है। 7,8,10 वें भाव में बुध और शुक्र की युति परस्त्रीगामी योग बनाती है। मंगल और शुक्र सप्तम में या 10 वें भाव में हों, चन्द्र से सप्तम शनि और दशम में शुक्र हो। षष्ठेश 6,8,12 भाव में। मंगल शुक्र और शनि का परस्पर सम्बन्ध। धनेश तृतीय या चतुर्थ भाव में। सप्तम में शनि चन्द्र का योग। चन्द्र मंगल का योग। सप्तमस्थ बुध से वेश्या से सम्बन्ध। धनु लग्न में बुध सप्तम में हो तो बाल्यावस्था में ही विवाह योग कारक होता है। शुक्र के साथ राहु से गर्भवती से यौन सम्बन्ध होते हैं।

द्विभार्या योग -

सप्तम में मंगल पर शनि की दृष्टि हो, सप्तमस्थ शनि चन्द्र पर मंगल की दृष्टि हो। अष्टमेश लग्न या सप्तम भाव मे हो।लग्नेश लग्न में हो। लग्नेश 6वें भाव में हो। शुक्र यदि नीच, अस्त, या पापाक्रान्त हो। यदि सप्तम में अनेक पापग्रह हो अथवा द्वितीय भाव में अनेक पापग्रह हो तो 3 विवाह होते हैं। सप्तमेश से 1,4,7,8,12 वें भाव में पापग्रह हों तो अनेक स्त्रियों से सम्पर्क होता है।

यदि सप्तमेश या द्वितीयेश या शुक्र पापग्रह के साथ 6,8,12 वे भाव में हो तो एक स्त्री के मरने के बाद दूसरा विवाह होता है सप्तम में मिथुन का शुक्र से बहुस्त्रीगामी। बली शुक्र से सप्तम भाव दृष्ट होने से बहुस्त्रीगामी। भौमक्षेत्रीय शुक्र भौम से दृष्ट होने से बहु स्त्रीगामी।

01. लग्नेश सप्तमेश से निर्बल हो।

02. सप्तम में पापग्रह और धनेश नवम में हो।

03. अष्टमेश लग्न या सप्तम में।

04. लग्न या सप्तम में लग्नेश सप्तमेश का योग।

05. सप्तम भाव 3,4, पापग्रहों से युत दृष्ट हो।

06. सप्तम में पापग्रह और लग्नेश,धनेश, षष्ठेश का परस्पर संबंध हो।

द्विभार्या योग - (प्रथम स्त्री मरण पश्चात्)

01.सप्तमस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो।

02. सप्तमस्थ शनि चन्द्र पर मंगल की दृष्टि हो।

04. लग्नेश लग्न में हो अथवा लग्नेश षष्ठ भाव में हो।

05. शुक्र नीच, अस्त, व पापाक्रान्त हो।

06. सप्तम में या द्वितीय भाव में अने पापग्रह हों तो 3 विवाह।

07. सप्तमेश से 1,4,7,8,12 वें भाव में पापग्रह हों तो अनेंक स्त्री से संबंध।
08. यदि सप्तमेश या द्वितीयेश या शुक्र पापग्रह के साथ 6,8,12वे हों तो 1स्त्री के मरने के बाद दूसरा विवाह होता है।।
09. सप्तम में मिथुन का शुक्र बहुत स्त्रियों से सम्पर्क (धर्नुलग्न में)।
10. सप्तम भाव को बलवान शुक्र देखता हो।
11. बलवान चन्द्र और शुक्र की युति हो।
12. मेष व वृश्चिक राशि में शुक्र मंगल से दृष्ट हो।
13. सप्तमेश तृतीय स्थान में चन्द्र गुरु से दृष्ट हो तो, बहुत स्त्रियों से संबंध होता है।
14. सप्तमेश से तृतीय स्थान में या 7 वे स्थान में चन्द्र से अनेक से संबंध।
15. सप्तमेश शनि हो, तो अनेक स्त्री का संबंध।
16. मंगल और शुक्र की परस्पर दृष्टि से प्रेम विवाह।
17. पंचमस्थ शुक्र सप्तमेश से संबंधित हो तो प्रेम विवाह।
18. सप्तमस्थ चन्द्र मंगल से दृष्ट हो तो संबंध विच्छेद।
19. पंचमेश और सप्तमेश की युति हो अथवा अन्योन्य राशिगत से प्रेमविवाह।
20. मंगल और शुक्र की युति से अत्यन्त कामी हो।
21. कन्या का सूर्य लग्नस्थ अथवा मीन का सूर्य सप्तमस्थ पत्नी के लिए अनिष्ट कारक योग होता है।

दुःखी वैवाहिक जीवन -

2,7,11 वे भाव में सूर्य क्षीण चन्द्र नीच व अस्तंगत से संबंधित। 6,10,12 वें भाव के स्वामी से सबंधित पापग्रह सप्तम में। अस्तंगत व नीच राशिस्थ मंगल सप्तम में पाप दृष्ट हो। शुक्र चन्द्र मंगल या शनि से प्रभावित हो। सप्तमेश और एकादशेश अस्त नीच राशिगत पापयुत दृष्ट हो। पाप दृष्ट शनि सप्तम में। चन्द्र मंगल की युति सप्तम में। गुरु से चन्द्रमा षडाष्टक भाव में हो। शनि मंगल का योग या दृष्टि सम्बन्ध हो। सप्तम भाव, सप्तमेश, सप्तमस्थग्रह, सप्तम का कारक शुक्र और लग्नेश इन सब पर पापीग्रहों की दृष्टि व उनसे सम्बन्ध से वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है।

सप्तम भावस्थ केतु पर शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्री सुख में कमी। सप्तमस्थ राहु और मंगल अथवा चन्द्र और मंगल अथवा शनि और मंगल हो तो एवं सप्तमस्थ शुक्र पाप युत दृष्ट हो तो वैवाहिक जीवन कष्टमय, कभी कभी तलाक भी हो जाता है। लग्नेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु हों और 6 वें या 8 वें भाव में स्थित होना भी अशुभ है सदा वैवाहिक जीवन दुखी रहता।

6. संतान विचार

संतान प्राप्ति के योग -

01. बली धनेश पंचम में या धनेश गुरु से दृष्ट हो।
02. पंचम में बलवान बुध हो।
03. पंचम में कर्क या सिंह राशि का राहु हो।
04. पंचम भाव पर पंचमेश और शुभग्रह की दृष्ट हो।
05. बलीग्रह पंचम में पंचमेश से दृष्ट हो।
06. लग्न या चन्द्र से गुरु केन्द्र त्रिकोण में हो।
07. पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो।
08. पंचमभाव में विषम राशि या विषम नवांश में चन्द्र सूर्य से दृष्ट हो।
09. लग्नेश और नवमेश दोनों सप्तमस्थ हों।
10. गुरु बली हो और लग्नेश पंचम में हो।
11. द्वितीयेश लग्न में हो।
12. पंचम भाव में चन्द्र शुक्र की युति या दृष्टि हो।
13. लग्नेश पंचमेश की युति अथवा परस्पर दृष्टि अथवा दोनों स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री अथवा परस्पर दृष्टि।
14. केतु पंचम में मेष, वृष, कर्क राशि का हो।
15. लग्नेश पंचमेश शुभग्रह युत केन्द्र में हो।
16. पंचमेश के नवमांश का स्वामी शुभग्रहयुत दृष्ट हो।
17. केन्द्र व त्रिकोणाधिपति शुभग्रह पंचम में हो तथा पंचमेश 6,8,12 भाव में नही हो एवं नीच अस्त व शत्रु राशिगत न हो।
18. पंचम में विषमराशि तथ इनके राशियों के नवमांशाधिप मंगल, शनि, और शुक्र से दृष्ट हों।
19. पंचम भाव में राहु या केतु हो तो 1 पुत्र।
20. शुक्र राशिस्थ चन्द्र नवम पंचम में हो तो 1 पुत्र।
21. पंचम में तुला राशि शुभग्रह युक्त हो तो 1 पुत्र।
22. अपने स्वगृह से 5 वे सूर्य या मंगल हो तो 1 पुत्र ।

25. लाभ में गुरु शुक्र हो प्रथम पुत्र।

26. पंचम में पुरुष राशि पुरुष ग्रह से दृष्ट हो तो प्रथम पुत्र जन्म।

27. पंचमेश पुरुषराशि या पुरुष नवमांश में हो।

28. लग्नेश विषम राशि में हो।

29. यदि मंगल द्वितीय भाव में हो शनि तृतीय में गुरु पंचम या नवम में और नवमेश पंचमेश निर्बल हो तो पुत्र का अभाव रहता है।

30. शनि और राहु का पंचम भाव उसके स्वामी तथा गुरु से सम्बन्ध होने पर मृत सन्तान का योग बनता है। पंचमेश शनि बुध के नवमांश में हो और बुध से दृष्ट भी हो तो सन्तान का अभाव होता है।

पुत्र सन्तति योग -

पञ्चम भाव व भावेश अथवा गुरु शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट तो सन्तान की प्राप्ति होती है। ये तीनों स्वगृही उच्च मूल त्रिकोण में स्थित होकर शुभयुतदृष्ट केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पुत्र प्राप्ति अवश्य होती है।

लग्न से 5 वें स्थान में वृष, कर्क, तुला राशि हो वहाँ चन्द्र या शुक्र स्थित हो अथवा इन की दृष्टि हो तो और अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो बहु पुत्र योग बनता है। शनि व मंगल से युत वृष अनिष्टकारी होता है।

वृश्चिक लग्न में जन्म हो और गुरु तृतीय भाव में मकर राशि का वक्री होकर स्थित होने पर बहुत पुत्रों की प्राप्ति होती है। यह बात निःसन्देह है। गुरु पंचम भाव अर्थात पुत्र भाव का कारक होने से उच्च का फल देकर बहुपुत्र योग बनाता है।

वृश्चिक लग्न में जन्म हो तो नवमभाव में कर्कराशि में गुरु उच्चराशिगत वक्री हो तो कठिनता से एक पुत्र की प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति में गुरु पर पापग्रह की दृष्टि न हो।

वृश्चिक लग्न में जन्म हो गुरु द्वितीय भाव में, धनु का मकर राशि समीप होने से वक्र होने के कारण नीच राशि के तुल्य ही फल कारक होने से सन्तान की उत्पत्ति अधिक करेगा। निष्कर्ष यह है कि वह राशि जितनी मकर राशि के समीप होगी उतनी पुत्र संख्या अधिक होगी।

कन्या सन्तति योग -

01. पंचमेश धन भाव में अथवा अष्टम में हो तो कन्या सन्तति अधिक होती है।
02. एकादश में बुध, शुक्र, चन्द्र में से कोई हो तो कन्यायें अधिक होती है।
03. चन्द्र, बुध, शुक्र में से कोई ग्रह पंचम में हो तो कन्यायें अधिक होती है।
04. पंचम में स्त्रीग्रह की राशि मंगल से दृष्ट हो कन्यायें अधिक होती है।
05. एकादश में बुध, शुक्र या चन्द्र बुध हो तो कन्यायें अधिक होती हैं।
06. पंचम में कर्क का चन्द्र या स्वराशिस्थ शुक्र हो तो कन्यायें अधिक होती है।
07. सिंह राशि का चन्द्र पंचम में कन्याप्रद होती है।
08. स्वगृही सूर्य पंचम में 1,2,3 भावों में लग्नेश हो।
09. पंचमेश पंचम में या केन्द्र त्रिकोण में हो तो प्रथम पुत्र।
10. लग्नेश 5 या 7 वें भाव में सूर्य शनि का योग हो।
11. लग्नेश चतुर्थ में हो तो प्रथम कन्या के बाद पुत्र हो।
12. समराशि या सम संख्यक भाव में लग्नेश हो प्रथम कन्या के बाद पुत्र।
13. पंचमेश स्त्रीग्रह से युक्त हो या दृष्ट हो तो प्रथम कन्या के बाद पुत्र।
12. पंचम भाव में स्त्री ग्रह की राशि को चन्द्र शुक्र देखते हों तो कन्या सन्तति अधिक होती है।
13. पंचमेश अथवा नवमेश सप्तम भाव में हो अथवा समराशि में हो उस पर चन्द्र शुक्र की दृष्टि होने पर कन्या सन्तति अधिक होती है।
14. पंचमेश जितने नवमांश व्यतीत कर गया हो उतनी संख्या सन्तान की संभावित है।
15. पंचमेश स्वराशि का होने पर अधिक सन्तान नहीं होती।
16. 1,5 भाव व चन्द्र राशि में वृष सिंह कन्या वृश्चिक राशि होने पर अधिक सन्तान नहीं होती।
17. पंचमेश की नवमांशधिपति अपने नवमांश में रहने पर 1 पुत्र की प्राप्ति होती है।
18. लग्न से अथवा चन्द्र से 5वें भाव में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि होगी पुत्री प्राप्ति अथवा पंचम भाव पंचममेश सिह युक्त हो।
19. एकादशभाव में शुभग्रह की राशि हो अथवा लाभेश शुभपुत्र दृष्ट हो।
29. लग्नेश पंचम में हो तथा गुरु बलवान हो तो निश्चय फल होता है।

30. बली गुरु लग्नेश से दृष्ट होने पर भी पुत्र प्राप्ति।

31. पंचम भाव व भावेश शुभ..दृष्ट हो और गुरु बलवान हो तो बहु पुत्रयोग होता है।

32. लग्नेश और पंचमेश एकत्र स्थिति अथवा दोनों का दृष्टि सम्बन्ध हो तो पुत्र प्राप्ति।

33. लग्नेश और नवमेश दोनों ७वें भाव में हो अथवा द्वितीय लग्न में हो.अथवा लग्नेश व पंचमेश उच्चस्थ स्वराशिगत व मित्र राशि में हो तो पुत्र प्राप्ति।

34. सूर्य लग्न में शनि सप्तम में हो। सूर्य और शनि सप्तम भाव में हो चन्द्र दशम में हो उस पर गुरु की दृष्टि न हो।

35. षष्ठेश सूर्य और शनि षष्ठ भाव में तीनों की युक्ति हो।

36. शनि और मंगल चतुर्थ भाव में हो।

37. लग्न और चन्द्र में जो बली हो उससे 5वें भाव में गुरु काक वर्ग और शुभ राशि हो अथवा शुभ दृष्टि हो तो पुत्र प्राप्ति अवश्य होती है।

38. पंचमभाव में शनि वर्ग हो बुध से दृष्ट हो किन्तु मं.गु. से अर्थात तीनों में से किसी एक से भी दृष्ट नहीं हो तो क्षेत्रपुत्र किसी अन्य के सम्भोग से पुत्र प्रप्ति होती है। यदि पंचम में बुध, शनि से दृष्ट हो किसी पुरुष ग्रह से दृष्ट नहीं हो तब भी क्षेत्रज पुत्र की प्राप्त होती है।

39. यदि चन्द्र मंगल के नवमांश में होकर 5वें भाव में बैठा हो और शनि से दृष्ट होकर अन्य किसी ग्रह से दृष्ट नही हो तो अन्य पुरुष द्वारा पुत्र प्राप्ति होती है।

40. पंचम भाव चन्द्र के नवमांश में हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो दासी से पुत्र उत्पन्न होता है।

41. पंचम में पुरुष राशि को सू.मं.गु. में से किसी दृष्टि होता पुत्र सन्तति अधिक होती है।

सन्तान प्रतिबन्धक योग -

01. सिंह राशि पंचम भाव में हो उसमें शनि और मंगल स्थित हो तथा पंचमेश 6ठे भाव में हो।

02. बुध और लग्नेश लग्न के बिना अन्य केन्द्र स्थान में हो।

03. तृतीयेश और चन्द्र 1,4,6,8,9,10,12 भावों में हो 5,8,12, वे भावों में पाप ग्रह हो।

04. 5,8,12 वे भावों में पापग्रह हों ।

05. लग्न में पापी गुरु, चतुर्थ मे चन्द्र, पंचम में लग्नेश तथा पंचमेश निर्बली हो।

06. 7 वे भाव में शुक्र, 10 वे चन्द्र 4थे भाव में पापग्रह हो।

07. लग्न में मंगल 8 वे शनि 5 वे सूर्य हो।

08. पंचम में पाप ग्रह की राशि पापग्रह से दृष्ट हो।

09. कर्क व सिंह राशि को छोड़कर राहु पंचम में ।

10. पंचमेश गुरु से द्वादश में शत्रु क्षेत्री नीच व अस्त हो।

11. चन्द्र मंगल शुक्र धनु राशि में हो।

12. एकादश में शनि व चन्द्र की युति हो।

13. 5,1,9 भाव के स्वामी लग्न से 6,8,12 भाव में हो।

14. पंचम में गुरु हो , गुरु से पंचम में पाप ग्रह हों।

15. पंचम में कर्क या कुम्भराशि का गुरु हो।

16. पंचम में राहु पंचमेश 6,8,12 भाव में हो।

17. 1,7,9,12 भावों में शत्रुगृही पापग्रह हो।

18. पंचम भाव में चन्द्र 8 वें या 12 वें समस्त पापग्रह।

19. सप्तम भाव में बुध और शुक्र की युति हो।

20. चतुर्थ में पापग्रह पंचम में गुरु हो।

21. 5,8,12 भावों में पापग्रह हों।

22. पंचमेश 6,8,12 भाव में हो।

23. पंचमेश अस्तंगत हो।

24. लग्न में चन्द्र गुरु और सप्तम में शनि मंगल का योग हो।

25. पंचम भाव में सूर्य, मंगल, राहु, शनि कोई भी 2 या 3 हो।

26. 5 वें दूसरे व 11 वें मंगल हो।

27. तृतीय या अष्टम भाव में शनि हो।

28. लग्न में पापग्रह, चतुर्थ में चन्द्र और पंचम में निर्बली लग्नेश हो।

29. **यदि 6,8,12 भावों के स्वामी पंचम में हो अथवा पंचमेश 6,8,12 वें भावों में हो अथवा पंचमेश नीच का हो अथवा अस्त हो अथवा नीच राशि का ग्रह पंचम में हो इन योगों में सन्तान का अभाव होता है। यदि हो तब भी नहीं के बराबर होता है।**

30. गुरु मकर, मीन, कर्क व धनु का 5वें में पुत्र के लिए अनिष्ट कारक होता है अर्थात् सन्तान प्राप्ति बन्धक योग होता है।

31. तृतीयेश 1,3,5 स्थानों में हो और कोई शुभ योग नहीं हो तो सन्तान बाधक योग बनता है।

32. पंचमेश और द्वितीये शनिर्बल हो और पंचम भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अनेक स्त्री होने पर भी सन्तान की अभाव रहता है।

33. यदि लग्नेश सप्तमेश पंचमेश और गुरु सभी निर्बल होने से सन्तान का अभाव होता है।

34. लग्न से, पंचम भाव से, गुरु से या चन्द्र से पंचम स्थान में पापग्रह स्थित हो, शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक निःसन्तान योग बनता है।

35. पंचमेश से 6,8,12 वें भाव में पापग्रह हों अथवा पंचम भाव से 6,8,12 वे भाव में पापग्रह हों तो निःसन्तान योग बनता है।

36. चन्द्र दशम में शुक्र सप्तम में तथा चतुर्थ में एक से अधिक पापग्रह हों तो जातक की जीवित अवस्था में ही सन्तानों की मृत्यु हो जाती है।

37. दशम में चन्द्र सातवे में राहू और चतुर्थ में पापग्रह और लग्नेश बुद्ध के साथ हो तो वंशवृद्धि नहीं होती है।

38. 5,8,12 वें भावों में अर्थात् तीनों स्थानों में पापग्रह स्थित होने पर वंशवृद्धि नहीं होती है।

39. 1,7,12 वें भावों में शत्रु राशि के पापग्रह स्थित होने पर वंशविच्छेह हो जाता है।

40. लग्नस्थ चन्द्र गुरु पर शनि मंगल की दृष्टि हो तो वंशविच्छेह हो जाता है।

41. चंद्र पंचम में 1,7,12 भावों में समस्त पापग्रह होने से वंशविच्छेह होता है।

42. यदि चतुर्थ में पापग्रह हो, चन्द्र पंचम में 8,1,12 में पापग्रह हो इन चार योगों में भी सन्तान योग बनता है।

सन्तान विलम्ब योग

संतान विलम्ब से होती हैं यदि-

01. लग्नेश, पंचमेश, नवमेश ये तीनों ग्रह शुभग्रहयुत होकर 6,8,12 वें हो।

02. पंचम में सभी पापग्रह दशम में सभी शुभ ग्रह हो।

03. पापग्रह अथवा गुरु चतुर्थ या पंचम में और 8 वें चन्द्र से 30 वर्ष में।

04. पाप ग्रह की राशि लग्न में पापयुत हो सूर्य निर्बली हो और मंगल समराशि में 30 वर्ष में संतान होती है।

05. कर्कराशि में गया चंद्र पापयुत दृष्ट और सूर्य को शनि देखता हो।
06. एकादश में राहु हो तो विलम्ब से पुत्र प्राप्ति।
07. पंचम में गुरु हो पंचमेश शुक्र के साथ हो 32, 33 वर्ष में।
08. पंचमेश व गुरु केन्द्र में हो 36 वें वर्ष में ।
09. नवमेश में गुरु हो, गुरु में 9 वें भाव में शुक्र लग्नेश के साथ।
10. पंचम में रवि राहु मंगल तीनों ग्रह हों।
11. बुध,केतु, 5 वे नवमेश लग्न में और पंचम में शनि हो तो कष्ट से पुत्र प्राप्ति।
12. शुभग्रह चतुर्थ में हो या चतुर्थ भाव को देखते हों तो विलम्ब सें पुत्र प्राप्ति।
13. 1,4,9 वें भाव के स्वामी 6,8,12 भावों में शुभग्रह युक्त से विलम्ब से।
14. 2,8,6,5 सन्तान हीन राशि पंचम में विलम्ब से।
15. 5 वे या 11 वे राहु शनि या मंगल हो तो विलम्ब से।
16. पंचमेश अस्त हो या पापयुत या पापग्रह के मध्य हो।
17. पंचम में पापग्रह, पंचम में मंगल शुभदृष्टि, धनु राशि का गुरु, उच्च राशि का शनि या मंगल शुभग्रह दृष्ट हो। इन योगों में से कोई योग होने पर क से पुत्र की प्राप्ति होती है।

सन्तान अभाव योग -

1. सूर्य लग्न में शनि सप्तम में।
2. सूर्य शनि सप्तम भाव में।
3. षष्ठेश, शनि और रवि ये तीनों छठे भाव में हो तथा चन्द्र सप्त में बुध से दृष्ट हो।
4. शनि मंगल 6 वें या 4 थे भाव में हो।
5. 6,8,12, भाव के स्वामी पंचम में हो।
6. पंचमेश 6,8,12 भाव में हो।
7. पंचमेश नीच व अस्तंगत हो।
8. कर्क वृश्चिक मकर मीन का गुरु पंचम में हो।
9. तृतीयेश 1,2,3,5 भावों में शुभ ग्रह से युत व दृष्ट न हो।
10. पंचमेश और द्वितीयेश निर्बली हों तथा पंचम पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो।
11. गुरु पापग्रहों के मध्य हो पंचमेश जिस राशि में हो उससे 6,8,12 स्थान में पापग्रह हों।

गर्भपात के योग -

1. पंचम पर सूर्य राहु या केतु दृष्टि हो।
2. पंचम में बुध शनि बली हो।
3. 5,7 भाव में पापग्रह और अष्टम में मंगल।
4. पंचम में शनि हो।
5. 5,11 भाव में मंगल, शनि से दृष्ट हो।
6. पंचम भाव पर राहु, मंगल, की अथवा सूर्य, मंगल की दृष्टि से गर्भपात।

यमल जन्मयोग -जुड़वा बच्चे

लग्नेश तृतीयेश मंगल और बुध का परस्पर सम्बन्ध स्थापित होता है तब यमल (जुड़वा बच्चे) का जन्म होता है। कुम्भ लग्न से छठे चन्द्र, दशवें शनि, मंगल होने पर भी यमल योग बनता है।

पृष्ठ 56 से आगे-

गुरुः- सुराधिप, देवसचिव, सुराचार्य, सुरेज्य, गुरु, देवगुरु, सुरगुरु, जीवन, अंगिरा, प्रशान्त, वाचांगपति, वागीश, ज्य, दिवेश वंद्य, अमर पूज्य, सुरपण्डित, ग्रहराज ज्यौ, प्रचक्षस, ईड्य, अमर गुरु, शिखंडिज, वचसांपति, देवमंत्री, विबुधपति गुरु, सुर सेवति, शक्रपुरोहित पीताम्बर, ममतापति, कचतात, सुरामात्य आदि।

शुक्रः- भृगु, भार्गव, उश्न, सुनु, अच्छ, कान, कवि, सित, भृगुसुत, आस्फुजित, दानवेज्य, उशना, दैत्य गुरु, बलिपण्डित, असुर पुरोहित, दैत्याचार्य दैत्यऋत्विक, पुण्डरीक, घिष्ण्य, दैत्याचार्य, शुक्लाम्बर आदि।

शनिः- छायात्मज, सूर्यपुत्र, पंगु, अपंग, मन्द, यम, अर्कपूत्र, कोण, असित, सौरि, नील, नीलेश, नीलाम्बर, कपिलाक्ष, दीर्घ, तम, असुर, अगु, दग्धेदह, अभिशप्त, कृशांग, तरणितन्य, पातंगी, क्रोड, क्रूरलोचन, द्युमणिसुत, दिनकरात्मज आदि।

राहुः- सैंहिकेय, अर्धकाय, स्वरभान, सर्प, दंष्ट्री, विकट, भुजंग, अहिराज, फगिनाथ, विधुन्त आदि।

केतु :- ध्वज, ध्वजी, शिखी, जैमिनेय, धूम्रकेतु आदि।

---

7. आजीविका विचार

दशमेश का अन्य भावेशों से युतिफल -

दशमेश लग्नेश का योग होने पर जातक स्वावलम्बी जीवन पैतृक व्यवसाय कर्त्ता धनेश से योग होने पर सूदखोरी (ब्याज पर रुपैया देना) से। तृतीयेश से योग होने पर साहस व जोखिम पूर्ण कार्य से टेवलिंग, विजय प्रतिनिधि, डिलीवरी मैन, परिवहन कर्मचारी तथा भ्रमणशील धन्धे से धन लाभ, धनेश से योग हो तो जमीन जायदाद संबन्धी कार्य कर्त्ता। पञ्चमेश से योग होने पर राज्यश्रित जीवन, बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यकर्त्ता, शिक्षक, पाठ पूजा मठ मन्दिर आदि से सम्बन्धित कार्य षष्ठेश के साथ होने पर डाक्टर, जेलर, वकील, जज, तस्कर गुण्डागीरी के कार्य। सप्तमेश से योग हो तो भ्रमणशील कार्य, रेल, रोडतेज, डाक, तार विभाग, मालवाहक ट्रांसपोर्ट कम्पनी में कार्यरत।

अष्टमेश से योग होने पर धन्धे में रुकावट व अस्थिरता आती है। नवमेश के साथ होने पर धार्मिक क्षेत्र में कार्यरत। लाभेश के साथ बड़े भाई के सहयोग से तथा अनेक धन्धों से लाभ, षष्ठेश के साथ होने पर वैदेशिक धन्धे में से धन लाभ। कन्या राशि का दशस्थ शुक्र सेल काउन्टर पुस्तकालय अध्यक्ष, सिंह राशिस्थ सूर्य मंगल राजनैतिकनेता, सूर्यशुक्र राजदूत, तुला राशि में दशमस्थ शुक्र सिनेमा में कलाकार, फैशन मोडल मूर्तिकार, तुलाराशि दशम में शनिशुक्र की स्थिति पोशाक डिजाईनर कैमरा मैन कार्टूनिस्ट मैनूपमैन। उत्तम राजयोग। मंल राहु शुक्र की युति दशम भाव में तुला राशि के होने पर जुआघर, सट्टेवाजी। वृश्चिक राशिगत चन्द्र दशम में गोताखोर। दशम में सूर्य वृश्चिक राशिगत प्रशासन अधिकारी। दशमस्थ धनुराशि में बुध व गुरु शिक्षक, समाज सुधारक धार्मिक संस्था में कार्यरत। दशमस्थ धनुराशि में बुध गुरु शनि का योग वकील या न्यायाधीश। दशमस्थ मकर राशि में मंगल वैज्ञानिक, भूगर्भ शास्त्री, वनअधिकारी। शनिवली होने पर दशमस्थ मकर राशि में बैंकर जमीदार या व्यापारी। बलवान बुध दशमस्थ कुम्भ राशि में मेधावी, अन्वेषक या वैज्ञानिक। शनिबुध का योग दशमस्थ कुम्भ राशि में इन्जिनियर, वैज्ञानिक, राज्य में सम्मानित पद पर नियुक्ति:-सिंह के सूर्य पर चन्द्र की दृष्टि। मकर कुम्भराशि में सूर्य शनि से दृष्टहा। कुम्भ राशि के चन्द्र

को या मीन राशि के चन्द्र को सूर्य देखता हो। मीन राशि के चन्द्र को बुध या शुक्र देखता हो। शुक्र की राशि में मंगल स्थित हो। कर्कराशिगत मंगल को गुरु या शनि देखे। शनि क्षेत्रीय मंगल को गुरु या शुक्र देखता हो। भौमक्षेत्रज बुध को मंगल देखता हो। सिंह राशिगत चन्द्र को सूर्य देखता हो अथवा मंगल गुरु व शनि में से कोई देखता हो। कन्या राशिगत चन्द्र को सूर्य या शुक्र देखता हो। वृश्चिक राशिगत चन्द्र पर मंगल की दृष्टि हो। धनु राशिगत चन्द्र को मंगल या सूर्य देखता हो। शुक्र क्षेत्रीय बुध पर चन्द्र की दृष्टि हो। चन्द्र मंगल गुरु में से कोई मिथुन या कन्या राशि के बुध को देखता हो। गुरु क्षेत्रीय बुध को गुरु या शुक्र देखता हो। बुध क्षेत्रीय गुरु पर शनि की दृष्टि हो तो राजकार्य के योग बनते है।

दशम भावस्थ दो ग्रहों का फल -

सूर्य चन्द्र से सेनापति, शत्रुञ्जत सुन्दर निर्दयी, सूर्य मंगल से नशेबाज, दण्डाधिकारी, राजा का सेवक सूर्य बुध से विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान, व्यापारी, कुशाग्रबुद्धि, सम्पन्न सूर्य गुरु से पौरोहित कर्म, मित्रो के सहयोग से धन प्राप्ति यशमान प्रतिष्ठा प्राप्त, सूर्य शुक्र से धनी परिवार में विवाह, वाहन सुख राजनीति में कुशल सूर्य शनि से विदेश में नौकरी, दु:ख परेशानी, पिता से विरोध पैतृक सम्पत्ति का लाभ नहीं, तस्कर भय सूर्य राहु से पिता को दुर्घटना का भय एक पुत्र दुष्ट व अपराधी, चन्द्र मंगल से बुद्धिमान् पराक्रमी,, धनी, व्यापारी, माता से विरोध चन्द्र बुध से धनी मानी, विनोदी, राज्यमन्त्री, बन्धुविरोध वृद्धावस्था में दुखी चन्द्र गुरु से ज्यौतिषविद्या का प्रकाण्ड विद्वान धनी दानी मानी चन्द्र शुक से धनी मानी नृपतुल्य चन्द्र शनि से व्यभिचारी अप्राकृतिक मैथुनप्रिय स्पष्टवक्ता छल कपट से दूर दार्शनिक पुस्तक मुद्रण या पुस्तक विक्रेता, शत्रुजित् विख्यात मंगल बुध से कुशल वैज्ञानिक या तकनीशियन, बुद्धिमान राजा से सम्मानित सेनापति, मंगल गुरु से दलित वर्ग का नेता, परिश्रमी कार्य में सफलता मंगल शुक से वैदेशिक व्यापार, शस्त्रविद्या में निपुण राज्यमन्त्री व्यभिचारी कम्प्यूटर यन्त्र द्वारा प्रगति मंगल शनि से से राजदण्ड का भय दु:साहसी सन्तान सुख का अभाव, माता से विरोध दाम्पत्य जीवन में असन्तोष तकनीशियन बुध गुरु से विद्वान् राज्यपत्रितधिकारी, सन्तानपक्ष में चिन्ता बुध शुक्र से धनी सुन्दर पत्नी से सुखी नीति शास्त्र का ज्ञाता दलित वर्ग का सहयोगी बुध शनि से अनुवादक प्रूफरीडर, अल्पधनी अल्पवीर्य परोपकारी, झूठा नौकर दशमस्थ गुरु धनी यशस्वी, सुखी शत्रुजित् गुरु शुक्र से ब्राह्मणों का रक्षक, राज्याधिकारी गुरु राहु से दुष्ट स्वभाव, परपीड़क शुक्र दशमस्थ होने पर स्त्री वर्ग से विशेष लाभ, मिलनसार

सहृदय होता है। शुक्र शनि से महिलाओं के शृंगार की वस्तु से लाभ वीर्य विकार शनि दशमेश लाभेश होने पर धनी राज्याश्रित जीवन,न्यायप्रिय वृद्धावस्था में विरक्त राहु केतु त्रिकोणस्थ केन्द्रेश ग्रह से सम्बन्धित होने पर उत्तम फल कारक होते हैं, तथा दुष्ट स्थानस्थ भी शुभ फल कारक होते हैं दशमस्थ कलाकार विद्वान् या व्यापार करवाता है। षष्ठस्थ राहु दीर्घ रोगी अष्टमस्थ राहु स्थान भंग अवनति या अपमानित करता है।

नवमांश कुण्डली से व्यवसाय निर्णय-

जन्मलग्न चन्द्रलग्न सूर्यलग्न से दशम भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित हो उस राशि के स्वामी के धर्मानुसार आजीविका का विचार करना चाहिये। तीनो नवमांश पतियों में जो बलवान् हो तो उसके अनुसार आजीविका का चयन करना चाहिये।

बलवान ग्रहों से बनने वाले योग-

सूर्य बलवान हो तो सूर्य ऊर्जा व शक्ति का प्रतीक है। रोग शोक का शमन कर्त्ता है। सूर्य उच्च पदाधिकार प्रदान करता है। वन पर्वत जड़ी बूंटी औषधि निर्माण द्वारा, इमारती लकड़ी ऊनीवस्त्र पशु चिकित्सक वन अधिकारी न्यायाधीश मण्डलाधिकारी राजनेता मन्त्र जप ध्यान धातुक्रिया या पत्थर की कारीगरी, किसी सम्मानित व्यक्तिका आश्रय आदि से आजीविका चलाता है।

चन्द्र बलवान हो तो समुद्र समुद्र से उत्पन्न पदार्थ जलयान, मोती जलसेना में नौकरी दूध, घृत, डेयरी, पेय पदार्थ, पर्यटन व्यवसाय विक्रय प्रतिनिधि भ्रमणशील कारोबार वस्त्र सफेदवस्तु स्त्रियों के उपयोगी सामग्री चांदी आदि से सम्बन्धित आजीविका से जीवन यापन करता है।

मंगल बलवान हो तो जातक कर्मठ, पराक्रमी, साहसी, व परिश्रमी होता है जोखिमपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। सेना पुलिस सुरक्षा सेवा अग्नि कार्य पटाखे, फूलझड़ी, ढलाई, बैल्डिंग होटल रेस्तरां भोजन पकाने का कार्य दन्त चिकित्सक, शल्य चिकित्सक नापित कसाई, अस्त्र शस्त्रनिर्माण ब्लडबैंक, खिलाड़ी धावक बास्कर वकील पहलवान आदि ऐसे सभी कार्य जिसमें देहबल जोखिम के कार्य परिश्रम के कार्य आदि से आजीविका का चयन करता है।

बुध बलवान हो तो बुद्धि तर्क कुशल चतुराई व व्यापार में अधिक रुचि रखता है लेखन पत्रकारिता, अध्यापन, प्रवचन पुराण पाठ कथा कीर्त्तन पौरोहित्य ज्यौतिष नृत्यगीत, संचार सेवा बीमा ट्रान्सपोर्ट कूरियर दलाल स्टाक एक्सचेन्ज आडीटर अकाउन्टेन्ट रेल,

डाक तार विमान सेवा सम्पादक प्रकाशक आदि कार्य की आजीविका अपनाता है।

गुरुबलवान हो तो ज्ञान विवेक व धन का लेन देन से जीविका पाता है। बैंक अधिकारी, वकील, कोषाध्यक्ष, विधायक, न्यायाधीश, सम्पादक मठाधीश पुराणकथा वाचक, शोधकार्य विज्ञानपन परामर्श प्रदान, आदि कार्य से आजीविका चलाता है।

शुक्र बलवान हो तो संगीत, सुगन्धित पदार्थ, सुन्दर स्त्री, व थियेटर सिनेमा क्षेत्र से लाभ पाता है। रतिसुख, सम्पदा, कला काव्य आभूषण सौन्दर्य प्रसाधन, सिलाई कढ़ाई, होटल,सिनेमा, वीडियो, दूरदर्शन फिल्म संबंधी कार्य, चित्रकारी फोटोग्राफी, कीमती पोशक गलीचे का कार्य हीरा जवाहरात कार कम्प्यूटर रात्रिकल्ब से सम्बन्धित कार्य से आजिविका द्वारा जीवन निर्वाह करता है।

शनि बलवान हो तो तेल कोयला खनिज पदार्थ लोहे से सम्बन्धित कार्य कठोर परिश्रम श्रमजीवी अथवा श्रमिकवर्ग के आश्रय से मशीनरी के कार्य फैक्ट्री आदि ईंट का भट्टा, पर्वत से पत्थर उखाड़ना, सरकारी सेवा, रिश्वतखोरी निन्दित कार्य चर्म उद्योग आदि आजीविका का चयन करता है।

राहु बलवान् हो तो विमान सेवा, विद्युत उत्पादन, टेलीफोन, दन्तचिकित्सा शिल्प कार्य, वकील, शोधकर्त्ता, विषैली जड़ी बूंटा विस्फोटक पदार्थ विमान दूरभाष इन्टरनैट क्षेत्र पर अधिकार आदि से आजीविका दिलाता है।

केतु बलवान हो तो गुप्तचरी मादक पदार्थ युद्ध सामग्री विषैली गैस कपट कार्य जादूटोना, मोक्षप्रदकार्य आदि से आजीविका का चयन करता है 2,6,10,4,8,12, राशियां दशम भाव से सम्बन्ध करने पर नौकरी द्वारा जीविका चलती है सूर्य मंगल शनि राहु केतु का जन्म कुण्डली में विशेष प्रभाव हो तो तकनीकी की क्षेत्र इन्जिनियरिंग व डॉक्टरी में सफलता प्रदान करते हैं।

कारकांश से बनने वाले योग-

सूर्य राहु का योग पाप प्रभाव से मुक्त हो तो औषधि विक्रेता वैद्य या डाक्टर विष से पर बनी औषधियों का प्रयोग विशेषतः करते हैं। सूर्य राहु पर मंगल की दृष्टि निष्ठुर आततायी दूसरे का घर जलाकर सुख करती है कारकांश में केतुपर शुक्र की दृष्टि से धार्मिक यज्ञ समारोहों में भाग लेने वाला बलि व चढ़ावे से धन प्राप्त करता है। कारकांश पर सूर्य और शुक्र की दृष्टि से राजदूत या राजा का प्रतिनिधि बनता है। कारकांश में दशमस्थ सूर्य पर गुरु की दृष्टि से पशुपालन पशुरक्षक डेयरी आदि का

कार्य करता है। कारकांश से तृतीय या षष्ठ भाव में स्थित पाप ग्रह कृषि या बागवानी के धन्धे से द्रव्यलाभ प्राप्त करता है। कारकांश में स्थित चन्द्र शुक्र से दृष्ट होने पर जातक रसायन व औषधि विज्ञान का ज्ञाता होता है कारकांश में स्थित चन्द्र पर बुध की दृष्टि होने पर जातक वैद्य, डाक्टर या चिकित्सक होता है, कारकांश में स्थित शनि अथवा कारकांश से चतुर्थ में शनि होने पर अस्त्रशस्त्र के प्रयोग में दक्ष होता हैं, पुलिस या सेना में भर्ती होकर आजीविका प्राप्त करता है केतु कारकांश अथवा कारकांश से चतुर्थ स्थित होन पर घडीसाजी या घड़ी बेचकर धन कमाता है। राहु कारकांश में या इस से चुतुर्थ भाव में स्थित होने पर खान का काम मशीन निर्माण या मशीनों की मरम्मत के काम से धन कमाता है। कारकांश से चतुर्थ भाव में सूर्य या मंगल की स्थिति शस्त्रधारी सुरक्षा कर्मी के रूप में जीविका देती है। कारकांश में पूर्ण चन्द्र गुरु का योग से जातक लेखक सम्पादक या साहित्यकर बनता है शुक्र कारकांश में अथवा कारकांश से पंचमस्थ हो तो सरकार में उच्च पदाधिकारी बनता हैं लग्नेश तथा सप्तमेश से तृतीया भावमें या छठे भाव में पाप ग्रह की स्थिति सेनापति बनाती है, संक्षिप्त में कारकांश लग्न स्थित सूर्य राजा, राष्ट्रध्यक्ष, मन्त्री सरकार में उच्च पदाधिकारी चन्द्र मन्त्री सचिव विभागाध्यक्ष, मंगल सेनापति वैज्ञानिक आतिशबाजी विस्फोटक रसायन या मशीन परक व्यवसाय। बुध शिल्पी बनाकर, पत्रकार, बकील व्यापारी, गुरु पंडित, पुजारी, नेता, जन नायक सरकारी प्रतिनिधि या राजदूत बनता है।

ग्रह एवं राशियों के तत्त्वानुसार बनने वाले योग-

अग्नित्व 1,5,9 राशि में दशम भाव या दशमेश का नवमांश का स्वामी होने पर अग्निसम्बन्धी समस्त कार्य इंजिनियर, इस्पात उद्योग, शल्यचिकित्सा, होटल, विद्युतकार्य, उद्योग, नापित कार्य डाक्टर, कसाई, सैनिक अन्वेषक, राजनीतिज्ञ ऊर्जा प्रबन्धक भोज्यपदार्थ निर्माण, धातु का पिघलाना, तलना भूनना आदि में से किसी के माध्यम से आजीविका का जातक कार्य करता है।

भूमितत्व की 2, 6, 10 वी राशि होती है। उपरोक्त तीनों दशम दशमेश का नवमांश का स्वामी जन्मलग्न, चन्द्रलग्न, सूर्यलग्न में से जिसका बलवान् हो उसके आधार पर पृथ्वी सम्बन्धी कृषि कार्य, बागवानी भवन निर्माण, भूमि विक्रय, भूगर्म सम्पदा, उत्खनन इमारती लड़की का व्यापार वन संरक्षण का कार्य आदि की आजीविका से धनोपार्जन होता है।

वायुतत्व 3, 7, 11 राशि में दशम दशमेश तथा उसका नवमांश का स्वामी बलवान् होने पर जातक दार्शनिक लेखक, विचारक, वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, सलाहकार वकील वायुयान चालक वकील, अन्तरिक्षवेत्ता, आदि में से कोई होता है।

जलतत्व, 4, 8, 12 राशि में बलवान ग्रह (उपरोक्त तीनों कुण्डली में दशम, दशमेश तथा नवमांश स्वामी) होने पर जातक दूध घी पेय पदार्थ शर्बत रासायनिक द्रव्य समस्त जल सम्बन्धी कार्य, वस्त्रों की धुलाई, कपड़े या कागज का उत्पादन नौका जहाज रानी जल भण्डारण, समुद्री उत्पादन, सिचाई, पेयजल का निवारण का पेय जल जलकी सफाई मत्स्य (मछली) पालन होटल रेस्तरां आदि से कोई आजीविका कार्य करता है।

वृषराशिस्थ शुक्र दशम भाव में कुशल वादन। उच्च राशिगत चन्द्र दशम में संगीतज्ञ दशमस्थ तुला राशि में बुध और राहु स्थित होने पर इंजिनीयर या वैज्ञानिक। दशमस्थ 3, 7, 11 राशि में चन्द्र बुध का योग कथा साहित्य सृजन, शनि गुरु का योग जज या वकील बनाता है कर्क राशि पर चन्द्र शुक्र या मंगल की दृष्टि होने पर रेस्तरां बेकरी का धन्धा। कर्क राशि पर शनि बुध या गुरु की दृष्टि या युति पुरातत्व विभाग, इतिहास का निपुण शिक्षक होता है।

नौकरी के योग-

आत्म कारक ग्रह के नवमांश पर सूर्य शुक्र की दृष्टि सरकारी नौकरी। दशमस्थ सूर्य और व्यय भाव में सूर्य चन्द्र का योग। दशम भाव में पापग्रहों की दृष्टि युति तथा शुभग्रहों की दृष्टि युति का अभाव कारकांश लग्न में सूर्य की स्थिति राज कर्मचारी। जन्मलग्न या चन्द्रलग्न के केन्द्र स्थान में स्थित सूर्य। जन्मलग्न के केन्द्र या त्रिकोण में चन्द्र राजकीय नौकरी। दशमेश उपचय (3, 6, 10, 11) में राजकीय नौकरी। लग्न या चतुर्थ में गुरु राजकीय सेवा। दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में राजपत्रित अधिकारी। सूर्य या चन्द्र केन्द्र में राज्य की सेवा। लग्नेश या सप्तमेश से पञ्चम भाव में चन्द्रगुरु या शुक्र की स्थिति से राज्य सम्बन्धी धन्धे से लाभ सरकारी नौकरी ठेकेदारी व्ययेश केन्द्र त्रिकोण लाभ या धन भाव में नौकरी तथा 3, 6, 11 भाव में शुभग्रह से नौकरी। शनि मंगल की दृष्टि युति 3, 10, 11 भाव में सेना या पुलिस की नौकरी। षष्ठ भाव पर बलवान बुध की युति दृष्टि से स्टेनों टाईपिस्ट की नौकरी। दशम भाव या दशमेश पर मंगल व शनि की दृष्टि युति से वैज्ञानिक में सफलता। दशम भाव या दशमेश पर बुध व शनि की युति दृष्टि से सम्पादक प्रकाशक गणितज्ञ या शोधकर्त्ता बनता है। केन्द्र त्रिकोण में गुरु शुभग्रह के साथ तथा लाभ या धन भाव में अध्यापक का योग बनाता है।

चन्द्र, बुध या शुक्र पर गुरु की दृष्टि या गुरु की युति शुभग्रह के साथ से अध्यापक मंगल और शुक्र पर परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो अथवा मंगलपर सूर्य की दृष्टि हो सर्जन डॉ. का योग बनता है। चन्द्र और शुक्र की युति पर सूर्य की दृष्टि से वैद्य डॉ.या सर्जन का योग बनता है। शनि मंगल की युति होने से डॉ. सूर्य मंगल की युति दृष्टि इंजीनीयर बनाती है।

दशमेश एकादशेश वाणिज्य व्यापार के माध्यम से आजीविका। दशमेश व्ययेश जेल अस्पताल उधार लिया द्रव्य वैदेशिक व्यापार के माध्यम से आजीविका लग्नेश दशमेश के गुणाधर्म के अनुसार भी आजीविका का विचार करना चाहिये। लग्न से चन्द्र लग्न से सूर्य लग्न से दशम भावस्थ ग्रह तथा इन तीनों लग्नों के बलवान् ग्रह के अनुसार आजीविका का विचार सर्वोत्तम माना गया है। चरराशि में लग्नेश धनेश दशमेश की स्थिति तथा व्यय भाव में स्थिति चलते फिरते धन्धे से वैदेशिक कारोबार से आजीविका प्रदान करती है। यदि ये स्थिरराशि में स्थित हो तो स्थिरता के धन्धे एक स्थान पर स्थित होकर जैसे डाक्टर सरकारी नौकरी अस्पताल की जेल की आदि से आजीविका चलती है। द्विस्वभाव राशि में स्थित होने पर अध्यापक प्रोफेसर आडतिया किराने का धन्धा आदि बुद्धिमत्ता पूर्वक चलाकर द्रव्योपार्जन करता है। आत्मकारक ग्रह की राशि लग्नेश व दशमेश तथा इनके नवमांशेश के तत्व (अग्नि पृथ्वी वायुजल) के अनुसार भी आजीविका का विचार करना चाहिये। 1,5,9 राशि अग्नितत्व, 2,6,10 पृथ्वी तत्व 3,7,11 वायु तत्व 4,8,12 राशि जल तत्व से सम्बन्ध रखती है।

स्वतन्त्र व्यवसाय के योग-

चन्द्र कुण्डली में शुभग्रह केन्द्र में होवें। चन्द्र गुरु व शुक्र परस्पर दूसरे और 12 भाव में। चन्द्र कुण्डली में गुरु तृतीय भाव में शुक्र लाभ भाव में। बुध राहु या शनि युत्त दृष्ट हो। बुध शनि की युति में शनि बलवान् होने पर नौकरी का धन्धा भी दिलाता है।

व्यापार के योग-

सप्तमेश धन भाव में। बुध सप्तम भाव मे धनेश के साथ। बुध सातवें में सप्तमेश धन भाव में। बुध और शुक्र धन भाव या सप्तम भाव में शुभ दृष्ट हो। उच्चराशिस्थ बुध पर धनेश की दृष्टि। धनेश पर गुरु की दृष्टि। दशमस्थ सूर्य बुध का योग। लग्नेश दशमेश की युति दृष्टि या अन्योन्यराशि स्थिति। दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में। शनि आत्मकारक ग्रह के नवमांश में।

कर्कराशि पर सूर्य चन्द्र या गुरु की युति या दृष्टि ज्ञातक को उदार, परोपकारी और सम्पन्न बनाती है कर्क राशि में चन्द्र गुरु का योग या इनकी दृष्टि योग्य शिक्षक व सामाजिक कार्यकर्त्ता बनाती है। दशमस्थ मेष राशि में बुध या गुरु स्थित होने पर लेखक, पत्रकार व वकील बनाती है मेष राशि का शुक्र दशमस्थ विक्रय प्रतिनिधि बनाता है। दशमस्थ मेष राशि में सूर्य राजनेता लकड़ी का व्यापारी व बड़ा उद्योगपति बनाता है। वृषराशिस्थ चन्द्र दशम में कुशल संगीत वादक, दशमस्थ मिथुन राशि में बुध लेखक, मिथुन का गुरु दशम में नाटककार, मिथुन का शुक्र दशम में चन्द्र मंगल का शुक्र दशमस्थ कर्क राशि में होने पर होटल, अल्पाहार पेयपदार्थ नौकरी बर्फ या हलवाई का काम, कर्क राशि में दशमेश पाप कान्त होने पर शराब का कार्य, कन्या राशिस्थ बुध सप्तम भावस्थ दशमेश महिला वर्ग से तथा स्वयं की पत्नी से द्रव्यलाभ, विदेश से लाभ एवं उदार--सुखी गुणी सत्य व धर्म का पालक जातक होता है।

दशमेश अष्टमेश का योग या दृष्टि बीमा, वसीयत, जनगणना व पैतृक धंधे से लाभ देता है। वकील न्यायाधीश अनुष्ठान कर्त्ता, यज्ञ कर्ता, प्रवचन द्वारा धर्म का प्रचार-प्रसार दशमेश, प्रशासक, प्रबंधक, उच्चपदाधिकारी बड़ा उद्योगपति बनाता है।
दशमेश लाभ भाव में बड़ा उद्योगपति व व्यापारी बनाकर धनी मानी व सुखी बनाता है वित्तीय संस्था में कार्यकर्ता बनाकर धनी बनाता है।

किसी भी भाव के विचार में भाव, भावेश, भावात् भाव, भाव का कारक एवं भावस्थ ग्रह, इन सबका विचार कर भाव का फल विवेचन किया जाता है। इन 5 प्रकारों में लग्नादि 12 भावों के कारक का विचार हेतु लग्न का चन्द्र, सूर्य, धन भाव का गुरु, तृतीय का मंगल, चतुर्थ का चन्द्र, शनि पंचम का बुध, षष्ठ का शनि, सप्तम का शुक्र, अष्टम का शनि, नवम का बुध, गुरु, दशम का सूर्य, मंगल एकादश का गुरु, शुक्र, द्वादश का शनि ग्रह कारक होता है। पिता का सूर्य माता का चन्द्र भाई का मंगल, पुत्र का गुरु, रोग का शनि, स्त्री का शुक्र, आयु का शनि, हिंसा का मंगल, राज्य का सूर्य, बड़े भाई का गुरु, भोगों का शुक्र कारक होता है। भावात् भाव से तात्पर्य जैसे पंचम भाव से पंचम भाव, चतुर्थ से चतुर्थ भाव आदि का विचार करना चाहिए। उपर्युक्त भाव भावेशादि पर राहु शनि मंगल व सूर्य के योग या दृष्टि अशुभ फल कारक तथा शुक्र गुरु और पूर्ण चन्द्र की युति अथवा दृष्टि उस भाव को शुभ फल प्रद होती है।

स्वक्षेत्र अर्थात् ग्रह अपनी राशि में स्थित होकर शुभ ग्रहों से युत दृष्ट शुभ फल प्रद एवं पाप ग्रहों से युत दृष्ट अशुभ फल कारक हो जाता है। शुभ ग्रह अपनी राशि में स्थित

होकर केतु के साथ हो जाता है तब उस भाव में प्रबलता हो जाती है। जो भाव भावेश से युत या दृष्ट हो अथवा भावेश उच्चस्थ हो या केन्द्रगत हो तब भी उस भाव का शुभ फल होता है। यदि पाप ग्रह अपने भाव को देखता हो तो उस भाव संबंधी पदार्थों की तो वृद्धि करता है, किन्तु उस भाव से संबंधित प्राणी का विनाश करना है। पंचम भावस्थ कुंभ राशि में सूर्य स्थित होकर लाभ भाव में अपनी सिंह को देखता हो तो लाभ प्रद अवश्य होगा किन्तु लाभ भाव से बड़े भाई का भी विचार होता है अतः बड़े भाई का विनाश करता है। इसी प्रकार पाप ग्रह शनि, मंगल राहु क्षीण चन्द्र का भी विचार करना चाहिए। अर्थात वस्तु व पदार्थों का लाभ तथा उस भाव संबंधी प्राणी का विनाश करते हैं।

विभिन्न व्यवसाय विचार-

01. धनेश लाभ में और लाभेश धन भाव में होने से बहुत बड़ा व्यापारी होता है।
02. बुध का भी दशम भाव से युक्त दृष्टि होने पर व्यापार की (वाणिज्य) प्रवृत्ति होती है।
03. हल योग में अर्थात् सम्पूर्ण ग्रह परस्पर त्रिकोण में हो और लग्न में कोई ग्रह नहीं हो तो कृषि (खेती) का व्यवसाय होता है।
04. केदार योग अर्थात् सम्पूर्ण ग्रह 4 ही स्थानों में सम्पूर्ण ग्रह होने से निर्विघ्नता से कृषि का कार्य चलता है।
05. यदि दशमेश के साथ चन्द्र, शुक्र हो अथवा उस पर दृष्टि हो और मंगल और चतुर्थेश केन्द्र या त्रिकोण में हो अथवा लाभ भाव में हो तो कृषि कार्य प्रधान जीवन यापन होता है।
06. शनि, बुध और शुक्र भाग्य भवन में बैठने पर भी कृषि कार्य से आजीविका चलती है।
07. चन्द्र बुध और गुरु के भाग्य भाव में रहने से शैक्षणिक जीवन व्यतीत होता है।
08. शकट योग अर्थात् सम्पूर्ण ग्रह लग्न और सप्तम भाव में स्थित होनेसे वाहन द्वारा मोटर, गाड़ी,लौरी द्वारा यातायात कार्यकर्त्ता बनता है।
09. यदि चर राशि में अधिक ग्रह हो तो चलते फिरते धन्धे से स्वतन्त्र व्यवसाय, स्थिर राशि में अधिक ग्रहों से स्थायी धन्धे सरकारी नौकरी प्राचीन संस्था द्वारा अथवा चिकित्सक आदि का व्यवसाय होता है। दुकान आदि के कार्य में भी सफलता मिलती है। द्विस्वभाव राशि में अधिक ग्रह होने से अध्यापक प्रोफेसर, मास्टर, किसान गिरी नौकरी आड़तिया गुमास्ता आदि के व्यवसाय से लाभ

होता है। व्यवसाय के विषय में लग्न चन्द्र लग्न से और सूर्य लग्न से यदि दशमस्थान में ग्रह स्थित हो उसमें जो बली ग्रह हो उससे आजीविका का विचार करना चाहिये। यदि तीनों के दशम स्थान में कोई ग्रह नहीं हो तो ऐसी स्थिति दशमेश के नवमांशधिप से विचार करना चाहिये।

10. सूर्य यदि दशमस्थ हो तो पैतृक सम्पत्ति से लाभ, चन्द्र के दशमस्थ से माता द्वारा, बुध से मित्र द्वारा, मंगल से शत्रु द्वारा, गुरु से भाई या चचेरे भाई से, शुक्र सेस्त्री द्वारा शनि से सेवक द्वारा धन प्राप्त होता है।
11. उपर्युक्त विचार करने पर चन्द्र लग्न सूर्य लग्न में से दशमस्थ जो ग्रह बलवान् हो या नवमांश से बली हो, उसके आधार पर यदि सूर्य दशमस्थ या स्व नवमांश का हो तो स्वर्ण ऊनी वस्त्र खनिज औषधि चिकित्सा औषधि विक्रेता जहाज आदि के व्यवसाय से लाभ होता है। चन्द्रमा दशमस्थ होकर अपने नवमांश में हो तो कृषि जलज पदार्थ वस्त्रादि की दुकान प्रदर्शनी व किसी धनी स्त्री के माध्यम से धन लाभ होता है।
12. मंगल दशमस्थ हो अथवा उसी का नवमांशेश हो तो धातु सम्बंधी क्रय विक्रय, अस्त्र शस्त्र कल पुर्जे बिजली से सम्बन्धित कार्य से अग्नि से संबंधित कार्य से जैसे इंजीनियर ओवरसियर, मिलिट्री, पुलिश विभाग, सरकास, फौजदारी विभाग वकालत आदि के व्यवसाय से लाभ होता है।
13. बुध दशमस्थ या नवमांशेश हो तो लेखक, कवि, गणितज्ञ, ज्योतिषी, पौरोहित्य व्याख्यान, चित्रकारी, शिल्पकारी के धन्धे से लाभ होता है।
14. गुरु दशमस्थ होकर स्व नवमांश में हो तो इतिहास पुराण आदि का पठन पाठन, कथावार्ता, सम्पादन का कार्य धार्मिक संस्था का निरीक्षण, धर्मोपदेशक, हाईकोर्ट या जज या मुंसिफ का कार्य करने से द्रव्य लाभ होता है।
15. शक्र दशमस्थ या नवमांश हो तो गो महिषादि के दूध, मक्खन आदि से डेयरी फार्म से जौहरी के कार्य से वाहन के सम्बंध से होटल चलाने से स्त्रियों के काम में आने वाली वस्तुओं से या किसी धनी स्त्री के सम्पर्क से लाभ होता है।
16. शनि दशमस्थ या स्व नवमांश में हो तो मजदूरी श्रमिक वर्ग के शारीरिक परिश्रम से, सरदारी से फौजदारी कोर्ट से वकालत आदि कार्य से, मुकद्दमें बाजी से और उत्तरदायित्व कार्य से सम्बन्धित धन्धों से आजीविका चलने का योग बनता है। धन्धे द्वारा लाभ कितना होगा इसका विचार ग्रह के बलाबल पर निर्भर करता

है। धन प्राप्ति का योग उत्तम है या अधम है उसके आधार पर धन की प्राप्ति होती है।

17. चन्द्र, गुरु या शुक्र पंचमस्थ होने राज सम्बंधी कार्य से लाभ होता है।
18. लग्न से दशमस्थ सूर्य को मंगल देखता हो तो राज संबंधी कार्यकर्त्ता होता है। सूर्य पर मंगल की दृष्टि से यह योग बनता है।
19. मूल योग (सभी ग्रह 3भावों में हो) में युद्ध सम्बन्धी कार्य से लाभ होता है।
20. लग्नेश अथवा सप्तमेश तृतीय या षष्ठ भाव में पाप ग्रह हो तो सेनापति योग बनता है।
21. धनेश लग्न में चतुर्थ मे उच्च ग्रह और दशमेश 5वें अथवा लग्नेश चतुर्थेश और नवमेश परस्पर केन्द्रगत हो अथवा दशमस्थ उच्च ग्रह पर लग्नेश व नवमेश की दृष्टि हो तो अश्वारोही सेनापति का योग बनता है।
22. 4,5,6 भावों में सभी ग्रह होने से जेलर वार्डर फांसी देने वाला बनता है।
23. सभी ग्रह लगातार 7 ग्रहों के होने पर राजमन्त्री होता है।
24. शनि दशमस्थ होना उसकी दशम पर दृष्टि हो तो अनेक व्यक्तियों का अधिकारी या उत्तरदायित्व का कार्यकर्त्ता या ऐसा कार्य जिस पर लोग विश्वास करते हो ऐसे योग बनते हैं। बैरिस्टर, वकील, मोखतार के ऐसा योग पाया जाता है।
25. चतुर्थ से दशम भाव तक लगातार ग्रह होने पर मिथ्यावादी होता है। तथा जेल का निरीक्षक होता है।
26. केन्द्रस्थ चन्द्र पर गुरु या शुक्र की दृष्टि पड़ती हो तो जज, मजिस्ट्रेट, कलेक्टर, मिनिस्टर बड़े राज्य का मैनेजर आदि होता है। अथवा शनि पर राहु दशमस्थ हो उस पर नवमेश की दृष्टि हो और लग्नेश के साथ पाप ग्रह हो।
27. दशमस्थ पाप ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक, डॉक्टर, हकीम, वैद्य या धर्मोपदेशक हाकिम का योग बनता है।

नवम स्थान से व्यवसाय का विचार -

यदि सूर्य नवम भाव में उच्च मूल त्रिकोण मित्रगृही या अतिमित्रस्थ हो राज्य चिन्ह विक्रय- क्रय, कृषि, नौकरी, कोषाध्यक्ष, डॉक्टरी,वैद्यक चिकित्सक, भ्रमणशील कार्य प्रेस कार्य भाई-भाई का झगड़ा, विवाह कर्म सम्बंधी कार्य आदि से जीविका निर्वाह करता है। नवमें पे चन्द्र उच्च स्वगृही मित्रगृही आदि होतो कृषि वस्त्र व्यापार जल पदार्थ का क्रय विक्रय मैथुन से किसी स्त्री के माध्यम से, ब्राह्मण विरोध से

आजीविका चलाता है। मंगल उच्चादि में नवमस्थ होकर बन्धु विवाह वस्त्र मित्र स्वर्ण शत्रु कार्य बल क्षय से आजीविका चलाता है। अस्त्र-शस्त्र विस्फोट पदार्थ अग्नि विद्युत मशीनरी आदि से द्रव्योपार्जन करता है। बुध उच्चादि में स्थित नवम भाव में उच्च में स्थित अध्यापन के कार्य से पंडिताई से धन लाभ, शुभ राशिस्थ किसी स्त्री के वाद-विवाद से मित्र राशिस्थ कृषि से जमींदारी से। नीच राशिगत बन्धु विरोध से धन लाभ।

उच्च राशिगत नवम में स्वर्ण, भूमि, राजा से लाभ। स्वगृही से पठन-पाठन लेखन से शिल्पकारी से राजपत्नी के अनुग्रह से वस्त्र स्वर्ण के क्रय विक्रय से धन प्राप्त करता है।गुरु नवमस्थ उच्चादि में स्थित होने से धनी गुणी प्रतापी सर्व सम्पत्ति सम्पन्न और किसी संस्था का प्रधान होता है अध्यापन व नौकरी से धन दिलाता है। शुक्र उच्चस्थ वा स्वक्षेत्री नवम में राज्य कार्यकर्त्ता मन्त्री शिक्षा विभागाधिकारी, सेनापति, अध्यापक, कृषक यज्ञकार्य आदि से लाभ प्राप्तकर्त्ता तथा स्त्री पुत्र भ्राता आदि से सुखी होता है, और वापी कूप तड़ागादि का निर्माता करवाता है। यदि शुत्रगृही हो तो पातकी बुद्धिहीन व दरिद्री होता है। स्त्री के लिये लालायित रहता है।

शनि- मंगल जैसा कार्यकर्त्ता होता है और वैसा ही कर्म भी करता है।

एकादश से व्यवसाय विचार-

यदि लाभेश सूर्य या चन्द्र हो तो राज्याश्रित जीवन यापन करने से, मंगल लाभेश हो तो राजमन्त्री कृषि भ्राता से, बुध लाभेश हो तो विद्या या पुत्र से गुरु लाभेश हो तो धर्म कार्य से शुक्र लाभेश स्त्री से, वाहन से रत्नादि से द्रव्य प्राप्त होता है। शनि लाभेश हो तो नीचकर्म से नौकरी से श्रमिक वर्ग से धन लाभ देता है।

८. वाहन एवं भूमि विचार

वाहन योग -

01. चतुर्थेश नवमेश से युक्त और गुरु से दृष्ट हो।
02. चन्द्र नवम में मंगल 11 वें हों।
03. चन्द्र गुरु से दृष्ट हो।
04. चतुर्थेश बलवान हो।
05. चतुर्थ भाव शुभयुत दृष्ट हो।
06. लग्नेश चन्द्र, स्वराशिस्थ, चतुर्थेश के साथ हो।
07. बलवान शुक्र चन्द्र केन्द्र त्रिकोण में हो।
08. चतुर्थेश गुरु से दृष्ट हो।
09. लग्न या सप्तम में चतुर्थेश और नवमेश हो।
10. लग्नेश सप्तमेश का योग चतुर्थ में हो।
11. चन्द्र शुक्र के साथ चतुर्थेश, दशमेश 11 वें हो।
12. धनेश दशम में, दशमेश 11 वें हो।
13. चन्द्र शुक्र का दृष्टि सम्बन्ध हो।

वाहन सुख के योग -

01. चतुर्थेश बलवान् होने से तथा चतुर्थ शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट होने पर वाहन सुख की प्राप्ति होती है।
02. धनेश लग्न में, दशमेश धन भाव में चतुर्थ में उच्च राशिगत ग्रह, इन तीनों योगों में किसी एक के होने पर ही वाहन योग बन जाता है। यदि कुण्डली में तीनों ही योग बन जावें तो अनेक वाहन योग बन जाता है।
03. लग्नेश चतुर्थेश तथा नवमेश के परस्पर केन्द्रगत होने से वाहन सुख की प्राप्ति होती है।
04. 1,4,9 भाव में चतुर्थेश और लग्नेश की स्थिति से अर्थात् दोनों के साथ बैठने से वाहन सुख प्राप्त होता है।
05. चतुर्थेश पंचम में पंचमेशं चतुर्थ में होने से वाहन सुख की प्राप्ति ।
06. चतुर्थेश एकादश में एकादशेश चतुर्थ में स्थित होने पर वाहन सुख मिलता है।
07. चतुर्थेश और दशमेश अन्योन्य राशिगत हो।
08. चतुर्थेश नवमेश अन्योन्य राशिगत हो।
09. चतुर्थेश दशमस्थ हो दशमेश लग्नस्थ हो।

10. लग्नेश 9,11 भाव में हो।

11. शुक्र से चन्द्र सप्तम में हो अथवा चतुर्थेश शुक्र के साथ हो अथवा चतुर्थेश शुक्र के साथ चतुर्थ में हो।

12. चतुर्थस्थान में शुभग्रह हो, चतुर्थ भाव शुभयुक्त दृष्ट हो, शुक्र चन्द्र को देखता हो, चन्द्र से तृतीय भाव में शुक्र हो, शुक्र से तृतीय में चन्द्र हो, इन 5 योगों में वाहन सुख प्राप्त होता है।

13. चतुर्थेश केन्द्रगत हो उस केन्द्र का स्वामी लग्न में हो अथवा दशमेश एकादशेश अन्योन्य राशिगत हो

14. चतुर्थेश लग्न में शुक्र के साथ हो

15. पूर्णचन्द्र और शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हो।

16. चतुर्थेश शुभ ग्रहयुक्त दशम में हो।

17. चतुर्थेश 6,8,12 भाव में हो अथवा नीच हो या शत्रुगृही हो उस पर नवमेश की दृष्टि पड़ती हो तो वाहन में बार-बार खराबी होती रहती है।

18. एकादश में चतुर्थेश और नवमेश हो अथवा इन दोनों की दृष्टि चतुर्थ भाव पर पड़ती हो।

19. नवम भाव में श.गु.शु. के साथ सुखेश हो।

20. 3,8 राशि में सुखेश हो अथवा बुध लग्न में और नवम में शुभग्रह हो।

भूमि प्राप्ति के योग-

01. चतुर्थेश, उच्च, स्वगृही, मूल त्रिकोण, शुभस्थानगत, शुभयुक्त होने पर भूमि संबंधी लाभ होता है।

02. सुखेश दशम में दशमेश चतुर्थ में हो और बली मंगल हो अथवा सुखेश या दशमेश पर मंगल की दृष्टि से बहुक्षेत्र शाली होता है।

03. दशमेश और सुखेश और चन्द्र बलवान् होकर परस्पर मित्र हो।

04. सुखेश सुख भवन में शुभयुक्त दृष्ट हो।

05. सुखेश, लग्नेश के साथ केन्द्र त्रिकोण में हो और शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो।

06. नवमेश केन्द्र में सुखेश उच्चस्थ हो अथवा शनि केन्द्र में हो और सुखेश दशमेश का योग हो ।

07. 2,11 भाव में सुखेश हो।

08. यदि पंचमेश के साथ 1,3,4,6,7,9,12 भावों के स्वामी हो तो खनिज पदार्थ से लाभ होता है।

09. लग्नेश धन भाव में धनेश 11वें एकादशेश लग्न में हो तो भूमिगत द्रव्य लाभ होता है।

10. लाभेश चतुर्थ में चतुर्थेश लाभ में अथवा लाभ में सुखेश और नवमेश हो और धनेश दशम में हो तो आकस्मिक द्रव्य की प्राप्ति होती है।

11. यदि लग्नेश का नवमांशेश धनेश के साथ केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्वभुजोपार्जित द्रव्य की प्राप्ति होती है।

12. 1,2,11 भावों के स्वामी एकत्र होकर केन्द्र त्रिकोण में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बहुत धन संचय करता है।

13. लग्नेश धनेश के केन्द्र में बैठकर धनेश को देखता हो तो स्वभुजोपार्जित धन से धनी होता है।

14. लग्नेश और चतुर्थेश का अन्योन्य संबंध से व्यक्ति भूमि लाभ प्राप्त करता है।

9. धन-द्रव्य विचार-

धनभाव विचार -

01. धनेश मंगल द्वितीय भाव में, धनेश बुध व्यय में, धनेश गुरु पंचम में, धनेश शुक्र षष्ठ में, धनेश शनि सप्तम में होने पर धनाभाव में निर्बलता आ जाती है। इसी प्रकार धनेश चन्द्र सूर्य तो मंगल के साथ द्वितीय में बुध के साथ चतुर्थ में, गुरु के साथ पंचम में, शुक्र के साथ षष्ठ में, शनि के साथ सप्तम में स्थित होने से धनभाव में निर्बलता आ जाती है। क्योंकि ज्योतिष शास्त्रानुसार द्वितीय भाव में मंगल चतुर्थ में, बुध पंचम में, गुरु षष्ठ में, शुक्र सप्तम में, शनि को निष्फल माना गया है।
02. द्वितीय भाव से धन का एकादश से लाभ का विचार होता है, यदि धनेश बलवान हो और एकादशेश निर्बल हो अथवा एकादशेश बलवान हो और धनेश निर्बल हो तथा लग्नेश भी निर्बल हो ऐसी स्थिति में धन संग्रह होने में बाधा उत्पन्न होती है।
03. धनेश, लग्नेश, लाभेश के सबल होने पर खूब द्रव्य प्राप्ति होकर धनसंचय भी होता है।
04. धनेश बलवान, लाभेश निर्बल से पैसा खूब आयेगा लेकिन रुकेगा नहीं।
05. लाभेश बलवान धनेश निर्बल होने पर भी खूब होगा, किन्तु संचय नहीं होगा। यदि लग्नेश निर्बल हो तब प्राप्ति के योग श्रेष्ठ होने पर भी धन की चिन्ता बनी रहती है।
06. शुक्र ग्रह से सांसारिक सुखों की प्रबलता का तथा गुरु से द्रव्य संचयन और प्रतिष्ठा का विचार करना चाहिए।
07. लग्नेश बलवान होकर द्रव्य सम्बन्धी भावों से धनेश लाभेश से सम्बन्ध होने पर भाग्य का सूर्य चमकता रहता है।
08. फलादेश में भावेश से फल की प्रबलत भाव से तदन्तर भाव पर दृष्टि रखने वाले ग्रह की प्रबलता मानी गई है।
09. नवमेश शुक्र और गुरु केन्द्र त्रिकोण में स्थित होने से भाग्यशाली धनीयोग बनाते हैं।
10. भाग्य स्थान में पाप ग्रह स्वक्षेत्रीय होकर शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर नृपतुल्य योग बनता है।
11. भाग्यस्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो अथवा अस्त न नीच व शत्रु ग्रही भाग्यस्थान में हो तो भाग्यहीन मनुष्य होता है।

13. लग्न पंचम और द्वितीय में बलवान ग्रह की स्थिति से विशेष भाग्यशाली।
14. नवमेश नवम भाव को देखता हो तो भाग्यशाली योग बनता है।
15. नवमेश और नवमेश जिस भाव में स्थित हो उसका स्वामी और लग्नेश इन तीनों के बलवान् होने पर, भाग्यशाली योग बनता है।
16. धनेश धनभाव में या दशम भाव में होने पर दरिद्र घर में जन्म होने पर भी धनाढ्य।
17. धन भाव में चतुर्थेश और भाग्येश स्थित होने से तो जातक आजन्म सुखी होता है।
18. शुक्र अथवा गुरु धनभाव में अथवा धन भाव व लाभ में शुभग्रह से धनाढ्य।
19. चतुर्थ में धनेश और पंचमेश के बैठने से आजीवन सुखी व धनाढ्य
20. धनेश भाग्य से केन्द्रस्थ हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से धनाढ्य।
21. लग्नेश उच्चराशिगत और भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में होने से सुख समृद्धि प्राप्ति।
22. धनेश नवमेश अथवा एका दशेश लग्न से केन्द्रगत होने से नृप तुल्य।
23. लग्न या चन्द्र लग्न से उपचय (3,6,10,11) में शुभ ग्रह हो तो धनाढ्य।
24. लग्नेश भाग्येश चतुर्थ में अथवा चतुर्थेश और नवमेश एकादशभाव में स्थित होने से धनाढ्य योग बनता है।
25. धनेश 11वें एकादशेश नवम में, नवमेश पंचम में होने से बहुत धनाढ्य होता है और तृतीय भाव शुभग्रह युक्त दृष्ट हो तो राज दरबार में सम्मानित, योग्य एवं चतुर होता है तथा भ्रातृ पक्ष का हितैषी होता है।
26. लग्नेश उच्चराशि गत केन्द्र त्रिकोण धनभाव में या एकादश भाव में हो तो धनी होता है।
27. लग्नेश राशिगत या स्वगृही 6,9,12वें भाव में नही हो और अन्य शुभयुक्त होने पर तद्नुसार शुभफल।

विभिन्न लग्नों में शुक्र से बनने वाले धन योग

मेष लग्न में- शुक्र ग्रह लग्न में होने पर धनी व्यवसायी आदि योग, धन भाव में मंगल शनि का योग भूमि तथा कृषि कर्म से धनी।

वृष लग्न में- शुक्र बुध और गुरु के धन भाव में होने पर वक्ता , व्यापार ग्रन्थकार के धन्धे से प्रचुर द्रव्य की प्राप्ति करता है।

मिथुन लग्न में-चन्द्र और गुरु धन भाव में वक्री मंगल के साथ होने पर प्रचुर मात्रा में, धनी, फैक्ट्री, वगैरह उच्च प्रशासन अधिकारी तथा विशिष्ट धार्मिक

संस्था के अधिकारी रूप में कार्य करने पर द्रव्योपार्जन होता है ।

कर्क लग्न में- शुक्र धन भाव में सूर्य और गुरु बली होकर स्थित होने पर यश मान प्रतिष्ठा पूर्वक विशेष द्रव्य की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्न में- शुक्र और धन भाव में बुध और गुरु होने पर विद्वान और उच्च स्तरीय व्यवसायी होता है।

तुला लग्न में- शुक्र और सूर्य तथा बली मंगल स्थित होने पर अग्नि संबंधी कार्य होटल रेस्टोरेन्ट एवं मशीनरी कार्य से विशेष धनी योग बनता है ।

कन्या लग्न में- शुक्र और धन भाव में चन्द्र और बुध की युति से महाधनी योग बनता है ।

वृश्चिक लग्न में- शत्रु और धन भाव में गुरू होने से विशेष धनी योग होता है धनु लग्न में शुक्र और धन भाव में शनि और मंगल का योग उच्चकोटी का जमीदारी एवं मशीनरी धन्धे का विशिष्ट कार्य अथवा कृषि कार्य का स्वामी होता है।

मकर लग्न में-शुक्र और धन भाव में शनि मंगल का योग भी कृषि फार्म व जायदाद अथवा फैक्ट्री आदि मशीनरी कार्य से विशेष द्रव्योपार्जन होता है।

कुम्भ लग्न में-शुक्र और धन भाव में गुरू से महाधनी योग बनता है।

मीन लग्न में- शुक्र और धन भाव में सूर्य और मंगल की स्थिति से अग्नि सम्बन्धी कार्य या मशीनरी के धन्धे से प्रचुर द्रव्य की प्राप्ति होती है इसमें मंगल अस्तगत नहीं होना चाहिए ।

विविध धन योग-

01. सिंह लग्न में मंगल भाग्येश होकर व्यय भाव में होने पर फैक्ट्री का मालिक एवं विदेश में विशेष द्रव्य प्राप्ति का योग बनता है ।

02. धनेश का बली चन्द्र से सम्बन्ध होने पर काल का ज्ञाता तथा दूरदर्शी होता है। तृतीयेश लग्न में झगडालु अशिक्षित भी बहुत बुद्धिमान, तृतीयेश शुभ ग्रह होकर धन भाव में हो तो धनाढय, पाप ग्रह तृतीयेश धन में होने पर स्थूल देह वाला होता है। तृतीयेश ४थे माता से बैर, पिता के धन का नाशक तथा दुष्ट स्त्री का पति। तृतीयेश 5 वें परोपकारी दीर्घायु दुष्ट स्त्री का पति ।तृतीयेश ६वे नेत्र रोगी अकस्मात् भूमि लाभ और रोगी ।तृतीयेश पापग्रह होकर ७वे भाव में होने पर देवर से यौन सम्बन्ध ।तृतीयेश नवम में विद्वान स्त्री द्वारा भाग्योदय पितृ सुख से वंचित तृतीयेश दशम में मातृ पितृ भक्त राज्य पूज्य सुखी धनी दुष्टा स्त्रियों का रक्षक ।

- तृतीयेश लाभ में भोगी व्यापारी परोपकारी तृतीयेश व्यय में पत्नी (स्त्री)द्वारा भाग्योदय, मित्र विरोधी पिता दुष्ट तृतीयेश जिस भाव में उसका स्वामी राहु से युक्त होने पर सर्प भय व गर्दन का रोग होता है

03. चतुर्थेश लाभ भाव में गुरू से दृष्ट होने पर अनेक वाहन प्राप्ति का योग बनता है ।

04. चतुर्थेश चतुर्थ में लग्नेश के साथ होने पर अकस्मात् भवन प्राप्ति होती है ।

05. चतुर्थेश और चन्द्र 6,8,12वें भाव में होने पर तथा शुभ ग्रह की दृष्टि या युति नहीं होने पर माता की मृत्यु हो जाती है।

06. चतुर्थेश 6,8,12 भाव में हो अथवा चतुर्थ में शनि मंगल का योग हो तो घर में आग लग जाती है।

07. पञ्चमेश पापग्रह हो और धन भाव में हो तो दरिद्री। पञ्चमे शुभ ग्रह हो तो संगीतज्ञ, धनी मानी और स्त्री का प्रिय होता है।

08. पञ्चमेश तृतीय होने पर उसका पुत्र कुटुम्बपालक, स्वयं कृपण, स्वार्थी व चुगल खोर होता है। पञ्चमेश चतुर्थ में होने पर राज्याश्रित जीवन और माता की सेवा करतां होता है।

09. पञ्चमेश छठे भाव में हो और पापग्रह हो तो पुत्र सुख रहित दत्तक पुत्रवान् होता है। 9,10,11 भाव में पञ्चमेश होने पर संगीतज्ञ नाटककर्त्ता, कुलदीप, ग्रंथकार विख्यात कीर्ति राज्य पक्ष से लाभ तथा पुत्र भाग्यशाली और लोकप्रिय होता है।

10. पञ्चमेश छठे भाव में मंगल के साथ हो तो प्रथम संतति नष्ट हो जाती है।

11. पञ्चमेश 6,8,12 भाव में हो अथवा शत्रुगृही नीच राशिस्थ पञ्चमेश हो तो विशेष उपचार करने पर पुत्र की प्राप्ति होती है।

12. षष्ठेश लग्नगत होने पर रोग रहित कुटुम्बविरोधी शत्रुञ्जित् धनीमानी और साहसी होता है।

13. षष्ठेश चतुर्थ में होने पर पुत्र पिता में परस्पर वैमनस्य, चुगल खोर और अधिक धनवान होता है।

14. षष्ठेश छठे भावमें होतो रोग रहित, शत्रुबाधा, स्वजनों से विरोध अन्यों से प्रेम मित्र और वाहन का सुख होता है।

15. षष्ठेश 9या 12 वे भाव में अथवा व्ययेश 9या 12 वे भाव हो में तो दीर्घायु।

16. षष्ठेश सूर्य के नवमांश में होने पर हृदयरोग होता है।

17. मंगल से दृष्ट षष्ठेश कर्क या वृश्चिक के नवमांश होने पर गुप्तरोग से पीड़ित होता है।

18. सप्तमेश लग्न में होने पर स्त्रियों में विशेष आसक्ति होती है और वातरोग होता है।
19. सप्तमेश धनभाव में होने पर अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध दीर्घसूची और दुष्टस्मी का स्वामी होता है।
20. सप्तमेश बुध सप्तमेश भाव में शुक्र के साथ हो तो इन दोनों पर सूर्य, शनि, राहु की दृष्टि होने पर विवाह के बाद 1 वर्ष में ही सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।
21. बुध नवमेश होकर लग्नस्थ होने पर धार्मिक कार्यों में विशेष खर्च होता है, जातक धर्मात्मा होता है।
22. सप्तमेश तृतीय भाव में होने पर देवर से यौन सम्बन्ध हो जाता है।
23. सप्तमेश के अष्टमस्थ होने पर वेश्यागामी, स्वयं की स्त्री रोगी और दुष्टस्वभावक की होती है।
24. सप्तमेश नवम भाव में सुशीला स्त्री मिलती है। अशुभ सप्तमेश नवम में होने पर कुरूपा नपुंसक स्त्री मिलती है तथा जातक अत्यन्त कामी अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है।
25. सप्तमेश दशमस्थ होने पर राजकीय संकट प्राप्त होता है। कपटी तथा अति कामी होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो स्वयं धर्मात्मा किन्तु स्त्री वश में नहीं होती, शत्रुबाधा बनी रहती है किन्तु धनवान होवे
26. लाभ में सप्तमेश होने पर स्त्री के द्वारा द्रव्यलाभ, कन्या अधिक, पुत्र सुख में बाधा। स्त्री की मृत्यु प्रसव के समय में होती है।
27. सप्तमेश व्यय में होने पर वस्त्रों का व्यापारी, स्त्री स्वच्छन्द विचरण करने वाली, दुष्ट व्यक्तियों से सम्बन्ध रखने वाली होती है।
28. दीर्घायु योग-अष्टमेश या लग्नेश स्वगृही होकर मित्र के नवमांश में हो।
29. पापग्रह अष्टमेश लाभ में अल्पायु।
30. अष्टमेश अष्टम में हो। अष्टमेश शुभग्रह लाभ में दीर्घायु।
31. अल्पायु योग-अष्टमेश पञ्चम में हो अथवा व्यय भाव में। अथवा अष्टम में लग्नेश हो अथवा अष्टमेश पापग्रहों के साथ हो।
32. अष्टमेश गुरु छठे होने पर राजा का विरोधी, अष्टमेश शुक्र षष्ठ में नेत्ररोगी, अष्टमेश षष्ठ में चन्द्र होतो रोगी, अष्टमेश मंगल षष्ठ में हो, तो क्रोधी, अष्टमेश बुध होने पर डरपोक, अष्टमेश शनि षष्ठ में कष्टकारी होता है।
33. अष्टमेश 4 होने पर पिता का बैरी, पितारोगी, मातृसुख रहिये पिता से जबरदस्ती

धन का हरण कर्त्ता। जमीन जायदाद के सुख से वञ्चित होता है।

34. अष्टमेश सप्तम में होने पर गुदा में रोग, उदर पीड़ा। यदि अष्टमेश पापग्रह हो, तो 2 स्त्री होती है। पापी अष्टमेश सप्तम में पापग्रह हो, तो व्यापार में हानि।

धनी योग –

धन भाव का विचार :- लग्नेश, धनेश, लाभेश और लाभ भाव के कारक गुरु इन चारों की स्थिति सुदृढ़ होने पर धन की प्रचुर मात्रा में प्राप्ति होती है। इन चारों की परस्पर युति, दृष्टि, अन्योन्य राशिगत, स्वराशि, उच्च व मित्र राशि एवं केन्द्र त्रिकोण में, स्थित प्रबल धनी योग बनाती है। कुम्भ लग्न में सूर्य सप्तमेश होकर लाभस्थ हो और गुरु धनेश की सूर्य पर दृष्टि होने पर उच्चकोटि के धनाढय लड़की से विवाह होता है। कुछ विद्वान पूर्णचन्द्र जो कुम्भ लग्न में षष्ठेश है, वह कर्क राशि का है लाभेश से युति दृष्टि या अन्योन्य सम्बन्ध बनाता हो गुरू की तरह महाधनी योग बनाता है। कुम्भ लग्न में चतुर्थ भाव व चतुर्थेश से गुरु की युति या दृष्टि होने पर महाधनी योग बन जाता है।

12 भावों में से 1,2,4,5,7,9,10 भाव शुभ माने गये हैं 3, 6,8,12 भाव अशुभ संज्ञक हैं। शुभ ग्रहों का बली होना, अर्थात् शुभ भावों के स्वामी स्वराशि के उदित केन्द्र और उच्च राशि के मित्र राशि के होकर शुभग्रह से युक्त या दृष्ट होने पर धन, सुख, भाग्य आदि की वृद्धि करते हैं एवं 3,6,8,12 भावों के स्वामी नीच अस्त पापयुत दृष्ट होने पर निर्बली हो जाते हैं। जो केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होने पर धनप्रद योग में बाधक नहीं होते। इसके विपरीत अशुभ भाव के स्वामी बली होकर केन्द्र कोणगत हो जाते हैं, तो दरिद्रता, रोग, धनाभाव आदि योग कारक होते हैं। शुभ भावों के स्वामी निर्बली होकर केन्द्र त्रिकोणास्थ हों तो तन्दुरूस्ती धनी, प्रख्यात, सुखी आदि योगों का विनाश करते हैं।

लाभेश पराशर की दृष्टि से अशुभत्व प्रदाता होता है, किन्तु धनप्रद योगों का सहायक होता है। मारकेश या अशुभत्व का दोष धन भाव में प्रदान नहीं करते। स्वास्थ्य सुखादि पर ही अशुभ फल कारक होता है।

01. धनेश शनि 4,8,12 भाव में हो तथा बुध सप्तम में स्वगृही हो, तो अकस्मात् द्रव्य प्राप्ति।

02. बुध की महादशा में शनि की अर्न्तदशा में विपुल द्रव्य प्राप्ति।

03. धनेश मंगल लाभ भावस्थ हो, तो बुद्धिबल से खूब द्रव्य का संचय करता है।

04. कर्क लग्न में गुरु तथा धन भाव में सूर्य हो तो लक्षाधिपति।

05. लग्नेश बलवान हो, नवमेश स्वगृही हो, तो अटूट सम्पत्ति।

06. लग्न से पंचम में मिथुन या कन्या राशि हो तथा 11 वें चन्द्र मंगल का योग हो, तो महाधनी, किन्तु यह योग धनभाव में विपरीत पड़ता है।

07. बुध मंगल 11 वें लग्न से 5 वी राशि कुम्भ हो तो, सर्वदा धनी योग बनाता है। परन्तु 4 थे भाव में यह योग विपरीत होता है।

08. 11 वें चन्द्र, मंगल लग्न से 5 वीं राशि धनु या मीन हो तो लाभ, तुला या मकर (चं. मं.) योग लक्षाधिपति योग बनाता है, परन्तु 4 थे भाव में यह योग विपरीत होता है।

09. कुम्भ लग्न में एकादश भाव में चन्द्र, मंगल, का योग हो, महाधनी (धनु राशि में चं. मं.)

10.वृष लग्न में एकादश भाव में चन्द्र मंगल का योग महाधनी योग बनाता है।

11.कन्या लग्न में तथा तुला लग्न में एकादश भाव में बुध मंगल से महाधनी योग बनता है। (मंगल वक्री हो, तो अधिक प्रबल होगा)

12.मेष लग्न में पंचम भाव में सूर्य तथा 11 वें भाव में चन्द्र गुरु से धनी

13.सिंह लग्न में तथा वृश्चिक लग्न में 11वें भाव में चन्द्र मंगल से धनी (लाभ में मिथुन-चं.मं.)

14. पंचम में धनेश और भाग्येश स्थित हो, तो दत्तकयोग से धनी।

15. धनेश लग्न में एकादशेश भाग्य भवन में दत्तकयोग से महाधनी।

16. उच्चराशिगत धनेश भाग्य भवन में पैतृक धन की प्राप्ति का योग।

17. लग्न पर धनेश की दृष्टि होने से घुड़दौड़ या लाटरी से अकस्मात द्रव्य की प्राप्ति होती है।

18. धनेश लाभेश अन्योन्य राशिगत हों या दोनों केन्द्र में हों, तो धनी।

19. लग्नेश, लाभेश, भाग्येश, धनेश उच्चराशिगत चारों हों, तो अरबपति।

20. लाभ भाव में शनि वकालत से तस्करी धोखाधड़ी असत्य से तथा दुराचारिणी स्त्री के द्वारा द्रव्यप्राप्ति का योग बनाता है।

21. एकादश भाव में पापग्रह धनी योग बनाता है।

22. लग्न में उच्चस्थ गुरु दीर्घायु सुखी व धनी बनाता है।

23. मिथुन में राहु, सिंह में मंगल पिता का सम्पूर्ण द्रव्य प्राप्त होता है।

24. शुभ ग्रह बलवान लग्नेश केन्द्र में हो, तो धनी।

25. द्वितीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि, धनी योग बनाती है।
26. द्वितीय भावस्थ शनि पर बुध की दृष्टि से धनवान् होता है।
27. धनेश गुरु मंगल के साथ होने से धनी योग बनता है।
28. स्वराशिस्थ भाग्येश पर शुभग्रह की दृष्टि से धनी।
29. चन्द्र, शनि अथवा मंगल नवम भाव में उच्च राशि गत से धनी।
30. नवमस्थ सभी शुभग्रह होने से महाधनी।
31. भाग्येश केन्द्रस्थ होकर शुभग्रह से दृष्ट होने से धनी।
32. उच्च राशिगत मंगल भाग्य भाव में होने से धनी।
33. धन भाव में चन्द्र, नवम में शुक्र, एकादश में गुरु होने से धनी।
34. मिथुन या कन्या लग्न में स्थित गुरु पर चन्द्र की दृष्टि हो तो महाधनी।
35. धनु या मीन लग्न में गुरु स्थित हो, वह बुध और शुक्र से युत दृष्ट होने से महाधनी।
36. वृष या तुला लग्न में स्थित शुक्र, बुध व शनि से युक्त हो तो महाधनी।
37. मकर या कुम्भ लग्न में शनि बुध और शुक्र की युति से महाधनी।
38. पंचम भावस्थ मिथुन या कन्याराशि बुध से युक्त हो और लाभ भाव में चन्द्र मंगल का योग हो, तो महाधनी।
39. तृतीय में सूर्य, नवम में, चन्द्र पंचम में गुरु से महाधनी।
40. चन्द्र से या लग्न से 6,7,8 भावों में शुभ ग्रह से धनी।
41. चन्द्र,धनु में शुक्र षष्ठ में सप्तम में बुध, अष्टम गुरु इस योग से महाधनी।
42. चतुर्थ में धनु राशि में स्थित चन्द्र से 6,7,8 भावों में शुभग्रह होने से महाधनी।
43. धनु लग्न से 6,7,8 में शुभग्रह स्थित होने पर अधम योग बन जाता है।

आकस्मिक धन लाभ योग -

01. शुभग्रह चतुर्थेश शुभग्रहयुत हो तथा लाभेश धनेश चतुर्थ मे हो।
02. शुभग्रह लग्नेश धन भावस्थ हो, तो गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।
03. धनेश अष्टम भाव में हो, तो गड़ा हुआ धन मिलता है।
04. लग्नेश धन भाव में, धनेश लाभ भाव में और लाभेश लग्न में हो, तो धन प्राप्त होता है।
05. शुभ ग्रहों की राशि में शुभग्रह युक्त धनेश और चतुर्थेश हो तो धनी योग बनता है।

06. सप्तमेश और नवमेश का परस्पर सम्बन्ध शुक्र के साथ हो, तो ससुराल से धन प्राप्ति।
07. मीन लग्न में बुध चतुर्थ व सप्तम भाव में होने से ससुराल से धन प्राप्ति।
08. बली धनेश शुक्र व सप्तमेश से युक्त हो, तो ससुराल से धन प्राप्ति।
09. धनेश और सप्तमेश अन्योन्य राशिगत हो।
10. सप्तमेश और द्वितीयेश का योग हो, उस पर शुक्र की दृष्टि हो।
11. सप्तमेश और धनेश, सप्तम में या तृतीय भाव हो।
12. शुक्र चतुर्थ में चतुर्थेश सप्तम भाव में शुक्र का मित्र हो।
13. सप्तमेश और द्वितीयेश केन्द्र या त्रिकोण में हो।
14. चन्द्रमा से चतुर्थ या सप्तम भाव में धनेश और सप्तमेश हो।
15. पंचम में चन्द्र-शुक्र से दृष्ट हो।
16. शुभ राशिगत नवम में धनेश चतुर्थेश बैठने से भूमिगत द्रव्य प्राप्त होता है। इस योग में खान का धन्धा भी लाभप्रद हो सकता है।
17. चतुर्थेश धनेश शुभराशि में शुभग्रह के साथ नवम भाव में हो, तो भूमिगत द्रव्य की प्राप्ति ।
18. लाभेश चतुर्थेश शुभ राशि में शुभग्रह के साथ चतुर्थ में हो।
19. लग्नेश धन में धनेश 11वें एकादशेश लग्न में।
20. लग्नचर राशि का लग्नेश चर राशि का चरग्रह से (चं. शु. बु.) दृष्ट होने पर विदेश में भाग्यवान् होता है।
21. व्ययेश पापयुक्त हो व्ययस्थान पाप ग्रहयुक्त दृष्ट होने से देशाटन करता है।
22. भाग्याधिप के केन्द्रस्थ होने से प्रथम अवस्था में त्रिकोण या उच्च में होने से मध्यावस्था में इससे इतर भावस्थ होने से वृद्धावस्था में विदेश यात्रा होती है।
23. लग्न में एक से अधिक पाप ग्रह होने से जातक आजन्म दुखी रहता है।
24. लग्नेश व चन्द्र नीच राशिगत हो, नवम में शनि होने से भीख माँग कर खाता है।
25. चन्द्र और सूर्य नीच हो तो भाग्य नष्ट हो जाता है।
26. 8वें मंगल त्रिकोण में सूर्य और 10वें चन्द्र हो तो भिक्षुक होता है।
27. चतुर्थेश नीच में अस्त हो, पापाक्रान्त हो, पाप ग्रह के साथ हो, पाप दृष्ट हो, शत्रु ग्रही हो। 6,8,12 वें भाव में हो तो इन योगों कर में जमीन जायदाद बिक जाती है। चतुर्थेश के उच्चस्थ होकर पापयुक्त दृष्ट होने पर भी जमीन जायदाद बिकती है।

28. पंचम में चन्द्र, शुक्र से दृष्ट हो।
29. शुभ राशिगत नवम में धनेश चतुर्थेश बैठने से भूमिगत द्रव्य प्राप्त होता। इस योग में खान का धन्धा भी लाभ प्रद हो सकता है।
30. चतुर्थेश धनेश शुभराशि में शुभग्रह के साथ नवम भाव में हो तो, भूमिगत द्रव्य की प्राप्ति।
31. लाभेश चतुर्थेश शुभ राशि में शुभग्रह के साथ चतुर्थ में हो।
32. लग्नेश धन में धनेश 11वें एकादशेश लग्न में।
33. लग्नचर राशि का लग्नेश चर राशि का चरग्रह से (चं. शु. बु.) दृष्ट होने पर विदेश में भाग्यवान् होता है।
34. व्ययेश पापयुक्त हो व्ययस्थान पाप ग्रहयुक्त दृष्ट होने से देशाटन करता है।
35. भाग्याधिपति के केन्द्रस्थ होने से प्रथम अवस्था में त्रिकोण या उच्च में होने मध्यावस्था में इससे इतर भावस्थ होने से वृद्धावस्था में विदेश यात्रा होती है।
36. लग्न में एक से अधिक पाप ग्रह होने से जातक आजन्म दुखी रहता है।
37. लग्नेश व चन्द्र नीच राशिगत हो, नवम में शनि होने से भीख माँग कर खाता है।
38. चन्द्र और सूर्य नीच हो तो भाग्य नष्ट हो जाता है।
39. 8 वें मंगल, त्रिकोण में सूर्य और 10वें चन्द्र हो तो भिक्षुक होता है।
40. चतुर्थेश नीच में, अस्त हो पापाक्रान्ता हो, पाप ग्रह के साथ हो, पाप दृष्ट हो, शत्रु ग्रह हो। 6,8,12वें भाव में हो तो इन योग में जमीन जायदाद बिक जाती है। यदि चतुर्थेश उच्चस्थ होकर पापयुक्त दृष्ट हो तो पर भी जमीन जायदाद बिकती है।

स्थावर सम्पत्ति योग -

01. चतुर्थेश केंद्र, त्रिकोण, द्वितीय अथवा एकादश भाव में जमीन जायदाद का सुख मिलता है।
02. यदि चतुर्थेश गुरु शुक्र से युत दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्व पराक्रम से जमीन जायदाद प्राप्त करता है।
03. चतुर्थ में मंगल गुरु दृष्ट हो तो तास्थावर सम्पत्ति प्राप्त होती है।
04. यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में शुभग्रह दृष्ट हो।
05. यदि लग्नेश और चतुर्थेश का चतुर्थ में योग हो।
06. यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
07. यदि चतुर्थेश द्वितीय या एकादश भाव में हो।

08. लग्नेश बुध की राशि में षष्ठ भाव में हो और बुध से दृष्ट हो तो ननिहाल से जमीन जायदाद प्राप्त होती है।

09. चतुर्थ में कुम्भराशि हो अथवा शनि दृष्ट राहु चतुर्थ हो।

दरिद्री योग -

01. षष्ठेश का धनेश, लग्नेश, चतुर्थेश से योग हो तो दरिद्री।

02. व्ययेश का चतुर्थेश धनेश लग्नेश से योग से दरिद्री।

03. षष्ठेश का दशमेश से योग होने से दरिद्री।

04. व्ययेश का पंचमेश, व्ययेश से सम्बन्ध दरिद्र योग कारक।

05. सूर्य, चन्द्र नीच ग्रह से दृष्ट हो।

06. चर्न्द्र, राहु अथवा पाप ग्रहों से युत दृष्ट हो।

07. धन भाव पर सूर्य, मंगल व शनि की दृष्टि हो।

08. द्वितीय में पापग्रह हो केन्द्र में शुभ ग्रह हों।

09. बुर्ध, गुरु की युति 2,4,12वें भाव में हों।

10. द्वादशभावस्थ चन्द्र बुध की युति हों।

11. लग्नस्थ चन्द्र केतु से युत हो।

12. लग्नेश पापग्रह के साथ 6,8,12 वें भाव में हो।

13. धनभाव में चन्द्र मंगल योग हो।

14. धन भावस्थ सूर्य शनि से दृष्ट हो।

15. चन्द्र, बुध की युति 2,4,12 भाव में हो तो दरिद्र योग बनता है।

16. सूर्य, चन्द्र एकत्र होकर पाप दृष्ट हों।

17. सूर्य, चन्द्र एकत्र होकर पाग्रह के नवमांश में हो।

18. यदि रात्रि का जन्म हो और क्षीणचन्द्र लग्न से अष्टम में पापयुत दृष्ट हो

19. चन्द्र पापग्रह से राहु, केतु, शनि, मंगल आदि से पीड़ित हो।

20. लग्न से चारों केन्द्रों में पापग्रह हो।

21. चन्द्र नीचस्थ होकर केन्द्र त्रिकोण में अथवा शुभ वर्ग में हो और चन्द्र से छठे एवं 12 वें गुरु स्थित हो।

10. राजयोग विचार

उच्चपदासीन राजयोग -

01. यदि लग्नेश केन्द्र में हो और अपने मित्रग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्न में शुभग्रह हों तो जातक न्यायाधीश अथवा विधिमंत्री आदि पद प्राप्त करता है।

02. यदि पूर्ण चन्द्र जलचर राशि के नवमांश में चतुर्थ भावस्थ हो, स्वराशिस्थ शुभग्रह लग्न में हो तथा केन्द्र में पापग्रह न हो तो ऐसा जातक राजदूत अथवा गुप्तचर विभाग में किसी उच्च पद को प्राप्त करता है।

03. किसी ग्रह की उच्च राशि लग्न में हो, वह ग्रह यदि अपने नवांश अथवा मित्र अथवा उच्च के नवांश में केन्द्रगत शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा जातक शासनाधिकारी का पद प्राप्त करता है।

उच्चपद कारक योग

जब दो या दो से अधिक ग्रह उच्चस्थ या स्वराशिस्थ होकर परस्पर केन्द्रों में और लग्न से भी केन्द्र में हो तो कारक योग होता है जो धनी व उच्च पद का अधिकारी बनाता है। जब जन्म लग्न ही नवमांश लग्न हो। सूर्य से द्वितीय भाव में शुभग्रह हो। कुण्डली में चारों केन्द्रों में ग्रह हो, कारक योग हो इनमे से कोई भी योग होने पर व्यक्ति धनी व उच्च पदाधिकारीयोग बन जाता है।

धनी यशस्वी राज्याधिकारी योग -

01. लग्न से केन्द्रों में शुभग्रह षष्ठ अष्टम भाव रिक्त हों या इनमें शुभग्रह स्थित हो।

02. लग्न और व्यय भाव के स्वामी परस्पर केन्द्रगत मित्रग्रहों से दृष्ट हों।

03. लग्नेश जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी स्वक्षेत्रीय या उच्चस्थ होकर केन्द्र में स्थित हो।

04. मेष लग्न में मंगल दशमस्थ शनि के साथ स्थित हो, गुरु से भी दृष्ट हो।

05. कर्कलग्न में चन्द्र कर्क में बुध सप्तम में होने पर शुभग्रह केन्द्रस्थ हो और षष्ठ व अष्टम में शुक्र गुरु उदित हों और उनके साथ धनेश सूर्य अष्टम में हों।

06. चन्द्र लग्नेश व लग्नेश दोनों एकत्र केन्द्रस्थ होकर अधिमित्र गह से दृष्ट हो तथा लग्न को बली ग्रह देखता हों।

07. सूर्य से बुध द्वितीय में हो बुध, से चन्द्र एकादश में हो चन्द्र से गुरु नवम भावस्थ हो, तुला लग्न में सूर्य व्यय में बुध लग्न में चन्द्र एकादश में और गुरु सप्तम भावस्थ हों।

08.गुरु से केन्द्र में शुक्र हो और दशमेश बलवान हों।

09.1,2,6,12 भावों में ग्रह स्थित हों दशमेश बलवान हों।

10.किसी पुरुष का दिन में जन्म हो और लग्न चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न तीनों विषम राशि में हों।

11. किसी स्त्री का जन्म रात्रि मे हो और तीनों लग्न में चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न समराशि हों।

12. किसी स्त्री का जन्म रात्रि में हो और तीनों लग्न सम राशि में हो।

13. उच्चस्थ ग्रह जिस नवमांश में हो उसका स्वामी उच्च राशि का केन्द्रस्थ हो और लग्नेश बली हो ।

13. लग्न में 3 शुभग्रह हो।

14 लग्न में 3 पापग्रह से दरिद्री, अपमानित रोगी चिन्तित योग बनता है।

15. नवमेश तथा शुक्र उच्च राशि अथवा स्वराशि में स्थित होकर केन्द्र त्रिकोण में हो।

16. उच्चराशिगत नवमेश, स्वराशि या मूल त्रिकोण में नवमेश लग्न से केन्द्र में हो।

17. जब कोई ग्रह अधिकतर लग्नों का मित्र होता हुआ पंचमस्थ या अन्य धनप्रद भावस्थ राहु केतु जिस राशि में हों उसका स्वामी हो और बलवान् हो तो लाटरी धन लाभ होता है।

18. जन्म लग्न या चन्द्र लग्न 6,7,8 भाव में शुभग्रह हों अथवा दोनों लग्न में से किसी से 3,6,10,11 भाव में शुभग्रह हों।

19. सूर्य से द्वितीय भाव में चन्द्र को छोड़कर कोई ग्रह हों अथवा सूर्य से व्यय भाव में चन्द्र को छोड़कर कोई ग्रह हो अथवा सूर्य से द्वितीय और द्वादश भाव चन्द्र को छोड़कर अन्य ग्रह हो।

20. चन्द्र से द्वितीय में सूर्य को छोड़कर सूर्य ग्रह हो या सूर्य से व्यय में सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रह हो अथवा चन्द्र से द्वितीय और द्वादश में सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रह हो।

21. यदि सप्तमेश दशम भाव में उच्च राशिगत हो। अथवा दशमेश भाग्येश का योग हो उपर्युक्त सभी योग धनी यशस्वी, राज्याधिकारी आदि शुभ योग कारक है।

22. तृतीय व पंचम भाव में बुध, गुरु,शुक्र स्थित हो अथवा गुरु बुध या शुक्र की राशि में स्थित हो तो श्रेष्ठ संगीतज्ञ योग बनता है।

दशमेश पंचम में गुरु केन्द्र में हो, सूर्य सिंह राशि में हो तो शारदा योग बनता है अथवा चन्द्र से नवम पंचम गुरु हो और गुरु बुध से लाभ में हो।

शुक्र, गुरु तथा बुध केन्द्र में या त्रिकोण में हो अथवा यही तीन शुभग्रह धन भाव में अपने उच्च या मित्र ग्रह की राशि में हो और गुरु बलवान हो तो सरस्वती योग बनाकर व्यक्ति को कवि, शास्त्रज्ञ, ग्रन्थकर्त्ता, धनी, स्त्री, पुत्र से युक्त व राज्य सम्मानित करता हैं।

पंच महापुरुष योग -

मंगल बुध,गुरु, शुक्र शनि क्रमशः अपनी उच्च राशिस्थ व स्वक्षेत्री होकर केन्द्रस्थ हों तो क्रमशः रुचक, भद्र, हंस मालव्य और शश योग बनाते है, इन योगों में सम्पन्न व्यक्ति उत्पन्न होते हैं और व्यक्ति में ग्रह के गुण धर्मो का समावेश रहता है। चन्द्र और गुरु षडाष्टक स्थिति में हों और गुरु लग्न से केन्द्र में न हो तो शकट योग बनता है जो व्यक्ति निर्धन तो होता है, सदा जीवन कष्टमय व्यतीत करता है।

गज केसरी योग-

01. चन्द्र से गुरु केन्द्र में हो तो गज केसरी योग बनता है। इसमें चन्द्र से सप्तम में गुरु स्थित हो तो उसे उत्तम गज केसरी योग माना है।
02. पूर्णचन्द्र शुभ नवमांश में हो स्वगृही या उच्च का हो वह पापग्रहों से युत द्रष्ट नहीं हो तो लग्न के अतिरिक्त अन्य केन्द्रों में स्थित होने पर भी गज केसरी योग बनता है।
03. चन्द्र पर बु.बृ.शु. तीनों की दृष्टि होने पर भी गज केसरी योग बनता है। इस योग का फल अत्युत्तम लिखा है।
04. नीच ग्रह का नवमांशेश अर्थात् नीच ग्रह के नवमांश का अधिपति लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो और लग्न 1,4,7,10 राशि का हो तो नीच भंग राजयोग बनकर शुभ फल प्रद होता है।

नीच भंग राजयोग -

जो ग्रह नीच का हो उसकी उच्च राशि का स्वामी लग्न से या चन्द्र से केन्द्र में स्थित होने पर नीच भंग योग बनता है। अथवा जो ग्रह यदि दिन में जन्म हो तो विषम राशि का सूर्य पिता, सम राशि का चन्द्रमा मामी, सम राशि का शुक्र माता, विषम राशि का शनि चाचा का स्वामी होता है। यदि रात्रि का जन्म हो विषम राशि का सूर्य चाचा का सम राशि चन्द्र माता का सम राशि शुक्र मामी का विषम राशि का शनि पिता का स्वामी होता है। प्रत्येक भाव शुभ ग्रह युत दृष्टि हो भावेश उच्च राशि में मित्र राशि में भावकारक ग्रह भी बलवान् हो तथा भाव से भाव तक गणना करने पर अर्थात् चतुर्थ भाव के विचार के समय चतुर्थ से चतुर्थ भाव का स्वामी भी बलवान् हो तो उस भाव का शुभ फल होता है। इसी प्रकार भाव पापयुत द्रष्ट हो षष्टेश अष्टमेश द्वादशेश से भाव

और भावाधिपति युतद्रष्ट हो अस्त नीच पापा-क्रान्त शत्रुगृही हो तथा भावकारक ग्रह उपर्युक्त दोषयुक्त हो उस भाव की हानि होती है फलित का विचार करते समय इस सूत्र को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। भावाधिपति केन्द्र या त्रिकोण में रहने पर भाव की पुष्टि करता है।

01. जन्म कुण्डली में जो ग्रह नीच को हो और उस नीच राशि का स्वामी नीच राशि को देखता हो अथवा वह नीच राशि लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो राजाधिराज योग बनता है।

02. यदि नीच राशिस्थ ग्रह की उच्च राशि का स्वामी केन्द्र में तब भी राजा बनता है।

03. नीच राशि का स्वामी लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तब भी नीच भंग योग होता है।

गुरु मकर राशि का चन्द्र लग्न से केन्द्र में हो तो नीचभंग राजयोग बन जाता है। इसका कारण यह है कि गुरु की उच्च राशि का स्वामी केन्द्रस्थ है। यदि नीच राशि का स्वामी नीच का होकर केन्द्र में स्थित हो तो नीचभंग राजयोग नहीं बनता।

विपरीत राज योग-

6,8,12 भावों में ही इन भावों के स्वामी स्थित हो, किन्तु इनके साथ कोई ग्रह नहीं हों या किसी ग्रह की दृष्टि नहीं हो, तो यह विपरीत राजयोग उत्तम फल कारक होता है।

षष्ठेश 8,12 भाव में अष्टमेश 6,12 भाव में व्ययेश 6,8 भाव में स्थित होने पर किसी ग्रह से युक्त या दृश्य नहीं हो तब यह योग बनता है। 6,8,12 भाव के स्वामी एकत्र स्थित हो या अलग-अलग होकर 6,8,12 भावों में स्थित होने पर अन्य ग्रह से युक्त दृष्ट नहीं हो तब भी विपरीत राजयोग बनता है। जो शुभफल प्रद होता है।

1. लग्न का स्वामी जिस राशि में हो उसका स्वामी उच्चराशि में हो अथवा लग्न का स्वामी जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी चन्द्र से केन्द्र में हो तो आजीवन सुखी योग बनता है।

2. लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, नवमांश कुण्डली में से किसी में भी उपर्युक्त योग का विचार करना चाहिये। लग्न में मेष, सिंह, धनु राशि का मंगल स्थित होकर मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो स्व भुजोपर्जित धन से धनी होता है।

3. तृतीय में सूर्य नवम में चन्द्र पंचम में गुरु हो तो महाधनी योग बनता है।

4. चन्द्र से अथवा लग्न से 6,7,8वें भावों में बु.वृ. शु. क्रमशः स्थित हों अथवा एकत्र स्थित हों या दो स्थानों में ही स्थित हों तो नृप तुल्य योग अथवा बहुत बड़ा जमींदार होता है। यदि चन्द्र धनुराशि का हो तो षष्ठ में शुक्र सप्तम में बुध अष्टम में गुरु स्थित होने से

बहुत उत्तम योग बन जाने से सर्वोत्तम अधियोग बन जाता है। जन्म लग्न कन्या हो और चन्द्र धनुराशि में हो तो चन्द्र से 6,7,8 भाव में क्रमशः शु. बु.गु. के स्थित होने पर यह अधियोग अत्युत्तम बन जाता है। जन्म लग्न से अधियोग का विचार करने धनु लग्न में 6,7,8 वें भाव स्थित ग्रह क्रमशः शुक्र, बुध, व गुरु होने से यह अधियोग अधम अधियोग बनता है। क्योंकि जन्म लग्न से शुक्र षष्ठ में और गुरु अष्टम में हो जाता है।

6,8,12 भाव के स्वामी परस्पर अन्योन्य राशि में हो अथवा स्वराशि में स्थित हो इन पर शुभ ग्रहों की युति दृष्टि नही हो तो विपरीत राजयोग बनता है। यह योग धन, यश, पदवी, राज्याधिकार आदि उपलब्ध करवाता है।

विशिष्ट राज योग-

01. मेष लग्न में शुक्र उच्च राशिस्थ ग्रहों की दृष्टि होने से शिक्षा मंत्री का योग बनता है।
02. मेष लग्न में मंगल गुरु की युति से गृह मंत्री या विदेश मंत्री का योग बनता है।
03. मेष लग्नस्थ मंगल हो ने से चतुर्थ में कर्क राशि में गुरु होने से विदेश मंत्री या गृह मंत्री होने का योग बनता है।
04. रक्षा मंत्री योगः-मेष लग्न में शुक्र नवम भाव में हो शनि, सूर्य, मंगल तीनों उच्च राशि में मूल त्रिकोण में हो।
05. उच्च शासनाधिकारी योगः-मेष लग्न में गुरु चतुर्थ में चन्द्र, दशम में शुक्र हो।
06. शत्रुञ्जित राज्याधिकारी और राजनीतिज्ञ योग कर्क लग्न में मंगल दशम में स्थित हो।
07.मकर लग्न में तृतीय भाव में शुक्र उच्चस्थ हो तो उच्चपदाधिकारी या राज्यपाल का प्रद प्राप्त करता है।
08. मकर लग्न में शनि स्थित हो, सिंह सूर्य में, तुला में शुक्र और कर्क में चन्द्र हो तो ऐसे योग में सर्वोच्च पद की प्राप्ति राष्ट्रपति आदि का पद प्राप्त होता है।
09. मंगल मकर लग्न में सप्तम में, चन्द्र (पूर्ण) स्थित हो तो जातक विद्वान शासनाधिकारी होता है।
10. मीन लग्न में चन्द्र छठे सूर्य लाभ में मंगल, द्वादश में शनि होने से उच्चशासनाधिकारी योग बनता है।
11. उच्चस्थ गुरु केन्द्र में तथा दशम भाव में शुक्र स्थित होने से यशस्वी शासनाधिकारी योग बनता है।
12. कन्यालग्न में बुध स्थित हो चतुर्थ में चन्द्र गुरु मंगल पञ्चम में मंत्री या उच्चशासनाधिकारी बनता है।

13. गुरु और शुक्र उच्चराशिगत केन्द्र में स्थित हो तो जातक राज्यपाल, मंत्री, मुख्यमंत्री आदि बनता है।
14. धनी पराक्रमी शासनाधिकारी योग-गुरु शुक्र का योग चतुर्थ भाव में हो।
15. महाधनी शासक योग-बुध की गुरु पर दृष्टि हो।
16. शनि और गुरु के मध्य समस्त ग्रह स्थित हों तो नृपतुल्य योग बनता है।
17. कर्क राशि में चन्द्र गुरु का योग भूपति योग कारक होते हैं।
18. चन्द्र और गुरु उच्चराशिगत हो तो भूपति योग बनता है।
19. चन्द्र, बुध का योग वृष राशि में हो तो भूपति योग बनता है।
20. जन्मराशि का स्वामी लग्न में लग्नेश बली हो तो नीच कुलोत्पन्न भी नृपतुल्य होता है।
21. राजनीति क्षेत्र में सफलता के योग-चन्द्र उच्च राशि वृष में हो अथवा वृष राशि के चन्द्र को गुरु देखता हो अथवा सूर्य, चन्द्र, शुक्र इन तीनों का योग हो और गुरु से दृष्ट हो, अथवा शुक्र भाग्य स्थान में और गुरु उच्चराशिगत हो, अथवा लग्न में शुक्र ग्रह और लग्नेश केन्द्र में मित्र ग्रहो से दृष्ट हो, अथवा लग्न में शुभ ग्रह स्वराशि गत हो, जल राशिगत पूर्णचन्द्र चतुर्थ में हो या पूर्णचन्द्र जलराशि के नवमांश में चतुर्थ भाव में हो।
22. कुलदीपक योग-केन्द्र स्थान में शुभग्रह हो कोई पाप ग्रह केन्द्र में नहीं हो।
23. रिपुभाव में चन्द्र सप्तम में मंगल लग्न अथवा एकादश में शनि हो तो माता-पिता को सुख नहीं मिलता।
24. सूर्य, मंगल, राहु पञ्चम भाव में या लग्न में स्थित होने से सन्तान का अभाव और माता-पिता को अत्यन्त कष्ट होता है।
25. दशम स्थान पाप ग्रहों से युक्त हो तो अपमानित जीवन व्यतीत होता है।
26. सभी पाप ग्रह लग्न या सप्तम भाव में हो तो माता-पिता को कष्ट प्रद तथा स्त्री का भी विनाश होता है।
27. शुभग्रह दशमेश होकर 6,8,12 भाव में पाप दृष्ट होने से प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधा होती है।
28. द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह होने से प्रवासी जीवन एवं अकाल मृत्यु की सम्भावना बनती है।
29. सप्तमेश चन्द्र धन भाव में हो तो खोई हुई धन राशि पुनः प्राप्त होती है।
30. चन्द्र और शुक्र लग्नेश होकर चतुर्थ भावस्थ हो तो धनी सुखमय जीवन और उत्तम सवारी सुख प्राप्त होता है।

31. लग्नेश पापग्रह चन्द्र के साथ लग्न में होने पर अनेक रोगग्रस्त जीवन व्यतीत होता है।
32. लग्नेश का शनि से योग हो अथवा उस पर शनि की दृष्टि हो तो चोरी ठगी और राज्य से भय होता रहता है।
33. लग्नेश चरराशि में शुक्र ग्रहो से दृष्ट हो तो यशस्वी, धनी, भोगी, सुखी जीवन प्रदान करता है।
34. धनेश व्यय में होतो ज्येष्ठ प्रथम संतान विनाशक होता है।
35. द्वितीयेश के साथ सूर्य हो तो अथवा सूर्य से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो ज्ञानी धनी और जनता की भलाई करने वाला है।
36. चतुर्थश 6, 8, 12 भाव में हो अथवा चतुर्थ में मंगल शनि की युति हो तो भवन में अग्नि प्रकोप होता है।
37. पञ्चम भाव में मंगल के साथ हो तो प्रथम संतान का विनाश होता है।
38. षष्ठेश सूर्य के नवमांश होने पर हृदयरोग होता है।
39. षष्ठेश वृश्चिक अथवा कर्कराशि के नवमांश में मंगल से दृष्ट हो तो गुप्ताङ्ग में रोग से पीड़ा होती है।
40. लग्नेश कर्मेश तथा शनि लाभ में या केन्द्र चिकोरा में होने पर दीर्घयु योग बनता है।
41. दशमेश निर्बल होने पर अच्छे कर्म नहीं होते
42. लग्नेश लाभ में हो अथवा उच्च का या केन्द्र त्रिकोण में हो तो अपनी दशा अन्तर्दशा में बहुत लाभप्रद होता है एव लामेश सूर्य के नवमांश में होने पर लाभप्रद होता है।
43. सूर्यचन्द्र लाभेश हो राज्य की नौकरी, मंगल लाभेश हो तो राजमंत्री या भ्राता या कृषि कर्म से लाभ। बुध लाभेश हो तो व्यापार, विद्या या पुत्र या कौटुम्बिक से लाभ। गुरु लाभेश हो तो धार्मिक संस्था द्वारा, शुक्र लाभेश स्त्री या रत्न या पशु द्वारा या वाहन द्वारा लाभ। शनि लाभेश हो तो मजदूरी या नीचकर्म से लाभ होता है।
44. व्ययेश केन्द्र त्रिकोण में स्थित होने पर स्त्री से सुख मिलता है।
45. व्ययेश या चन्द्र उच्चस्थ, स्वर्ग में स्वनवमांश में लाभ हो तो नवम पञ्चम भाव के नवमांश में हो तो लाभ।
46. लग्नेश उच्च मित्र गृही स्वनवमांश में स्थित होने पर भी यदि पापग्रहों से दृष्ट होने पर देहसुख नहीं मिलता।
47. लग्नेश चन्द्र या शुक्र चतुर्थ भाव में होने पर धनवाहन भूमि आदि का लाभ होता है।
48. पापग्रह लग्नेश के साथ चन्द्र का योग होने पर रोगी रहता है।
49. लग्नेश राहु केतु के साथ अष्टम में होने से ठग, चोर या राज्य से भय व हानि होती है।

50. बलीलग्नेश जल राशि का (कर्क वृश्चिक मीन) गुरु व शुक्र से दृष्ट हो तो स्थूल शरीर बनता है।
51. लग्नेश निर्बल होकर 4,5,6 भाव में होने पर दिवाला निकलने का योग बनता है।
52. कर्कलग्न में गुरु अथवा पंचमेश स्वगृही 1,4,5 भाव में होने उच्चस्तर की शिक्षा प्राप्त होती है।
53. लग्नेश पञ्चम में और गुरु बलवान हो तो पुत्र प्राप्ति होती है अथवा बलीगुरु को लग्नेश देखता है, अथवा लग्नेश और पंचमेश योग हो अथवा लग्नेश भाग्येश दोनों 7 वे भाव में हो।
54. लग्नेश व पञ्चमेश केन्द्रगत शुभग्रह से दृष्ट होने पर संतान योग उत्तम बनता है।
55. केन्द्र में तृतीयेश और चन्द्र का योग एक साथ होने पर अथवा सूर्य और बुध की युति 4,7,10 भाव में होने पर संतान हीन बनता है।
56. द्वितीयेश और 7 वे भाव का स्वामी लग्न में हो तो विवाह योग उत्तम और सप्तम और व्यय भाव में पाप ग्रहों की स्थिति से विवाह प्रति बन्धन योग बनता है।
57. दीर्घायु योग लग्न में लग्नेश और अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश लग्न में स्थित हो। अथवा लग्नेश बलवान होकर केन्द्रस्थ हो।
58. लग्नेश शनि 1,4,5,8 भाव में होने पर अल्पायुयोग बनता है।
59. लग्नेश और पञ्चमेश अन्योन्यराशिगत होने पर विशेष धनप्रद योग बनता है।
60. सम्पूर्ण ग्रह केन्द्र स्थान में होने पर राज्यपाल जैसा पद मिलता है।
61. लग्न में मंगल और शुभ ग्रह केन्द्र में होने पर जातक उच्चपद प्राप्त करता है।
62. वृषलग्न में शुक्र और गुरु केन्द्र में होने उच्च कोटी का गायक (गानेवाला) होता है।
63. बुद्ध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा विपुलधन की प्राप्ति योग बनाती है।
64. धनभाव में कर्क का चन्द्र तथा अष्टम भाव में शनि स्वराशि होने पर चन्द्र और शनि की दशा अन्तर्दशा दिवालिया बनाता है।
65. धनेश शनि 6,8,12भाव में बुध सप्तम में होने पर अकस्मात् द्रव्य की प्राप्ति होती है।
66. मिथुन या कन्या के बुध में और 4 थे भाव में मंगल होने पर धीरे-धीरे जमीन जायदाद आभूषण आदि बिक जाते हैं।
67. धनेश मंगल एकादश में (मीनलग्न में) होने पर जातक बुद्धिबल से धन की वृद्धि करता है। तुलालग्न में मंगल धनेश होकर लाभभाव में स्थित होने पर भी उपर्युक्त योग बनता है।

68. लग्नेश में गुरु और सूर्य धनभाव में स्थित हो तो लक्षाधि पति योग बनता है।
69. लग्नेश बलवान् हो भाग्येश भाग्य भाव में होने पर अटूट सम्पति का मालिक होता है।
70. मिथुन लग्न में शनि और शुक्र पञ्चम भाव में होने पर प्रचुर द्रव्य की प्राप्ति होती है।
71. मकर लग्न में शुक्र और शनि एकादश में होने पर भी जातक खूब धन कमाता है।
72. सिंह राशि का सूर्य पञ्चम में और लाभ भाव में चन्द्र मंगल का योग होने पर विशेष धनी योग बनता है। अथवा लग्नसे 5 वी राशि मिथुन या कन्या हो, और लाभ में चन्द्र मंगल की युति हो अथवा लग्नसे 5वी राशि मकर या कुम्भ हो, और मंगल बुध दोनों लाभ भाव में हो अथवा पञ्चम में, धनु या मीन राशि हो, और लाभ भाव में धनेश मंगल की युति हो तो धनी योग बनता है।
73. नवम भाव में धनेश उच्चराशिगत होने पर पैतृक धन की प्राप्ति होती है।
74. भाग्य स्थान में धनेश और व्येय दोनों स्थित होने पर धन बहुत कमाता है पर टिकता नहीं हैं।
75. लग्न पर धनेश की दृष्टि होने पर जातक को घुडदौड़ व लाटरी से अथवा अकस्मात द्रव्य प्राप्ति होती है।
76. धनेश लाभेश केन्द्र में हो अथवा धनेश लाभ में और लाभेश धन भाव में स्थित होने से जातक विख्यात धनी होता है।
77. लग्नेश, धनेश लाभेश और भाग्येश, इन चारों की अपनी-अपनी उच्चराशि में स्थिति होने पर अरबपति होने का योग बनता है।
78. पञ्चभाव में धनेश भाग्येश का योग हो अथवा धनेश लग्न में और लाभेश धनस्थान में होने पर जातक गोद जाकर अटूट सम्पति का मालिक होता है।
79. धनभाव में सूर्य, शनि और मंगल की युति हो अथवा गुरु व्यय में और शनि निर्बल हो अथवा धनेश 6,8,12 भाव में हो अथवा धनेश नीचराशिगत या अस्तंगत हो तो दरिद्र योग बनता है।
80. शुक्र भाव या भावेश या भाव के कारक ग्रह से 12 वे स्थान में होने पर उस भाव की वृद्धि करता है।
81. स्वक्षेत्रीय ग्रह के साथ केतु होने पर उस भाव की विशेष वृद्धि करता है।
82. राहु शनि मंगल की दृष्टि या युति जिस भाव में होती है उस भाव की हानि अथवा उस भाव से अलगाव उत्पन्न करते हैं।

83. सभी ग्रह अपनी नीच राशि में स्थित हो और वक्री हो तो उच्च का फल देते हैं। यदि उच्चराशिगत होने पर नीच का फल देते हैं।

84. यदि कोई ग्रह जन्म लग्न में नीच राशिगत हो और नवमांश में उच्चराशि का हो तो वह ग्रह उच्च का फल प्रदान करता है। यदि ग्रह जन्मलग्न में उच्च का हो और नवमांश नीचस्थ हो तो नीच का फल प्रदान करता है।

85. शुभग्रहों की अपेक्षा पापग्रह वकी होने पर विशेष अशुभ फल होते हैं।

86. भाव का विचार करते समय उस भाव का स्वामी नीच का, शत्रु राशि का अस्तंगत होने पर अपने भाव से अष्टम स्थानगत, पापाकान्त भाव का भावेश पाप युत दृष्ट इन योगों के होने पर, उस भाव की हानि करने वाले होते हैं।

87. यदि भाव या भावेश पर बुध शुक्र पूर्णचन्द्र इन की दृष्टि हो। भावेश उच्चराशि स्वराशि, मित्रराशि में केन्द्र त्रिकोणगत पापदृष्टि रहित हो तो उस भाव की वृद्धि अवश्य होती है। भाव में 6,8,12 भाव के स्वामी अथवा भावेश भाव कारका ग्रह 6,8,12 भाव में होने से अवश्य हानि कारक होते हैं।

88. धनेश धन भाव में धनी व्यवसायी तो अवश्य बनाता है किन्तु अभिमानी समाज से भिन्नता, वैवाहिक जीवन दु:खदायी ही रहता है। संतान भी विलम्ब से।

89. धनेश लग्न में होने पर धनी, कृपण, परिवार वालों से घृणा पैतृक, धन की प्राप्ति बाधा में नौकरी में शने,शनै वृद्धि होती है। किंतु स्मरण शक्ति प्रबल होने से लोगों से अपनी कार्य सिद्धि कर लेता है।

11. विविध राजयोग

सुनफा योग-

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्यग्रह हो तो 'सुनफा' नामक योग होता है।

अनफा योग-

यदि जन्म कुण्डली में 'चन्द्रमा' से बारहवें स्थान में 'सूर्य' के अतिरिक्त अन्य ग्रह स्थित हो तो अनफा योग होता है।

दुरधरायोग-

यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से द्वितीय एवं द्वादश स्थानों में सूर्य को छोड़कर ग्रह हों तो दुरधरायोग होता है। सुनफा अनफा एवं दुरधरा शुभकारक योग हैं इन योगों में उत्पन्न जातक राजकीय सुखों को प्राप्त करते हैं।

केमद्रुम योग-

यदि 'चन्द्रमा' से दूसरे तथा बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' नामक योग होता है। केमद्रुम योग वाला जातक स्त्री-पुत्र हीन, अपने कुटुम्बियों के सुख से रहित, कुत्सित आचार-विचार वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मलिन वस्त्रधारी, डरपोक, कुत्सित, नीच, निर्धन, दूतकर्म कर ने वाला, विदेश में रहने वाला, कुरुप, धर्मविरुद्ध आचरण करने वाला, परन्तु दीर्घायु होता है। इस योग वाले जातक का जन्म चाहे राजा के घर में ही क्यों न हुआ हो तो भी उसमें कुलक्षण पाये जाते हैं।

केमद्रुत भंग योग-

निम्नलिखित ग्रह स्थिति में केमद्रुत भंग हो जाता है।

१. यदि चन्द्रमा केन्द्र में हो अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त हो तो केमद्रुत योग का अशुभ फल नष्ट हो जाता है।

२. यदि चन्द्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो केमद्रुम योग का अशुभ फल नष्ट हो जाता है। तथा जातक शत्रुजयी दीर्घायु सब सार्वभौम राजा के पद को प्राप्त करता है।

३. यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर शुभ ग्रह की राशि में बैठा हो अथवा उस पर बुध, बृहस्पति एवं शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो तो केमद्रुत योग वाला जातक सुखी होकर यश प्रसिद्धि एवं सम्मान प्राप्त करता है।

वाशियोग-

यदि जन्मकुण्डली में 'सूर्य ' से बारहवें स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो तो वाशि नामक योग होता है। वाशि योग का प्रभाव इस प्रकार कहा गया है-

- सूर्य से बारहवें स्थान में 'मंगल' हो तो जातक परोपकारी परन्तु अपनी माता का अहित करने वाला होता है।
- सूर्य से बारहवें स्थान में 'बुध' हो तो जातक कोमल स्वभाव वाला, विनम्र, परन्तु निर्लज्ज, दरिद्र तथा अन्य लोगों की आलोचना (निन्दा) का पात्र होता है।
- सूर्य से बारहवें स्थान में गुरु हो तो जातक धन संचय करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।
- सूर्य से बारहवें स्थान में 'शुक्र' हो तो जातक कामी, कायर पराधीन तथा थोड़ा काम करने वाला होता है।
- सूर्य से बारहवें स्थान में 'शनि' हो तो जातक दयालु, तन्द्रायुत्त स्वभाव वाला, पर स्त्रीगामी तथा वृद्ध के समान आकृति वाला होता है।

सामान्य फल-'वाशियोग' वाला जातक मन्द दृष्टि, नीचे देखकर चलने वाला, मिथ्या व्यवहार करने वाला तथा बहुत काम करने वाला होता है।

वेशियोग-

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य से दूसरे स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो तो 'वेशि' नामक योग होता है। वेशियोग का प्रभाव इस प्रकार कहा गया है।

- सूर्य से दूसरे स्थान में 'मंगल' हो तो जातक वाहन चलाने में कुशल तथा युद्ध क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाला होता है।
- सूर्य से दूसरे स्थान में 'बुध' हो तो जातक सुन्दर रूपवान प्रियवादी, परन्तु दूसरों का अहित करने वाला होता है।
- सूर्य से दूसरे स्थान में 'गुरु' हो तो जातक सत्यवादी बुद्धिमान्, धैर्यवान् तथा संग्राम में वीरता प्रदर्शित करने वाला होता हे।
- सूर्य से दूसरे स्थान में 'शुक्र' हो तो जातक गुणवान, लोक विख्यात तथा श्रेष्ठ होता है।
- सूर्य से दूसरे स्थान में 'शनि' हो तो जातक वाणिज्य-व्यवसाय में कुशल, गुरुजनों का द्वेषी दृष्टि वाला होता है।

'वेशियोग' वाला जातक स्थूल शरीर, दयालु वाकपटु कुछ आलसी तथा तिरछी दृष्टि वाला होता है।

उभयचरी योग-

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य से दूसरे तथा बारहवें दोनों ही स्थानों में 'चन्द्रमा' के अतिरिक्त अन्य ग्रह स्थित हो तो 'उभयचरी' नामक योग होता है। जब दोनों ओर के ग्रह नैसर्गिक पापी हों तो पाप उभयचरी तथा नैसर्गिक शुभ ग्रह हो तो शुभ उभयचरी योग होता है। यदि एक ग्रह पापी तथा एक ग्रह शुभ हो तो सामान्य उभयचरी योग समझना चाहिए।

उभयचरी योग में जन्म लेने वाला जातक समान शारीरिक अवयवों वाला, दुष्ट ग्रीवा वाला, सुन्दर मध्यम कद वाला, अत्यन्त बलवान स्वस्थ स्थिर स्वभाव वाला, सरल दृष्टि, गम्भीर क्षमाशील, सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त, अचल लक्ष्मी, सम्पन्न कष्ट सहिष्णु, समदर्शी, सतोगुणी कार्य-कुशल, भोगी, अनेक सेवकों से युक्त, बन्धुजनों को आश्रय देने वाला, उत्साही तथा राजा के समान सुखी होता है।

विशेष कर 'पाप उभयचरी' में मनुष्य दरिद्री, रोगी तथा पराधीन होता है। 'शुभ उभयचरी' में दयालु, सुखी, बलवान, सुशील, धनी तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। सामान्य उभयचरी में मिश्रित फल समझना चाहिए।

वापी योग-

यदि लग्न, द्वितीय तथा द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में सभी ग्रह स्थिति हों तो वापी योग होता है। इस योग वाला जातक अपने कुल में प्रमुख धनी, अत्यन्त प्रतापी धैर्यवान, प्रियवादी, सुखी, चतुर तथा दीर्घायु होता है, वह वापी तड़ाग आदि जलाशयों का निर्माण भी कराता है। इसे पुत्र पौत्रादि सुख प्राप्त होता है तथा मण्डलाधिकारी भी है।

यूप योग-

यदि सूर्यादि सातों ग्रह लग्न, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ इन चारों भावों में स्थित हों तो यूप नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक उदार, यज्ञकर्त्ता विद्वान्, बलवान, आत्मज्ञानी स्त्री सुखी, धनवान तथा मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। पारस्परिक विवादों का निपटारा करने की इसमें विशेष क्षमता होती है। पंचायत के कामों में यह सफल होता है।

शरयोग-

यदि सूर्यादि सातों ग्रह चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं सप्तम इन चार भावों में ही स्थित हों तो 'शर' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लोनें वाला जातक बाणविद्या शस्त्रविद्या में कुशल दुराचारी, वन-विहारों में आनन्द प्राप्त करने वाला, महाहिंसक दुःख से तप्त तथा सुन्दर स्त्री पाकर भी सुखी न रहने वाला होता है। इस योग वाले व्यक्ति छोटे स्तर की नौकरी करने वाले अथवा छोटे व्यापारी भी होते हैं।

शक्तियोग-

यदि सूर्यादि ग्रह सप्तम, अष्टम, नवम एवं दशम भावों में हो तो शक्ति योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक धनहीन, निष्फल जीवन, दु:खी, आलसी, दीर्घायु, निर्दय तथा छोटा व्यापारी होता है। यह व्यक्ति छोटी नौकरी से जीवन यापन करता है।

दण्ड योग-

यदि सूर्यादि सातों ग्रह दशम, एकादश, द्वादश तथा लग्न इन चार भावों में ही स्थित हों तो 'दण्ड' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक उद्वेगी, दु:खी, स्वजनों से शत्रुता रखने वाला, दीन, दरिद्र, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, विद्यादि से रहित तथा नीच एवं उन्मत्त लोगों की संगति में सुख का अनुभव करने वाला होता है। यह दण्ड योग राजयोगों में वर्णित 'दण्डयोग' से भिन्न है।

नौकायोग-

यदि लग्न से आंरम्भ करके लगातार सात भावों में सातों ग्रह हो तो नौका योग होता है। इस योग वाला जातक जल से उत्पन्न वस्तुओं के व्यवसाय के द्वारा धन-धान्य से युत्त चंचल स्वभाव वाला, कृपण तथा सुख-भोगहीन होता है। ऐसे व्यक्ति नौ सैनिक जलयान चालक अथवा समुद्र से मोती सीपादि निकालने का काम करने वाले होते हैं।

छत्रयोग-

सप्तम से लग्न तक सभी स्थानों में ग्रह हों तो छत्र योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति धनी, लोकप्रिय, राजकर्मचारी, उच्चपदाधिकारी, सेवक, परिवार का भरण-पोषण करने वाला तथा कार्य के प्रति ईमानदार होता है।

कूट योग-

यदि चतुर्थ भाव से आरम्भ करके लगातार सातों भावों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'कूट' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शठ, क्रूर, धनहीन, नीचकर्म करने वाला धर्माधर्म का विचार न रखने वाला, वनवासी जीवन में रुचि रखने वाला तथा भीलादि वन्यजाति के लोगों से प्रेम करने वाला होता है। ये लोग भवन, पुलादि बनाने की कला में कुशल तथा जेल कर्मचारी भी होते हैं।

चाप योग-

यदि दशम भाव से आरम्भ करके अगले सात भावों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो चाप योग होता है। इस योग वाला जातक धनुष विद्या में निपुण, वन पर्वतों में भ्रमण करने वाला, गर्वोन्मत्त अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाला, मिथ्यावादी, भाग्यहीन होता है। इसे बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में ही सुख प्राप्त होता है। इस योग जातक वन-

विभाग, पुलिस-विभाग, गुप्तचर विभाग अथवा जेल-विभाग के कर्मचारी होते हैं। इस योग वालों को तन्त्र मन्त्रादि की सिद्धि भी हो सकती है।

समुद्र योग-

यदि प्रथम भाव से आरम्भ करके एक-एक घर को छोड़कर छः भावों में अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम एवं द्वादश भावों में सब ग्रहों की स्थिति हो तो 'समुद्र' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक दयावान, कीर्तिमान्, धैर्यवान्, ऐश्वर्यवान् होकर अपने कुल को धन्य करता है।

गोल योग-

सभी ग्रह एक राशि में हों तो गोल योग होता है। इस योग वाला पाखण्डी, निर्धन, समाज से बहिष्कृत, माता पिता के सुख से वंचित, धनहीन एवं अस्वस्थ्य रहता है।

युग योग-

यदि दो राशियों में ही सातों ग्रहों की स्थिति हो तो युग नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला निर्लज्ज, हिंसक, धनपुत्र हीन, अधर्मी, अनाचारी, अविवेकी, पाखण्डी, माता-पिता के सुख से रहित तथा अस्वस्थ शरीर वाला होता है।

शूल योग-

यदि तीन राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'शूल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूर, युद्ध में विजयी, हिंसक, निन्दित कर्म करने वाला, तीक्ष्ण स्वभाव वाला, आलसी, खल तथा निर्बल होता है। वह अन्य लोगों के मन में काँटे की भांति चुभता है। ऐसा व्यक्ति राज्यकर्मचारी बनता है।

केदारयोग-

यदि चार राशियों में सभी सातों ग्रह स्थित हों तो केदार योग होता है। इस योग वाला जातक तीक्ष्ण स्वभाव, आलसी, निर्धन, हिंसक, शूर, युद्ध में विजयी और राजकर्मचारी होता है।

पाशयोग-

यदि पाँच राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'पाश' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रपंची, दीन आकृति वाला, दानी, व्यर्थ बोलने वाला, अनेक प्रकार के अनर्थों के बन्धन उसे सब और से जकड़े रहते हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्तचर पुलिस, सेना अथवा कारागृह विभाग का कर्मचारी भी हो सकता है। इस योग वाले जातक का परिवार बहुत बड़ा होता है। जिसके पालन-पोषण में ही उसकी सम्पूर्ण आयु बीत जाती है।

दामिनी योग-

यदि छः राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'दामिनी' अथवा 'दाम' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक धन-रत्न, पुत्रादि से परिपूर्ण, परोपकारी, अत्यन्त ऐश्वर्यशली, विद्वान्, उदार, सुखी शीलवान् धैर्यवान्, यशस्वी तथा क्रोधी होता है। इस योग वाले व्यक्ति को राजनीति के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्रायः नहीं मिलती है।

वीणा योग-

यदि सात राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गीतिवाद्य से स्नेह करने वाला, शास्त्रज्ञ, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य संचालन करता है तथा नेतृत्व प्राप्त करता है। उसे स्वयं सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं।

रज्जुयोग-

यदि सभी ग्रह चर राशियों में स्थित हों तो 'रज्जु' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक सुन्दर, भ्रमणशील, उत्साही, धनोपार्जन के लिए देश परदेश में घूमने वाला, क्रूर, दुष्ट स्वभाव वाला तथा स्थान-परिवर्तन से उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

मुसल योग-

यदि सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों तो 'मुसल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक ज्ञानी, धन-धान्य एवं पुत्रादि से युक्त धनी, सुप्रसिद्ध, राजमान्य, राजा का आश्रित, राजा के समान तेजस्वी तथा सदैव हर्ष एवं उन्नति पाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति विधायक अथवा शासनाधिकारी भी हो सकता है।

गजकेसरी योग-

लग्न अथवा चन्द्र से यदि गुरु केन्द्र में हो और केवल शुभ ग्रहों से दृष्ट या युत हो तथा गुरु अस्त, नीच एवं शत्रु राशि का न हो तो गजकेसरी योग होता है। इस योग वाला जातक प्रबल राजयोग वाला होता है।

नलयोग-

यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में स्थित हों तो 'नल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक रत्न तथा धन संग्रह करने वाला, अत्यन्त चतुर, पुण्यवान, देवताओं को प्रसन्न करने वाला, यशस्वी, राजा का प्रिय-पात्र तथा कम या अधिक अंग वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीतिक दाँवपेच में अत्यन्त कुशल होने के कारण निर्वाचन में सफलता भी प्राप्त करता है।

अमलकीर्ति योग-

लग्न अथवा चन्द्र से दशम स्थान में यदि शुभ ग्रह हों तो अमलकीर्ति योग होता है। इस योग वाला जातक राजमान्य, भोगी, दानी, बन्धुओं का प्रिय, परोपकारी, धर्मात्मा और गुनी होता है।

सर्पयोग-

यदि सूर्य, शनि तथा मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में हो तथा चन्द्र, गुरु, शुक्र एवं बुध इनसे भिन्न स्थानों में हो तो सर्प नामक योग होता है। इस योग वाला जातक कुटिल, निर्धन, दीन दु:खी, भिक्षुक, निन्दित, परान्नभोजी क्रूर बहुत सोने वाला, क्रोधी तथा परोपकार के लिए सर्प के समान भयंकर अर्थात् परोपकार के कामों में विघ्न डालने वाला होता है।

गदा योग-

यदि समीपस्थ दो केन्द्रों प्रथम चतुर्थ, चतुर्थ सप्तम अथवा सप्तम दशम भावों में ही सभी ग्रह हो तो 'गदा' योग होता है। इस योग वाला जातक धर्मात्मा, धनी, शास्त्रज्ञ, संगीतज्ञ, यज्ञकर्त्ता, मन्त्र-तन्त्र में तत्पर, स्त्री भूषणादि से युत्त, परद्वेषी तथा भयानक होता है। इस योग वाले पुलिस एवं सेना में सर्विस करते हैं। इनका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है।

शकट योग-

यदि सभी ग्रह लग्न तथा सप्तम में स्थित हों तो शकट नाम योग होता है। इस योग वाला जातक कृश शरीरी, दीन, मित्रहीन, ऐश्वर्यहीन, स्वार्थी, मूर्ख तथा रोगी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से दु:खी रहता है और उसके छोड़ने के बाद ही प्रसन्नता प्राप्त कर पाता है। इस योग वाले व्यक्ति ड्राइवरी आदि के कामों में रुचि लेते हैं तथा अपना काम निकालने में बहुत कुशल होते हैं।

पक्षी योग-

यदि चतुर्थ तथा दशम भाव में सभी ग्रह स्थित हों तो पक्षी (विहार) नामक योग होता है। इस योग वाला जातक व्यर्थभ्रमण करने वाला, सुख-भोगहीन, सदैव परेदश में रहने वाला, बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें करने वाला, कलहप्रिय, डीठ तथा सामान्यत: धनी होता है। इस योग वाले जातक के अन्य ग्रह शुभ हों तो गुप्तचर विभाग का कर्मचारी अथवा राजदूत हो सकता है। यदि उक्त स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में पापग्रह हो तो योग वाला व्यक्ति मण्डलाधिकारी अथवा न्यायाधीश होता है।

शृंगाटक योग-

यदि सभी ग्रह लग्न, पंचम तथा नवम भाव में हों तो शृंगाटक नामक योग होता है। इस योग वाला जातक साहसी शूरवीर योद्धा, कलहप्रिय, युद्धप्रिय, कर्मठ, राजकर्मचारी अत्यन्त बुद्धिमान सुखी नित्य उत्कर्ष वाला तथा वीरता में सफलता पाने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी सुन्दर होती है। यदि द्विभार्या योग भी हो तो इस योग वाला जातक अपनी पहली पत्नी से प्रेम तथा दूसरी से द्वेष रखता है। इसका भाग्योदय २३ वर्ष की आयु में होता है।

हल योग-

यदि सभी ग्रह द्वितीय, षष्ठ एवं दशम भाव में अथवा तृतीय सप्तम एवं एकादश भाव में अथवा चतुर्थ अष्टम तथा द्वादश भाव में हों तो 'हल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक साधु सज्जनों का प्रिय, मित्रवान, दु:खी, कृषिकर्म से आजीविका प्राप्त करने वाला, बहुभोजी, धन की कमी के कारण कष्ट पाने वाला तथा भाई-बन्धुओं से युक्त होता है। ऐसा जातक कृषिशास्त्र की शिक्षा में अधिक सफल होता है।

वज्रयोग-

यदि सभी शुभग्रह लग्न और सप्तम भाव में हो अथवा पापग्रह चतुर्थ एवं दशम भाव में हों तो इन दोनों स्थितियों में 'वज्र' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूरवीर, सुन्दर नि:स्पृह खल प्रकृति तथा मन्द भाग्य वाला होता है। यह बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख भोगता है। मध्यमावस्था में अल्पसुख प्राप्त होता है। भाग्योदय अन्मिमावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख भोगता है। ऐसे व्यक्ति प्राय: पुलिस अथवा सेना विभाग में नौकरी करते हैं।

यव योग-

यदि सभी पापग्रह लग्न तथा सप्तम भाव में हों अथवा चतुर्थ एवं दशम भाव में हो तो इन दोनों स्थितियों में 'यव' नामक योग होता है इस योग वाला जातक विनयी, शान्त, उत्साही, यशस्वी, स्थिर बुद्धि, सुखी तथा दानी होता है। अपनी युवावस्था में अर्थात् २४ वर्ष की आयु से उसे धन-सम्पत्ति तथा उक्त शुभगुणों की विशेष प्राप्ति होती है। परन्तु बाल्यावस्था दु:ख में बीतती है।

काहलयोग-

यदि लग्नेश बली हो अथवा चतुर्थेश एवं बृहस्पति परस्पर केन्द्रगत हों अथवा चतुर्थेश एवं दशमेश उच्च अथवा स्वराशि में हों तो काहल नामक योग होता है। इस योग वाला जातक, बलवान, साहसी, धूर्त तथा चतुर होता है। ऐसे योग वाला व्यक्ति

राजनीति के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त करता है। यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे के केन्द्र में स्थित हो और लग्नाधिपति बली हो तो भी काहल योग बनता है। इस योग में भी शासन सुख प्राप्त होता है।

भेरीयोग-

यदि नवमेश बली हो तथा लग्न, द्वितीय, सप्तम एवं द्वादश भाव में सभी ग्रह हों अथवा भाग्येश बली हो तथा शुक्र गुरु एवं लग्नेश केन्द्र में हों तो इन दोनों प्रकारों से 'भेरी' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक गुणी, सुखी, यशस्वी, आचारवान तथा उन्नतिशील होता है। वह जीवन में निरन्तर उत्कर्ष प्राप्त करता रहता है।

कलानिधि योग-

यदि बुध-शुक्र से युत अथवा दृष्ट गुरु द्वितीय अथवा पंचम भाव में हो अथवा बुध शुक्र के नवांश में हो तो कलानिधि नामक योग होता है। इस योग वाला जातक स्वस्थ, सुखी, गुणी, धनी, विद्वान तथा राजमान्य होता है।

श्रीयोग-

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में चन्द्र मंगल विद्यमान हों तो 'श्री' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक बहुत धनी होता है।

कमलायोग-

यदि लग्न से पंचम राशि मकर अथवा कुम्भ हो तथा बुध, मंमल से एकादश भाव में हो तो 'कमला' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक आजीवन धन-सम्पन्न बना रहता है।

भास्कर योग-

यदि सूर्य से बुध द्वितीय स्थान में हो तथा बुध से चन्द्रमा एकादश स्थान में और चन्द्रमा से गुरु त्रिकोण में हो तो भास्कर नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूरवीर, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता, सुन्दर संगीतप्रिय, धीर, गणितज्ञ, ज्ञानी-समर्थ-पराक्रमी तथा राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है।

वसुमति योग-

यदि सभी नैसर्गिक शुभ ग्रह चन्द्र, बुध गुरु तथा शुक्र लग्न से उपचय स्थानों में हो तो 'वसुमति' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक अनेक प्रकार की वस्तुओं तथा धन को प्राप्त करता है।

कलश योग-

शुभ समस्त 9 वे और 11 वे हों तो राष्ट्रपति, राज्यपाल, उच्चाधिकारी होता है।

कमल योग-

सम्पूर्ण ग्रह केन्द्र में हो तो मंत्रीपदाधिकारी बनता है। 2, 3, 6, 9, 12 भावों में सम्पूर्ण ग्रह होने से सिहासन योग बनता है। जिससे उच्च शासनाधिकारी बनता है।

सिंहासन योग-

यदि सभी ग्रह द्वितीय, तृतीय, षष्ट, अष्टम एवं द्वादश में स्थित हों तो यह योग बनता है। इस योग वाला जातक राजसिंहासन को प्राप्त करता है।

एकावली योग-

लग्नेश या किसी भाव से सात (7) भावों में लगातार ग्रह स्थिति से मुख्यमंत्री, राज्यपाल आदि बनता है।

चतुसार योग-

समस्त ग्रह केन्द्र में अथवा चरराशि 1, 4, 7, 10 राशि में होने पर राज्याधिकारी योग बनता है।

महासार योग-

केन्द्र में शुभग्रह 3, 6, 11 भाव में पापग्रह हो तो राज्यपाल, राजदूत आदि पदाधिकारी होता है लेकिन किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित रहता है। पापग्रह से दृष्ट न होकर गुरु केन्द्र में सभी प्रकार से सुखी रखता है।

राजहंस योग-

समस्त ग्रह विषम राशियों में होने पर जातक सुखी तथा राज्य में उच्चपद प्राप्त करता है।

श्रीनाथ योग-

उच्चराशिस्थ सप्तमेश दशम में और दशमेश नवम भाव में होने पर विद्यायक, सांसद व मंत्रीपद आदि योग बनाता है।

शंखयोग-

दशमेश चरराशि में और भाग्येश बली होने पर मंत्री अथवा मुख्यमंत्री पद की प्राप्ति करवा

12. एकाधिक ग्रहों के भाव एवं राशिगत योग

द्विग्रही योग-

सूर्य चन्द्र- क्रूर कर्म में निपुण, घमण्डी, पत्थर के यन्त्र आदि के व्यापार में चतुर, निरन्तर कामी (शुंभ.)। अनेक प्रकार के यन्त्र बनाने वाला, पत्थर के काम करने वाला (वृ.जा.) स्त्री के वश रहे, कपट कर्म कर्त्ता, बड़ा उद्धत, काम करने में बड़ा अदृढ़, पराक्रमी और अल्प मन वाला (मान.)। पत्थर और यन्त्रों को बेचने वाला, माया में चतुर, कामी चाहना सहित, अभिमानी (जा.भ.)।

सूर्य मंगल- उत्तम धर्म कर्म तथा धन से हीन रहे, क्लेशों में तत्पर, निरन्तर क्रोध युक्त (शुंभ)। पापी (वृ.जा.)। तेजस्वी, पाप में मन, मिथ्याभाषी, बड़ा मूर्ख, भाई बन्दों से प्रेम करने वाला, बड़ा बलवान (मान.)। बड़ा यश बलवान्, मूर्ख, अतिशय उद्धत, झूठ बोलने वाला, साहसी, शूरवीर, (जा.भ.)।

सूर्य बुध- प्रिय वाणी, राजमंत्री, सेवा से धन कमावे, शास्त्रों में तत्पर कलाओं के समूह मे चतुर (शंभु.)। सब कार्यों में निपुण, बुद्धि, यश, सौख्ययुक्त (बृ.जा.)। बड़ा विद्वान, राजाओं से मान प्राप्त, देव, ब्राह्मण सेवा में मन, प्रिय भाषी, यशस्वी, स्थिर धन से युक्त (मान.), प्यारी बोली, मंत्री, बहु सेवा कर धन इक्ट्ठा करने वाला, कलाओं में कुशल, शास्त्रों में चतुर (जा.भ.) । सूर्य बुद्ध एक साथ होने से बुद्धादित्य योग होता है। वह धर्मात्मा, पंडित, धनवान, बहुपुत्रवान और सेवकों सहित तथा जितेन्द्रिय होता है।(जैमिनी.)।

सूर्य गुरु- पुरोहिताई में चतुर, राजा का मंत्री, मित्रों से पाये धन से सम्पन्न, चतुराई से युक्त, उपकारी (शंभु.) क्रूर स्वभाव, निरंतर पराये कर्म में तत्पर (बृ. जा.), राजाओं से सत्कार प्राप्त, स्वधर्म में में निष्ठा, मित्रवान, धनवान, विद्या पढ़ने-पढ़ाने वाला, सर्वत्र विख्यात् (मान.)। पुरोहिताई में निपुण राजा का मंत्री, मित्रता का धन को प्राप्त, परोपकार, चतुर, (जा.भ.)।

सूर्य,शुक्र- सद्‌बुद्धि, संगीत बाजे, आयुध कर्म में निपुर्ण , नेत्र शक्ति से हीन, मित्र समाज प्राप्त रहे, (शंभु)। रंग, मल्लादि और आयुध, (हथियार) से धन पावे (बृ. जा.)। शस्त्र से प्रहार करने वाला, जेल में बंधन पाने वाला, नाट्यशाला की

हास्यभरी बातों को जानने वाला, कमजोर नेत्र, परस्त्रियों से संगम में द्रव्य प्राप्ति। परस्त्रियों में फँसा (मान.), नट बनाकर या शस्त्र का प्रयोग करके द्रव्य कमाए (फल.) गाना-बजाना और शास्त्र विद्या में सुन्दर बुद्धि, नेत्रों के बल से रहित, स्त्रीयुक्त, मित्र समाज में पूर्ण (जा.भ.)।

सूर्य शनि- धर्म में प्रीति, पुण्यबुद्धि, गुणज्ञ, स्त्री-पुत्रों से सुखी, सम्पन्न, अत्यन्त धातु क्रियाओं से युक्त रहे(शंभु.) ताँबा आदि धातु के काम में निपुण, अनेक बर्तन भांड़े आदि का बनाने वाला व इनके द्रव्य पावे (वृ.जा.), विद्वान हो तब भी क्रिया में निष्ठ रहने वाला, धातु का जानने वाला, वृद्ध पुरुषों की तरह बर्ताव करने वाला, स्त्री तथा पुत्र से रहित,(मान.) धातु क्रिया व व्यवहार में बुद्धि रखने वाला, गुण का जानने वाला, धर्म प्रिय पुत्र और स्त्री से सौख्य पाने वाला, सदा अत्यन्त समृद्धियों सहित। (जा.भ.)

चन्द्र मंगल-पुण्य कर्म से जीविका, कुटिल स्वभाव, प्रतापवान्, अपने आचार से हीन, कलह में तत्पर, रोग से पीड़ित, माता का शत्रु (शंभु) क्रूर कर्म, स्त्री व मद के घड़े बेचने वाला, अपनी माता को क्रूर, (बृ.जा.)। रक्त की पीड़ा से व्याकुल, मृत्तिका, धातु तथा चमड़े की कारीगरी जानने वाला, धनवान, रण में शूर, (मान.), आचार रहित, चुगल, प्रतापी, व्यापार से आजीविका, कलहप्रिय, मातृ वैरी, रोग से दुःखी, (जा.भ.)

चन्द्र बुध- सुन्दर रूप, उत्तम कर्म, धन से युक्त, स्त्री में परम आसक्त, अति बोलने वाला, उत्तम वाणी के विलास वाला, कृपा से गीला मन, और छोटा शरीर (शंभु), प्यारी वाणी, अर्थ जानने वाला, सौख्ययुक्त, सबका प्यारा, कीर्तिवान, (बृ.जा.), स्त्री में अति आसक्त, रूप में सुन्दर, कविता करने में चतुर, धनवान, गुणवान, सदा हसमुख, बड़ा विद्वान, अपने कुल में धर्मात्मा, (मान.), श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ रूप, दयालू, नरम, स्त्री का अधिक प्रेमी, बड़ा वक्ता, (जा.भ.)

चन्द्र गुरु- सर्वदा गूढ़ होवे, गूढ़ बुद्धि, अति मित्रों वाला, परोपकारी, धर्म-कर्म आदि से युक्त, (शंभु), शत्रू जीतने वाला, कुल में श्रेष्ठ, चपल, धनी, (बृ.जा.), देवगुरु पूजन, बन्धुजनों का मान करने वाला, धनवान दृढ़, प्रीत करनेवाला, बड़ा सुशील, (मान.), नम्रतायुक्त, मजबूत, छिपी सलाह करने वाला, अपने धर्म और कर्म में तत्पर, परोपकार में चित्त, (जा.भ)।

चन्द्र शुक्र- उत्तम गन्ध पुष्प, उत्तम वस्तु में मन, वस्त्रादि व्यापार में चतुर, व्यसन वाला, विधि जाननेवाला, (शंभु), वस्त्र कर्म, तंतुवाय-सूत्र बीनना। रफ्फूगिरी व वस्त्र

रंगना, सीना और वस्त्र के व्यापार में चतुर (बृ. जा.), चीजों के क्रय विक्रय में चतुर, शूद्र वृत्ति वाला, कलहकारी, अल्प वस्त्र से युक्त, (मान.) वस्त्र आदि के क्रय विक्रय में चतुर, व्यसन रहित, विधि का जानने वाला। सुगन्ध और उत्तम पुष्प, उत्तम वस्त्रों में चित्त (जा.भ.)

चन्द्र शनि- पर स्त्री में तत्पर, वैश्य वृत्ति से जीविका, सदाचार से हीन, पराया पुत्र और पुरुषार्थ से हीन (शंभु.), उसकी माता पुर्नभु (एक जगह ब्याही हुई, दूसरी जगह पुत्र उत्पन्न किया) हो, (वृ.जा.), हाथी घोड़े का पालन करने वाला, अल्पपुत्र वाला, वृद्धा स्त्री के संग, वेश्या से धन प्राप्त करे, खोटा स्वभाव (मान.)अनेक स्त्रियों के सेवन की इच्छा, वेश्यावृत्ति, साधु शील से रहित। पर पुत्र और पुरुषार्थहीन, (जा.भ.)।

मंगल बुध- मल्लयुद्ध में चतुर, बहुत पुत्रों की अभिलाषा, अनेक प्रकार की औषधि वाला, पुण्य स्वभाव, हीन कर्म, लोह कर्म विधि जानने वाला (शंभु), अत्तार जड़ी वक्कल, फूल पत्ते, गोंद, तेल और बनावटी वस्तु का व्यापार करे। कुश्ती लड़ने वाला (वृ.जा.), निर्धन, विधवा पति, दुर्भाय स्त्री वाला, कण वृत्ति करने वाला, सोने या लोहे का जीविका करने वाला (मान.), मल्ल विद्या में चतुर, बहुत स्त्रियों की लालसा, अनेक औषधियों का व्यापार, सोना और लोहे की विधि में वृद्धि वाला (जा.भ.)।

मंगल गुरु- मंत्र विद्या, अस्त्र शस्त्र के बोध में अत्यन्त निपुण तथा विवेकी, सेनापति राज्य, नगर या ग्राम का स्वामी, ग्रह बल के अनुसार होवे (शंभु), नगर का स्वामी, राजा या ब्राह्मण, धनवान (वृ.जा.), बुद्धिमान, शिल्प शास्त्र को जानने वाला, सुनने मात्र से बात का स्मरण रखे। वाक्य चतुर, घोड़ों से प्यार करने वाला, सबों में प्रधान (मान.), मन्त्र और विद्या की कला में चतुर शीलवाला, सेना का स्वामी, राजा या नगर व ग्राम का स्वामी (जा.भ.)

मंगल शुक्र- प्रपंच, झूठ धूर्त में प्रीत, अनेक स्त्रियों के भोग में मन, घमंडी, सबके साथ बैर (शंभु), मल्ल गोपालक, चतुर, परस्त्रियों में आसक्त, जुआड़ी ठग, (वृ.जा.) गुणों द्वारा पुरुषों में प्रधान, ज्योतिषी, जुआ खेलने, झूठ बोलने में निरत, बड़ा शठ, परस्त्रियों में आसक्त, सबों में मान्य (मान.), स्त्रियों के भोग विधान में चित्त, जुआ व झूठ में प्रीत, प्रपञ्च में तत्पर, अभिमान रहित, सबसे बैर (जा.भ.)।

मंगल शनि- अस्त्र-शस्त्र जानने वाला, युद्ध कर्म में तत्पर, सुखहीन और लोक में अति निन्द्य होवे (शंभु.), दुःख कारक, झूठ बोलने वाला, निंदित काम करने वाला, (वृ.जा.), प्रशस्त वाणी, इन्द्रजाल में निपुण, अपना धर्म छोड़कर अन्य धर्म

मानने वाला, कलह प्रिय, विश्वासघाती, विष तथा मदिरा के झगड़ों में रहने वाला (मान.), अस्त्र और शस्त्र का जानने वाला, युद्ध करने वाला, चोरी झूठ में प्रीत, सदा सौख्य रहित (जा.भ.)।

बुध गुरु- संगीत जानने वाला, नीति का स्वामी, नम्र, अधिक सुखी, उत्तम गुण, धीर सुगन्धित वस्तु प्रिय, उदार (मान.), गान विद्या का ज्ञाता, नम्र, सौख्य युक्त, अति श्रेष्ठ धैर्यवान, निरन्तर उदार, सुगंध का भोग भोगने वाला (जा.भ.)।

बुध शुक्र- उत्तम वाणी का विकास, गुणवान, विवेकी, सदा प्रसन्न, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर वेश, बहुतों का स्वामी (शंभु), बोलने में चतुर, भूमि और गुणों का स्वामी, (बृ.जा.), नीति शास्त्र का ज्ञाता, अनेक प्रकार की कला में कुशल, धनवान, सुन्दर वाक्य, वेद ज्ञाता, हास्य की लालसा (मान.) , कुल में प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी, सदा हर्षयुक्त, श्रेष्ठ वेष, नम्रता युक्त, बहुत नौकर, गुणवान, चतुर (जा.भ.),

बुध शनि- कलह प्रिय, चंचल चित्त, कला के समूहों में चतुर, बहुतों का पालन करने वाला, परम सुशील (शंभु), दूसरे को ठगने में चतुर, गुरु आदि के वचन का उल्लघन करने वाला (बृ.जा.), दुर्बलांग, चलने के स्वभाव, उपाय रहित सबसे कलह करने वाला, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, काम करने में चतुर, (मान.), चंचल स्वभाव, कलाप्रिय, कला के समूहों में चतुर, श्रेष्ठ वेष, बहुत मनुष्यों का पालक, (जा.भ.)

गुरु शुक्र - स्त्री, धन, मित्र, पुत्रादि से सदा सुखी, विद्या में पंडित, श्रेष्ठों से अत्यन्त शास्त्रार्थ करे (शंभु), अच्छी विद्या जानने वाला, धन और स्त्रीयुक्त, बहुत गुणों से युक्त (बृ.जा.), सुन्दर स्त्री, धनवान, धर्म में आस्तिक, प्रमाण जानने वाला, विद्या से आजीविका (मान.), विद्या से पंडित, सदा पंडितों से विवाद करने वाला, पुत्र, मित्र और धन के सौख्य से युक्त (जा.भ.),

गुरु शनि- अधिक यश, ग्राम नगर का स्वामी, स्त्री के पक्ष में सन्देही, मनोरथ सिद्ध, शूरमा, धनवान, कला जानने वाला (शंभु), नाई या कुम्हार, अन्नकार रसोई बनाने वाला हो, (बृ.जा.), जीविका से युक्त, बड़ा शूरवीर, यशस्वी, नगर का स्वामी, नगर के जनों में या सेना के जनों में मुख्य, (मान.), शूरवीर, धनवान, ग्राम व नगर का स्वामी, यशवाला, कलाओं में कुशल, स्त्री के आश्रय से मनोरथ पूर्ण करने वाला (जा.भ.)

शुक्र शनि- उत्तम शील, लेखन विधि से उत्पन्न, खेल से युक्त, पत्थर के कामों में

चतुर, चंचल बुद्धि, लकड़ी चीरने वाला (शंभु), अल्प दृष्टि, स्त्री के आश्रय से धन बढ़े, पुस्तक आदि लिखने में चित्र बनाने में चतुर, (बृ.जा.), सदा मतवाला, पशु पालन करने वाला, बढ़ई के काम में चतुर, खारा या खट्टे पदार्थ का प्रेमी, कारीगरी जानने वाला (मान.), शिल्प शास्त्र और लेखर विधि में चतुर, कौतुकी, घोर युद्ध करने वाला, पत्थर के काम में चतुर।

द्विग्रही योग -

चन्द्र मंगल का योग-साहसी महत्वकांक्षी, शस्त्राघात (शल्यचिकित्सा) सनकी, वातरोगी, अकस्मात् पिताकी मृत्यु।

चन्द्र मंगल का योग धन भाव में-नाम का धनी अर्थात् लोगों की दृष्टि में धनी कुलीन, स्वच्छताप्रिय, उच्चपदाधिकारी प्रतिष्ठित प्रेतबाधा दूर करने में चतुर ज्यौतिषी।

चन्द्र शुक्र योग दूसरे भाव में-धनी, उच्चविचार, कुलनी, सभ्य, शिष्ट।

बुध शुक्र का योग धन में-आस्तिक, अध्यात्मिवादी, वृद्धावस्था सुखमय, ससुराल से प्राप्ति नहीं हो, कौतुम्बिक सुख ही

सूर्य चन्द्र का योग दूसरे भाव में-शत्रु द्वारा कार्य सिद्धि उन्नतिशील।

सूर्य चन्द्र का योग लग्न में-नेत्र रोगी, सनकी, क्रोधी, मस्तक और श्वास का रोगी, दृढि कुशाग बुद्धि।

शनि गुरु का योग लग्न में-भावुक, हठी, ईमानदार, ज्यौतिष शास्त्रज्ञ, अल्पा संतति, सर्वदा कार्यव्यस्त रोगी से।

सूर्य शुक्र का योग लग्न में-सफल राज नीतिज्ञ, भाषामर्मज्ञ साहित्य प्रेमी, प्रवासी, दीर्घायु, गणितज्ञ, राज्य सम्मान।

मंगल बुध का योग लग्न में-ईमानदार, दीर्घायु, राजनीतिमेंपट, सदाचारी, गणितज्ञ, मधुर भाषी।

सूर्य पापग्रहों से युक्त - पिता का नाशक

चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त- माता का नाशक

सूर्य या चन्द्र शुभग्रह युक्त- शुभफल

सूर्य या चन्द्र शुभाशुभग्रह युक्त-शुभाशुभ मिश्रित फल

नवम में द्विग्रह योग

नवम में चन्द्र शुक्र-माता की सपत्नी हो, रोगी, व्यभिचारिणी का पति,

नवम में चन्द्र शनि- अति दुष्ट कर्म करने वाला, माता के कुल से भ्रष्ट,
नवम में मंगल बुद्ध- मंत्रियों के शास्त्र में चतुर, सुन्दर भाग्य, भोगी, उद्विग्न चित्त,
नवम में मंगल गुरु- पूज्य, धन-धान्ययुक्त, व्याधि या घावयुक्त शरीर, क्लेशयुक्त
नवम में मंगल शुक्र- परदेशगामी, क्रूर, महाधीर, परदेशवासी, प्रधान, स्त्री से वैर,
नवम में मंगल शनि- सौख्य और धन नष्ट, पापी, दुराचारी, पर स्त्रीगामी, स्वजनहीन
नवम में बुद्ध गुरु- शास्त्र जानने वाला, न्यायी, भोगी, सम्पदायुक्त, समर्थ
नवम में बुद्ध शुक्र- पं., गीतप्रिय, विख्यात, अच्छीबोली, धीर, विद्वान, समर्थ
नवम में बुद्ध शनि- धनी, प्रियजनों से युक्त, रोगी, चतुर, विषम स्वभाव, वैरकर्त्ता, बहुमार्गी।
नवम में गुरु शुक्र- भाग्यवान, सुन्दर ऐश्वर्य, राजा, बड़ी आयु, सुन्दर भाग्य सम्पन्न, अनेक सुखयुक्त।
नवम में गुरु शनि- धन, रत्नयुक्त,पूज्य, स्वजनहीन, व्याधियुक्त
नवम में शुक्र शनि- यशवान, पृथ्वीपति, व्याधियुक्त, शीलवान, बहुमित्र,
(जातक संहिता)

दशम में द्विग्रह योग-

दशम में सूर्य चन्द्र- सुन्दर शरीर, शत्रु पर जीत, दयाहीन, सेनापति, दु:शीलयुक्त, राजसी स्वभाव।
दशम में सूर्य मंगल-चाकरी कर्त्ता, निष्फल कार्य, प्रधान, राजा का सेवक, नित्य उद्विग्न चित्त।
दशम में सूर्य बुद्ध- हाथी, घोड़ा, पृथ्वी का स्वामी, विख्यात्, यदि नीच का हो तो ऐसा नहीं होगा।
दशम में सूर्य गुरु- नीच कुल में भी जन्म लेकर कीर्ति, सौख्य, सम्मान और धन से युक्त
दशम में सूर्य शुक्र- राजनीति शास्त्र में चतुर, मित्र, धन, वाहन युक्त, बहुत कार्यों को आरंभ करने वाला।
दशम में सूर्य शनि- परदेशगामी, चाकरी करने वाला, जो कुछ धन राजा से प्राप्त करता है, उसे किसी समय चोर चुरा ले जाता है।
दशम में चन्द्र मंगल-हाथी, घोड़ा, खजाना, सम्पदा, बुद्धि से युक्त, पराक्रमी।

दशम में चन्द्र बुद्ध- विख्यात, मानयुक्त, धनी, राजा, मंत्री अवस्था के अन्त भाग में दुखी, बंधु से हीन।

दशम में चन्द्र गुरु- विद्वान दान कर्ता, मानधर्म कीर्ति से युक्त, समृद्ध, लंबी भुजा, सबके पूजने योग्य,

दशम में चन्द्र शुक्र- विख्यात मंत्री, क्षमायुक्त, धन वैभव से युक्त,

दशम में चन्द्र शनि- विख्यात, जीते हुए शत्रु वाला, राजा, दो स्त्री,

दशम में मंगल बुद्ध- शूरवीर, बुद्धिमान, तेजस्वी, राज से सत्कार प्राप्त, क्रूर, सेनापति, धीर

दशम में मंगल गुरु- बहुत से परिवार और धन वाला, राजा कीर्तिमान और कर्म समर्थ,

दशम में मंगल शुक्र- शास्त्र विद्या में निपूर्ण, माला, वस्त्र, विद्या, अर्थ बुद्धि से युक्त, राजमंत्री, स्त्री के समान शरीर।

दशम में मंगल शनि-तेल बेचने वाला, सुवर्णकार, नाच,गाना करने वाला, चित्रकारी या गन्ध से जीविका।

त्रिग्रह योग-

सूर्य चन्द्र मंगल- उत्तम यंत्र, पत्थर के काम में प्रवीण, लज्जा एवं दया से रहित, शूरमा, (शंभु), मंत्र विद्या, अश्व विद्या में कुशल, रूधिर की वेदना से पीड़ित, बड़ा शूरवीर, पुत्ररहित,(मान.), शूरवीर, मंत्र और अश्व का ज्ञाता, लाज और कृपा से हीन, (जा.भ.), शत्रुओं को मारने वाला, धनी नीति, कानून का ज्ञाता, (जा.पा.)

सूर्य चन्द्र बुद्ध - राजा का काम करने वाला, बड़ा तेजस्वी, बात-चीत में और सम्पूर्ण शास्त्र एवं कलाओं में चतुर, (शंभु), विद्याधन और रूप से युक्त, काव्य और कथा का प्रेमी, सभा का प्रिय, धनवान, राजा का सेवक, प्रिय वाक्य कहने वाला, (मान.सा.), बड़ा यश, राजा का कार्य करने वाला, बात में और शास्त्रकला में चतुर, (जा.भ.), राजाओं में पूज्य धनवान, दुर्बल, द्रव्यवाला, विद्यायुक्त, (लग्न चन्द्र का)

सूर्य चन्द्र गुरु- पंडित, धूर्त, चंचल प्रवीण, सेवा जानने वाला, परदेश जाने वाला(शंभु), धर्म में तत्पर, राजा का मंत्री, दृढ़ बुद्धि, भाई बन्धुओं का पालक, देव ब्राह्मण पूजक, (मान.सा.), सेवा की विधि जानने वाला, परदेश जानेवाला, चतुर, प्रवीण, चपल, अत्यन्त धूर्त। (जा.भ.), गुणवान, विद्वान, राजा का प्रिय, (जा.पारि.)

सूर्य चन्द्र शुक्र- उत्तम धर्म कर्म में अरुची, पराया कार्य नाशक, व्यसनों में तत्पर,

(शंभु)। सुन्दर शरीर, शत्रु हन्ता, राजा के समान सुन्दर, बड़ा तेजस्वी, दाँतों के विकार से युक्त, (मान.)। पराया धन हरने वाला, व्यसनों में आसक्त, सत्कर्म में रुचि से रहित (जा.भा.)। परस्त्रीगामी, क्रूर, शत्रुओं से डरने वाला, धनिक, (जा.पारि.)

सूर्य चन्द्र शनि- मूर्ख, अति निर्धन, पराये इशारे जानने वाला, धातु क्रिया में तत्पर, धूर्त, व्यर्थ कष्ट करने वाला, (शंभु)। धर्म में तत्पर, दरिद्र, हाथी,घोड़ों का पालन करने वाला, सत्कर्म करने वाला, शक्ति रहित, (मान.)। पराये इंगित का जानने वाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातु क्रिया में निरन्तर तत्पर, वृथा श्रम करने वाला, (जा.भ.)। खल बुद्धि, मायावी देश प्रिय, (जा.पा.)

सूर्य मंगल बुद्ध- लज्जा, पुत्र, धन, स्त्रीजन और मित्र वर्ग से रहित, चित्त कठोर, विख्यात, साहसी, मन्दकर्मों में प्रवीण, (शंभु)। सर्वत्र विख्यात, बड़ा साहसी, निष्ठुर, निर्लज्ज, धन और पुत्रयुक्त (मान.)। प्रसिद्ध यन्त्र शास्त्र की विधि में प्रवीण, साहसी, कठोर चित्त, लज्जा, धन, स्त्री, पुत्र, मित्रों सहित (जा.भ.)। सुख रहित, पुत्र, स्त्रीयुक्त।

सूर्य मंगल गुरु- व्याख्याता, धनवान, राजाओं का मंत्री, सेनापति, न्याय करने में समर्थ, उदारमन, सत्यवादी, विलासी (शंभु)। भारी मूर्ख, सत्यवक्ता, राजा का मंत्री, मिष्ठभाषी, बड़ा निपूर्ण (मान.)। वक्ता, धनयुक्त, राजा का मंत्री, सेना का स्वामी, नीति विधान में चतुर, तेजस्वी, सत्यवक्ता, विलासी, (जा.भ.)। लोगों का विशेष प्रिय, मंत्री या सेनापति, (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल शुक्र- भाग्ययुक्त, अति बुद्धिमान, धनवान, नर्म, अपने वश में अधिक चतुर, बहुत बोलनेवाला, उत्तम स्वभाव, उत्तम गुणयुक्त (शंभु)। स्वरूपवान, नेत्ररोगी, दुष्ट स्वभाव, वत्सल, चतुर और अति विषयी मन, (मान.), भाग्ययुक्त, अति बुद्धिमान, नर्म, कुलीन, शीलवान, थोड़ा बोलने वाला चतुर, (जा.भ.)। नेत्ररोगी, योगी, कुलीन, धनवान (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल शनि- विवेक रहित पिता बंधु वर्ग तथा धन से हीन, कलह में तत्पर, बहुत रोग, (शंभु)। मूर्ख, गौर धन से हीन, रोग से आर्त, स्वजनों से रहित, विकल, कलह से व्याकुल, धनहीन, कलह युक्त, त्यागी, पिता बन्धु वर्ग से वियोगी, विवेक रहित (जा.भ.)। बन्धुओं से रहित मूर्ख, रोगी (जा.पारि.)।

सूर्य बुद्ध गुरु- नेत्र रोगी, शास्त्र कला में प्रवीण, सुशील, समस्त गृहधन में अधिक होवे (शंभु)। नेत्र रोगी, बड़ा धनवान, शस्त्र तथा शास्त्र कला का जानने वाला और लेखक (मान.)। चतुर, शास्त्रों की कला में प्रवीण, धन संग्रह करने

वाला, महा बलवान्, श्रेष्ठ शक्ति, नेत्र रोग से पीड़ित (जा.भ.)। चतुर बुद्धि, विद्वान्, यशस्वी, धनवान् (जा.पारि.)।

सूर्य बुध शुक्र- स्त्री के निमित्त सतप्त, बहुत बोलने वाला, विदेश वासी, सज्जनों का द्वेषी, निन्द्य बुद्धि (शंभु) माता पिता गुरुजनों से तिरस्कृत और इनसे शाप पाकर दिशाओं में घूमने वाला, स्त्री निमित्त से दुःखी चित्त (मान.) साधुओ का बैरी, निंदक, अति संताप को प्राप्त , स्त्री के कारण से बहुत बोलने वाला, देशों का भ्रमण करने वाला, (जा.भ.) ।कोमल शरीर , विद्वान, यशस्वी, सुखी (जा.पारि.)।

सूर्य बुध शनि- दीन आकृति, मनुष्यों से रहित, लोगों के साथ बहुत द्वेष करने वाला, अति दुष्ट, नीच संगीत (शंभु)। दुराचारी, शत्रुओं का संहारक, भाई बन्धुओं से त्यक्त, सबसे शत्रुता करे। (मान)। तिरस्कार को प्राप्त, अपने जनों से रहित, अनेंक दोष करने वाला, हिजड़ों जैसी आकृति, हीन वृत्ति वाला, (जा.भ.)। बन्धुहीन, धनहीन, बैरी, दुराचारी, (जा.पारि.)।

सूर्य गुरु शुक्र- पराये कार्य में श्रद्धालु, वाचाल, चतुर, धनहीन, राजाश्रयी, अति क्रूर, (शंभु)। राजा का मंत्री, दरिद्र, खराब नेत्र, शूरवीर, बुद्धिमान, परोपकारी, (मान.)। थोड़ा बोलने वाला, धनरहित, राजाश्रय, पराये कार्यों में शूरता करने वाला, पुत्र स्त्री से युक्त, बुद्धिमान, नेत्र रोगी, धनवान, (जा.पारि.)।

सूर्य गुरु शनि- स्त्रीयों में नित्य धन व्यय, बोलने में चतुर, स्त्री पुत्र आदि का सुख, राजा का प्रिय, (शंभु)। पुत्र, मित्र, कलत्र से युक्त, भयरहित, राजा से द्वेष, अपनी इच्छा से मित्रता करने वाला, (मान.)। राजा का प्यारा, मित्र, स्त्री पुत्रों के सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीति में खर्च, निर्भय बोलने वाला, (जा.भ.)। भय रहित, राजप्रिय, सात्विक, (जा.पारि.)।

सूर्य शुक्र शनि- धन, काव्य कथा और अपने मनुष्यों से त्यक्त, दुष्ट चरित्रों में रुचि, अति भयवान खुजला का रोग, (शंभु), कारीगरी तथा मान से रहित, कुष्ठी, शत्रुओं के कारण सदा भय, दुष्टों के समान आचरण (मान.)। शत्रु के भय से युक्त, श्रेष्ठ कथा और काव्य रहित, खोटे कर्म में प्रीत, अति पीड़ित, धन और बन्धु वर्ग से हीन (जा.भ.)। दुष्ट चरित्र वाला गर्बी, अभिमानी (जा.पारि)।

(२) चन्द्र मंगल बुध- अत्यन्त दीन, अपने मनुष्यों से अपमानित, अन्न, धन से हीन, दीन मनुष्यों के अनुकूल रहने वाला, (शंभु)। नीच के समान आचरण, बड़ा पापी, जीविका से हीन, लोक में बंधुहीन (मान.)। दीन, धन-धान्य रहित, अपने

बन्धु वर्गों से दम्भ, नीच जनों का साथ। (जा.भ.)। सादा भोजन में रत, दुष्कर्मी, दूसरों का दूषक, (जा.भ.)।

चन्द्र मंगल गुरु- स्त्रीयुक्त, निर्मल देह, दूसरों के शुभ कार्यों को समझ लेने वाला, कोपयुक्त, घाव से चिन्हित, (शंभु)। बड़ा कामी, वर्ण से युक्त, सबकों प्रिय, स्त्रीजनों के साथ रहने वाला, चन्द्र समान सुन्दर मुख(मान.)। वर्णयुक्त, क्रोधी, पराया धन हरने वाला। स्त्री में तत्पर, शोभायमान शरीर (जा.भ.)। रोषयुक्त वचन, कामातुर, रूपवान, (जा.पारि)।

चन्द्र मंगल शुक्र- दुष्ट स्वभाव की स्त्री, चंचल दुष्ट स्वभाव, पुत्र सुशील हो (शंभु)। दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री तथा माता से युक्त, सर्वत्र भ्रमण करने वाला, शीत से डरने वाला, (मान.)। दुष्टशीला स्त्री का पति, अस्थिर, दुष्टशीला माता की सन्तान, थोड़ा शील, (जा.भ.)। शीलहीन, पुत्रहीन, भ्रमण शील, (जा.पारि)।

चन्द्र मंगल शनि- बाल्यावस्था में माता की मृत्यु, सदा कलह से संतप्त, निन्द्य (शंभु)। बालपने में माता मरे, दुष्ट मनुष्यों को देखने मात्र से ही द्वेषी होने वाला, विषमता युक्त, (मान.)। बालपने में माता की मृत्यु, सदा कलह युक्त, निन्दित, (जा.भ.)। चंचल बुद्धि, दुष्टात्मा, माता को मारने वाला(जा.पारि.)।

चन्द्र बुध गुरु- बुद्धिमान, बड़ा तेजस्वी, बड़े ऐश्वर्य वाला, उत्तम विद्या, अनेक मित्र , विख्यात् कीर्ति (शंभु)। बड़ा तेजस्वी, धनवान, पुत्रमित्र से युक्त, प्रशस्त प्राणी, विख्यात्, कीर्तिमान (मान.)। प्रसिद्ध यश, बुद्धिमान, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्र, भाग्यवान, श्रेष्ठ कृति, अच्छा आचरण (जा.भ.)। भारी धनी, राजा का प्रिय, (जा.पारि.)।

चन्द्र बुध शुक्र- बड़ी स्पर्धा से युक्त, ईर्ष्या करने वाला, उत्तम विद्या, नीच बुद्धि, अति धन लोभी, (शंभु)। विद्या से विभूषित, ईर्ष्यालु, धन का अत्यन्त लोभी, दुष्ट आचरण, (मान.)। विद्या में प्रवीण, नीच वृत्ति, सबसे द्रोह या निन्दा करने वाला, धन का लोभी (जा.भ.)। विद्वान, नीच कर्म वाला, सेवा करने योग्य,(जा.पारि.)।

चन्द्र बुध शनि- ख्यात, नम्र, राजा के मनोनुकूल, नगर ग्राम का अधिकारी, कला विद्या जानने वाला, बुद्धिमान, (शंभु)। बड़ा बुद्धिमान, राजा का पूज्य, बड़ा लम्बा, बड़ा दुष्ट, प्रशस्त वाणी, कलाओं के समूह में निर्मल बुद्धि, विख्यात्, राजा का प्यारा (मान.)। नगर, ग्राम का पति, नम्रता युक्त,(जा.भ.)। दानी, राज पूजित, गुणवान, (जा.पारि.)।

चन्द्र गुरु शुक्र- अधिक ऐश्वर्य, शुभ गुण, कीर्तिमान, उत्तम बुद्धि, वृद्धियुक्त, (शंभु)। पतिव्रता माता का पुत्र, बड़ा पंडित, साधू, सब कलाओं का ज्ञाता, अतिसुन्दर

(मान.)। भाग्यवान, सुन्दर कीर्ति, बुद्धिमान, श्रेष्ठ वृत्ति, (जा.भ.)। प्राज्ञ, सुपुत्री, कला में निपूर्ण, (जा.पारि)।

चन्द्र गुरु शनि– उत्तम मंत्र शास्त्रों को जानने वाला, सुन्दर वेश, राजप्रिय, अत्यन्त चतुर, बड़ा तेजस्वी, (शंभु)। रोग से रहित, स्त्री प्रसंग करने वाला, शास्त्रार्थ जानने वाला, सर्वज्ञ, ग्राम नगर का पालन करने वाला, (मान.)। चतुर, राजा का प्यारा, श्रेष्ठ, मंत्र शास्त्र में अधिकारी, उत्तमवेश, बड़ा प्रतापी, (जा.भ.)। शास्त्री, वृद्धा, स्त्री में रत, राजा के तुल्य, (जा.पारि.)।

चन्द्र शुक्र शनि– उत्तम ग्रन्थ, देखने में श्रद्धालु, उत्तम लेखनी में भी रुचि, पुण्य में तत्पर, वेदपाठियों में श्रेष्ठ और पुरोहित होवे। (शंभु), लेखक का कार्य कारने वाला, वेद ज्ञाता, पुरोहित के कुल में जन्म, कथा कहने वाला, (मान.)। पुरोहित, वेद के ज्ञाता में श्रेष्ठ, पुण्य कर्म में तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकों को देखने और लिखने वाला। (जा.भ.)। वेदज्ञाता, राजपुरोहित, अत्यन्त सुभग, (जा.पारि.)।

मंगल बुध गुरु– कुल में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ कविता, गीत कला का आदर करने वाला, पराया साधन में अत्यन्त मन रहे (शंभु)। बड़ा सत्कवी, स्त्रीयों का प्रिय, परोपकारी, बड़ा उत्साही, गायन विद्या में कुशल (मान.)। कुल में धरती का पालन करने वाला राजा के समान, काव्य और गाने बजाने की कला में प्रवीण, पराये कार्य साधन में एक चित्त, (जा.भ.)। गन्धर्व विद्या, काव्य, नाटक के ज्ञाता (जा.पारि.)

मंगल बुध शुक्र– वाचाल, अत्यन्त चपल, दुबला शरीर, सदा उत्साही, धनवान, (शंभु)। किसी अंग से हीन, बड़ा चंचल, हीन कुल में जन्म, सदा उत्साहयुक्त, तृप्त और चुगलखोर (मान.)। धन सहित दुर्बल देह, बड़ा बोलने वाला, चंचल, धृष्ट, निरन्तर उत्साह में तत्पर, (जा.भ.)। हीनांग, दुष्ट, वंशोत्पत्र, चंचल बुद्धि, (जा.पारि.)।

मंगल बुद्ध शनि– भययुक्त क्षीण शरीर, धन की इच्छा करने वाला, दूत, परदेशवासी, कुनेत्र, सहनशील नहीं, बहुत बकने वाला, (शंभु)। परदेश में रहने वाला, नेत्ररोगी, दूत का काम करने वाला, मुख रोगी, हँसी करने वाला (मान)। बुरे नेत्र, दुर्बल देह, वन में वास करने वाला, दूत का काम करने वा काम करने वाला, परदेशी, बहुत हास्ययुक्त, किसी की न सहने वाला, अपराधी होता है (जा.भ.)। दूत, नेत्र रोगी, सदा भ्रमणशील (जा.पारि.)।

मंगल गुरु शुक्र– स्त्री पुत्र आदि के सुख से युक्त, राज मान, सज्जन संगी, (शंभु)। सुन्दर स्त्रीयों से युक्त, सदा सुखी, सभी को आनन्द देने वाला, राजा का प्रिय,

(मान.)। श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री के सुख सहित, राजा का माननीय, श्रेष्ठ जनों के साथ रहने वाला (जा.भ.)। राजा का मित्र, सुपुत्री, सुखी, (जा.पारि.)।

मंगल गुरु शनि- राजा से मान प्राप्त, दया रहित, दुर्बल शरीर, दुष्ट वृत्ति, मित्र सुख से रहित, (शंभु)। कुष्ठी शरीर, राज पूज्य, नीचों के समान आचार, निर्धन, मित्रों से निन्दित, (मान.)। राजा से प्राप्त मान और कृपा रहित। दुर्बल, खोटी वृत्ति, मित्रता रहित(जा.भ.)। दुबला शरीर, मानी, दुराचारी,(जा.पारि)।

मंगल शुक्र शनि- विदेशवासी, माँ असभ्य होवे, सुन्दर स्त्री के कारण मानहानि आदि से सुख नाश, (शंभु)। स्त्री दुष्ट स्वभाव की , परदेश वासी, सदासुखी, (मान.)। परदेशवासी, नीच कुल की माता, वैसे ही स्त्री, सुखों का नाश करता (जा.भ.)। कुपुत्री, सदा परदेश में रहने वाली, (जा.पारि.)।

बुध गुरु शुक्र- सत्यवादी, उसकी कीर्ति बहुधा गायी जावे, राजा की कृपा रहे, शत्रु से विजयी रहे, प्रसन्न मुख, (शंभु)। सुन्दर शरीर, राज पूज्य, शत्रुओं को जीतने वाला, बड़ा यशस्वी और सत्यवादी (मान.)। राजा की कृपा सहित, बहुत यशवाला, प्रसन्नचित्त, शत्रुओं को जीतने वाला, सत्य में तत्पर, (जा.भ.)। शत्रुओं को जीतने वाला, कीर्ति, प्रताप से युक्त, (जा.पारि.)।

बुध गुरु शनि- स्थान ऐश्वर्य से उत्पन्न सुख से युक्त, उत्तम चरित्र, धारणायुक्त, बहुत बोलने वाला, (शंभु), उत्तम आचार, अनेक भोग भोगने वाला, ऐश्वर्य से युक्त, बुद्धिमान, सुख धैर्य से युक्त, (मान.)। घर में धन और श्रेष्ठ वैभवयुक्त, बहुत बोलने वाला, धृतिमान, श्रेष्ठ वृत्ति, (जा.भ.)। विशेष सुखी, श्रीमान, अपनी स्त्री का प्रिय, (जा.भ.)।

बुध गुरु शनि- झूठ बोलने वाला, बहुत बकने वाला, धूर्त, सदाचार रहित, दूर गमन में तत्पर, कला जानने वाला, (शंभु),। बड़ा मुखर (चुगलखोर), परस्त्रीगामी, दुष्ट जनों का संग, कलाओं का जानने वाला, स्वदेश में रहने वाला (मान.)। साधु, शीलरहित, झूठ बोलने वाला, बहुत बोलने वाला, निश्चय धूर्त, बड़ी दूर की यात्रा करने वाला, कलाओं का जानने वाला, (जा.भ.)। झूठ बोलने वाला, दुष्ट, परस्त्रीगामी (जा.पारि.)

गुरु शुक्र शनि- नीच कुल में उत्पन्न हो तो भी विशाल कीर्ति युक्त राजा हो, निर्मल वृत्ति वाला (शंभु)। राजा हो, यशस्वी, नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी शील स्वभाव से युक्त राजा होवे (मान.)। नीच वंश में भी हो तो श्रेष्ठ कीर्तिवाला पृथ्वी

का स्वामी श्रेष्ठ वृत्ति वाला हो (जा.भ.) स्वच्छ बुद्धि, विख्यात, सुख युक्त (जा.पारि.)।

तीन पापग्रह एक घर में-	सदा दुखी, अनम्र व निन्दित।
तीन शुभग्रह एक घर में -	सुखी हो।
चन्द्रमा पापयुक्त हो-	जातक अल्प सुखी।
सूर्य पापयुक्त हो-	पिता अल्प सुखी।

नवम भाव में त्रिग्रह योग-

नवम में सूर्य चन्द्र मंगल-	घावयुक्त शरीर, रूखा, मरे हुए पिता वाला, भ्रात हीन, रुद्र का बैरी,हिंसक।
नवम में सूर्य चन्द्र बुध-	नपुंसक, सम आचरण, सबजनों का वैरी, पराक्रमी, सत्यभाषी
नवम में सूर्य चन्द्र गुरु-	उत्तम कुलीन, वाहन, धन और सौख्य युक्त।
नवम में सूर्य चन्द्र शुक्र-	स्त्री के कलह से नष्ट धन, सौख्यवाला, राजा सामन्त, सुन्दर, यज्ञकर्त्ता, प्रिय भाषी।
नवम में सूर्य चन्द्र शनि-	अत्यन्त दुष्ट, खण्डित आकार, पराई ऋद्धि मे युक्त, लोक बैरी
नवम में सूर्य मंगल बुध-	प्रिय भाषी, भुजबल युक्त, ज्ञानवृद्धि, समय समय पर कार्यकर्त्ता, निष्ठुर, पिशाच बाधा से दुःखी।
नवम में सूर्य मंगल गुरु-	सदा उद्योगी, देव मित्रगण पूजने में तत्पर, अधिक स्त्रीयों वाला, गुणी,।
नवम में सूर्य मंगल शुक्र-	कलहप्रिय, कुलीन, कन्या दूषक, कर्म में चंचल, सबका बैरी।
नवम में सूर्य मंगल शनि-	बड़ा साहसी, अति क्षूद्र, लोक बैरी, प्रिय, मिथ्याभाषी,क्रूर, बालपने में पिता वर्जित।
नवम में सूर्य बुध गुरु-	भाग्यवान, धनवान, सुन्दर ऐश्वर्य, राजप्रिय, सुन्दर वेश, सम्पन्न, सुन्दर पुत्रयुक्त।
नवम में सूर्य बुध शुक्र-	प्रकाशित और शान्त, शत्रु पक्ष से क्षीण, राजा के समान तथा सार वाक्य वाला।
नवम में सूर्य बुद्ध शनि-	पापी, परस्त्रीगामी, प्रवासी, अति चतुर, चाकरी वाला, कामी।

नवम में सूर्य गुरु शुक्र- अच्छा पंडित, मनोहर, बहुत द्वेष वाला, अतिधीर, सुन्दर बुद्धि, पंडित।

नवम में सूर्य गुरु शनि- उत्तम पुरुष, राजा और गुणवान, धनवान।

नवम में सूर्य शुक्र शनि- कान्तिहीन, मलिन, राजा के दण्ड से युक्त, बुद्धिहीन, मूर्ख।

नवम में चन्द्र मंगल बुध- धन, सुवर्ण, रत्न, भाग्य से युक्त, पहली अवस्था में संताप युक्त और सबका नाश करने वाला।

नवम में चन्द्र मंगल गुरु- जितेन्द्रिय, पंडित, गुरुदेव, साधु सेवा में तत्पर, विद्या युक्त, भोगी, सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त।

नवम में चन्द्र मंगल शुक्र- घावयुक्त देह, रूपहीन, प्रभाक्षीण, स्त्रीप्रिय, स्त्री के वश में रहे, स्त्री द्वारा नाश को प्राप्त।

नवम में चन्द्र मंगल शनि- भ्रातवंश नाशक, बालपन में माता से वर्जित और राजा।

नवम में चन्द्र बुध गुरु- कुलवंश वर्धक, आचार्य, वैभव, मित्र से युक्त, राजा बहुल साधन युक्त।

नवम में चन्द्र बुध शुक्र- माता की सपत्नी को उत्पन्न करने वाला, आनंद युक्त, मानयुक्त, बहुत पिता वाला, शुभ शील वाला।

नवम में चन्द्र बुध शनि- नपुंसक सम आचरण, अति विह्वल, मलिन, निन्दित बुद्धि, संग्राम से भगने वाला, दीन।

नवम में चन्द्र गुरु शुक्र- राजा तुल्य, राजकुल में हो तो राजा हो।

नवम में चन्द्र गुरु शनि- प्रियभाषी, सदाचार युक्त, सुशील, विख्यात्, समस्त शास्त्रों में प्रवीण।

नवम में चन्द्र शुक्र शनि- कृषि से वृत्ति, शत्रु के पोषण में अनुरागी, निष्पाप, शूरवीर, अतिथि, गुरुजन, स्वजन इनका भक्त।

नवम में मंगल बुध गुरु- सत्यभाषी, जनों का प्रिय, सुन्दर शील, सम्पन्न, अति निपूर्ण, भाग्यवान।

नवम में मगंल बुध शुक्र- बड़ा उत्साहयुक्त, बहुद्देश का स्वामी, विख्यात राज सत्कार से सत्कृत और प्रचंड।

नवम में मंगल बुध शनि- पराया तर्क करने वाला, वचन गुण, मलिन और खण्डाकार, परकार्य नाशक।

नवम में बुध गुरु शुक्र- देव समान, सुन्दर, शील , सम्पन्न, विख्यात्, राजा, विद्वान्, धर्मशील।

नवम में बुध गुरु शनि- पुष्ट, पुर में गण गण्य, राजमंत्री, प्रकाशित, धनी, आज्ञाकारी सेवकों से युक्त।

नवम में बुध शुक्र शनि- बुद्धिमान, प्रकाशित, सुन्दर मनोहर वचन, सुखयुक्त।

नवम में गुरु शुक्र शनि- अन्न, पानी, वैभव वाला, सुन्दर स्थान, ऐश्वर्य युक्त, सुन्दर रूप।

चन्द्र से दशम में त्रिग्रह योग फल-

सूर्य मंगल बुध- धन युक्त, राज जन पूज्य, सर्वजन पूज्य ।

सूर्य मंगल गुरु- सुन्दर, ऐश्वर्य सम्पन्न, शत्रू को जीते, समृद्धियुक्त।

सूर्य मंगल शुक्र- क्रूर, साहसी, पर धन हरने वाला।

सूर्य मंगल शनि- क्रूर कर्म, छिपे पाप, दुराचारी।

सूर्य बुध गुरु- विद्वान, रूपवान, ऐश्वर्यवान,धर्मात्मा प्रिय।

सूर्य बुध शुक्र- बड़ा यश, धर्मात्मा, क्रोधहीन, नहीं पराजित होने वाला, सौभाग्य, सामग्रियों से युक्त, समृद्धि उत्पन्न करने वाला।

सूर्य बुध शनि- क्रूर, चपल, शीलहीन, शस्त्र अग्नि से विदीर्ण शरीर।

सूर्य गुरु शुक्र- सुन्दर ऐश्वर्य, विद्या से प्राप्त धन, धर्म में प्रीत, योगभागी।

सूर्य गुरु शनि- रोगी, अति चपल, समस्त जनों से हीन।

मंगल बुध गुरु - धर्मात्मा, बहुत कुटुम्ब, अनेक प्रकार का धन।

मंगल बुध शुक्र- अच्छी कारीगरी से युक्त, मालाकार, सुवर्णकार, सब लोक में हानि करने में युक्त।

मंगल बुध शनि- धर्मशील और निद्रायुक्त, सरल स्वभाव, सत्यभाषी।

मंगल गुरु शुक्र- धनयुक्त, नीतिशास्त्र का ज्ञाता, देव ब्राह्मण का प्रेमी।

मंगल शुक्र शनि- मलिन, असत्यभाषी, वध, बन्धन, विवाद से युक्त।

बुध गुरु शुक्र- इष्ट मित्रों से युक्त, धनी,अति सौभाग्यवाला, धर्मात्मा, सात्विक गुण युक्त, धीर।

बुध शुक्र शनि- धन धर्म से युक्त बुद्धि वाला, दयालु, सत्यभाषी।

गुरु शुक्र शनि- अनेक रोग, विज्ञानी, सुजन, परदेश वासी।

चतुर्ग्रह योग -

01. सूर्य चन्द्र मंगल बुध- लिखने की जीविका करे, चोर, चुगलखोर, बड़ा मायावी, प्रशस्त वाणी, बड़ा कुशल (मान.)। लेखक का काम करने वाला, मुखर वाणी और माया में निपूर्ण, वैद्य (लग्न चन्द्र का)। मायावी, प्रपंची, लेखक, रोगी।

02. सूर्य चन्द्र मंगल गुरु - बड़ा निपूर्ण, धनवान, तेजस्वी, शोक रहित, नीतिज्ञ, (मान.)। प्रसंग में निपूर्ण, धनी, तेजस्वी, शोक रहित, नीतिज्ञ (ल.च.)। धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, राजा का प्रिय करने वाला, निरोग, निश्चित (जा.पारि.)।

03. सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र- विद्याधन संग्रहकर्त्ता, सदा सुखी, पुत्र कलत्र युक्त, वाणी से वृत्ति करने वाला (ल.चं.)। स्त्री पुत्र धन से युक्त, विद्वान, अल्पभोजी, सुखी , कार्यों में निपुर्ण, कृपालु। (जा.पारि.)

04. सूर्य चन्द्र मंगल शनि- मूर्ख, धन से रहित, ठिगना, विषम देह, भिक्षा वृत्ति (ल.च)। चंचल नेत्र, घूमने वाला, व्यापारिणी स्त्री का पति, निर्धन, (जा.पारि.)।

05. सूर्य चन्द्र बुध गुरु- कारीगरी जानने वाला, धनवान, सुन्दर रंग, रूपवाला, सुन्दर नेत्र, रोग रहित (मान.)। कारीगरी करने वाला, धनी, सुन्दर वर्ण, लुसनेत्रों वाला, रोगहीन, (ल.च.)। मित्र, पुत्र, स्त्रीयुक्त, धनवान, गुणी,यशस्वी, बलवान, उदार,(जा.पारि.)।

06. सूर्य चन्द्र बुध शुक्र- सुन्दर ठिगना शरीर राजाओं का मान्य, प्रशस्त वाक्य, विफल (मान.)। सौभाग्यवान, ह्रस्व,राजाओं में पूज्य, वाणी में निपुर्ण,, विफल (ल.च.)। विफल वाचाल (जा.पारि.)।

07. सूर्य चन्द्र बुध शनि- भिक्षा वृति, मातापिता से वियुक्त, नेत्रों से विकल, निर्धन (मान.)। भिक्षुक, माता-पिता से वियोगी, विकल नेत्र, दरिद्री (ल.च.)। निर्धन, कृतज्ञ (जा.पारि.)।

08. सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र- राजपूज्य, तालाब आदि, जंगल तथा मृगों का स्वामी, निपूर्ण, सदा सुखी (मान.)। राजाओं में पूज्य, जल, वन और मृगों का स्वामी,

निपूर्ण, सुखी, (ला.च.)। जल में, वन स्थल, में चलने वाला, राज्य पूज्य भोगी। (जा.पारि.)।

09. सूर्य चन्द्र गुरु शनि- माननीय, स्त्री का प्रेमी, बड़ा धनी, पुत्रवान, क्षीण देह, समान और सुन्दर नेत्र, (मान.)। पूज्य और स्त्री को प्यारा, बहुत द्रव्य और पुत्रों वाला, तीक्ष्ण और समनेत्र, (ला.च.)। विशाल नेत्र, बहुत धन पुत्र से युक्त, वैश्या का पति,(जा.पारि.)।

सूर्य चन्द्र शुक्र शनि- दुबला, स्त्री के समान आचरण, डरपोक, अगुवा, (मान.)। निर्मल, डरपोक, कन्याओं के द्वारा धनोपार्जन, खाने-पीने में तत्पर, (जा.पारि.)। अत्यन्त दुर्बल, स्त्री के समान आचार, डरपोक, आगे चलने वाला। (द.च.)।

सूर्य मंगल, बुध गुरु- सूत्र करने वाला, पर स्त्रीरत, शूरवीर, सदादुः,खी, चक्र को धारण करने वाला (मान.) (ल.च.)। सबल, विपत्ति से युक्त, स्त्री सम्पत्ति वाला, नेत्ररोगी, भ्रमणशील (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र- पूज्य, धनवान, सुन्दर, राज्यमान्य, नीतिमान्, (मान.), दूसरों की स्त्री में लीन, विषम छोटे बड़े या टेढ़े नेत्र, चोर बुद्धि, धनादि से रहित (जा.परि.)।

सूर्य मंगल बुध शनि- योद्धा, कवि राजमन्त्री, बड़ा तीक्ष्ण, नीचों के समान आचार, (मान.)। योधा, कवि, मंत्री, सेनापति, तीक्ष्ण और नीच आचार वाला (ल.च.)। सेनापति या राजा का मंत्री, नीच कर्म, भोगी (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र- पूज्य, राजाओं में पूज्य, धनवान्, प्रख्यात नीतिज्ञ, सौभाग्यवान् (मान.)(ल.च.)। राजा के सदृश, विख्यात्, विशेष पूज्य, धनी (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल गुरु शनि- समूह का मुख्यिा,उन्माद युक्त, राजमान्य, भाग्यशाली, गणों में नायक, उन्मादयुक्त , राज्यपूज्य, सिद्ध अर्थ वाला (ल.च.)। निर्धन, भ्रान्त, मित्र और परिवार वाला (जा.पारि.)।

सूर्य मंगल शुक्र शनि- लोक का द्वेषी, नीच के समान आचार,मूर्खों जैसी आकृति, संसार का बैरी, सर्प नेत्रों वाला, नीचाकारी, जड़ाकृति (मान.)। (ल.च.)। हारने वाला, कुकर्मीयों में प्रधान (जा.पारि.)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र- बहुबुद्धि, धनी, सुखी, सिद्धार्थ और प्रसन्न रहने

वाला, बहुत बुद्धि, धनी, सुखी, सिद्ध, अर्थ वाला, प्रकृष्ट (मान.) (ल.च.)। धन और यश में मुख्य लोक में प्रधान (जा.पारि.)।

सूर्य बुध गुरु शनि- भाईयों से युक्त, झगड़ालू, हिजड़े के समान आचार, उद्यम रहित (मान)। भाईयों से युक्त, लड़ाई करने वाला, मानी, नपुंसकों के समान आचार, उद्यमहीन, (ल.च.)। झगड़ालू यानि दुराचारी। (जा.पारि.)।

सूर्य बुध शुक्र शनि- मित्रों से युक्त, पवित्र, चुगलखोर, सुभग, बड़ाबुद्धिमान, सदा रोगी, मित्र, पवित्र, सुख सौभाग्यवान, बुद्धिमान, राजा का प्यारा (मान.)। (ल.चन्द्र)। सुन्दर मुख, सत्यकृत, आचारवान, (जा.पारि.)। सूर्य, गुरु शुक्र शनि- बड़ा लोभी, सुखी, कवि, कारीगरों का स्वामी, राजा का प्रिय (मान)। भोग और मान युक्त कवि, राजा का प्यारा, (ल.च.)कला में निपुर्ण, नीचों का मालिक, साहसी,(जा.पारि.)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु- शास्त्र में कुशल, राजा, महाबुद्धिमान, राजा का मंत्री, (मान.)। निपुर्ण, राजा का मंत्री, बुद्धिमान, (ल.चन्द्र.)। राजा का प्रिय करने वाला, मंत्री, कवि और राजा, (जा.पारि.)।

चन्द्र मंगल बुद्ध शुक्र- स्त्री बन्ध्या, सब समय सोने वाला, कलह करने वाला, नीच समसन आचरण, भाई बन्धुओं का द्वेषी, (मान.)। बन्धकी का स्वामी, निद्रायुक्त, लड़ाई करने वाला, नीच और भाईयों का द्वेषी (ल.च.)। सुन्दर स्त्री, सुन्दर पुत्र, बुद्धिमान, विरूप, सुखी (जा.पारि.)।

चन्द्र मंगल बुध शनि- बुरा, वीरों के कुल में जन्मा, पुत्र कलत्र, मित्रयुक्त, दो मातापिता वाला, पराक्रमी, विशेष स्त्रीपुत्र वाला, (जा.पारि.)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र- साहसी, अंग से हीन, लूला आदि, धनी, पुत्रवान, अभिमानी, विद्वान, (मान.)। साहसी, विकल अंग, धनी, पुत्रवान, मानी, बद्धिमान, (ल.च.)। पाप कर्म में निपूर्ण, निद्रालु, धनादि में आतुर (जा.पारि.)।

चन्द्र मंगल गुरु शनि-कान से बहरा, धनवान, पागल, दृढ़ प्रतिज्ञ, शूरवीर, विद्वान (मान) बहरा, धनी उन्माद युक्त, स्थिर वचन वीर और जानने वाला (ल. च.)।

चन्द्र मंगल शुक्र शनि-मालिन, स्त्री कुलटा घबड़ाहट युक्त, सर्प के समान नेत्र, बड़ा प्रगल्भ (ढीठ) (मान)। शूद्री का पति, उद्वेगयुक्त, सर्पों के तुल्य नेत्र, प्रगल्भ (ल.च.)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र-सुमन, धनवान मातापिता से रहित, बड़ा विद्वान, शत्रु से

रहित, सौभाग्यवान्, धनी, दो माता पिता वाला, बुद्धिमान, शत्रु रहित (मान.)(ल. चन्द्रि.)

चन्द्र बुध गुरु शनि-बन्धुओं का प्रिय, बड़ा कवि, तेजस्वी, राजा का मन्त्री, यश धर्म युक्त (मान.)(ला. चन्दि.)। बड़ा धनी, बन्धु प्रिय, धार्मिक (जा. पारि.)।

चन्द्र बुध शुक्र शनि-राज पूज्य, नेत्र रोगी, शहर का स्वामी, अनके स्त्री, धनवान् (मान.)।

चन्द्र बुध शुक्र शनि-परस्त्री गामी, बुद्धिमान्, दरिद्र भाई वाला, माटी स्त्री, पुरुषों में श्रेष्ठ (मान.)। पर स्त्री से प्रेम, बुद्धिमान्, द्रव्यहीन भाइयों वाला, मोटी स्त्री. (ल. चन्द्रि.)।

मंगल बुध गुरु शुक्र-स्त्री से कहल करने वाला, धनवान, सुशील, रोगरहित, लोक पूज्य (मान.) स्त्री कलह प्रिय, धनी सुशील निरोग, संसार में पूज्य (ल.च.)। धनवान् और निन्दिता (जा. पारि.)।

मंगल बुध गुरु शनि-शूरवीर, निर्धन, सत्य शौच वृत्तादि का विचार रने वाला, दीन और पशस्त वाणी (मान.)। शूर, द्रव्यहीन, सत्य और सुख युक्त विद्वान्, वाद करने वाले, वाणी में (ल. च.) रोगी, धनहीन (जा. पारि.)।

मंगल बुध गुरु शनि-दूसरों से पाला हुआ, पहलवान्, युद्ध करने वाला, लोक में विख्यात, दृढ़ अंग कुत्ता पालने वाला (मान.)। मल्ल और पुष्टी में योद्धा, प्रसिद्ध पुष्ट अंग, कुकर्म में रूचि (ल. चन्द्रि.)।

मंगल गुरु शुक्र शनि-कामी, परस्त्री गामी, बड़ा अभिमानी, कपटी (मान.) साहस प्रिय, धनी, तेजस्वान्, स्त्री में चंचल और धूर्त (ल. च.।

बुध गुरु शुक्र शनि-चतुर, काम में आसक्त, सत्यवक्ता, तीव्र बुद्धि (मान.)। कामातुर, विधेय भृत्य, बुद्धिमान्, तीव्र, शास्त्र में रत (ल. चन्द्रि.), खूब धनी, विद्वान्, शीलवान् (जा. पारि.)।

नवम भाव में चतुर्ग्रह योग-

सूर्य चन्द्र मंगल बुध-उत्तम पुरुष, विदेशगामी, सदा प्रसन्न।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु-धनवान्, विद्या में निपुण, सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त, राजा तुल्य।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र-माया करने में चतुर, स्वस्त्री में संतुष्ट, सुन्दर भाग्ययुक्त, सर्वजन प्रिय, विख्यात।

सूर्य चन्द्र मंगल शनि-चुगुल, मायावी, शुभशील युक्त, नीच कर्म कर्ता।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु-प्रधान, सब राजाओं से पूज्य, सदा प्रसन्न ।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र-राजा, धर्मात्मा, सम्पन्न, प्रिय भाषी, शान्तचित्त।

सूर्य चन्द्र बुध शनि-नीच आचरण, दीन, पराया धन हरे, सदा आसक्त।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र-अच्छी बुद्धि, हर्षयुक्त, धर्मात्मा, सात्विक, गुण सम्पन्न, धीर।

सूर्य चन्द गुरु शनि-धर्मात्मा, देवभक्त, विद्वान्, पराये डाह में कष्ट भोगने वाला।

सूर्य मंगल बुध गुरु-पितृदेव पूजन, वृद्धों के समान आचरण, गुणवान्

सूर्य मंगल बुध शुक्र-निष्ठुर, सुन्दर ऐश्वर्य, साहसी, धूर्त, शत्रु का मर्दक।

सूर्य मंगल बुध शनि-पराई स्त्री में तत्पर, खजाना नष्ट, सदैव क्षीण।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र-लोक का वैरी, पिपासा से दुःखी, बालापन में कन्या को दूषित करने वाला।

सूर्य मंगल गुरु शनि-सुखहीन, सदा उद्योगी, अनि प्रचण्ड, पराक्रमी, धैर्ययुक्त।

सूर्य मंगल शुक्र शनि-शत्रु का नाश से शोक दूर, क्षुद्र के समान आचरण।

सूर्य बुध गुरु शुक्र-उत्तम धन सुवर्ण ऐश्वर्य से युक्त।

सूर्य बुध गुरु शनि-मानयुक्त, धन सम्पन्न, पाप कर्म में तत्पर, परस्त्री गामी, वैर कर्ता, नीच कर्म कर्ता।

सूर्य बुध गुरु शनि-मानयुक्त, सुन्दर ऐश्वर्य, धनवान्, सत्यभाषी, लोक विख्यात।

सूर्य बुध शुक्र शनि- सत्यभाषी, सुन्दर वचन, गुरु, देव अध्यापक इनका भक्त।

चन्द्र मंगल बुध गुरु-सामग्रियों से युक्त, बालपन में माता से हीन, धनवान्।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र-तपस्वी, विख्यात, सुन्दरभाषी, स्नेहयुक्त, परलोक परायण बड़ा पण्डित।

चन्द्र मंगल बुध शनि-परङ्मुख, दीन, क्षुद्र, मायी, चतुर, परदारगामी।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र-राजवंस कर्ता, प्रधान अति शूर, विद्याधन संकुक्त, लोक विख्यात, लोक मान्य।

चन्द्र मंगल गुरु शनि-धर्म युक्त, कलाओं में चतुर।

चन्द्र बुध गुरु शनि-मायावी, प्रचण्ड, कुछ नीति वेत्ता, धनयुक्त।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि-शत्रु पक्ष से क्षीण, संग्राम में प्रचण्ड, सुन्दर धीरज।

मंगल बुध शुक्र शनि-विदेशगामी,धनों से हीन,क्षुद्र दयाहीन, दुष्ट स्वभाव।

मंगल गुरु शुक्र शनि-सुन्दर मुख, धनी, विद्या, विनय युक्त, साहसी सुजन प्रिय।

बुध गुरु शुक्र शनि-परजनों से वाद विवाद कर्ता, पर स्त्री में प्रीत।

चन्द्र से दशम भाव में चतुर्ग्रह योग-

सूर्य मंगल बुध गुरु-प्रकाशवान् शरीर, कूर, दानी,सकल कार्य कर्ता।

सूर्य मंगल बुध शुक्र-मालाकार, लेखन और चित्र कार्य में युक्त और कार्यकर्ता।

सूर्य मंगल बुध शनि-नीच कर्म कर्ता, धर्म कार्य में युक्त।

सूर्य मंगल बुध शुक्र-खेती करने वाला, धर्मात्मा, बहुत धान्य धनों से युक्त, सदा उद्यम कर्ता।

सूर्य मंगल गुरु शनि-पर धन हर्ता, क्रूर कर्म में युक्त।

सूर्य मंगल शुक्र शनि-समर्थ आचार वाला, प्रकाशित होने वाला, चतुर।

सूर्य बुध गुरु शुक्र-निपुण, मधुरवाणी, मल्ल वृत्ति, कृषि कर्ता।

सूर्य बुध गुरु शनि-पर वचनों में आसक्त, चतुर क्रूर कर्म कर्ता।

सूर्य बुध शुक्र शनि-कृषि कर्म कर्ता, चतुर, सुन्दर भाषी, कठिन स्वभाव।

सूर्य गुरु शुक्र शनि-परदेशवासी, अनेक कर्म कर्ता।

सूर्य बुध गुरु शुक्र-प्रगल्भ, संग्राम से शूर, पण्डित और चतुर।

मंगल बुध गुरु शनि-वैरियों का नाशक, कठिन स्वभाव, शूर वीर, संग्राम में सदा उद्यत।

मंगल बुध शुक्र शनि-अच्छा विद्वान, सबसे अधिक शूरवीर, विशाल शरीर।

मंगल गुरु शुक्र शनि-धीर, धनी, बहुत से कुटुम्ब वाला।

पंचग्रह योग-

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु-बड़ा प्रपंची दु:खी, स्त्रियों का विरही(मान.),(ल. च.)। युद्ध में कुशल, चुगल और समर्थ (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र-सत्य और भाइयों से रहित, दूसरे का काम करने वाला, नपुंसक का मित्र (मान.),(ल.च.)। विद्यार्थी, श्रद्धावान्, अन्य कर्म, परायण, बन्धु रहित (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शनि-अल्पयु, विकल, दु:ख भोगी, पुत्र रहित, बन्धन का भागी(मान.)। अल्पायु, स्त्री पुत्र हीन, बंधन का भागी (ल. च.)। अल्पायु, धन कमाने में तत्पर, बिना स्त्री पुत्र वाला (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शनि-जन्म से अन्धा, महादु:खी, माता पिता रहित, हाथी से प्रीत (मान.)। जाति में अन्धा, बहुत दु:,खी, माता पिता से हीन, गान में प्रसन्न (ल.

च.)। आततायी, माता पिता बंधु जनों से त्यक्त, नेत्र हीन (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शनि-पर द्रव्य हारी, योद्धा, दूसरों को दुःख देने वाला, बड़ा खल समर्थ (मान.)। (ल. च.), पराये की आशा करने वाला, इच्छित स्त्री के विरह से संतप्त (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र शनि-प्रतिष्ठा आचार, धन से रहित, पर स्त्री में रत (मान.)(ल. च.)। मान धन प्रभाव से हीन, मलिन, पर स्त्री रत (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र-राजमंत्री, धनवार, यन्त्र विद्या मोटर मशीन आदि का जानने वाला, दण्ड देने वाला, सवर्त्र विख्या, बड़ा यशस्वी (मान.)। मंत्री, धनी, प्रताप से दूसरे को दण्ड देने वाला (जा. पारि.) (ल. च.)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि-दूसरे का अन्न खाने वाला, उन्माद युक्त, अपने प्रिय पुरुषों के लिए व्याकुल, ठगिया, बड़ा उग्र बड़ा डरपोक, पर अन्न भोगी, उन्माद, युक्त, प्रिय तप्त, छली,उग्र (मान.)और भयानक (ल. च.)। परान्न भोगी, विशेष डरपोक, पाप करने वाला, उग्र वृत्ति (जा. पारि.)।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि-धन, पुत्र से हीन, मरने में उत्साह,अधिक लाभ युक्त, पेट, शरीर लम्बा (मान.)। (ल. च.), धन हीन, दीर्घ आकृति, पुत्र रहित, रोगवान्।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि-इन्द्रजाल विद्या वाला, प्रशस्त वाणी, चंचल चित्त, स्त्रियों को प्रिय, बड़ा चतुर, बुद्धिमान्(मान.)। इन्द्रजाल में रत, वाणी में निपुर्ण, चलायमान चित्त, मनुष्यों का प्यारा, बुद्धिमान्, अपने शत्रुओं से डरने वाला (ल. च.)। स्त्री सहित वाचाल, इन्द्रजाल करने में चतुर, भय रहित, शत्रु युक्त (जा. पारि.)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र-प्रसन्न चित्त, बहुत घोड़ों का स्वामी, बड़ा कामी, शोक करने वाला, सेना का स्वामी, सुन्दर, राजा का प्रिय (मान०) (ल०च)। शोक रहित, सेना और घोड़ों का स्वामी, अन्य स्त्री में चंचल (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शनि-भिक्षान्न भोगी, सदा रोगी, नित्य उद्वेग युक्त मन, अत्यन्त मलिन और जीर्ण (मान०) (ल०च०)। भिक्षा से भोजन, मलिन पुराना वस्त्र धारण करने वाला (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि-व्याधि और शत्रुओं से युक्त अपने स्थान स भ्रष्ट, भूखा रहने वाला, विकल (मान०) (ल०च०)। श्रेष्ठ, अति दुःख, भय और रोगों से युक्त, क्षुधार्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र शनि-बड़ा विद्वान्, विचार पूर्वक काम करने वाला, लोहा आदि धातु यन्त्र (मशीन आदि) विद्या में और रसायन के काम में प्रसिद्ध (मान०)। विचार देह, धातु यन्त्र रसायन में निपुण और प्रसिद्ध (ल०च०)। जल यन्त्र धातु पारा आदि रसायन निर्माण में निपुण, इन्हीं को प्रसिद्ध कार्य मानने वाला (सारा०)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि-मित्रों में प्रीति, शास्त्रों का ज्ञाता, धर्मवान्, गुरु को समान, और दयालु (मान०) (ल०च०)। ज्ञानी, देव गुरु का सम्मान कर्ता, धर्मशील शास्त्री (जा०पारि०)। बहुत शास्त्र जानने वाला, मित्र और गुरुजनों का प्रिय, धर्मात्म और दयालु (सारा०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-साधुता तथा कल्याण से ही, धन तथा विद्या से सुखी, बहु पुत्र (मान०)। साधु, पापहीन, धन विद्या और सुख से युक्त, बहु मित्र सुखी, धन धान्य में प्रबल, विद्वान् (जा० पारि०)(ल०च०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-दुर्भग, मलिन, मूर्ख दास, नपुंसक, दरिद्री (मान०) (ल०च०)। बहुत मित्र और बहुत शत्रु वाला, परोपकारी, टेढ़ा स्वभाव (सारावली)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि-यन्त्र क्रिया में, धातु विषय में तथा बल में प्रसिद्ध (जा०पारि)। तिमिर रोगी, दरिद्र, परात्र भोजी, दीन, अपने बन्धुओं को लज्जित करने वाला (सारा०)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि- भिख मांगने वाला ब्राह्मण, अति मलिन, तिमिर रोगी (मान०)। पराया अन्न पकाने वाला, सदा दरिद्री, मलिन (ल०च०)। दूत, दरिद्र, मलिन वेश, मूर्ख, चोर(जा० पारि०)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र-राजा के तुल्य या राज का मंत्री, लोक पूज्य, गुणवान् (मान०)। सर्वत्र पूज्य, विकल नेत्र, राजा के तुल्रू या मन्त्री (जा० पारि०)।

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि-आलसी, तमोगुणी, पागल, राजा का प्रिय, निद्रालु (मान०)। शोकहीन, तामस, द्रव्यहीन, उन्माद युक्त, राजा का प्यारा, निद्रालु (ल० च०)। पूज्य, रोगी कला में निपुण, बध और बन्धन से युक्त (जा० पारि०)।

षड्ग्रह योग-

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-विद्या धन धर्म से युक्त, भोगी, भाग्यवान्, सर्वत्र विख्यात (मान)। विद्या धर्म और धन से युक्त, बहुत बोलने वाला, भाग्यवान्, लाभयुक्त (ल०च०)। तीर्थ करने वाला, वम और पहाड़ में रहने वाला, स्त्री पुत्र और

धन से युक्त (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि-दूसरे का कार्य करने वाला, दान देने वाला, शुद्ध अन्त:करण, चंचल आकृति, सर्वत्र विजय पर आनन्द करने वाला (मान०)। पराया कर्म करने वाला, दाता, शुद्ध आत्मा, चंचल आकृति, मनुष्यहीन स्थान में रहने वाला (ल० चन्द्रि०)। चोर, परस्त्रीरत, बांधवी से हर्षित, पुत्रहीन, मूर्ख विदेशी (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-संशय करने वाला, बड़ा भाग्यशाली बड़ामानी, विख्यात, युद्ध में शत्रु को मारने वाला, झगड़े में मन (मान०)(ल० च०)। नीच, दूसरे के काम में लिन, क्षय और पीनस रोग से दु:खी (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि-अपनी स्त्री से प्रेम, संसार में उत्साह, वहमी, क्रोधी लोभी, सुन्दर (मान०)। द्रव्य प्रिय, लड़ाई में उत्साह युक्त, चुगल, क्रोधी, लोभी, सौभाग्यवान् (ल०चन्द्र०)। मंत्री, स्त्री धन, पुत्र, हर्ष से ही और शान्त।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि-स्त्री से रहित , द्रव्य हीन, राजा का मंत्री क्षमायुक्त, सुन्दर (मान०)(ल०चन्द्रि०)। सिर में पीड़ा, उन्माद प्रकृति वाला, देव भूमि में वासी, विदेश में प्राप्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि- द्रव्यहीन स्त्री पुत्रों से हीन, तीर्थों को जाने वाला, जंगल में रहने वाला (मान०)(ल०चन्द्रि०)। संसारी शील, विद्वान् (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि-धनवान्, राजा का मन्त्री, बड़ा पवित्र आलसी, बहुत स्त्री, राजा का प्रिय, प्रतापी (ल०चन्द्रि०)। तीर्थ करने वाला, व्रती (जा०पारि०)।

5 या 6 ग्रह से युक्त या दृष्ट कोई भाव-यदि ५ या ६ ग्रह एक घर में ही हों या इन ग्रहों की दृष्टि हो तो वह प्राय: दरिद्री या मूर्ख होता है। (मान०)।

सप्त ग्रह योग

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि-सातों ग्रह एक साथ हों तो सूर्य के समान तेजयुक्त, राजाओं से आदर पाने वाला, महादेव का भक्त, दाता तथा बड़ा धनी होता है। (मान०)।

13. विशिष्ट योग

केन्द्रस्थ ग्रहों पर प्रभाव –

➲ किसी भी ग्रह से केन्द्र स्थान में, विशेषकर दशम भावस्थ ग्रह का प्रभाव उस ग्रह पर पड़ता है, यदि ग्रह से दशमस्थ ग्रह पापी हो तो और पापयुत हो उसका प्रभाव उस भाव पर जिससे दशम में है और उस ग्रह पर जिससे दशमस्थ है, दोनों पर अशुभफल प्रद होगा, एवं शुभग्रह के दशमस्थ होने पर शुभ फल होगा। किन्तु उस शुभग्रह के साथ पापीग्रह नहीं होना चाहिए।

➲ सूर्य और चन्द्र का केन्द्र योग धनदायक होता है, परन्तु चन्द्रमा क्षीण नहीं होना चाहिए। अर्थात् दोनों का एकत्र केन्द्र में होना अल्पधन दायक योग बनाता है। चन्द्र सूर्य का परस्पर केद्र में होना पूर्णिमा के आसन्न होना विशेष धनप्रद योग बनाता है।

➲ जब कोई भाव अपने स्वामी द्वारा दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि होती है चाहे वह ग्रह शुभ हो या अशुभ हो। स्वामी दृष्ट भाव पर शुभग्रह की दृष्टि से विशेष शुभफल की प्राप्ति हाती है। एक ग्रह दो राशियों का स्वामी होता है यदि एक राशि को राशीश देखता हो और अन्य दूसरी शुभग्रहों के प्रभाव में हो तब भी भाव फल में वृद्धि हो जाती है।

➲ किसी भावेश का अपने भाव के लिए अच्छा बुरा फल भावेश स्थित राशि, राशि के बलाबल पर निर्भर करता है तथा भावस्थ राशि के स्वामी के शुभयुत दृष्ट या केन्द्र कोण में रहने पर उस भावेश का फल अशुभ हो तो उसके अशुभत्व का दोष नहीं रहता अर्थात् वह शुभफल ही करता है।

➲ कर्क लग्न की कुण्डली में धनेश सूर्य नीच राशि राशिगत होने धन योग को हानिप्रद बतलाता है किन्तु तुला राशि जो सूर्य की नीच राशि है, उसका स्वामी शुक्र शुभ ग्रहयुत दृष्ट केन्द्र में या त्रिकोण में हो तो धनप्रदयोग बन जाता है चाहे वह धन संचित नहीं होता।

सूर्यकृत योग–

धातु कार्य में निपुणता, वर्तनों का निर्माणकर्त्ता धर्मात्मा धनी मिट्टी अथवा चमड़े के कार्य से लाभ, व्यापारी, मानसिकविरोध, चुगलखोर, रोगी, कलह प्रिय, रक्तव्याधि पीड़ित

सूर्य-धन भाव में सूर्य कर्जा रखने वाला। द्वादश में धन्धे द्रव्य खर्च। सूर्य चन्द्र योग पत्थर यंत्र आदि के निर्माण में निपुण, कामी, अभिमानी, अनुसन्धानकर्त्ता, अशांति केन्द्रत्रिकोण में यशस्वी, राज्य से सम्मानित, सूर्य मंगल का योग-क्रोधी, असत्य वक्ता, पापी, साहसी, बली। दश में दीर्घ उद्योगी, अग्नि से संबधित कार्य में कुलश, शल्य चिकित्सा में कुशल। सूर्य बुध का योग-नौकरी से, राज्याश्रेय से धनलाभ कुशाग्रबुद्धि, नौकर रखने वाला मधुरभाषी, विद्वान। 1,2,5,9,10 भाव में महत्वकांक्षी बुद्धित्व भाव में विद्वान् वाचाल। मिथुन राशि में सम्पादक लेखक। वक्ता, तीव्र स्मरण शक्ति, खुद्य कुम्भ में गूढ़विषय में अभिरूचि, चतुर्थ में उच्च का बुध का योग विद्वान कुशाग्र बुद्धि, सूर्य से अंशो में अधिक बुध कार्य में विशेष सफलता। सूर्य गुरु का योग विद्वान। कुशल प्रशासक धार्मिक कार्यों में विशेषरुचि उपदेशक राज्यमंत्री अध्यापक, परोपकारी सूर्य शुक्र का योग यान्त्रिक विद्या में निपुण, संगीतज्ञ अभिनयकर्त्ता, हास्यप्रिय, स्त्रीवर्ग से लाभ, चित्रकारी, में दक्ष, चिकित्सक। सूर्य शनि का योग पिता से विरोध या अलगाव या विचारों में भिन्नता। सूर्य शनि धन्धे कारोबार में विघ्नबाधा तथा पैतृक सम्पत्ति की हानि, तुला राशि में सूर्य शनि का योग पैतृक सम्पति की हानि अवश्य करता है। सूर्य द्वितीय द्वादश में कर्जदार व नेत्र रोगी। सूर्य शुक्र की युति अथवा सूर्य चन्द्र की युति से 12 वे भाव में पीड़ा व मन्द दृष्टि अवश्य करता है। सूर्य शनि का तथा सूर्य राहु का जिस भाव में योग हो उस भाव की हानि करता है। मित्र राशि का तथा उच्चराशि का सूर्य राज्य पक्ष में लाभप्रद प्रशासक व उपासक बनाता है।

01. सूर्य एकाकी कर्जा, धनभाव में ।

02. सूर्य व्यय भाव में धन्धे व्यापार में द्रव्य खर्च।

03. रवि एवं चन्द्र का योग केन्द्र त्रिकोण में राज्य से सम्मानित यशस्वी ।

04. सूर्य मंगल का योग दशंम भाव में दीर्घ उद्योगी बनाता है तथा अग्नि संबंधित कार्य, शल्य चिकित्सक योग बनाता है।

05. सूर्य बुध का योग केन्द्र में होने से व्यापारी योग बनता है।

06. सूर्य, बुध, 3,7,11 राशि में से किसी एक में हो तो से कुशाग्र, बुद्धिमान होता है।

07. सूर्य, गुरु का योग भी विद्वान कुशल प्रशासक, धर्मनिष्ठ कर्म में विशेष रूचि।

08. सूर्य शुक्र का योग पिता से विरोध उत्पन्न करता है।

09. सूर्य शनि का योग पिता का विरोधी होता है।

10. द्वितीय द्वादश भाव में नेत्ररोग उत्पन्न कर उपनेत्र (चश्मा) लगवाता है।

11. सूर्य शुक्र की या सूर्य चन्द्र की युति 2,12,6 स्थान में हो तो नेत्र रोगी योग बनता है।

12. सूर्य शनि का योग जिस भाव में होता है, उस भाव से पितृविरोध पैतृक धन हानि राज्यभय, मुकदमा।

13. उच्च व मित्र राशिगत सूर्य राज्यपक्ष से लाभ तथा कुशल प्रशासनिक व उपासक भी बनाता है।

14. सूर्य, राहु का योग जिस भाव में उसकी हानि करता है।

चन्द्रकृत योग-

चरराशि 1,4,7,10 में चन्द्र चित्त में चंचलता, बारबार धन्धे का बदलाव, नौकरी में बार-बार स्नानान्तरण, भ्रमणशील धन्धे से लाभ, 3, 7, 11 राशि में विद्याव्यसनी,वृश्चिक राशि में निराशा के भाव, चिड़चिड़ापन, बदला लेने की भावना, क्षीणचन्द्र पापाक्रान्त 6 वें भाव में सर्दी-जुकाम की बीमारी, यदि इस स्थिति में अष्टम भाव हो तो जल में डुबने या मोतीझरा आदि व्याधियुक्त, 12 वे भाव में आर्थिक हानि नेत्ररोगी, क्षीणचन्द्र पाप युक्त दृष्ट सप्तम में अन्तर्जातीय विवाह या प्रेम विवाह, केन्द्र त्रिकोण में शुभचन्द्र लाभप्रद, प्रवासी, व्यभिचारी, चन्द्रमंगल का योग नाम का धनी अर्थात् धन हीन को भी लोग धनी मानते हैं। चन्द्रबुध का योग स्त्री में परम आसक्त, सुन्दर वाचाल, विनोदी, विद्वान वक्ता, धनी, 3,6,11 राशि में बिशिष्ट विद्वान्। चन्द्र गुरु के योग से श्रीमन्त, गूढ़ बुद्धि परोपकारी, गुप्त मंत्र में चतुर कुलदीपक, अध्यात्मवादी 1,5,9,10,11 भाव में संस्था का संचालक, शिक्षक, उपदेशक, यशस्वी, प्रतिष्ठित, सचिव, सदाचारी, भूमि व वाहन का लाभ, किसी अशुभकारी योग में गुरु की दृष्टि अशुभ फल की विनाशक होती है। चन्द्र शुक्र का योग वस्त्र व्यापारी, विलासी जीवन, औषधि सम्बधी कार्य कामी, सुगन्धित वस्तुप्रिय। चन्द्र शनि का योग पर स्त्रीगामी, अप्राकृतिक मैथुन प्रिय, स्पष्टवक्ता छल-कपट रहित। चन्द्र शुक्र का योग लग्न और सप्तम में अनेक स्त्रियों से स्मरणकर्त्ता सुन्दर औषधि सम्बन्धी कार्यरत।

01. चर राशि (1,4,7,10) में चित्त में चंचलता बार-बार धन्धे का बदलाव, भ्रमण धन्धे से लाभ 3,7,11 राशि में विद्या व्यसनी, वृश्चिक राशि में चिड़चिड़ापन कार्य में असफलता होने पर विशेष अशान्ति बदले की भावना उत्पन्न करता

है। क्षीणचन्द्र या पापाक्रान्त युत दृष्ट छटवें भाव में सर्दी जुकाम का रोग उत्पन्न करता है। यदि ऐसी स्थिति में अष्टम भाव में हो तो जल में डूबने व टाईफाइड (मोतीझरा) आदि रोग उत्पन्न करते हैं।

02. 12 वें भाव में आर्थिक हानि देता है।

03. सप्तम में प्रवासी, व्यभिचारी, क्षीणचन्द्र सप्तम में पापयुत दृष्ट से अर्न्तजातीय विवाह।

04. केन्द्र त्रिकोण में शुभचन्द्र लाभप्रद होता है।

05. चन्द्र मंगल की युति से लोगों की दृष्टि मे धनी बना रहता है।

06. चन्द्र बुध के योग से वक्ता, 3,6,11 राशि में विद्वान बुद्धिमान।

07. चन्द्र गुरु का योग या चन्द्रमा गुरु की दृष्टि या केन्द्र में परस्पर हो तो श्रीमन्त योग (गज केसरी) बनने से सभी प्रकार का सुख मिलता है।

08. 1, 5,9,10,11 भाव में संस्था की स्थापना, शिक्षक, उपदेशक, विद्वान, यशस्वी, मान व प्रतिष्ठा वर्धक होती है।

09. चन्द्र, शुक्र योग व दृष्टि से अनेक स्त्रियों का भोक्ता।

10. चन्द्र, शुक्र का योग व दृष्टि सम्बन्ध लग्न या सप्तम में होना अत्यन्त कामी होता है।

11. चन्द्र शनि का योग निष्कपट, स्पष्ट वक्ता व अप्राकृतिक मैथुन कर्त्ता।

12. सूर्य चन्द्र की युति जीवन में अशान्ति, पत्थर पर यन्त्र आदि बनाना, मूर्तिकार, राज्यसम्मानित जीवन प्रदान करता है।

13. चन्द्र राहु का योग भ्रमित चित्त,भूत,प्रेतबाधा तथा अशान्तिप्रद होता है।

14. चन्द्र उपचय (3,6,10,11) वें स्थान में शुभफल प्रद।

भौमकृत योग-

जन्म समय में सूर्य उपचय 3,6,10,11 भाव में यदि बलवान हो तो प्रत्येक कार्य में सफलता दिलाता है। मंगल बुध का योग औषधिज्ञाता गोंद तेल व बनावटी वस्तु का व्यापारी सोना तांबा और लोहादि धातु एवं असत वक्ता, मंगल गुरु का योग मंत्रविद्या में निपुण, निष्ठ शिल्प शास्त्र का ज्ञाता, सेनानायक भूमिपति धनी, मंगल शुक्र योग व्यभिचारी कम्प्यूटर कार्यरत प्रपंची झुठा जुवा रोकने वाला ज्येतिषशास्त्रज्ञ, मंगलशनि का योग भयंकर दुर्घटना ऑपरेशन भाव में अत्यंत दुखदायी होता है। मंगल और शनि के योग से भयंकर दुर्घटना होती है। मंगल शनि का योग वैज्ञानिक शिक्षा प्रदान करता है किन्तु दाम्पत्य जीवन को बिगाड़ता है। 2 मंगल शनि का योग

धनभाव में धनकुटुम्बकानाश तीसरे भाव में भाई का सुख नही, 4 वें में माता, वाहन, भूमि, मित्र के सुख से रहित 5 वें उदरपीड़ा, गर्भपात, सन्तान सुख में हानि, 10 वे प्रत्येक धन्धे में हानि-राजदण्ड पिता के सुख में बाधा, 11 वें सन्तान हानि, 12 वें में दरिद्रयोग बनाते हैं। सिंह लग्न में कर्क का वक्री मंगल झगडालु दाम्पत्य जीवन दुःख प्रद, सनकी वैज्ञानिक, विश्वासघाती तस्कर आदि योग कारक होता है।

मंगल फैक्ट्री कलकारखाने से लाभ देता है। उच्चकोटि का धन्धा करवाता है। जमीन जायदाद की बृद्धि करता है। दशम में कर्क का वक्री मंगल स्त्री सुखप्रद वैदेशिक धन्धे से लाभ, धनेश लाभेश और लग्नेश यदि चर राशि में हों तो विदेश से लाभ, अत्युत्तम होता है। एक्सपोर्ट इनपोर्टका धन्धा भी लाभ प्रद होता है। त्रिकोणस्थ मंगल कुलदीप योग बनाता है। मघा मूल अश्विनी नक्षत्र का मंगल भी कुलदीपक योग बनाता है। 3, 7, 11 राशि में मंगल अहंकारी, मिथुन में हिंसक, पापी, लूटपाट करने वाला वक्ता और अभिमानी बनाता है। 1, 5, 9, 10 राशि का दशम में मंगल अत्युत्तम फल कारक कुंभ में तत्ववेत्ता 1, 6 राशि में मंगल झगडालू व साहसी बनाता है। 5, 11 भाव में गर्भपात 2, 11 भाव में धन हानि व कर्जदार बनाता है। किन्तु कर्ज लेकर धन्धा करने में लाभप्रद होता है।

01. उपचय लग्न से 3,6,10,11 भाव में बली मंगल से कार्य में सफलता ।
02. नीच का मंगल वक्री होकर व्यय रुख भाव में फैक्ट्री आदि में सफलता तथा वैदेशिक धन्धे से धन लाभ किन्तु जीवन में धन्धा चलते हुए भी बचत नहीं होती। चलते फिरते धन्धे से भी लाभ।
03. मिथुन राशि में मंगल वक्ता स्वाभिमानी, कुंभ में तत्ववेत्ता 3,7,11, राशि में अहंकारी, 1,3,6 भाव में झगड़ालू षष्ठ भौम उपपत्नी की भी प्राप्ति करवाता है।
04. लाभ व पंचम भाव में गर्भपात, उदरपीड़ा, सन्तान शल्य चिकित्सा से प्राप्त हो। गणित में निपुण आदि कारक योग है।
05. 1,5,9,10 इन भावों में स्थित हो हो तो अत्युत्तम।
06. द्वादश (12) भाव में कर्जदार, धन का व्यय।
07. मंगल शनि के योग से जीवन में भयंकर दुर्घटना या शल्य चिकित्सा (भयंकर रोग) से पीड़ित, किन्तु विद्वान् होता है और दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता।
08. मंगल- जन्म समय में 3,6,10,11 वें भाव में बली हो तो कार्य मे सफलता। मंगल व शनि भयंकर दुर्घटना, दाम्पत्य जीवन खराब , सम्बन्ध विच्छेद,

वैज्ञानिक शास्त्रज्ञ, मंगल व शनि द्वितीय में कौटुम्बिक धननाश, मंगल व शनि तृतीय मातृ विनाश, मंगल व शनि चतुर्थ मातृ व पितृ कष्ट, मंगल व शनि-सन्तान विनाश, गर्भपात, उदरपीड़ा, मंगल व शनि सप्तम मे हो तो स्त्री झगड़ालू, स्त्री विनाश। अष्टम में धननाश नवम में पितृकष्ट, दशम में धन्धे में हानि, राजदण्ड, पितृ सुख हानि, लाभ में कर्जा बढ़े सन्तान कष्ट, उदर रोग, सिंह लग्न में नीच का वक्री मंगल 12 वें फैक्ट्री का मालिक वैदेशिक धन्धे में लाभ।मिथुन में वक्ता, स्वाभिमानी बनाता है। लाभ व पंचम में गर्भपात द्वादश में कर्जदार धननाश 1,5,8,10 राशि का 10 में अत्युत्तम।

बुधकृत योग-

1, 2 ,5, 9, 10 भाव में महत्त्वकाक्षी, वाचाल, विद्वान् मिथुन में लेखक सम्पादक, वक्ता तीव्र स्मरण शक्ति वाला, कुंभ में गूढ़विषय चिन्तन, चतुर्थभाव में उच्च राशिगत अकस्मात् भवन प्राप्ति या सुगमता से भवन निर्माण। सूर्य बुध का योग केन्द्र में व्यापारी चन्द्र बुध का योग दिल्लगीबाज, मशखरा स्त्रियों में आसक्ति, मंगल बुध का योग असत्यवक्ता, बुध गुरु का योग विद्वान ग्रंथ लेखक कर्मठ, बुध शुक्र का योग यंत्र कलविशिषज्ञ ज्योतिष शास्त्रज्ञ, पंचम भाव में बुध शनि का योग नपुंसकता (अल्पवीर्य) खिलाड़ी बनाता है। बुध गुरु का योग संगीतज्ञ उदार, नृत्यगीतादि में निपुण, चतुर बुध शुक्र का योग स्त्री पुत्र धनादि से सुखी सदा प्रसन्न नौकर चाकरवाला, धनी मधुरभाषी, चन्द्र बुध का योग स्त्री में अधिक असक्त वाचाल सुन्दर विनोदी विद्वान् धनी प्रसन्न मुख, वक्ता बनाता है।

1,2,5,9,10 भाव में महत्वाकांक्षी, द्वितीय में विद्वान वाचाल, मिथुन में लेखक सम्पादक वक्ता तीव्र स्मरण शक्ति, कुम्भ में गूढ़ विषय चिन्तन, चतुर्थ में उच्चराशि का अकस्मात गृह प्राप्ति या सुगमता से गृह लाभ। सूर्य से अंशो में आगे बुध श्रेष्ठफल। सूर्य व बुध केन्द्र में व्यापारी। मंगल व बुध झूठा। बुध व गुरु विद्वान, ग्रन्थ लेखक, बुध व शुक्र यंत्रकला विशेषज्ञ, पंचम में ज्योतिर्विद। चन्द्र बुध दिल्लगी बाज मसखरा, स्त्रियों में आशक्त। बुध व शनि नपुंसकता, अल्पवीर्य, क्रीड़ास्थल।

गुरुकृत योग-

धनी कुलश्रेष्ठ ज्योतिषशास्त्र, मधुरभाषी, सदाप्रसन्न, अनेक भृत्यवाला वाहनसुखयुत, आदि योगकारक होता है। वेदान्ती, संस्कृतज्ञ, न्याय, व्याकरण, विद्या, व्यसनी, उपदेशक, संस्थापक सचिव, सदाचारी, भूमिपति, वाहनसुख।गुरु की

दृष्टि से जन्मपत्र में उपलब्ध कुयोग शांत हो जाते हैं तथा निर्बल हो जाते हैं।

3, 7, 11 राशि में गुरु विद्वान योग, सिंह व कुंभ राशि में या अस्तंगत से सन्तान का अभाव जन्म लग्न से चन्द्र लग्न से सूर्य लग्न से 11वें भाव में धनप्रद चन्द्रगुरु का योग या परस्पर केन्द्रस्थ होने से यशस्वी उपदेशक, शिक्षक, धार्मिक संस्था संचालक, उच्चपदाधिकारी प्रतिष्ठित, मंगल गुरु का योग सन्तान अल्पायु स्वयं कर्मठ पुरुष राशिस्थ पुत्रप्रद कन्या राशिस्थ कन्याप्रद। चन्द्र राहु का योग भ्रमितचित्त, भूत प्रेत बाधा, शांतिहीन। 3, 6, 10, 11 भाव में शुभचन्द्र सम्पन्न प्रद। 1, 5, 9 राशि का और तीक्ष्ण नक्षत्र का चन्द्र 6, 8, 12 वें भाव में अत्यंत दु:खदायी होता है।

शुक्रकृत योग-

लग्न में विलासी जीवन, अनेक स्त्रियों का उपभोगकर्त्ता, सुन्दर लम्पट। धनभाव में हीरे जवाहरात का धन्धा करने वाला तथा सुन्दर स्त्री प्राप्तकर्त्ता। पंचम भाव में मंत्र यंत्र कर्म में विशेष रूचि संगीत प्रिय, सटोरिया अभिनयकर्त्ता, व्ययभाव में शुभफलप्रद जीवनोपयोगी सभी पदार्थों का दाता। कर्क वृश्चिक राशि में व्यभिचारी, ५ राशि में बलवान गौरवर्ण। चन्द्र शुक्र और मंगल शुक्र का योग भी व्यभिचारी बनाता है। मंगल शुक्र का योग कम्प्यूटर यंत्र का विशेषज्ञ भी बनाता है। शुक्र शनि का योग अल्पवीर्य खिलाड़ी व लेखक, शिल्पज्ञ, पशु पालक, पत्थर के काम में निपुर्ण नीच वृत्ति से लाभ वीर्य विकार आदि योग कारक है। शुक्र ग्रह प्राचीनता का पक्षधर संगीतज्ञ सौन्दर्य प्रिय, रतिक्रीडाप्रिय, स्वतन्त्र करोबारकर्त्ता, यांत्रिक विद्या में निपुण शेयरबाजार का कार्यकर्त्ता राज्यमंत्री व्याख्याता, वशीकरणादि क्रिया देवी का उपासक स्त्रीवर्ग द्वारा द्रव्य प्राप्ति आदि का कारक है।

प्राचीनता का पक्षधर, संगीतज्ञ, सौन्दर्यप्रिय, रतिक्रीड़ाप्रिय, स्वतंत्र धंधा, राज्यकार्य, यान्त्रिक विद्या, व्याभिचार, देश की सम्पत्ति, शेयर बाजार, मंत्रित्व, व्याख्याता, देवी भक्त, वशीकरण, आदि से सम्बन्धित जीवन होता है।

लग्न से द्वादश भाव में शुक्र होने से भोग विलासादि के लिए धन की प्राप्ति करवाता है, यदि द्वादश भाव में शुक्र के साथ द्वाद्वशेश भी हो तो बहुत अधिक धनप्रद बन जाता है। धनेश का व्यय भाव में स्थित होना श्रेष्ठफल कारक नहीं होता, किन्तु मेष लग्न में धनेश शुक्र द्वादश भाव में धन की हानि नहीं करता है बल्कि धनप्रद योग बनाता है। शनि 9,12,10,11,7 राशि का लग्न में स्थित हो तो शुभफल करता है और शुक्र द्वादश भाव में शनि की राशि व नवांश के बिना स्थित हो तो भी शुभफलदायक होता है। वह व्यक्ति को कविता करने वाला बनाता है। कर्क लग्न में शुक्र धनभाव या द्वादश भाव में स्थित होना शुभफल प्रदाता होता है। धनभाव में सिंह राशि का शुक्र अष्टम भाव को देखता है जो स्त्री

का धन भाव होने से धनप्रद व स्त्री को दीर्घायु बनाता है। तथा स्त्री द्वारा धन मिलता है। तात्पर्य यह है कि व्यय स्थान गत ग्रह दूषित हो जाता है। लेकिन शुक्र शुभ फल कारक ही होता है। शुक्र जिस किसी भाव से द्वादशस्थ होता है, तब उस भाव की वृद्धि करता है। कुम्भ लग्नस्थ शुक्र हो और धनेश गुरु धन भाव में हो तो प्रचुर मात्रा में धन लाभ का योग बन जाता है। इसी प्रकार वृश्चिक लग्नस्थ शुक्र हो और धन भाव में स्वराशि का गुरु होने पर भी यह योग घटित होता है। चदि चतुर्थ भाव में शुक्र हो और पंचम में गुरु होने पर विद्या व सन्तान पक्ष में उत्तम फल कारक है।

तात्पर्य यह है कि शुक्र जिस भाव के व्यय भाव में स्थित होता है तो उस भाव की वृद्धि करता है। यदि लाभस्थ शुक्र हो तो व्यय भाव की वृद्धि करने वाला होता है अतः लाभस्थ शुक्र का फल उलटा हो जाता है। इसी प्रकार शुक्र पंचमस्थ होने से षष्ठभाव की वृद्धि करता है अर्थात् रोग चिन्ता ऋण और शत्रुबाधा उत्पन्न करता है। तात्पर्य यह है कि छठे भाव से जिन-जिन बातों का विचार होता है उसकी वृद्धि करने के कारण पंचमस्थ शुक्र षष्ठभाव संबंधि फल की वृद्धि करता है।

शनिकृत योग-

पराधीनता, नौकरी, श्रमजीवी, दुष्ट बुद्धि, विश्वासघात, छापाखाना (प्रेस), जुवारी, झूठा, शराबी, वात व्याधि, लीवर, वृद्धावस्था, लौहधातु, परपीड़ा आदि से सम्बंधित, शनि की दृष्टि जिस भाव व ग्रह पर पड़ती है उसकी हानि करता है। सप्तमस्थ या सप्तम पर दृष्टि से एक स्थान में विवाह की चर्चा पक्की होने पर विघ्न उपस्थित कर अन्यत्र शादी का योग बनाता है। साढ़े साती या शत्रुक्षेत्री शनि भयंकर पीड़ा जनक होता है।

पराधीनता भृत्यकर्म श्रमजीवी दुष्ट बुद्धि विश्वासघात, झूंठा, प्रेस का कार्य करने वाला, शराबी, रोगप्रद, वातव्याधि लीवर संबंधी तथा पैरो का रोग लोहघातक तथा तेल का धन्धा पर पीड़क आदि कारक योग होता है।

राहूकृत योग-

आकस्मिक दुर्घटना, भूत बाधा, ऑग्लभाषा ज्ञाता, तस्कर, मृगीरोग, देशाटन, बलात्कार, द्यूतक्रीड़ा, विषैले पदार्थ आदि से सम्बंध रहता है।

केतुकृत योग-

मंत्र, यंत्र, तंत्र, गंगा स्नान, आत्मज्ञान, नाना, नानी, सास-ससुर, शिवभक्ति, व्रण, चर्मरोग, विषैले पदार्थ, आदि से सम्बंधित सम्बंधित जीवन बिताता है।

14. प्रकीर्ण योग

अग्निभय योग-

मेषलग्न में सूर्य, बुध, राहु, अष्टम में शनि, पंचम में और गुरु चतुर्थ में मंगल षष्ठ में तथा सप्तम में शुक्र है। 1,5,9 अग्नितत्व की राशि होने से मंगल सूर्य और गुरु अग्नि तत्व के स्वामी होकर शुक्र पर पूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। शुक्र से द्विर्द्वादशों, मंगल, सूर्य से शुक्र आक्रान्त है, गुरु, शुक्र से दशमस्थ कर्क का सप्तम भाव व शुक्र को प्रभावित कर रहा है। शनि अग्नि राशिस्थ शुक्र को देख रहा है। अतः स्त्री के कपड़ों में आग लगना निश्चित है।

अग्रज घातक योग-

जब लग्नेश तृतीयेश अथवा लग्नेश एकादशेश का प्रभाव गुरु पर पड़ता हो तो बड़े भाई की हानि होती है। इसी प्रकार लग्नेश और तृतीयेश का अथवा लग्नेश और एकादशेश का किसी भाव के कारक ग्रह पर प्रभाव पड़ता हो तो उस भाव से संबंधित प्राणि को हानिप्रद होता है।

आत्म घातक योग-

लग्न, लग्नाधिप अष्टम, अष्टमेश पर लग्नेश तृतीयेश एकादशेश, सूर्य, चन्द्र आदि का प्रभाव हो तो मनुष्य आत्मघात करने की सोचता है। यदि लग्नेश और अष्टमेश निर्बल होकर मंगल और षष्ठेश से युक्त हों तो युद्ध में या झगड़े फसाद में मृत्यु होती है।

शराबी योग-

चन्द्र लग्न और जन्म लग्न तथा इन भावों के अधिपति एवं द्वितीय और द्वितीयेश पर राहु शनि का दोनो का प्रभाव होने पर शराबी योग बनता है।

संगीतज्ञ योग-

धनभाव और धनेश का पंचम भाव से तथा शुक्र से संबंध होने पर संगीतज्ञ होता है।

खंग योग-

भाग्येश धन में धनेश भाग्य में और लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में होने पर खंग योग बनता है। जो वेदशास्त्रों का ज्ञाता, चतुर, कृतज्ञ, और निरभिमानी बुद्धिमान और प्रतापी बनाता है।

घातक योग-

मीन लग्न में तृतीयेश व अष्टमेश शुक्र शत्रुभाव में शत्रु राशि में हो, पाप मध्यस्थ हो वृष राशि में केतु होने पर घातक योग बनता है। जिससे जातक भयंकर हिंसक होकर अनेक व्यक्तियों की मृत्यु कर देता है।

सूर्य के द्विर्द्वादश होने पर अथवा चन्द्र या शुक्र के 6,8,12 भाव में पड़ने पर नेत्ररोगी योग बनता है।

विदेश यात्रा योग-

जब अष्टम या द्वादश भाव पर तथा अष्टमेश व्ययेश पर पापी प्रभाव की अधिकता हो तो विदेश यात्रा होती है। सिंह लग्न की कुण्डली में सूर्य दूसरे भाव में मंगल केतु व्यय में बुध, शुक्र तीसरे राहु चन्द्र छठे गुरु सातवे तथा शनि 11 वें भाव में स्थित है। यहाँ केतु शनि और सूर्य की अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि अष्टमेश गुरु 7वे पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से विदेश यात्रा का योग बना।

तुला लग्न की कुण्डली में लग्न में सूर्य चन्द्र, धन में बुध, तृतीय में राहु, नवम में केतु पंचम में गुरु षष्ठ में शनि और सप्तम में मंगल स्थित है। यहाँ अष्टमेश शुक्र मंगल के साथ शनि से दृष्ट है तथा अष्टम भाव पर पूर्णदृष्टि है अतः विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

लग्नेश शुक्र व्यय में नीचस्थ शनि से दृष्ट तथा सप्तमेश मंगल से षष्ठ में स्थित है। शुक्र स्वयं सप्तम का कारक भी है अतः पति-पत्नी वैमनस्य योग पूर्ण घटित है स्त्री की वृष लग्न की कुण्डली में व्यय में मंगल धन में केतु चतुर्थ में, सू.बु. पंचम में शुक्र अष्टम में, राहु दशम में, चन्द्र गुरु और एकादश में, शनि स्थित है। यहाँ लग्नेश शुक्र नीचस्थ शनि से दृष्ट है । शुक्र सप्तम भावेश मंगल से षष्ठभाव में तथा सप्तम के कारक गुरु से अष्टमस्थ है। इस प्रकार सप्तम सप्तमेश व सप्तम के कारक गुरु अनिष्ट में शुक्र का होना पति-पत्नी में वैमनस्य रखता है।

सत्यवक्ता-

1. बुध 4,7,8,11वे भाव में हो। नवम भाव में सूर्य, दशमेश या लाभेश, दशमभाव में, दशम में दशमेश, नवम भाव में लाभेश, तृतीय में धनेश, तृतीय में कुम्भ राशि हो तो सत्यवक्ता योग बनता है।

कपटी, कृपण आदि योग-

1. 1,5,12 वे भाव में द्वितीयेश हो तो कृपण।

2. तृतीय या नवम में गुरु हो तो कृपण।
3. अष्टम में सूर्य कृतघ्न।
4. अष्टम में केतु लोभी।
5. नवम में शनि कपटी।
6. नवम में राहु चुगलखोर।
7. दशम में शनि कृपण।
8. लाभ में मंगल लोभी।
9. व्यय में शनि कर्जदार एवं कृपण।
10. सूर्यधन में कर्जदार।
11. लग्नेश षष्ठ में कृपण या 8 वें कृपण।
12. धनेश लग्न में कृपण, धनेश 5वे, अति कृपण, धनेश षष्ठ में कृतघ्न।
13. पंचमेश लग्न में कुटिल हृदय। पंचमेश तृतीय में चुगलखोर, कंजूस, स्वार्थी।
14. षष्ठेश चतुर्थ में चुगलखोर, षष्ठेश 5वे स्वार्थी। षष्ठेश षष्ठ में अति कृपण।
15. अष्टमेश 10 वे में चुगलखोर।
16. दशमेश धन में लोभी। दशमेश षष्ठ में कृपण, निर्दयी।
17. दशमेश अष्टम में कपटी।
18. व्ययेश नवम में स्वार्थी, व्ययेश दशम में लोभी। व्ययेश व्यय में कृपण
19. मेषराशि लग्न में कृतघ्न।मेष दशम में चुगलखोर। वृश्चिक दशम में निर्दयी।
20. दशम में मकर निर्दयी। लाभ में वृश्चिक चुगलखोर।

पार्श्वगामिनी दृष्टि योगफल-

षष्ठ व अष्टम भाव में ग्रहों की स्थिति उस भाव की हानि करते हैं, जिसके वे स्वामी होते हैं। यदि शुभग्रह षष्ठ व अष्टम भाव में होते हैं तो जिस भाव से षष्ठ व अष्टम हो, उस भाव या भावेशजन्य शुभफल प्रद होते हैं।

लग्न से षष्ठ में शुक्र और अष्टम में गुरु स्थित होने पर लग्न को अर्थात् प्रथम भाव को बल मिल जाता है। शुक्र का व्यय भाव को देखना तथा गुरु को धन भाव को देखना शुभत्व प्रदान करता है। इसी प्रकार प्रत्येक भाव से षष्ठ और अष्टमस्थ शुभग्रह होने से उस भाव को शुभफल कारक होते हैं। यदि भाव से षष्ठ व अष्टम में बली पापग्रह स्थित हों तो उस भाव को तथा भावेश को जिससे षष्ठ व अष्टम हो जाते हैं, उसको हानिप्रद हो जाते हैं।

पाप कर्तरीयोग–

लग्न के द्विर्द्वादश में पाप ग्रह होने तथा किसी भाव या ग्रह के द्विर्द्वादश में पाप ग्रह होने पर पाप कर्त्तरी योग बनता है। जो उस भाव व ग्रह को निर्बल बना देता है। यदि द्विर्द्वादश शुभ ग्रह हो तो शुभ कर्तरी शेषफल कर्त्ता होता है।

दिग्बली ग्रहकृत योग–

लग्न में बुध, गुरु, चतुर्थ में चन्द्र शुक्र, सप्तम में शनि दशम में सूर्य, मंगल दिग्बली होते है यदि 4,5 ग्रह दिग्बली हों तो राजा, 2,3 बली होगा। राजवंशोत्पन्न व्यक्ति राज्याधिकारी पद प्राप्त करता है।वृश्चिक लग्न में सूर्य मेषराशि में चन्द्र और मंगल दशम में होने पर केवल मंगल दिग्बली है, किन्तु यह मंगल सूर्य लग्न का व चन्द्र लग्न का स्वामी हो जाने से तीनों लग्नों का स्वामी होकर दशम में दिग्बली होने कुण्डली का स्तर बहुत ऊँचा उठ गया है। यह योग विशिष्ट व्यक्ति की कुण्डली में उपलब्ध हुआ है।

1. उच्चपदासीन राजयोग यदि लग्नेश केन्द्र में हो और अपने मित्रग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्न में शुभ ग्रह हों तो जातक न्यायाधीश अथवा विधिमंत्री आदि पद प्रास करता है।

2. यदि पूर्ण चन्द्र जलचर राशि में नवमांश में चतुर्थ भावस्थ हो स्वराशिस्थ शुभग्र लग्न में हो तथा केन्द्र में पापग्रह न हो तो ऐसा जातक राजदूत अथवा गुप्तचर विभाग में किसी उच्चपद को प्रास करता है।

3. किस ग्रह की उच्चराशि लग्न में हो, वह ग्रह यदि अपने नवांश अथवा मित्र अथवा उच्च के नवमांश में केन्द्रगत शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा जातक शासनधिकारी का पद प्रास करता है। यदि केन्द्र मे उच्चराशिस्थ पापग्रह बैठे हो तो ऐसा जातक धनहीन शासक होता है।

15. लाल किताब की दृष्टि में समग्र ग्रह

नवग्रहों के विषय में अनेक तथ्य दिये गये हैं। इनमें ग्रहों के घर, देवता, रंग कार्य, समय, रोग, शत्रु-मित्र एवं उनसे संबंधित वस्तुओं आदि का उल्लेख है। प्रस्तुत है, इन सभी ग्रहों के बारे में संक्षिप्त विवरण-

सूर्य-

पक्का घर-	1
श्रेष्ठ घर-	1, 5, 8, 9, 11, 12
मंदे घर-	6, 7, 10
रंग-	पीला (तांबे जैसा), नांरगी, केसरिया, भूरा
शत्रु ग्रह-	राहु, केतु, शनि, शुक्र
मित्र-ग्रह-	चंन्द्र, बृहस्पति, मंगल
सम ग्रह-	बुध
कार्य-	सरकारी हिसाब-किताब, क्षत्रिय
उच्च-	1 मेष राशि में
नीच-	7 तुला राशि में
समय-	प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक
दिन-	रविवार
बीमारी-	ज्वार, नेत्र विकार, सिर दर्द
मसनूई ग्रह-	बुध+शुक्र
देवता-	विष्णु
पेशा-व्यवसाय-	क्षत्रिय, राजपूत
विशेषता-	बहादुर, शरीर कापालनकर्त्ता
गुण-	आग, गुस्सा, बुद्धि, विद्या
शक्ति-	गर्मी का खजाना
धातु-	माणिक, तांबा, शिलाजीत
शरीर के अंग-	दायां हिस्सा, बायीं आँख, हड्डियाँ
पोशाक-	सेहरा, कलगी

तरबूज के साथ तुलना-वजन

पशु-	बंदर, बंदरिया, पहाड़ी गया, काली गाय
वृक्ष-	तेजफल, लौंग, जायफल, इलायची का पौधा, जड़ी-बूटी, दूध वाले पेड़
अनाज-	बाजरा, गुड़
निवास-	संपूर्ण शरीर

चन्द्र

पक्का घर-	४
श्रेष्ठ घर-	1, 2, 3, 4, 5, 7, 9
मंदे घर-	6, 8, 10, 11, 12
रंग-	दूधिया सफेद
शत्रु ग्रह-	राहु, केतु
मित्र ग्रह-	सूर्य, बुध
समनूई ग्रह-	सूर्य+बुध
सम ग्रह-	शुक्र, शनि, मंगल, बृहस्पति
कार्य-	नौसेना, शिक्षा या कोषागार
उच्च-	दूसरे घर में
नीच-	नौवें घर में
समय-	पूर्ण चांदनी रात, दोपहर
दिशा-	पूर्व
दिन-	सोमवार
बीमारी-	कफ और पेट से संबंधित
देवता-	शिवजी
पेशा-	व्यवसाय-धीमर, कुम्हार, पूज्य जैन धर्मी, पानी से संबंधित कामकाज
विशेषता-	दयालु, हमदर्द
गुण-	माता, जायदाद, पानी, दिल की शांति, मौसी, दादी, नानी
शक्ति-	सुख-शांति का स्वामी, माँ का दुलारा, पूर्वजों की सेवा

धातु- चांदी, मोती
चेहरे के रंग- बार्यी आँख
शरीर के अंग- हृदय
पोशाक- धोती, परना
तरबूज के साथ तुलना-पानी
पशु- घोड़ा, घोड़ी
वृक्ष- सफेद पेड़
अनाज- चावल, दूध
निवास- जलाशय

मंगल

पक्का घर- 3
श्रेष्ठ घर- 1, 3, 5, 7, 9, 12
मंदे घर- 4, 8
रंग- लाल, सिंदूरी
शत्रु ग्रह- केतु, बुध
मित्र-ग्रह- बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य
सम ग्रह- शुक्र, शनि
कार्य- पुलिस या सेना
उच्च- दसवें घर में
नीच- चौथे घर में
समय- पक्की दोपहर
दिन- मंगलवार
बीमारी- रक्त विकार
मसनूई ग्रह- सूर्य+बुध (मंगल शुभ)
देवता- हनुमानजी
पेशा- व्यवसाय-लड़ाकू, सिपाही, सैनिक
विशेषता- सोच-समझकर बात करने वाला
गुण- खाना, पीना, लड़ना

शक्ति- रक्तपात करना-कराना
धातु- लाल-चमकीला पत्थर
शरीर के अंग- जिगर
चेहरे के अंग- नीचे का होंठ
पोशाक- नंगा सिर, बिना पगड़ी-टोपी का सिर
तरबूज के साथ तुलना-गूदा
पशु- शेर, शेरनी, हिरन
वृक्ष- नीम
अनाज- मसूर की दाल, गुड़, लाल मिर्च सिंदूर
निवास- युद्ध क्षेत्र, अग्नि

बुध

पक्का घर- 7
श्रेष्ठ घर- 1, 2, 4, 5, 6, 7
मंदे घर- 3, 8, 9, 12
रंग- हरा
शत्रु ग्रह- चन्द्र
मित्र-ग्रह- सूर्य, शुक्र
सम ग्रह: शनि, बृहस्पति, केतु, मंगल
कार्य: खजाने, नौसेना (नेवी), शिक्षा क्षेत्र
उच्च: छठे घर में
नीच: बारहवें घर में
समय- प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक
बीमारी: दंत रोग, नाड़ियों से संबंधित
ममय: सायं 4 से 6 बजे तक
मसनूई ग्रह: बृहस्पति+राहु
पेशा- व्यवसाय-दलाल, व्यापारी, लेखक, पत्रकार
देवता- माँ दुर्गा
विशेषता- खुशामदी

गुण-	वाणी, दोस्ती, दिमाग, जुबान, नसीहत
शक्ति-	लोगों में विश्वास जगाने वाली
धातु-	हीरा, पन्ना, सोना
शरीर के अंग-	नाक का सिरा, नसें
चेहरे के अंगः-	जुबान, दांत
पोशाक-	टोपी, नाड़ा, बेल्ट

तरबूज के साथ तुलना-स्वाद

पशु-	चमगादड़, बकरा, बकरी, भेड़, हाथी
वृक्ष-	बड़ के अलावा अन्य चौड़े पत्ते वाले पेड़, केले का पेड़
अनाज-	साबुत मूंग, छिलके वाली मूंग की दाल
निवास-	हरियाली जगह, हरे खेत

बृहस्पति

पक्का घर-	9
श्रेष्ठ घर-	2, 5, 8, 9, 12
मंदे घर-	6, 7, 10
रंग-	पीला
शत्रु ग्रह-	बुध, शुक्र
मित्र-ग्रह-	सूर्य, मंगल, चन्द्र
सम ग्रह-	राहु, केतु, शनि
कार्य-	शिक्षा संबंधी
उच्च-	चौथे घर में
नीच-	दसवें घर में
बीमारी-	श्वास संबंधी
समय-	सूर्योदय से 8 बजे तक
दिन-	रविवार
बीमारी-	ज्वार, नेत्र विकार, सिर दर्द
मसनूई ग्रह-	सूर्य+बुध
देवता-	ब्रह्मा

पेशा-	व्यवसाय-ब्राह्मण, पूजापाठ, सर्राफ-स्वर्ण संबंधी काम,
मंदिर	का पुजारी
विशेषता-	आध्यात्मिक ज्ञाता, सरदारी
गुण-	हवा, आत्मा, सांस, पिता, सुख, गुरु
शक्ति-	शासक, सांस लेने तथा दिलाने वाली शक्ति का मालिक
धातु-	सोना, पुखराज
शरीर के अंग-	गर्दन
चेहरे के अंग-	नाक, ललाट, कान या नाक का सिरा
पोशाक-	पगड़ी
तरबूज के साथ तुलना-डंडी	
पशु-	बब्बर शेर-शेरनी, भूरा रीछ-चींटी
वृक्ष-	पीपल
अनाज-	चने की दाल, हल्दी, केसर, कस्तूरी
	(निवास-मन्दिर, मस्जिद, चर्च गुरुद्वारा)

शुक्र

पक्का घर-	7
श्रेष्ठ घर-	2, 3, 4, 7, 12
मंदे घर-	1, 6, 9
रंग-	सफेद
शत्रु ग्रह-	सूर्य, चन्द्र, राहु
मित्र-ग्रह-	शनि, बुध, केतु
कार्य-	शिक्षा संबंधी
उच्च-	12
नीच-	6
बीमारी-	वीर्य संबंधी
समय-	दोपहर
मसनूई ग्रह-	राहु+केतु
कारोबार-	खेतीबाड़ी, पशुपालन
देवता-	लक्ष्मी

पेशा- व्यवसाय-कुम्हार, वैश्य, काश्तकार, सुगंधित द्रव्यों का व्यापार, स्त्रियों से संबंधित वस्तुओं का व्यापार

विशेषता- आशिकमिजाज

गुण- उत्साह, हौसला, भाई, खाना-पीना

शक्ति- लगन, दिल का प्यार, दिल की रानी, मोहब्बत, ऐशपंसद

धातु- हीरा, मोती, चांदी, अभ्रक

शरीर के अंग- गाल

चेहरे के अंग- बायां हिस्सा

पोशाक- कमीज

तरबूज के साथ तुलना-बीज

पशु- बैल सफेद गाय

वृक्ष- कपास का पौधा

अनाज- आलू, ज्वार

निवास- नाट्य गृह, शृङ्गार गृह, शय्या घर

शनि

पक्का घर- 10

श्रेष्ठ घर- 1, 3, 7, 12

मंदे घर- 1, 4, 5, 6

रंग- काला-स्याह

शत्रु ग्रह- सूर्य, चन्द्र, मंगल

मित्र-ग्रह- बुध, शुक्र, राहु

कार्य-डॉक्टरी, तेल व लोहे का व्यापार

उच्च- 7

नीच- 1

बीमारी- खांसी नजर, उदर पीड़ा

समय- सारी रात अंधेरा दिन

दिन- शनिवार

मसनूई ग्रह- केतु स्वभाव- शुक्र+बुध राहु

स्वभाव-	मंगल+बुध
देवता-	भैरव
पेशा-व्यवसाय-	चमार, लुहार, मैकेनिक, बढ़ई
विशेषता-	मूर्ख, अक्खड़, कारीगर
गुण-	चालाकी, देखना-भालना, मौन, बमारी
शक्ति-	जादू-टोना देखने-दिखाने की
धातु-	लोहा, फौलाद, कोयला, नीलम
शरीर के अंग-	दृष्टि
चेहरे के अंग-	बाल, भौं, कनपटी
पोशाक-	जूता-मोजा
तरबूज के साथ तुलना-छाल	
पशु-	भैंस या भैंसा
वृक्ष-	कीकर, आक, खजूर का पेड़
अनाज-	काला नमक, उड़द की दाल
निवास-	श्मशान, वीरान, मयखाना

राहु

पक्का घर-	12
श्रेष्ठ घर-	3, 4, 6,
मंदे घर-	1, 2, 5, 7, 12
रंग-	नीला
शत्रु ग्रह-	सूर्य, मंगल, शुक्र
मित्र-ग्रह-	शनि, बुध, केतु
सम ग्रह-	बृहस्पति चन्द्र
कार्य-	बिजली से संबंधित
उच्च-	3, 6
नीच-	8, 9, 11
समय-	पक्की दोपहर
दिन-	रविवार की शाम

बीमारी-	ज्वार
समय-	दोपहर
मसनूई ग्रह-	मंगल+शनि=उच्च, सूर्य+शनि=नीच
देवता-	सरस्वती
पेशा-	व्यवसाय-मेहतर, भंगी, शूद्र
विशेषता-	मक्कार, नीच, चालबाज, जालिम
गुण-	सोचना, विचारों की बिजली, डर
शक्ति-	कल्पनाशक्ति का स्वामी, मार्गदर्शक
धातु-	सिक्का, गोमेद, नीलम
शरीर के अंग-	दिमागी लहरें, सिर्फ सिर का हिस्सा
चेहरे के अंग-	ठोड़ी
पोशाक-	पाजमा, पतलून

तरबूज के साथ तुलना-कच्चा-पक्कापन

पशु-	हाथी कांटेदार जंगली चूहा कुत्ता
वृक्ष-	नारियल का पेड़, घास
अनाज-	जौ आदि
निवास-	सन्नाटा, वीराना, पाताल

केतु

पक्का घर-	6
श्रेष्ठ घर-	3, 6, 9, 10, 12
मंदे घर-	7, 8, 11
रंग-	काला, सफेद
शत्रु ग्रह-	चन्द्र, मंगल
मित्र-ग्रह-	शुक्र, राहु
सम ग्रह-	बृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य
उच्च-	5, 9, 12
नीच-	6, 8,
समय-	सवेरे, उषाकाल

न- रविवार
मारी- जोड़ों में दर्द, टांगों व मूत्र संबंधी
सनूई ग्रह- शुक्र+शनि=उच्च, चन्द्र+शनि=नीच
वता- गणेशजी
शा- व्यवसाय-भारवाहक, कुली, मजदूर
शेषता- धर्म और संस्कृति के बंधनों से मुक्त
ण- सुनना, पांव की हलचल
क्ति- चलना-फिरना, गैरों से मिलने की शक्ति
तु- दोरंगा पत्थर, लहसुनिया
रीर के अंग- सिर को छोड़कर पूरा शरीर
हरे के अंग- कान, दांत
शाक- दुपट्टा, कंबल, ओढ़नी
बूज के साथ तुलना-रंग, धारियाँ
शु- छिपकली, कुत्ता, गधा, सूअर
क्ष- इमली, केला, नीबू का पेड़
नाज- तिल, जौ
वास- पलंग, स्वर्ग

भाग्योदय काल

द्वाविंशे रविणा च वर्षकथितं चन्द्रैर्चतुर्विंशति-
ह्यष्टाविंशतिभूमिनन्दनमतं दन्तैर्बुधे च स्मृतम्।
जीवे षोडश पञ्चविंशति-भृगोः षट्त्रिंश-सौरी वदेत्,
कर्मेशात्खलु कर्म चैव कथितं लग्नाधिपे चेत्स्मृतम्॥

यदि भाग्येश सूर्य की राशि 5 में हो तो 22 वर्ष की उम्र में भाग्योदय जानें, इसी प्रकार चन्द्र की राशि 4 में-24 वर्ष, मंगल की राशि 1,8 में-28 वर्ष,बुध की राशि 3, 6 में-32 वर्ष, गुरु की राशि 9,12 में-16 वर्ष, शुक्र की राशि 2,7 में 25 वर्ष, शनि की राशि 10, 11 में-36 वर्ष में भाग्योदय होता है। कर्मभाव (10 वां भाव) के अधिपति के विचार से कर्म का अनुमान करना चाहिए यदि लग्नेश अनुकूल हो। **-(मान सागरी)**

16. रोगोत्पत्ति एवं उपचार

"प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ" ज्यौतिषशास्त्र अपने जन्म के साथ ही ब्रह्माण्ड में मनुष्य की स्थिति का अनुभव किया, उसके आकलन में शरीर में ब्रह्माण्डीय तत्वों की स्थापना की। ऊर्जा के प्रभाव को ज्यौतिष-शास्त्र में 9, 12, 27 भागों में विभाजित किया है। यही नवग्रह बारह राशि और नक्षत्र के रूप में माने जाते हैं। इसका सम्बन्ध मानवीय चेतना से होता है, इस सम्बन्ध-सूत्रों के कारण ही तो ज्यौतिष-शास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ। ज्यौतिष-शास्त्र ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को मानव शरीर के विभिन्न अंगों में स्थापित करता है। आयुर्वेद इन ग्रहों के साथ मानव प्रकृति को जोड़ता है। इस प्रकार मूल में आयुर्वेद ओर ज्यौतिष दोनों अविभाजित रूप से सम्बन्धित पाये जाते हैं। इसी कारण ग्रहों की प्रतिकूलता शमन के लिये आयुर्वेद की औषधियों का प्रचलन प्राप्त होता है। डॉ. के.एस. चरक ने अपनी विख्यात कृति "इसेन्सियेलस ऑफ मेडिकल एस्ट्रोलोजी" में इस तथ्य को व्यापक एवं विस्तृत ढंग से प्रतिपादित किया है। आयुर्वेद के अनुसार रोग तीन असंतुलों के कारण होते हैं। ये त्रिदोष वात, पित्त, कफ ज्यौतिष-शास्त्र के अनुसार सूर्य और मंगल पित्त प्रकृति को, चन्द्र कफ और कुछ वात मात्रा को बुध वात पित्त कफ तीनों को गुरु कफ को शुक्र वात और पित्त की अधिकता को एवं शनि वात को तथा राहु और केतु वात को प्रभावित करता है।

12 राशियों का काल पुरुष के आधार पर मेष का शिर वृष का मुख, मिथुन का गला व स्कन्ध का, कर्क हृदय, सिह का आमाशय, कन्या का कमर और अंतड़ियाँ, तुला का आमाशय का निचला भाग, वृश्चिक का गुप्ताङ्ग, धनु का जंघा, मकर का घुटना, कुम्भ और मीन का दोनों पैर पर स्थान निश्चित किया है। मानव शरीर की रचना अद्‌भुत अनोखी और जटिल है। शरीर में भिन्न-भिन्न तन्त्र हैं, सभी तन्त्रों के आपसी सहयोग से शरीर रूपी यन्त्र सुचारू रूप से चलता है। कोई तन्त्र अपनी क्रिया पद्धति को उचित ढंग से नहीं चला पाने के अभाव में दूसरे तन्त्र को प्रभावित करता है। यह प्रभाव लम्बे समय तक चलता रहे, तो रोग और विकार उत्पन्न होते हैं। विभिन्न प्रकार के तन्त्रों के रोग भी अलग-अलग होते हैं। इस परिस्थिति में चिकित्सा-पद्धति द्वारा रोग नष्ट कर शरीर को सुचारु रूप से चलाया जाता है। रोग नष्ट करने की चिकित्सा पद्धति भी भिन्न-भिन्न है। उसमें योगिक प्रक्रिया के माध्यम से सरलता और अल्पव्यय करने पर रोगों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। शरीर के सभी तन्त्रों की महत्ता विशिष्ट है,

परन्तु जीवन जीने के लिये सांस लेना, भोजन करना, और मल-मूत्र विसर्जन करना महत्वपूर्ण कार्यों के तन्त्रों की प्रधानता है। अस्थितन्त्र, पेशीतन्त्र, रक्त संचारण तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वासतन्त्र एवं मल-मूत्र विसर्जन तन्त्र।

अस्थितन्त्र शरीर के आधार को सुदृढ़ कर प्रगतिशल बनाता है।

पेशीतन्त्र सूचनाओं के संप्रेषण का कार्य करता है।

रक्तसञ्चारणतन्त्र जहां जीवन सरल रूप में बहता है,

पाचनतन्त्र भोजन पचाने वाला तन्त्र है,

श्वासतन्त्र-प्राणतत्व का प्रमुखता से सन्तुलन करता है।

मल मूत्र विसर्जन तन्त्र मल, मूत्र के विसर्जन का तन्त्र है, जो अवशोषित भोजन का निस्सार भाग मल, मूत्र के रूप में शरीर से बाहर निकालता है। शरीर की दृढ़ता व बलवत्ता के लिये आहार की पाचनक्रिया के उपरान्त रस-रक्त अन्य प्रक्रियाओं के अन्त में हड्डी के रूप में शरीर में स्थित होता रहता है। इसी का नाम अस्थितन्त्र है। अन्य इसके सहायक तन्त्रों की प्रक्रिया उचित रूप से चलने पर यह तन्त्र दृढ़ होता है, अन्यथा शरीर का अस्थिभाग निर्बल व रोगी बन जाता है।

पेशीतन्त्रः-अन्यतन्त्रों को उचित सूचना देकर संकेत करता है, जिससे वे सुचारु रूप से कार्य करते हैं।

रक्तसञ्चालनतन्त्र-रक्त प्रवाहिका नाड़ियों द्वारा शुद्ध-अशुद्ध रक्त का संचरण करता रहता है।

पाचनतन्त्र-भोजन पचाने में सभी सहायक तन्त्रों की देखरेख करता है।

श्वासतन्त्र-(पञ्चप्राण) प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान प्राणों का उचित-अनुचित क्रिया-कलापों पर नियंत्रण करता रहता है।

उत्सर्जन तन्त्र-गुप्तेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय और रोम कूपों द्वारा मलादि को शरीर से बाहर निकालने की प्रक्रिया करता रहता है। इन सभी तन्त्रों में से प्रत्येक तन्त्र की विकृति को दूर करने में योगिक प्रक्रिया के अन्तर्गत आसन, प्राणायाम, शोधन प्रक्रिया और ध्यान करने का विधान है। पश्चिमोत्तान-आसन, भुजंगासन, गोमुखासन, मण्डूकासन, मयूरासन, वज्रासनादि प्रमुख आसन हैं। प्राणायाम में नाड़ीशोधन, भस्त्रिका, भ्रामरी, शीतली, सीत्कारी एवं सूर्यभेदन प्राणायाम। शोधन प्रक्रिया में नेति, वमन, लघुशंखप्रक्षालन एवं कपालभाति क्रिया उपयोगी होती है। ध्यान प्रक्रियाः- नेत्र बाहर से बन्दकर, अन्दर खोलकर एकाग्रचित्त से आराधन,मानसिक रोगों को नष्टकर आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। अस्थितन्त्र के विकृत होने पर महाभयंकर रोग उत्पन्न होते हैं। कैन्सर, बोन ट्यूमर, ओसीटयोमोलिशिप, बोन इन्यूक्शन आदि रोग हड्डियों को जर्जरित कर देते

हैं। मार्जरी भुजंगासन, सूर्यनमस्कार आदि से रोग मुक्ति होती है। रोगोत्पत्ति के लक्षण उत्पन्न होते ही योग्य योगाभ्यासी मनुष्य के संरक्षण में ही इनका प्रयोग करना चाहिये। रोग बढ़ने पर ये आसन सहायक नहीं होते हैं।

नाड़ीशोधन में भस्त्रिका प्राणायाम, शोधन प्रक्रिया में नेति, कुञ्जल तथा योगनिद्रा आदि से भी इन रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

संचरणतन्त्र इस तन्त्र की विकृत्ति से हार्ट डिजीज, मायेस्थनिया, मस्कुलर डिस्टोफीस, मायोटेनिक डिस्ट्रोफी, आदि रोग उत्पन्न होते हैं। पवनमुक्तासन, मार्जारी, ताड़ासन, कटिचक्रासन आदि के अभ्यास द्वारा तथा प्राणायाम व षट्कर्म भी इसमें उपयोग में लाये जाते हैं। शरीर का मुख्य अंश जल होता है, जो रक्त, प्लाज्मा, आदि के रूप में फैले रक्त कणों से सूक्ष्म-सूक्ष्मवाहिकाओं को प्रवाहित करता रहता हैं, इसमें रोमेटिक हार्ट डिजीज, एंडोकर्डिटीस, पेरीकार्डाटीस, हाईपरटेन्शन आदि रोग उत्पन्न होते हैं। इसमें शवासन, पवनमुक्तासन, वज्रासन, गोमुखासन सर्पासन, जलनेति उज्जायी, कपालभाति, शीतली और सोहं या ॐ मन्त्र का जप करना लाभ प्रद होता है।

प्रजननतन्त्र इसमें प्रौस्टेट, कैंसर, सर्वाइकलकैंसर, जेनाइटल हरपीस, एड्स इफ्लेमेटरी आदि रोग उत्पन्न होते है। भुजंगासन, धनुरासन, ताड़ासन, भद्रासन, नेति-जलनेति, मूलबन्ध, बज्रोली, नाड़ीशोधन, भस्त्रिका प्राणायाम, नादयोग और विशिष्ट मन्त्रजप से रोग निवृत्ति होती है।

सूर्यादि ग्रहों का शरीर पर प्रभाव एवं रोग :-

सूर्य शारीरिक दृष्टि से हड्डी, नीचे के दाँत, बड़ी आंत और मांस पेशियों पर प्रभाव डालता है, हृदय रक्तसंचानलकेन्द्र, नेत्र, दन्त, कान पर भी प्रभावडालता है।

सूर्यजन्य रोग -ज्वरपित्तोष्ण मृगी, देहताप, चर्मरोग, नेत्ररोग, क्षय, हृदयरोग, पित्तज्वर, अतिसार आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

चन्द्र आन्तरिक दृष्टि से संवेदन भावना, जल्दबाजी, घरेलू जीवन का चिन्तन, कल्पना, सतर्कता एवं लाभेच्छा उत्पन्न करता है। शारीरिक दृष्टि से उदर, पाचनशक्ति, आँतें, गर्भाशय, गुप्तांग, आंख और सभी गुप्ताङ्गों को प्रभावित करता है।

चन्द्रद्वारा रोग - छाती व गले के रोग, निद्रारोग, कफरोग, मलेरिया, मन्दाग्नि, मूत्ररोग, जलोदर, पाण्डुरोग पीलिया, रक्तदोष, सर्दी-जुकाम आदि रोगउत्पन्न होते हैं।

मंगल आन्तरिक दृष्टि से साहस, दृढ़तर आतमविश्वास, क्रोध, लड़ने-झगड़ने की प्रवृत्ति, प्रभुत्व व बहादुरी आदि का प्रतीक है। शारीरिक दृष्टि से खोपड़ी नाक व गाल पर प्रभाव डालता है।

मंगल द्वारा रोग-त्रिदोष, नेत्ररोग, पित्तज्वर, गुल्म, मृगी, मज्जा चर्म रोग, चेचक, गिल्टी, फोड़ा-फुंसी, अग्नि व विषजन्य रोग, शस्त्राघात, फेफड़ा, गला, जीभ, आंख, नाक व कान सम्बन्धी रोगोत्पन्न करता है।

बुध आन्तरिक दृष्टि से समझदारी, स्मरणशक्ति खण्डन-मण्डन, शक्ति, मनोविनोद, लेखनकला, तर्ककरना आदि को प्रभावित करता है। शारीरिक दृष्टि से वाणी, जिह्वा, स्नायुक्रिया, मस्तिष्क, हाथ तथा कलापूर्ण कार्यो पादक अंगों पर प्रभाव डालता है।

बुधजन्य रोग गले व नाक में होने वाले रोग, वातज व्याधि, चर्मरोग, अस्थमा, मन्दाग्नि, गुप्तरोग, कुष्ठ व शूल रोगोत्पत्ति बुध ग्रह से होती होती है। यह प्रेत बाधा भी उत्पन्न करता है।

गुरु आन्तरिक दृष्टि से विचार, मनोभावना, उदारता, सौंदर्य, प्रेम, न्यायोचित विचार-व्यक्ति, भक्ति व्यवस्था-बुद्धि, प्रशासनिक-कार्य ज्ञापन, ज्यौतिष, तन्त्र, मन्त्र, विचारशक्ति सदाशयता आदि को प्रभावित करता है। शारीरिक दृष्टि से पैर, जंघा, जिगर, पाचन-क्रिया, रक्त व नसों को प्रभावित करता है।

गुरु जन्यरोग-आंतों का रोग, हारनिया, कर्णरोग, कमर से जंघा तक के रोग, देवद्विजयक्ष किन्नर आदि के शाप से रोग प्रदान करता है।

शुक्र आन्तरिक दृष्टि से प्रेम, स्नेह, सौन्दर्य, आनन्द, विश्रान्ति, स्वचछता, कामुकता, कार्य-क्षमता को प्रभावित करता है। शारीरिक दृष्टि से गला, गुर्दा, लिंग, केश, आकृति व वर्ण को प्रभावित करता है।

शुक्रजन्य रोग :- कफजवातज व्याधि, नेत्रपीड़ा, मूत्र सम्बन्धी रोग, मूत्र कृच्छ, प्रमेह रोग, गुप्तेन्द्रिय रोग, वीर्यजनितरोग तृषारोग, शुक्र रोग उत्पन्न करता है।

शनिआन्तरिक दृष्टि से तात्विकज्ञान, गूढ़ रहस्यमय ज्ञान, अनुसन्धात्मक कार्य, आलस्य, मन्दगति से कार्य करना, प्रमाद, यदाकदा मूर्खता के विचार, निद्राप्रियता आदि को प्रभावित करता है। शारीरिक दृष्टि से हड्डी, जंघा से पैर तक का भाग, बड़ी आंतें, स्नायु सम्बन्धित भाग, नीचे के दांत और मांस पेशियों को प्रभावित करता है।

शनिजन्य रोग - कफज-वातज रोग, पैरों के रोग, कुक्षिरोग, चित्त भ्रमितरोग, भूखप्यास सम्बन्धी रोग, विषज़न्य रोग तथा भयानक ज्वर रोग उत्पन्न होते हैं।

राहु-भूतबाधा, आकस्मिक घटना, ज्वर, अपस्मार, चर्मरोग, विषूचिका, विषजन्य रोगोत्पत्ति होती है, केतु भी राहुजनित रोग प्रदान करता है।

ग्रहों की युति-दृष्टि से रोग:-यहां संक्षेप में ही विचार व्यक्त किये गए है। सूर्य से युक्त लग्नेश व षष्ठेश होने पर ज्वररोग, लग्न में मंगल अष्टम में सूर्य से ज्वररोग धनभाव में चन्द्र-राहु का योग सन्निपात रोग उत्पन्न करता है। शनि सप्तम में, चन्द्र पापाक्रान्त हो तो क्षय रोग, गुल्म, स्वास पीलिया रोग। मकर राशि में सूर्य, शनि सप्तम में चन्द्र पाप

ग्रहों के मध्य में होने पर कैन्सर क्षय अस्थमा, श्वास रोग, पीलिया रोग। षष्ठेश सूर्य पापयुक्त चतुर्थ होने से हृदयरोग, नवमांश में चतर्थेश सूर्य के नवमांश में होने पर हृदयरोग। चतुर्थ में मंगल, शनि तथा पापग्रहों से युक्त गुरु हो तथा दृष्ट हो तो भयंक़र घाव हृदय में होता है।

सप्तम में सूर्य-मंगल-शनि स्थित होने पर भगंदर, बवासीर व शूल रोग। कर्क में शनि, मकर में चन्द्र होने पर जलोदर रोग। शनि सप्तम में हो या व्ययेश षष्ठ भाव में, षष्ठेश व्यय भाव में गुल्म रोग। शनिचन्द्र की युति 6 या 8 भाव में होने पर पीलिया रोग। सर्य मकर राशि में हो और चन्द्र शनि मंगल के मध्य में हो, तो कैंसर, पीलिया, गुल्प और श्वास आदि रोग। चन्द्र शुक्र की प्रति 6वे 8वें भाव में हो अथवा सिंह लग्न में, चन्द्र पाप युक्त दृष्ट हो, 6वें स्थान में शनि की युति या दृष्टि होने पर उदररोग। शुक्र सप्तम में होने पर अतिसार रोग, चन्द्र-मंगल -बुध और लग्नेश एकत्र हों, तो कुष्ठरोग। लग्स्थ मंगल को शनि-मंगल देखते हों, तो चेचक रोग। चन्द्र लग्न में सूर्य और मंगल सप्तम में होने पर व्रण (फोड़ा) रोग। 6चें और 8वें भाव पर राहु और मंगल की दृष्टि पीठ में फोड़ा रोग। ६वें स्थान में, जल राशि में चन्द्र से मूत्रकृछ रोग। षष्ठेश बुध जल राशि में होने पर मूत्ररोग। नपुंसक या मूत्रकृछ रोग, सप्तम मंगल को पाप ग्रह देखते हों या युत हों। सूर्य, शनि व शुक्र की युति पञ्चम भाव में होने पर प्रमेह रोग। सूर्य लग्न में मंगल, सप्तम या दशम में शुक्र युतदृष्ट होने पर प्रमेह रोग।

चन्द्र, बुध, सूर्य, राहु की युति किसी भी भाव में, हो तो उपदंश रोग। लग्नेश ६वें भाव में मंगल के साथ होने पर शिश्न (लिंग) रोग। षष्ठेश शनि 8वें में मंगल के साथ होने पर गुप्तेन्द्रिय शल्य चिकित्सा। विषम राशि में शनि तथा समराशि में बुध हो और परस्पर दृष्ट हों अथवा सप्तम में गुरु के साथ राहु हो अथवा लग्न शुक्र व चन्द्र तीनों पुरुष ग्रह की राशि या नवमांश होने पर नपुंसक योग। पापयुक्तचन्द्र कर्क राशि या कर्क के नवमांश में होने पर गुदारोग। कर्क राशि के सूर्य पर शनि की दृष्टि हो अथवा वृश्चिकराशि में मंगल शनि की युति होने पर बवासीर रोग। लग्न में राहु ६वें भाव में चन्द्र अथवा शनि मंगल सूर्य की यति अष्टम भाव में होने पर मृगी रोग। लग्न में सूर्य सप्तम में होने पर उन्माद या पागलपन का रोग। क्षीण चन्द्र के साथ शनि द्वादश भाव में होने पर भी पागलपन का रोग। दूसरे या द्वादश में चन्द्र हो अथवा धन भाव में सूर्यचन्द्र की युति हो अथवा व्ययभाव में शुक्र हो, तो नेत्र रोग होता है। शनि राहु लग्नस्थ होने पर पिशाचपीड़ा रोग। धनभाव में शनि राहु की युति या क्षीण चन्द्र राहु के साथ अष्टम में और धन भाव में पाप ग्रह होने पर पिशाचपीड़ा रोग। सिंह लग्न में 6, 8, 13वें भाव में अस्त शुक्र होने पर जन्मान्ध रोग। 6, 8, 12 भाव में चन्द्र-शुक्र की युति से निशान्ध योग।

यंत्रों द्वारा रोग शांति के उपाय

ज्वरनाशक यन्त्र (90)

37	44	2	7
6	3	41	40
43	38	8	1
4	5	38	42

पीपल के पत्ते पर केसर चन्दनकी स्याही से अनार की कलम से लिखकर दायें भुजा पर बांध देवें।

टाईफाइड व मोतीझरा रोग नाशक यन्

श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:

लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखकर धूप दीप देकर रोगी के गले में बांधना।

नपुंसकता नष्ट यन्त्र (160)

2	7	34	77
79	72	8	1
6	3	76	75
73	78	2	7

शुद्ध लिखकर कमर में बांध देवें।

असाध्य रोग निवारक यन्त्र (186)

10	2	74	100
73	104	3	6
1	8	101	76
102	72	8	4

भोजपत्र पर केसर से अनारकी कलम से गूगल की धूप देकर गले में धारण करें।

मृगी रोग नाशक (1000)

8	1	981	10
11	980	4	5
2	7	9	982
979	12	6	3

सूर्य या चन्द्र ग्रहण में भोजपत्र पर लिखकर भुजा में बांधना। अनार की कलम और लाल चन्दन की स्याही लिखना।

बवासीर नाशक यन्त्र (100)

1	47	44	8
45	7	2	46
6	42	49	3
48	4	5	43

लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखकर धूप दीप देकर रोगी के गले में बांधना।

असाध्य रोग व आपत्ति निवारक यंत्र

165 611	165 625	165 620	165 618
165 624	165 614	165 615	165 621
165 617	165 619	165 626	165 612
165 622	165 616	165 613	165 623

केसर की स्याही और अनार की कमल से भोज पत्र लिखकर गले में धारण करना।

रक्तस्त्राव रोकने का यन्त्र (28)

6	13	2	7
6	3	10	9
12	7	8	1
4	5	8	11

कागज पर लाल चन्दन से अनार की कलम से लिखकर स्त्री के गले में बाँधना।

अण्डकोश बृद्धि नाशक (900)

442	449	2	7
6	3	446	445
448	443	8	1
4	5	444	447

केसर की स्याही अनार की कलम से भोजपत्र लिखकर दाहिने हाथ में बाँधना चाहिये ।

57820602

स्याही से कागज पर लिखकर दुखती आँख को दिखाने पर आख दर्द दूर होवे

वायु गोला दूर करने का यंत्र

7	5
9	1

कागज पर स्याही से लिकर सूर्य के सन्मुख पानी में घोल कर पीने से वायु गोला दर्द दूर होवे।

कान दर्द दूर करने का यंत्र

भ	ज	व
क	ग	ज
छः	छः	दः

स्याही से कागज पर लिखकर कान पर बाँधने दर्द शान्त हो जावे।

आधा शीशी निवारक यंत्र

53	42
311	70

स्याही से कागज पर लिखक माथे पर बांधना चाहिए।

शीतला शान्तियन्त्र

श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:

623	1 स	86
7 सी	5 पू	37
2 म	89	4 स

शीतला शनि यन्त्र लिखने का प्रकार दोनों का एक ही है एकयन्त्र धोकर प्रति दिन भी पिलाना

भोजपत्र पर केसर चन्दन और मुनक्का के रस से अनार की कलम से लिखकर गले में बांध और एक यन्त्र प्रतिदिन जल से धोकर पिलाने से शीतला शान्त होती है।

नवग्रहों के यंत्रों द्वारा रोगों का उपचार-

प्रत्येक ग्रह जन्य रोग की शान्ति के लिये मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, दान पदार्थ, पशु-पक्षी पोषण का विवरण निम्नोक्त है।

सूर्यजन्य रोग उपचार- सूर्य यंत्र 15 (लाल चन्दन से अनार की कलम से लिखे)

6	1	8
7	5	3
2	9	4

मन्त्र- ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

सूर्य गायत्री-ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

सूर्य मन्त्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

वैदिक मन्त्रः- ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो......। आदित्य हृदय एवं गायत्री जप।

तन्त्रः- विल्वपत्र की जड़ रविवार को रक्तवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करे अथवा अर्क (मदार) की जड़ बाँधे।

औषधिः-ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म। प्रत्येक ग्रह के दान पदार्थ पञ्चाङ्गों में लिखित हैं। अतः दान पदार्थ की सूची पञ्चाङ्गों से अथवा **ज्यौतिषपीयूष** ग्रन्थ से संकलितकर उन पदार्थों का दान वार के अनुसार जैसे (सूर्य की वस्तुओं का दान रविवार को चन्द्र की वस्तुओं का दान सोमवार को) करें। सूर्य की वस्तुओं का दान प्रातः रविवार को करें।

पशुपक्षीः-व्याघ्र, हरिण, चकवा इनका पालन-पोषण।

चन्द्र जन्य रोग के उपचार-चन्द्र यंत्र 18 (सफेद चन्दन, अनार की कमल से)

7	2	9
8	6	4
3	10	5

मंत्र- ॐ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

चन्द्र गायत्री-ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि।
तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।

चन्द्र मन्त्रः-ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

वैदिक मन्त्रः-ॐ इमं देवा असपत्..........कोष्टक में 18 का यन्त्र विधिपूर्वक लिखकर सफेद वस्त्र में रखकर सोमवार को भुजा में धारण करे। स्त्री वर्ग को बांयी भुजा में पुरुष वर्ग को दाहिनी भुजा में यन्त्र धारण करना चाहिये।

तन्त्रः-खिरनी के बीज अथवा पलाश की जड़ श्वेत वस्त्र में रखकर सोमवार का धारण करें।

औषधिः-मुक्ताभस्म या मुक्तापिष्टि, रजतभस्म का उपयोग करें।

दान पदार्थ- सोमवार को सन्ध्याकाल में दान करें।

भौमजन्य रोग का उपचार-भौम यंत्र 21

8	3	10
9	7	5
4	11	6

मन्त्र- ॐ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्॥
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायत्री-ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे लोहिताङ्गाय धीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

भौम मन्त्रः-ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

वैदिक मन्त्रः-ॐ अग्निमूर्धा दिवेति...। कोष्टक में 21 का यन्त्र विधिपूर्वक लिखकर भौमवार को रक्तवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करें। अंगारक स्तोत्र का पढन भी लाभप्रद है।

प्रत्येक यन्त्र को आम्रपट्ट पर ग्रहवर्ण के अनुसार (रवि-मंगल का रक्त, चन्द्र-शुक्र का श्वेत, बुध का हरित, गुरु का पीत, शनि-राहु का नीला-काला वस्त्र) वस्त्र बिछाकर 11 या 13 अंगुल की अनार की कलम से यन्त्र पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर लिखना चाहिये। यन्त्र लिखने के लिये अष्टगन्ध की स्याही को सर्वोत्तम माना गया है, किन्तु अष्टगन्ध में गोरोचन व कस्तूरी का भी मिश्रण किया जाता है, जो आज कल शुद्ध गोरोचन की उपलब्धि नहीं हो रही है। अतः ग्रहों के यन्त्र लिखने हेतु चन्द्र -शुक्र को सफेद चन्दन की स्याही से, सूर्य मंगल को रक्त चन्दन की स्याही से गुरु को हरिद्रा या सफेद केसर चन्दन की स्याही से शनि, राहु, केतु को काली स्याही से, बुध को पालक रस मिक्षित सफेद चन्दन की स्याही से तथा सभी यन्त्रों को अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप कर धारण करना चाहिये। अंक लिखते समय सर्व प्रथम छोटा अंक लिखकर पश्चात् उत्तरोत्तर वृद्धि के अंक लिखें

तन्त्रः-खदिर (खैर)अथवा नागजिह्वा की जड़ रक्तवस्त्र में रखकर प्रातः सूर्योदय

से १ घन्टे तक के समय में भुजा में मंगलवार को धारण करें।

औषधिः-ताम्रभस्म या प्रवालभस्म का वैद्य के परामर्शानुसार सेवन करें।

दानः-मंगलवार को मध्याह्न में मंगल की वस्तुओं का दान करें।

पशुपक्षीः-कुक्कुट, मेंढक, सूकर, चोर गिद्ध, सियार आदि का पालन-पोषण करें

बुध जन्य रोग का उपचार- बुध यंत्र 24

9	4	11
10	8	6
5	12	7

मन्त्र- ॐ प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

बुध गायत्री-ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि।
तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

बुध मन्त्रः-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

वैदिक मन्त्र-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने..........। यन्त्र कोष्टक में 24 का यन्त्र भोजपत्र पर लिखकर बुध की होरा में अथवा प्रायः सूर्योदय से 1 घन्टे के मध्य में बुध को धारण करें। यहां इस बात को ध्यान में रखना चाहिये, सभी ग्रहों का यन्त्र भोजपत्र पर लिखें।

तन्त्रः-अपामार्ग की जड़ अथवा विधारे (बृद्धमूल) की जड़ हरितवस्त्र में रखकर बुधवार को भुजा में धारण करें।

औषधिः-सुवर्ण या पन्ने की भस्म वैद्य परामर्श से सेवन करें।

दानः-बुध वस्तुओं का दान बुध की होरा में करें।

पशु पक्षीः-चातक, तोता, बिल्ली का पालन-पोषण करें।

गुरुजन्य रोग का उपचार-गुरु यंत्र 27

10	5	12
11	9	7
6	13	8

मन्त्र- ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

गुरु गायत्री-ॐ अङ्गिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

गुरु मन्त्रः-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

वैदिक मन्त्रः-ॐ बृहस्पते अति अदर्यो........। यन्त्र 27 अंक का विधिपूर्वक लिखकर गुरुवार को धारण करें, यन्त्र पीतवस्त्र में रखकर भुजा में बांधे।

तन्त्रः-पीपल की जड़ अथवा भारंगी की जड़ पीत वस्त्र में रखकर गुरुवार को भुजा में धारण करें।

औषधिः-स्वर्णभस्म या पुखराजभस्म वैद्य के परामर्श से सेवन करें।
दानः-गुरु की वस्तुओं का गुरुवार को गुरु की होरा में दान करें।
पशुपक्षीः-पीपलवृक्ष, कबूतर, हंस अश्व का पालन-पोषण करें।

शुक्रजन्य रोग का उपचार- शुक्र यंत्र 30

11	6	13
12	10	8
7	14	9

मन्त्र- ॐ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
शुक्र गायत्री-ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि।
तन्नः कविः प्रचोदयात्।

शुक्र मन्त्रः-ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
वैदिक मन्त्रः-ॐ अन्नात्परिश्रुतो..........कोष्टक में 30 अंक का यन्त्र विधिपूर्वक लिखकर सफेद वस्त्र से बांधकर शुक्रवार को भुजा में धारण करें।
तन्त्रः-गूलर की जड़ या मजीठ की जड़ श्वेत वस्त्र में रखकर शुक्र की होरा में शुक्रवार को भुजा में धारण करें।
औषधिः-रजतभस्म या हीरे की भस्म वैद्य के परामर्श से सेवन करें।
दानः-शुक्र की वस्तुओं का शुक्रवार को शुक्र होरा में दान करें।
पशुपक्षी आदिः- मोर, महिश, गौ, तोता वेश्या, जुलाहा का पालन-पोषण करें।

शनिजन्य रोग का उपचार -शनि यंत्र 33

12	7	14
13	11	9
8	15	10

मन्त्र- ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
शनि गायत्री-ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि।
तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।

शनि मन्त्रः-ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।
वैदिक मन्त्रः-ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय..........। यन्त्र 33 अंक का 9 कोष्टक में विधिपूर्वक लिखकर शनिवार को नीलेवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करें।
तन्त्रः-शमी वृक्ष की जड़ नीलेवस्त्र में रखकर शनिवार को भुजा में धारण करें। अम्लवेत की जड़ भी धारण कर सकते हैं।
औषधिः- लौहभस्म, नीलमभस्म वैद्य के परामर्शानुसार सेवन करें।
दानः-शनि की वस्तुओं का सायंकाल या शनि की होरा में शनिवार को दान करें।

पशुपक्षी आदिः-कोयल, हाथी, कौवा, तेली, लुहार, मजदूर (श्रमिकवर्ग) नौकर नीच जाति का पालन-पोषण करें।

राहु जन्य रोग का उपचार-राहु यंत्र 36

13	8	15
14	12	10
9	16	11

मन्त्र- ॐ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

राहु गायत्री-ॐ नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि।
तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

राहु मन्त्रः-ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

वैदिक मन्त्र-ॐ कयानश्चित्र.........। कोष्ठक में 36 का यन्त्र विधिपूर्वक लिखकर शनिवार सायंकाल कालेवस्त्र में भुजा में धारण करें।

तन्त्रः-चन्दन लेप या चन्दन का टुकड़ा जेब में हमेशा रखे, दूर्वा का सिंचन करें।

औषधिः-गोमेदभस्म तथा विषमिश्रित औषधि का सेवन, लोहभस्म वैद्य परामर्श से सेवन करें।

पशुपक्षी आदि :- सर्प को दूध पिलावें।

केतुजन्य रोग का उपचार-केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

मन्त्र- ॐ पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

केतु गायत्री-ॐ अन्तर्वाताय विद्महे कंपोतवाहनाय धीमहि।
तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

केतु मन्त्रः-ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

वैदिक मंत्र - ॐ केतु कृन्वन्नकेतवे......। कोष्ठक में 39 का यन्त्र विधिपूर्वक लिखकर शनिवार को सायंकाल में काले वस्त्र में धारण करें।

तन्त्रः-असगंध की जड़ या कुशा की जड़ काले वस्त्र में रखकर शनि के सायं काल समय में भुजा में धारण करें।

औषधिः-लहसुनिया की भस्म लोहभस्म असगन्ध का चूर्ण वैद्य-परामर्श से सेवन करें।

पशुपक्षीः-राम नाम की गोलियां आटे में मिला कर मछलियों को खिलाना चाहिए।

साध्य-असाध्य रोगों के लिये महामृत्युञ्जय जप, लघु मृत्युञ्जय जप, रुद्राभिषेक, शतचण्डी सम्पुट मंत्र सहित करवाना लाभप्रद होता है। दैनंदिनचर्या में जिस वार को जो खाद्यान का दान लिखा है, उन वस्तुओं की भोजन सामग्री उस वार को बना कर सेवन करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

शनि की ढैया या साढ़े साती

जब शनि 1, 4, 5, 8 राशि में हो, तब विशेष अनिष्ट करता है। अन्य राशिगत शनि के साढ़े साती विशेष कष्टकारक नहीं होती है। यदि जन्म-कुण्डली में शनि स्वक्षेत्र या उच्च राशि में हो तो उस व्यक्ति को शनि की साढ़े साती या ढैया विशेष कष्टकारक नहीं होती। यदि कुण्डली में शत्रु राशि 1, 4, 5, 8 में शनि हो तो शनि की साढ़े साती विशेष कष्टकारक होती है और परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु होती है। विवाह के समय शनि की ढैया या साढ़े साती में विवाह संस्कार शास्त्रप्रद नही होता है।

ग्रह-शान्ति के उपाय-

सूर्य की मूर्ति ताम्र से, चन्द्रमा की स्फटिक से मंगल की रक्त चन्दन के काष्ठ से, बुध और गुरु की सोना से, शुक्र की चाँदी से, शनि की लोहे से, राहु की सीसे से और केतु की काँसा से मूर्ति बनावे अथवा चन्दनादि से पट्टपत्र पर अपने-अपने उक्त वर्ण की ग्रहों की मूर्ति उनकी अपनी-अपनी उक्त दिशा में स्थापित कर उनका विधिवत् पूजन करे।

(1) सूर्य की पूजा लाल या गुलाबी पुष्प, कमल के फूल लाल या गुलाबी या नारंगी वस्त्र या फल तथा लाल चन्दन से करनी चाहिए। सूर्य की पूजा में आक की लकड़ी से हवन करना चाहिए। सूर्य का मंत्र सात हजार बार जप करना चाहिए। विकल्प में सूर्य के स्थान पर शिव या विष्णु या सूर्यवंशी श्रीराम की पूजा करनी चाहिए तथा उनके सात हजार मंत्र का जप करना चाहिए। सूर्य देवता को प्रसन्न करने हेतु ताम्र-पात्र, स्वर्ण, माणिक्य, अन्य प्रकार के लाल रत्न, लाल वस्त्र, गुलाबी वस्त्र आदि दान करना चाहिए।

(2) चन्द्रमा की पूजा श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न तथा श्वेत चन्दन से करनी चाहिए। पलाश की लकड़ी से हवन करना चाहिए। चाँदी, स्फटिक, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत गाय, मखाना आदि दान करना चाहिए। चन्द्रमा का ग्यारह हजार मंत्र जप करना चाहिए। विकल्प में भगवान कृष्ण अथवा शिव-पार्वती की पूजा करनी चाहिए तथा उनका ग्यारह हजार मंत्र जप करना चाहिए।

(3) मंगल की पूजा लाल वस्त्र, लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल फल तथा लड्डू से करनी चाहिए। खैर की लकड़ी से हवन करना चाहिए। लाल वस्त्र, लाल चन्दन, लाल मूंगा और लाल वृषभ दान करना चाहिए। मंगल का दस हजार जप करना चाहिए। विकल्प में श्री नृसिंहावतार अथवा स्कन्द अथवा दुर्गा जी या हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए तथा उनके दस हजार मंत्र का जप करना चाहिए।

(4) बुध की पूजा पीले पुष्प, पीले चन्दन, पीले वस्त्र, पीले फल तथा पीले मिष्ठान्न से करनी चाहिए। पीला वस्त्र, सोना, पन्ना आदि दान करना चाहिए। चिरचिरी की लकड़ी से हवन करना चाहिए। बुध के नौ हजार मंत्र का जप करना चाहिए। विकल्प में विष्णु भगवान की पूजा तथा उनके नौ हजार मंत्र का जप करना चाहिए।

(5) गुरु का पूजन पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, नारंगी, केला, हल्दी के बेसन के मिष्ठान्न आदि से करना चाहिए। पीपल की लकड़ी से हवन करना चाहिए। पीत या नारंगी वस्त्र, हल्दी, सोना, पुखराज टोपाज, गुड़, मिष्ठान्न आदि दान करना चाहिए। गुरु का उन्नीस हजार मंत्र जप करना चाहिए। विकल्प में वामनावतार विष्णु या हरिहर ब्रह्म अथवा सत्यनारायण विष्णु अथवा बगलामुखी दुर्गा की पूजा करनी चाहिए तथा उनके उन्नीस हजार मंत्र का भी जप करना चाहिए।

(6) शुक्र का पूजन श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, खोआ या छेना की मिठाई, दही, दूध आदि से करना चाहिए। गूलर की लकड़ी से हवन करना चाहिए। श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न, शंख, चाँदी, मोती, हीरा, श्वेत पुखराज तथा श्वेत गाय दान में देना चाहिए। शुक्र का सोलह हजार मंत्र जप करना चाहिए। विकल्प में परशुरामावतार विष्णु या लक्ष्मी और नारायण या शिव और दुर्गा की पूजा करनी चाहिए तथा उनके सोलह हजार मंत्र का भी जप करना चाहिए।

(7) शनि का पूजन नीले या काले वस्त्र से, अपराजिता के पुष्प से, काले चन्दन से तथा तिल से करना चाहिए। शमी अर्थात् सेमल की लकड़ी से हवन करना चाहिए। नीला या काला वस्त्र, कम्बल, तिल, लोहा, नीलम, लाजव्रत, काली भैंस काली बकरी आदि दान में देनी चाहिए। शनि का तेईस हजार मंत्र जाप करना चाहिए। विकल्प में कूर्मावतार या कच्छपावतार विष्णु की अथवा रुद्रावतार हनुमान की पूजा करनी चाहिए तथा उनके तेईस हजार मंत्र का जाप करना चाहिए।

(8) राहु का पूजन नीले या काले वस्त्र तथा काला चन्दन से करना चाहिए। दूब से हवन करना चाहिए। काला या नीला वस्त्र, लाजव्रत, नीलम, सीसा,

कम्बल, काली भैंस, काली बकरी-खस्सी आदि दान में देनी चाहिए। राहु का अठ्ठारह हजार मंत्र जाप करना चाहिए। विकल्प में बाराहवतार विष्णु अथवा चामुण्डा दुर्गा की पूजा करनी चाहिए तथा उनका अठ्ठारह हजार मंत्र जाप करना चाहिए।

(9) केतु का पूजन लाल या काले वस्त्र, लाल या काले चन्दन, लाल पुष्प तथा तिलादि से करना चाहिए। केतु के लिए काला या लाल वस्त्र, कम्बल, छाता, लोहा, लहसुनिया, काल छाग आदि दान करना चाहिए। कुश से हवन करना चाहिए। केतु का सत्रह हजार मंत्र जाप करना चाहिए। विकल्प में मीनावतार विष्णु अथवा गणेश अथवा काली की पूजा करनी चाहिए तथा उनके सत्रह हजार मंत्र का जप भी करना चाहिए। केतु के लिए चामुण्डा दुर्गा या छिन्नमस्तका दुर्गा की आराधना भी कुछ लोग करते हैं।

जन्मलग्न/राशि के अनुसार त्रिगुणीय उपचार

जन्म लग्न (जन्म राशि)	अनुकूल तीन रत्न (लग्नेश, पंचमंश भाग्येश)	अनुकूल तीन देवताओं की गायत्री
मेष	लाल मूंगा, माणिक्य,पीला पुखराज	दुर्गा, शिव, विष्णु, गायत्री
वृष	हीरा, पन्ना, तथा नीलम	विष्णु, लक्ष्मी, शिव, गायत्री
मिथुन	पन्ना, हीरा, तथा नीलम	गणेश, विष्णु, लक्ष्मी, शिव, गायत्री
कर्क	श्वेत मोती, लाल मूंगा,पीला पुखराज	शिव, दुर्गा, विष्णु
सिंह	माणिक्य, पीला पुखराज,लाल मूंगा	विष्णु, लक्ष्मी, शिव, गायत्री
कन्या	पन्ना, नीलम तथा हीरा	विष्णु, लक्ष्मी, शिव
तुला	हीरा, नीलम तथा पन्ना	विष्णु, लक्ष्मी, शिव
वृश्चिक	लाल मूंगा, पीला पुखराज, मोती	शिव, दुर्गा, विष्णु
धनु	पीला पुखराज,माणिक्य, लाल मूंगा	शिव, दुर्गा, विष्णु
मकर	नीलम, हीरा, पन्ना	शिव, विष्णु, लक्ष्मी
कुंभ	नीलम, हीरा, पन्ना	शिव, विष्णु, लक्ष्मी
मीन	पीला पुखराज, लाल मूंगा, मोती	विष्णु, शिव, दुर्गा

व्यवसाय-नौकरी के अनुसार रत्न धारण

सूर्याधीन व्यवसाय-

शासक, प्रशासक, मंत्री, प्रधानमंत्री. राष्ट्राध्यक्ष, निगमाध्यक्ष, प्रबंधक, निदेशक, विभागाध्यक्ष, राज्यपाल, उच्चाधिकारी, सरकारी सेवक, कम्पनियों के मालिक, निजी व्यवसायों के मालिक, विद्युत-अग्नि-तोप-बन्दूक-रौकेट-ऊर्जा-रेडियो-आदि से जुड़े कार्य-पैतृक या पुश्तैनी कारोबार-डाक्टरी अथवा वैद्य का धन्धा, लकड़ी का कारोबार, दवा का कारोबार, जौहरी का कारोबार, ऊनी वस्त्र का कारोबार, ज्ञान-विज्ञान का कार्य, धर्म से जुड़े कारोबार, फोटोग्राफी, राजदूतावास संबंधी कारोबार, व्यवस्थापक, इंजिनियर, टेक्नोक्रैट, न्याय संबंधी कार्य आदि। जो लोग सूर्य जनित व्यवसाय में हैं, उन्हें व्यवसाय में समुन्नति हेतु तथा बाधा दूर करने हेतु माणिक्य या माणिक्य स्टार रविवार को दायें हाथ की अनामिका में सोने या ताँबे की अँगूठी में धारण करना चाहिए।

चन्द्राधीन व्यवसाय-

जल से जुड़े कारोबार जैसे नौका-जहाज का कारोबार, नौसेना, समुद्र-विज्ञान, हाईड्रोलिक इंजिनियरिंग,जलापूर्ति योजना, सिंचाई संबंधी कारोबार, बाढ़-नियंत्रण, नदी-घाटी योजना, जल विद्युत, जलसेना, समुद्र से तेल निकालना, नदी से जुड़े कारोबार,पेय पदार्थ से जुड़ा कारोबार, रंग का कारोबार, होटल का कारोबार, दूध, दही से जुड़ा कारोबार, शराब का धंधा, फिल्म का कारोबार, राज्य संबंधी कार्य, मिठाई-चीनी आदि का धंधा, अनाज का धंधा, फल-फूल तथा सुगंध का धंधा, जौहरी का धंधा, मनोवैज्ञानिक, मनोविद, काँच का कारोबार, नमक का कारोबार, आयात-निर्यात, टकसाल, दवा का कार्य, कला, सरकारी कार्य आदि जो लोग चन्द्रजनित व्यवसाय में हैं, उन्हें अपने व्यवसाय में समुन्नति हेतु तथा उसमें कोई बाधा आये, तो उसे दूर करने हेतु श्वेतमोती या मूनस्टोन या स्फटिक चाँदी की अंगूठी में दायें हाथ की कनिष्ठिका में किसी सोमवार को रात्रि में यथासंभव शुक्लपक्ष में धारण करें। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, अमावस्या तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को कभी मोती धारण नहीं करें।

मंगलाधीन व्यवसाय-

अग्नि, विद्युत तथा ताप से जुड़े कारोबार, कल-कारखाने से जुड़े कारोबार, ऊर्जा से जुड़े कारोबार, रक्षा से जुड़े कारोबार, पुलिस विभाग से जुड़े कारोबार, भूमि तथा मकान से जुड़े कारोबार, अस्त्र-शस्त्र से जुड़े कारोबार, डाक्टरी, सर्जरी, क्रूर कर्म, प्रबंधन, कार्य पालिका, प्रशासक, शासक, मंत्री, सेनापति, अग्निशमन सेवा, साहसिक कार्य, हड्डी का कारोबार, रक्त का कारोबार, लूटपाट तथा रक्तपात अपराध कर्म आदि।

जो लोग मंगल-जनित व्यवसाय में हैं, उन्हें व्यवसाय में सफलता हेतु तथा उसमें आने वाले संकटों तथा विघ्नों से बचने हेतु चाँदी या सोने की अंगूठी में लाल मूंगा दायें या बायें हाथ की अनामिका में किसी मंगलवार को रात्रि में आठ-नौ बजे के बीच धारण करें।

बुधाधीन व्यवसाय-

विद्या-बुद्धि तथा शिक्षा संबंधी सभी प्रकार का कारोबार, वाणी तथा भाषण पर आधारित आजीविका वकालत, वाणिज्य-व्यापार, लेखन कार्य पर आधारित आजीविका, लेखा-कार्य, ज्योतिष कार्य, गणित, कम्प्यूटर, सूचना-टेक्नोलॉजी, संचार सेवा, समाचार-पत्र, डाक, तार, रेलवे, टेलीफोन, रेडियो, सूचना प्रसारण, टेलीविजन, सिनेमा, स्पोर्टस्, एजेण्टस्, ट्रेवल एजेन्सी, डाक्टरी, इंजिनियरिंग, टेक्नोलौजी, शिल्प-कार्य, कला, वकालत, मनोवैज्ञानिक, मनोविद्, शेयर बाजार, बैंक बीमाकार्य, कम्पनी, फर्म आदि। जो लोग बुधजनित व्यवसाय में है, उन्हें अपने व्यवसाय में सफलता हेतु तथा उसमें आने वाले संकटों तथा विघ्नों से बचने हेतु सोने की अंगूठी में हरा पन्ना दायें हाथ की कनिष्ठिका में किसी बुधवार को धारण करना चाहिए।

गुरु के अधीन व्यवसाय-

विद्या-बुद्धि तथा ज्ञान से संबंधित कारोबार, अध्यापन तथा शिक्षण कार्य, कानूनी विशेषज्ञ, वकील, न्यायाधीश, विधायक, संसद, अध्यक्ष, वित्त तथा राजस्व सेवा, बैकिंग सेवा, लेखापदाधिकारी, पुरोहित, महन्थ, राज्याधिकारी, शासक, प्रशासक, लेखक, प्रकाशक, परामर्शी, सचिव, मंत्री, धर्मोपदेशक, कर्मकांडी पंडित, कवि, साहित्यकार, विद्वान आदि। जो लोग गुरु जनित व्यवसाय में हों उन्हें अपनी आजीविका में सफलता हेतु तथा उसमें आने वाले संकटों तथा विघ्नों से बचने हेतु सोने की अंगूठी में पीला पुखराज या पीला टोपाज दायें हाथ की तर्जनी में किसी गुरुवार को पूर्वाह्न में धारण करना चाहिए।

शुक्र के अधीन व्यवसाय-

वस्त्र रत्न-भूषण सुगंधित पदार्थ-फैशन सामग्री से संबंधित कारोबार, कला साहित्य, उपस्कर, सभी प्रकार के यान और वाहन, भागीदारी व्यवसाय, डाक्टर, नर्स-प्रशिक्षण, महिला अधिकारी, स्वतंत्र व्यवसाय, पशुधन, स्टेशनरी, कपड़े का व्यवसाय, फैन्सी स्टोर, सट्टा, जुआ, फिल्म व्यवसाय, ब्यूटी-पार्लर, रेस, मदय व्यापार, स्त्रियों का व्यापार, शराब का व्यापार, यौनरोग विशेषज्ञ, वकालत, जलपूर्ति कारोबार,फल तथा रस का व्यापार, कूटनीतिसेवा, शासक, प्रशासक, मंत्री, केमिस्ट, औषधि-निर्माता आदि। जो लोग शुक्र जनित व्यवसाय में हों उन्हें अपनी आजीविका में सफलता हेतु तथा उसमें

आने वाले संकटों और विघ्नों से बचने हेतु सोने या चाँदी की अंगूठी में हीरा या श्वेत पुखराज दायें हाथ में कनिष्ठिका में किसी शुक्रवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में धारण करना चाहिए।

शनि के अधीन व्यवसाय-

पत्थर-सिमेंट-मिट्टी-भूमि से जुड़े कारोबार, लोहा-कोयला-पेट्रोल आदि खनिज पदार्थों से जुड़े कारोबार, तेल तथा चमड़ा उद्योग, कृषि, चिकित्सक सभी प्रकार की नौकरी, यन्त्र-मशीन से जुड़े कारोबार, यांत्रिक अभियंत्र, इंजिन चालक, पत्थर की मूर्ति बनाने का काम, मजदूरी का काम, राजदूत का काम, मजदूरों तथा गरीबों का नेता, समाज-कल्याण से जुड़े कार्य, ईंट-भट्टा का कार्य, वकालत, न्यायाधीश, दंडाधिकारी, प्रजातांत्रिक ढंग से चुने गये प्रतिनिधि मुखिया से लेकर राष्ट्राध्यक्ष तक। जो लोग शनि जनित व्यवसाय में हों, उन्हें आजीविका की सफलता हेतु तथा उसमें आने वाले संकटों और विघ्नों से बचने हेतु दायें हाथ की मध्यमा में चाँदी या अष्टधातु की अंगूठी में नीलम या जमुनिया या फिरोजा शनिवार की रात्रि में धारण करना चाहिए।

राहु के अधीन व्यवसाय-

स्थानिक स्वायत्त संस्थाओं से जुड़े पद और कार्य, विधान सभा, लोकसभा के पद, कमीशन एजेण्ट, विज्ञापन से जुड़े कार्य, रबड़-गाँजा, भांग-अफीम का कारोबार, सर्कस, प्रचार का कार्य, अफवाह फैलाने का कार्य, चौंकाने का कार्य, चिकित्सा का कार्य आदि। जो लोग राहु जनित कार्य में हों, उन्हें व्यावसायिक सफलता हेतु तथा विघ्न दूर करने हेतु चाँदी या पंचधातु की अंगूठी में गोमेद दाये हाथ की मध्यमा में शनिवार को रात में धारण करना चाहिए।

केतु के अधीन व्यवसाय-

कल-कारखाने का काम, अग्नि गैस से जुड़े कार्य, सर्जरी, होमियोपैथी, तंत्र-मंत्र का कार्य, सेना तथा पुलिस से जुड़े कार्य। जो लोक केतु जनित कार्य में सफलता चाहते हैं तथा उसके विघ्न दूर करना चाहते हैं, उन्हें दायें हाथ की मध्यमा या कनिष्ठिका में वैदूर्य या टाईगर्सआई चाँदी या पंचरत्न की अंगूठी में शनिवार को रात में धारण करना चाहिए।

अनिष्टों के निवारण में सक्षम-गायत्री

गायत्री की महिमा अपार है। गायत्री महाशक्ति के प्रचण्ड तेज से सभी अमंगल दूर हो जाते हैं। ग्रह नक्षत्र संबंधी समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। जैसा कि कहा गया है-

मुहूर्त्ता योगदोषा वा येऽप्यमंगलकारिणः।
भस्मतां यान्ति ते सर्वे गायत्र्यास्तीव्रतेजसा॥

01. गणेश गायत्री

ॐ एक दंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात्।

02. नृसिंह गायत्री

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे, वज्र नखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।

03. विष्णु गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

04. शिव गायत्री

ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

05. कृष्ण गायत्री

ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

06. राधा गायत्री

ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्ण प्रियायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।

07. लक्ष्मी गायत्री

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

08. अग्नि गायत्री

ॐ महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।

09. इन्द्र गायत्री

ॐ सहस्त्रनेत्राय विद्महे, वज्र हस्ताय धीमहि। तन्न इन्द्रः प्रचोदयात्।

10. सरस्वती गायत्री

ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

11. दुर्गा गायत्री

ॐ गिरिजायै विद्महे, शिव प्रियायै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

12. हनुमान् गायत्री

ॐ अञ्जनीसुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्।

13. पृथ्वी गायत्री

ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्र मूर्त्यै धीमहि। तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्।

14. सूर्य गायत्री

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्य्यः प्रचोदयात्।

15. राम गायत्री

ॐ दाशरथये विद्महे, सीता वल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।

16. सीता गायत्री

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि। तन्नः सीता प्रचोदयात्।

17. चन्द्र गायत्री

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे, अमृत-तत्त्वाय धीमहि। तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।

18. यम गायत्री

ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात्।

19. ब्रह्मा गायत्री

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

20. वरुण गायत्री

ॐ जलबिम्बाय विद्महे, नील-पुरुषाय धीमहि। तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।

21. नारायण गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

22. हयग्रीव गायत्री

ॐ वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवाय धीमहि। तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात्।

23. हंस गायत्री

ॐ परमहंसाय विद्महे, महाहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

24. तुलसी गायत्री

ॐ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

महा मृत्युंजय मंत्र-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्।
ऊर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

लघु मृत्युंजय मंत्र-ॐ ह्रौं जूँ सः ....पालय पालय सः जूँ ह्रौं ॐ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

-यजु. 36/3